कृष्ण
महा विष्णु अवतार
केविन मिसल

Table of Contents

शीर्षक पेज
टिप्पणी
अस्वीकरण
एपिसोड एक
- अध्याय 1
- अध्याय दो
- अध्याय 3
- अध्याय 4
- अध्याय 5
- अध्याय 6
- अध्याय 7
- अध्याय 8
- अध्याय 9
- अध्याय 10
- अध्याय 11
- अध्याय 12
- अध्याय 13
- अध्याय 14
- अध्याय 15
- अध्याय 16
- अध्याय 17
- अध्याय 18
- अध्याय 19
- अध्याय 20
- अध्याय 21
- अध्याय 22
- अध्याय 23
- अध्याय 24
- अध्याय 25
- अध्याय 26
- अध्याय 27
- अध्याय 28
- अध्याय 29

अध्याय 30
अध्याय 31
अध्याय 32
अध्याय 33
अध्याय 34
अध्याय 35
अध्याय 36
अध्याय 37
अध्याय 38
अध्याय 39
अध्याय 40
अध्याय 41
अध्याय 42
स्वीकृतियाँ
कॉपीराइट

कृष्ण

कृष्ण

महा विष्णु अवतार

केविन मिसल

SIMON &
SCHUSTER

London · New York · Sydney · Toronto · New Delhi

टिप्पणी

महाभारत के बाद क्या हुआ? कृष्ण, अर्जुन और अन्य वीरों का क्या हुआ? यह बात हमेशा से मेरी जिज्ञासा जगाती रही, जब तक कि मैंने मौसला पर्व नहीं पढ़ा—वह आखिरी अध्याय जिसमें द्वारका के डूबने और यादवों के युद्ध का वर्णन है। सही मायने में, यह पर्व की मेरी पुनर्कल्पना है, जिसमें मैंने कल्पना, मिथक और इतिहास के सभी तत्वों को शामिल किया है।

आशा है आपको यह पसंद आएगा। मुझे इसे लिखने में बहुत आनंद आया।

अस्वीकरण

यह पुस्तक महाभारत के मौसला पर्व का एक काल्पनिक पुनर्लेखन है। लेखक इसे मौसला पर्व का विद्वतापूर्ण या धार्मिक रूप से प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण होने का दावा नहीं करता। यह एक भक्तिमय रचना है, जो महाकाव्य को प्रेरणा स्रोत के रूप में उपयोग करती है। पाठकों को मूल महाभारत का अध्ययन करने और महाकाव्य की व्यापक समझ के लिए विश्वसनीय धार्मिक और साहित्यिक स्रोतों से परामर्श लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पुस्तक को तथ्यात्मक या ऐतिहासिक प्रस्तुतीकरण के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। पुस्तक किसी विशेष धार्मिक या दार्शनिक दृष्टिकोण का समर्थन नहीं करती है।

एपिसोड एक

1

“क्या आप एक दुखद कहानी सुनना चाहते हैं?” अजनबी ने पूछा।

इतिहासकार वैसंपिया पिछले पैंसठ दिनों से द्वारका में थे और उन्होंने अब तक उस अजनबी जैसे किसी व्यक्ति से मुलाकात नहीं की थी।

उसने सोचा था कि उसकी रात एक साधारण रात होगी। वह शराबखाने में आएगा। अपनी मदिरा पिएगा। नाविकों, किसानों और शराबियों की कहानियाँ सुनेगा। और फिर अपने घर लौटकर सो जाएगा।

लेकिन जैसे ही उसे अपनी मदिरा (एक प्रकार की शराब) मिली और वह उसे पीने ही वाला था, तभी एक अजनबी आ गया। उसने अपने ऊपर एक कफ़न ओढ़ा हुआ था और उसका चेहरा छाया में था। उसकी आवाज़ बेहद गहरी और कर्कश थी। और उसकी नाक छाया से बाहर निकली हुई थी, जिस पर मौजूद निशान साफ दिख रहे थे।

कहानियां सुनना मेरा शौक है।

“और उन्हें नैतिकता से भरपूर पैदा करना ही तुम्हारा पेशा है।” अजनबी ने आगे कहा।

खैर, वैसंपिया एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उन्हें अपने पेशे का चुनाव पसंद था। वे दुनिया भर की यात्रा करते थे। कहानियां सुनते और दूसरों को मौखिक रूप से सुनाते थे। वे हर किसी और हर चीज के बारे में जानते थे। सिवाय द्वारका के। वह एक रहस्यमय द्वीप राष्ट्र था; एक ऐसा राष्ट्र जिसने दुनिया की सर्वश्रेष्ठ सेना होने के बल पर अजेय और अविनाशी होने की प्रतिष्ठा अर्जित की थी।

सीमा शुल्क से गुजरना कठिन था, लेकिन रिश्वत देकर अंदर घुसना उसकी खासियत थी। उसने ऐसा ही किया और यहाँ पहुँच गया, जहाँ ऊबड़-खाबड़ भूमि, ऊँचे ज्वालामुखी और क्रिस्टल महलों की असीम सुंदरता ने उसका स्वागत किया। यह वही द्वीप था जहाँ भगवान कृष्ण निवास करते थे, हालाँकि पिछले पाँच वर्षों से उन्हें देखा नहीं गया था।

उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसा क्यों? और जब उसने पूछा, तो उसे कई जवाब मिले। लेकिन उनमें से कोई भी उसे संतुष्ट नहीं कर सका।

“बिल्कुल। तो फिर यह किस प्रकार की त्रासदी है?”

“मुझे लगता है कि आप यह जानना चाहते हैं कि द्वारका के पूर्व राजा पांच साल पहले क्यों गायब हो गए थे?” अजनबी ने पूछा।

“और शायद आपको पता हो?” वैशम्पिया ने अपनी कुर्सी पर आगे झुकते हुए कहा, पृष्ठभूमि में तुरहियों की गूंज सुनाई दे रही थी और नृत्य की थाप भी सुनाई दे रही थी। “बताइए, क्या यह इसलिए है क्योंकि उसने एक असुर से युद्ध किया और पाताल में चला गया, या इसलिए कि वह एक राक्षस की माया से अदृश्य हो गया? आखिर क्या बात है? मैंने इसके इतने अलग-अलग रूप सुने हैं कि मैं थक गया हूँ।”

"तो शायद आप एक और बात जानना चाहेंगे।"

वैसम्पिया ने कुछ पल अजनबी को देखा, यह सोचते हुए कि आगे सुनना चाहिए या नहीं। लेकिन हर वो आदमी जो अपनी कहानी सुनाने आता है, वो स्वार्थी होता है। वो चाहता है कि उसकी बात सुनी जाए। लेकिन सबसे बढ़कर, वो बदले में कुछ चाहता है। "अगर मैं तुम्हारी बात सुन लूँ तो तुम्हें क्या चाहिए?"

"ऐसी जानकारी जो आपके पास हो सकती है।"

मेरे पास कुछ भी नहीं है।

“आपकी प्रतिष्ठा एक घुमक्कड़ और शिक्षार्थी, एक विद्वान और एक संभ्रांत व्यक्ति के रूप में है। आपने द्वारका में उन लोगों से कहीं अधिक यात्रा की है जो यहां वर्षों से रह रहे हैं। आपने अवश्य ही कुछ ऐसा देखा होगा जो मेरे लिए मायने रखता है।”

और वह क्या है?

आपको पता चल जाएगा। तो क्या मैं शुरू करूँ?

"हर तरह से।"

अजनबी पीछे की ओर झुक गया। उसका चेहरा हुड की छाया से बाहर झाँक रहा था। उसकी त्वचा रूखी और फटी हुई थी, उसके होंठ झुलसे हुए और फटे हुए थे। एक बदसूरत आदमी हुड में छिपा हुआ था। इससे यह स्पष्ट हो गया कि वह खुद को क्यों छिपाना चाहता था।

या शायद, वह मशहूर नहीं होना चाहता था।

उस अजनबी का रहस्य वैसम्पिया के लिए अनसुलझा था, और वह जानता था कि अगर वह पूछेगा तो उसे सही जवाब नहीं मिलेगा। क्योंकि अगर वह व्यक्ति अपनी पहचान बताना चाहता तो वह अपना परिचय दे देता।

क्या आप जानते हैं कि अब तक का सबसे बड़ा युद्ध कौन सा था?

"हाँ।"

“यह क्या था?” अजनबी ने पूछा।

“यह घटना मुझसे बहुत दूर घटी, लेकिन मैंने इसे ठीक से सुना। यह कुरुक्षेत्र में हुई थी। पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध हुआ, जिसमें दोनों हार गए, हालांकि एक को जीत मिली,” वैशम्पिया ने बताया। जब यह घटना घटी, तब वह कंबोज के पास एक छोटे से गाँव में थे। वह ऋषि बनने का प्रशिक्षण ले रहे थे, लेकिन जब पता चला कि वह शूद्र हैं, तो उनका यह प्रशिक्षण बुरी तरह विफल हो गया। इससे ऋषि बनने का उनका सारा सपना चकनाचूर हो गया और उन्होंने महादेव की सेवा के बजाय कुछ और चुना, जिसे महादेव नष्ट नहीं करना चाहते: मनुष्य।

इसे महान युद्ध कहा जाता था।

“जी हां। और हमारे महान स्वामी, पूर्व राजा कृष्ण भी इसमें शामिल थे। वे प्रसिद्ध अर्जुन के सारथी थे। उन्होंने ही पांडवों की विजय सुनिश्चित की थी।”

“लेकिन मैं यह कहानी जानती हूँ। यह त्रासदी कैसे है?” वैशम्पिया थोड़ी देर रुकी। “और आप भगवान कृष्ण को पूर्व राजा क्यों कह रही हैं? उन्होंने अपना सिंहासन क्यों त्याग दिया?”

"उनके राज्य का शासन उनके प्रिय पुत्र प्रद्युम्न द्वारा चलाया जा रहा है।"

वैशम्पिया ने उस युवा, बेहद आकर्षक लड़के के बारे में सुना था। उसकी आँखें नीलमणि जैसी

थीं और उसकी त्वचा कृष्ण की त्वचा से बिल्कुल विपरीत, सुनहरी और कांस्यमय थी। उसने यह भी सुना था कि प्रद्युम्न ने मदिरा, जुआ और वेश्यावृत्ति को वैध कर दिया था। वह एक प्रगतिशील राजा था जो मानता था कि कोई बुराई नहीं होती, बस मानवीय मूर्खताएँ होती हैं जिन्हें दबाने के बजाय स्वीकार करना चाहिए।

मुझे पता है। लेकिन क्यों?

“धैर्य रखो। एक बार में एक ही काम करो।” अजनबी धीरे से हँसा। “क्या तुम्हें पता है उस युद्ध की जीत के बाद क्या हुआ था?”

"सदा खुशी खुशी?"

“दुर्भाग्यवश, नहीं। भगवान कृष्ण से उनकी मुलाकात हुई थी। उनकी मुलाकात विरोधी पक्ष की एक महिला से हुई। उनका नाम गांधारी था।”

“दुर्योधन की माता?”

“जी हां।” अजनबी ने सिर हिलाया। “और उसने भगवान कृष्ण को श्राप दिया था क्योंकि उसका मानना था कि भगवान कृष्ण युद्ध को रोक सकते थे। श्राप सीधा-सादा था। उनके सैनिक भी उसी तरह मरेंगे जैसे उसके बेटों की हत्या हुई थी।”

“पुरुषों से मतलब? ययाती लोगों से?”

“जी हां। आप अभी एक ऐसे गांव में हैं जो सत्तवाहों के अधिकार क्षेत्र में आता है,” अजनबी ने बताया। “हमारे राजा को बहुत शंका थी। पहले तो उन्होंने इस श्राप को झूठा समझा, लेकिन जैसे-जैसे उनका मन शांत हुआ, चिंता उनके विवेक पर हावी होने लगी और उन्होंने फैसला किया कि उन्हें कुछ करना होगा। इसलिए, अपनी सारी शक्ति, सामर्थ्य और दिव्य ऊर्जा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपनी शक्तियां ययातियों को हस्तांतरित कर दीं ताकि वे अजेय और अविनाशी बने रहें।”

इतिहासकार ने इसके बारे में नहीं सुना था और जब उसने सुना तो उसके कान लाल हो गए। तो इसीलिए द्वारका राष्ट्र अब तक अजेय रहा है। "क्या आपका मतलब है कि वे जादू से सुरक्षित हैं?"

आप इसे जो चाहें नाम दे सकते हैं।

“लेकिन मुझे अभी तक त्रासदी नजर नहीं आ रही है,” इतिहासकार ने निराशा व्यक्त करते हुए कहा। “अभी तक तो सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है।”

अजनबी इंतज़ार करता रहा। कुछ देर रुकने के बाद उसने बाँस का प्याला उठाया जिससे इतिहासकार लगातार घूंट-घूंट कर पी रहा था और मदिरा पी गया। वैशम्पिया ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। शायद उसका गला सूख गया था, क्योंकि सारी बातें वही कर रहा था।

“दुर्भाग्यवश, महान शक्ति से महान महत्वाकांक्षा उत्पन्न होती है। और महत्वाकांक्षा की एक कीमत होती है। श्रेष्ठता की, प्रभुत्व की कीमत। जब कोई एक जाति बाकी जातियों से श्रेष्ठ हो जाती है, तो वे यह मानने लगते हैं कि उन्हें दूसरों पर शासन करना चाहिए। सही है ना?”

"बिल्कुल। जैसा कि पौराणिक कथाओं में बताया गया है - दानवों का देवताओं के प्रति क्या भाव था और देवताओं का मानवों के प्रति क्या भाव था।"

"बिल्कुल सही। लोग सत्ता के दूसरे पहलू के बारे में बात नहीं करते। वह पहलू जो दुखद है। वह पहलू कमोबेश अहंकार से भरा है। वह पहलू जहां आत्म-भोग इतना हावी हो जाता है कि वह व्यक्ति के शेष जीवन को आकार दे देता है।"

"तो फिर क्या हुआ? क्या ययाती सत्ता के भूखे हो गए?"

"और उन्होंने भगवान कृष्ण के विरुद्ध विद्रोह करना शुरू कर दिया। उन्होंने कृष्ण से कहा कि अब वे भगवान नहीं रहे, क्योंकि उन्होंने अपना देवत्व मनुष्यों को दे दिया है। अब वे केवल एक मनुष्य हैं। शासन करने योग्य नहीं। उन्होंने कृष्ण से लड़ना शुरू कर दिया। उन्होंने कृष्ण द्वारा बनाए गए नियमों से घृणा करना शुरू कर दिया। वे मनुष्य की सभी सांसारिक इच्छाओं में लिप्त होने लगे। यह देखकर कृष्ण को अपनी गंभीर गलती का एहसास हुआ। अपनी जाति को सुरक्षित रखने के चक्कर में उन्होंने उन्हें ही अपना शत्रु बना लिया।" अजनबी इस विडंबना पर खिलखिलाकर हँस पड़ा। "तो वे चले गए। अपना सामान पैक किया और चले गए। अब वे कहाँ हैं, कोई नहीं जानता। इस अवसर को भांपते हुए उनके पुत्र ने सत्ता संभाली और उनकी खोज के लिए कभी कोई दल नहीं बुलाया, क्योंकि उन्हें डर था कि अगर उनके पिता मिल गए, तो उनका सिंहासन छीन लिया जाएगा, क्योंकि उन्होंने कभी अपने पिता की अवज्ञा नहीं की थी। वे एक अच्छे पुत्र थे।" यह कहते हुए वे हँसे। "यह पाँच साल पहले की बात है।"

"कृष्णा के लापता हुए पाँच साल हो गए हैं?" यह सुनकर उसकी रीढ़ की हड्डी में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई।

"हाँ। और उसके आदमियों का नाता टूट पड़ा है। ययाती अब नियंत्रण में नहीं हैं। वे अपने-अपने क्षेत्रों पर शासन करते हैं और उनमें कोई एकता नहीं है। इससे भी बुरा यह है कि वे पड़ोसी द्वीपों और भूमि पर हमले करते हैं। स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों की हत्या करते हैं। बलात्कार और लूटपाट करते हैं। अब उनका नेतृत्व एक समय के भले राजकुमार और अब भ्रष्ट राजा प्रद्युमन कर रहे हैं। उनका उद्देश्य है: लोगों को अपने सामने घुटने टेकने पर मजबूर करना, क्योंकि वे स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझते हैं।"

वैसंपिया को यह सब सुनकर विश्वास नहीं हो रहा था। शुरू से ही द्वारका हानिरहित और शांत प्रतीत हो रहा था। लेकिन स्वाभाविक ही था कि वह शांत दिखेगा, क्योंकि कोई भी उन पर हमला करने की हिम्मत नहीं करता था। हर कोई उनसे डरता था। और एकमात्र व्यक्ति जिसके पास उन्हें शांत करने का मौका था, वह लगभग पांच साल पहले गायब हो गया था।

"मुझे इस पर विश्वास नहीं होता," वैसम्पिया ने सिर हिलाते हुए कहा। "हाँ। यह किसी परी कथा जैसा लगता है। तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारी जाति को चोट नहीं लग सकती, घायल नहीं हो सकती या कुछ भी नहीं हो सकता?"

एक और ठहाका। वैसंपिया चिढ़ गई, लेकिन अजनबी ने इंतज़ार नहीं किया। उसने अपने हाथ में पकड़े मग को मेज पर पूरी ताकत से पटक दिया, जिससे लकड़ी के टुकड़े चारों ओर बिखर गए, लेकिन पृष्ठभूमि में बज रहे गीतों और लोकगीतों की वजह से आवाज दब गई।

उसने एक टुकड़ा उठाया और दूसरा हाथ ऊपर उठाकर अपने बनाए हथियार से अपनी त्वचा को काट लिया। धारदार किनारा उसकी त्वचा में घुस गया और उसकी बाहों से खून बहने लगा,

उसकी नसें फूलने लगीं और उसने उस टुकड़े को कोने में रख दिया। कुछ पल के लिए वह वहीं पड़ा रहा, जब तक कि घाव अपने आप भरने नहीं लगा, अदृश्य तांत्रिकों द्वारा उस घाव का सटीक उपचार किया जा रहा था और टपकता हुआ खून सूख गया। त्वचा सूखी और दिन के उजाले की तरह साफ थी।

“इंद्र की गर्जना की कसम, तुमने यह कैसे किया?” वैशम्पिया का पूरा शरीर कांप रहा था।

“जादू।” एक और हल्की हंसी।

वैसम्पिया जानता था कि शायद उसके सामने खड़ा व्यक्ति कोई धूर्त हो या शायद अंधकार का प्राणी हो... वही जिससे छिपने की बात कही जाती है। असुर। या फिर वह इन सबसे भी कहीं बुरा हो सकता है: वह एक ईमानदार आदमी हो सकता है।

“अगर यह सच है, तो क्या ययाती विश्व प्रभुत्व स्थापित करने की शक्ति रखते हैं?”

“मुझे इसी बात का डर है।” आवाज़ में अब कुछ भी छिपा नहीं था। वह सतर्क थी और चिंता से भरी हुई थी। “मैंने अपना वादा पूरा कर दिया है और जैसा कि इतिहास गवाह है, तुम भी अपना वादा निभाओ।”

वैसंपिया ने सिर हिलाया और एक और मदिरा मंगाई। घबराते हुए उन्होंने कहा, "आप मुझसे ऐसा क्या पूछेंगे जो मुझे पता है और आपको नहीं?" यह सोचकर वे मन ही मन मुस्कुराए और अपनी दाढ़ी सहलाने लगे, जो घबराहट होने पर उनकी आदत थी।

“मुझे लगता है कि आपने काफी यात्रा कर ली है और मुझे याद है कि आपने कुछ दिन पहले सराय में कुछ सैनिकों से कहा था कि आपने नीली आँखों और चांदी जैसी दाढ़ी वाले एक आदमी को देखा था।” अजनबी ने पूछा। “कुछ दिन पहले।”

वैसम्पिया ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। याद करने की कोशिश करते हुए। और फिर उसे याद आ गया। एक आदमी था। एक अजीब सा, बूढ़ा आदमी, लेकिन काफी दयालु। “वह बहुत मेहमाननवाज था। द्वारकीपुर के दक्षिण में एक खेत है। आप उसे आसानी से पहचान लेंगे क्योंकि उसमें एक बड़ा सा लाल रंग का फार्म है। लेकिन एक साधारण ग्वाले से आपका क्या काम?”

“चरवाहा,” एक व्यंग्यात्मक स्वर में कहा गया और फिर उसने दबी हुई गुर्राहट के साथ खुद से फुसफुसाया, “वह अपनी साधारण शुरुआत में लौट गया है।”

"कौन?"

“यह अजीब है,” अजनबी ने कहा, और ऐसा कहते हुए उसने अपना हुड नीचे खींच लिया जिससे उसके घुंघराले भूरे बाल और चेहरा दिखाई दिया... ओह, उसका चेहरा! उस पर तरह-तरह के निशान थे, लेकिन सबसे खास बात यह थी कि उसने अपने चेहरे के एक चौथाई हिस्से को लोहे के मुखौटे से ढक रखा था, जिससे उसकी नाक और आंखें छिपी हुई थीं। अजनबी एक लड़का था, दिखने में सीधा-सादा, लेकिन अपनी उम्र से कहीं अधिक समझदार। “तुम भगवान कृष्ण के बारे में जानना चाहते थे, लेकिन यह नहीं जानते कि तुम उनसे पहले ही मिल चुके हो।”

“वो ग्वाला?” वैशम्पिया का शरीर भय से कांप उठा। “दरअसल, उसी ने मुझे बताया था कि भगवान कृष्ण सबसे उत्तम मक्खन खोजने गए थे।”

"वाह, कितना आकर्षक है!"

और इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, उसे अपने कंधों और बाहों पर किसी के खिंचाव का एहसास हुआ। जब उसे समझ आया कि क्या हो रहा है, तो उसने अपना सिर घुमाकर देखा कि वहाँ कुछ लोग जमा हो गए थे, वही सैनिक जिनके साथ उसने कल कृष्ण के बारे में बातचीत की थी। उन्होंने अपने वस्त्रों के नीचे छोटी कटारें छिपा रखी थीं।

क्या अब तुम मुझे मार डालोगे?

अजनबी ने अपना सिर हिलाया। उसके होठों पर मुस्कान थी। “हम बुरे लोग नहीं हैं, इतिहासकार। आज रात मसालों की खेप के साथ आपको द्वीप से बाहर निकाल दिया जाएगा।”

"क्यों?"

क्योंकि आपको पता है कि वह कहाँ रहता है। और किसी और को नहीं पता होना चाहिए।

वैसम्पिया को ऊपर खींचा गया, धक्का दिया गया और घसीटा गया। तब वह लड़खड़ाया और पीछे हटते हुए पूछा: "कृपया, आप कौन हैं और मुझसे यह सब क्यों पूछ रहे हैं? मैं जिज्ञासा से जल रहा हूँ।"

अजनबी मुस्कुराया। फिर उसने सैनिकों को इशारा किया कि वे उसके साथ सख्ती बरतें, और अपने अंतिम शब्द कहे—“मुझे समवा कहो। और तुमने आखिरकार मुझे बता ही दिया कि मेरे पिताजी इतने लंबे समय से कहाँ छिपे हुए थे।”

2

जब दुष्ट विश्राम करते थे, तब प्रद्युमन भी विश्राम करते थे।

लेकिन आज वो दिन नहीं था। आज हिसाब-किताब का दिन था। परीक्षा का दिन। अखाड़ा तैयार था और चिलचिलाती धूप में लाल मिट्टी चमक रही थी। नारियल के पेड़ एक कतार में खड़े थे, छाया दे रहे थे और राज्य के पार्षदों, राजनेताओं और प्रशासकों की फुसफुसाहटें सुनाई दे रही थीं।

प्रद्युमन अपने सिंहासन पर भावहीन बैठे रहे। राजा का आसन अखाड़े में था। जनता के मेहराबों के ऊपर और एक ऐसे शिखर पर, जो बाकी सभी से बहुत ऊपर था।

उनकी नज़रें कुछ अलग ही थीं। उनकी आँखें एकदम शुद्ध, गहरे समुद्र की तरह नीली थीं और उनके बाल उनके पिता और भाई की तरह भूरे थे। उनके लंबे घुंघराले बाल उनके भारी-भरकम, मांसल कंधों पर बेफिक्र होकर गिरते थे। प्रद्युमन जैसा सुंदर पुरुष बेमिसाल और अद्वितीय था।

हरी मूंगे जैसी आँखों वाली उनकी पत्नी रुक्मावती, हीरे और माणिक जड़े लंबे वस्त्र में उनके बगल में खड़ी थीं। हालाँकि उन्होंने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि प्रद्युमन विविध रुचियों वाले व्यक्ति थे और वे किसी एक चीज़ पर टिकना पसंद नहीं करते थे। यदि उन्हें ययाती अहिरा जनजाति के साथ राजनीतिक संबंध न बनाने होते, तो वे यहाँ न होते, बल्कि कामुक दासियों के साथ होते जो उनके नग्न शरीर को सुखाकर और तेल लगाकर उन्हें अंत में संतुष्ट करतीं।

उनके जैसा सुंदर पुरुष स्वार्थवश किसी एक व्यक्ति के पास नहीं रहना चाहिए। उन्हें संसार को सौंप देना चाहिए। प्रद्युमन का यही मानना था।

उसने अपनी दाहिनी ओर देखा, इस उम्मीद में कि उसे आज के इस तमाशे के लिए उसकी सहयोगी और उसकी राजनीतिक रणनीतिकार मिल जाएगी, लेकिन वह यहाँ नहीं थी।

“दुर्गाज्योति कहाँ है?” उसने रुक्मावती से पूछा।

शराब पीते हुए उसने अपना सिर हिलाया। उसे ज्यादा परवाह नहीं थी और उसने बस अपनी आँखें घुमा लीं।

दुर्गाज्योति ययाती वंश के तलजन समुदाय की वंशज थीं, जिनका तलजन की विकृत उप-जनजाति वितिहोत्रों पर पूर्ण नियंत्रण था। वे एक प्रकार से कहें तो दानवों का समूह थे। उनके बारे में सोचते ही द्वारका के राजा के रोंगटे खड़े हो जाते थे। लेकिन दुर्गाज्योति केवल वंशज ही नहीं थीं, बल्कि प्रद्युमन के लिए एक महत्वपूर्ण व्यक्ति, एक प्रिय मित्र और उन्हें उत्थान करते देखना चाहने वाली भी थीं।

“वह थोड़ी देर से आ रही है, महाराज।” उसने एक आवाज सुनी और प्रद्युमन मुड़ा, अखाड़े में लड़ाई शुरू होने का इंतजार कर रही उग्र भीड़ के शोर के बीच।

यह आवाज नाटककार की थी, एक ऐसा व्यक्ति जो नाटक और कहानियां लिखता था और उन्हें जनता के मनोरंजन के लिए मंचित करवाता था।

"अरे, तुम यहाँ हो।"

नाटककार दुबला-पतला आदमी था, वह प्रद्युमन के नीचे वाली निचली शेल्फ पर बैठ गया।

"तो क्या इसके शुरू होने की सारी योजना बन चुकी है?" उसने पूछा।

"जी हां, बिलकुल।" नाटककार ने कागज़ात देखते हुए सिर हिलाया। "वक्ता मुकाबले की शुरुआत करेगा और फिर गुलामों को उस प्राणी से लड़ने के लिए लाया जाएगा। उसके बाद आप आगे बढ़कर उन्हें बचाएंगे।"

क्या इस प्रक्रिया में प्राणी अपनी जंजीर खो देता है?

"जी हां, मैंने जंजीर की ठीक से जांच कर ली है। कुछ झटकों में ही यह टूट जाएगी। एक पल के लिए सब लोग डर जाएंगे, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं, हमारे वीर राजा प्रद्युमन उस प्राणी को रोक देंगे।"

"बहुत बढ़िया।" वह मुस्कुराया। इन सब चीज़ों का होना ज़रूरी था क्योंकि एक राजा के लिए वीरता से ज़्यादा वीरता का आभास महत्वपूर्ण था। क्योंकि यहाँ हर कोई अजेय था, इसलिए उन पर किसी शक्तिशाली व्यक्ति का शासन नहीं होगा, बल्कि उस व्यक्ति का शासन होगा जिसका वे सम्मान करते हैं।

"लेकिन क्या आप वाकई गुलामों का इस्तेमाल इसके लिए करना चाहते हैं? जेल में अपराधी तो बहुत कम हैं।" नाटककार ने पूछा। "ये तो निर्दोष लोग हैं जिन पर खतरा मंडरा रहा है।"

"नहीं। अपराधी यायाती हैं और वे मरेंगे नहीं, इसलिए मामला गंभीर नहीं है। दूसरी ओर, गुलाम किसान और नाविक हैं जो अवैध रूप से अप्रवासी बनकर यहाँ आए थे। अगर वे मर जाते हैं, तो लोगों को खुशी होगी, क्योंकि लोगों को हिंसा पसंद है।"

रुक्मावरी, जो नशे में थी, बोली: "और आप्रवासी कब से निर्दोष हो गए?" फिर वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

प्रद्युमन ने आह भरी। रुक्मावती एक सभ्य स्त्री से बिल्कुल अलग हो जाएगी।

नाटककार ने शोकपूर्वक सिर हिलाया। और फिर इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, वक्ता अखाड़े के बीच में आया और बुलंद, गरजती हुई आवाज में बोलने लगा:

"देवियों और सज्जनों, महाराज," उन्होंने प्रद्युमन को प्रणाम किया, जिन्होंने विनम्रतापूर्वक अपना हाथ उठाकर उनका समर्थन किया। "हम यहाँ एक भव्य आयोजन के साक्षी बनने के लिए एकत्रित हुए हैं। सिंधु घाटी के उस महान जीव को देखने और उसका दर्शन करने के लिए। मिथकों और किंवदंतियों में वर्णित यह जीव अब साकार हो उठा है, जिसे हमारे महान राजा प्रद्युमन द्वारकीपुर की इस भूमि पर लाए हैं।"

उन्होंने प्रद्युमन की ओर अपनी भुजाएँ उठाईं और सबने उनका उपहास किया, तालियाँ बजाईं, आँखों से आँसू बहने लगे। वे प्रद्युमन से प्रेम करते थे, उन्हें उनकी तीव्र इच्छा थी। वे उनके भगवान थे, उनके रक्षक थे। आख़िरकार, वे कृष्ण के वंशज थे।

लेकिन अपने पिता की तरह वह कठोर नहीं था। वह स्वतंत्र रूप से रहता था। फिर भी वह जानता था कि बाहर के लोग अब भी उसके पिता को सम्मान की नज़र से देखते हैं और अगर वह कभी लौटता है (जो प्रद्युमन को बिल्कुल पसंद नहीं आएगा), तो उसे विस्थापित होना पड़ेगा।

“हम प्रतियोगियों का युद्ध के लिए स्वागत करते हैं।” वक्ता ने बोलना शुरू किया और अखाड़े के दूसरे छोर से, गुफाओं से कुछ दुबले-पतले पुरुष और महिलाएं तलवारें लिए बाहर आए जो उनके लिए बहुत भारी थीं। वे पाँच थे और भ्रमित दिख रहे थे।

नाटककार ने घबराहट में उनके लिए चीख मारी, जबकि प्रद्युमन ने भावहीन चेहरे से उन बेचारे लोगों को देखा।

और दूसरी तरफ से गुफा खुली और उस जीव को सिर में जंजीर बांधकर बाहर निकाला गया, और तीन ययाती भाले लिए उसे कुरेद रहे थे। लेकिन जैसे ही उस जीव को बाहर निकाला गया, उसने एक ज़ोरदार चीख मारी, जिससे वक्ता चिल्लाते हुए भाग गया: "और ये रहा सिंधु कृमि!"

पचास फीट लंबे उस कीड़े से निकली आवाज़ कर्कश और चीखने जैसी थी। सबने झुंझलाहट में अपने कान पकड़ लिए। फिर उसने अपना शरीर हिलाना शुरू किया, जो देखने में जेली जैसा लग रहा था और उसके भीतरी अंग दिखाई दे रहे थे, जिनमें से प्रत्येक मानव शरीर के आकार का था।

प्रद्युमन ने इसकी कल्पना नहीं की थी, लेकिन उसने जितनी जल्दी हो सके जंजीरों को तोड़ दिया और खुद को मुक्त कर लिया, लेकिन प्रवासियों की ओर दौड़ने के बजाय, उसने तुरंत खुद को रेतीली जमीन के अंदर गाड़ लिया और खुद को अज्ञात बना लिया।

हर कोई दहशत में चीख रहा था, क्योंकि वह अचानक गायब हो गया था।

“मुझे लगता है कि अब आपके प्रवेश करने का समय है,” नाटककार ने घबराते हुए कहा। “और यह भी ध्यान रखें कि वह आपको खा न ले, क्योंकि उसकी लार बहुत जहरीली होती है और आपकी त्वचा को जला सकती है। भले ही आप बच जाएं, लेकिन आपकी सुंदरता छिन जाएगी।”

एक पल के लिए, प्रद्युमन को वे शब्द मृत्यु से भी बदतर लगे।

प्रद्युमन ने सिर हिलाया, भौंहें चढ़ाते हुए उसने अपने बगल में खड़े सिपाही से धनुष और बाण ले लिए। धनुष अलंकृत और सुनहरे रंग का था, जिस पर आशा की चांदी की रेखाएं बनी हुई थीं।

और इससे पहले कि वह राजा की बालकनी से कूदकर अखाड़े में प्रवेश कर पाता, कीड़ा अचानक प्रकट हुआ और सबको चौंका दिया। उसका मुँह चौड़ा खुल गया और उसने उन प्रवासियों को निगल लिया जिन्हें हमले का अंदाज़ा भी नहीं था। चबाए हुए शरीर कीड़े की पारदर्शी, चिपचिपी त्वचा से होकर गुज़र रहे थे।

प्रद्युमन मैदान में लुढ़कता हुआ आया और भीड़ ने उसके प्रवेश पर उसका उपहास उड़ाया। उसके चेहरे पर एक मुस्कान थी, मानो वह यह दर्शाना चाहता हो कि जीत पहले से ही उसकी है। कीड़ा उसकी ओर मुड़ा और वही चीखने जैसी आवाज़ निकाली, उसके मुँह से चिपचिपा पदार्थ बाहर निकला।

“इधर आओ, बड़े बूढ़े मूर्ख!” प्रद्युमन चिल्लाया।

और कीड़ा मानो सुन रहा हो, हरकत करने लगा। तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए, वह प्रद्युमन की ओर झपटने लगा, जिसने खुद को एक कोने में धकेल दिया, लुढ़कते हुए, तीर निकाला और उसे कमान पर कसकर बांधा, फिर तीर को सीधे कीड़े की ओर घुमा दिया।

लेकिन उस प्राणी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और धरती को कांपने देते हुए एक बार फिर भूभाग के भीतर गायब हो गया।

प्रद्युमन अपने धनुष और बाण के साथ प्रतीक्षा कर रहा था, फिर वह सीधे जलते हुए दीपों की ओर बढ़ा और अपने बाणों को तेल में डुबोकर प्रज्वलित किया, जिसके लिए उसके पास एक थैली थी।

वह प्राणी उसके पीछे लड़खड़ाते हुए आया, और जैसे ही वह आया, उसने आग के तीर सीधे उस प्राणी की ओर चलाए, जो उसके पारदर्शी चमड़ी के आर-पार दिखाई दे रहे दिल पर जा लगे। आग जलती हुई अंदर तक घुस गई, जिससे वह कीड़ा जोर से चिल्लाया और मंडप से टकराकर जमीन पर गिर पड़ा।

प्रद्युमन मुस्कुराया और खिलखिलाते हुए उसने अपना धनुष उठाया, और उसे अपने चारों ओर तालियों की आवाज सुनाई दी।

जैसे-जैसे उसके पीछे तालियों की आवाज धीमी होती गई, वह गुलामों के कमरों की ओर बढ़ने लगा, जो मेहराबों के नीचे थे। हर कदम के साथ आवाज कम होती जा रही थी, और जैसे-जैसे वह पीछे की ओर धूल उड़ाता गया, धूल भी घूमती जा रही थी।

प्रद्युम्न दास-शय्या पर पहुँचे और उनके आदमियों ने उनका कवच और हथियार छीन लिए तथा उन्हें एक चोगा पहना दिया। उन्होंने द्वारका आए विदेशी प्रवासियों को देखा, जो लोहे के बक्सों या हथकड़ियों में जकड़े हुए थे। उन्होंने उन पर ध्यान नहीं दिया और फिर से ऊपर जाने का फैसला किया, जहाँ उनकी पत्नी के बगल में उनका आसन था। तभी उन्होंने छोटे बालों, बैंगनी आँखों और होठों पर मुस्कान लिए एक जानी-पहचानी आकृति को अपनी ओर आते देखा। उनका रंग सांवला था और उन्होंने एक लंबा गाउन ओढ़ा हुआ था। उनके सैनिक उनके बगल में खड़े थे, जो उनकी ही तरह विशिष्ट रूप से रंगीन थे, जैसे कि सभी तालजन होते हैं।

"दुर्गाज्योति? तुम ऊपर क्यों नहीं हो?" प्रद्युम्न ने पूछा.

“क्योंकि मुझे पता था कि तुम आखिरकार यहाँ आ ही जाओगे। सोचा ऊपर जाने में ऊर्जा क्यों बर्बाद करूं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। लेकिन उसकी मुस्कान भ्रामक थी।

“क्या हुआ?” वह उस भाव को किसी और से ज़्यादा अच्छी तरह जानता था।

"जैसा कि आप जानते हैं, मेरे जासूस हर जगह हैं," उसने कहा।

"जी हां, बिल्कुल।"

“हमारे सामने एक समस्या है,” उसने आगे कहा। “मेरे एक जासूस ने द्वारकीपुर की सीमा पर एक छोटे से गाँव में आपके कुष्ठ रोगी भाई को उसके कुछ वफादारों के साथ देखा।”

प्रद्युमन ने धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए कहा, "वह जहाँ चाहे वहाँ जाने के लिए स्वतंत्र है।"

“मुझे पता है। लेकिन इरादे मायने रखते हैं, मेरे स्वामी। आखिरकार, वह किसी चीज़ की तलाश में है, या यूँ कहूँ कि... किसी व्यक्ति की तलाश में है।”

उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। "तुम क्या कहना चाह रहे हो?" उसने पूछा।

फिर उसने दुर्गाज्योति के चेहरे पर मुस्कान की हल्की सी झलक देखी, मानो उसके मन में मृत्यु से भी बदतर सैकड़ों सजाएँ चल रही हों। उसने सिर हिलाकर कहा, "चलो पहले उसे पकड़

लेते हैं।"

3

हाय! समय की बर्बादी।

बलराम ने देखा कि उसके सामने खड़े लोग पूरी तरह से असहमत थे, वे आपस में झगड़ रहे थे और लड़ रहे थे, और वह उन्हें ऊब के साथ देख रहा था।

उनमें से एक ने कहा, "उसने मेरी पत्नी को ले लिया और बदले में मुझे शराब दी। मानो मेरी पत्नी किसी पेय पदार्थ के बराबर हो।"

“वाह, तुमने तो उसके बजाय शराब को ही चुना, शराबी मूर्ख!” दूसरे ने कहा।

बलराम झगड़ा देख रहे थे और द्वारकीपुर के प्रधानमंत्री होने के नाते नागरिकों से जुड़े मामलों में समय निकालकर विवादों को सुलझाना उनका कर्तव्य था। उन्हें अपने काम का यह हिस्सा पसंद नहीं था, लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं था।

वहां कतार में अन्य लोग भी खड़े थे, जो प्रधानमंत्री द्वारा उनसे पहले के लोगों के विवाद को सुलझाने का इंतजार कर रहे थे, ताकि उनकी समस्या का समाधान हो सके।

बलराम जानता था कि प्रद्युमन उस अखाड़े में मौजूद है जहाँ उस विशालकाय जीव से लड़ाई चल रही थी। पिछली बार एक कृपाण-दांत वाला जीव था और अब उसने सुना था कि एक हाथी जितना बड़ा और पर्वतीय वृक्षों जितना ऊँचा कीड़ा लाया गया है।

“क्या समस्या है, कृपया?” बलराम ने अपने गंजे सिर पर हाथ फेरा और विनती सुनने के लिए आगे झुक गया।

विश्वासघात का शिकार हुए पति ने कहा, “समस्या मेरी नहीं है। वह मेरी पत्नी को ले गया और उसने सोचा कि यह बिल्कुल ठीक है। खैर, मैंने उन्हें एक सुअर के फार्म में नग्न अवस्था में पाया, महाराज।”

“उन भयावह विवरणों की कोई आवश्यकता नहीं है,” बलराम ने जोर देकर कहा।

“क्योंकि वह उसे पीटता था।” दूसरे ने गुस्से से कहा।

मैं यहां घरेलू मुद्दों को सुलझाने नहीं आया हूं। मुझे पता चला है कि इस कहानी में और भी बहुत कुछ है।

“जी हां, बिल्कुल।” ठगे गए पति ने गर्व से कहा। “लगता है मेरे पिता एक निर्दयी व्यक्ति थे और हमारी ज़मीन, खुबानी का बड़ा खेत, वसीयत में मेरे पोते को दे दी गई थी। मज़े की बात यह है कि जो बच्चा पैदा हुआ है, वह मुझे अपना नहीं लगता।” वह दूसरे लड़के की ओर मुड़ा। “लेकिन मुझे पता है कि वह मेरा ही है।”

“ना-ना!” उस आदमी ने चिल्लाकर कहा। “यह तुम्हारा नहीं है। यह मेरा है।”

और वे आपस में झगड़ने लगे, उनकी आवाज़ें लड़खड़ाने लगीं और बलराम असमंजस में उन्हें देखता रहा। यह संपत्ति का विवाद था। उसने मुड़कर देखा तो राजा के सेनापति अकुरजी गलियारे के कोने से लोगों को पार करते हुए आ रहे थे, उनकी कुल्हाड़ी म्यान में थी और उनकी घनी भूरी दाढ़ी तेल की चमक से दमक रही थी।

वह बलराम के बगल में झुक गया और फुसफुसाते हुए बोला, “दिनदहाड़े पांच निर्दोषों की हत्या कर दी गई। वे अप्रवासी थे।”

“प्रद्युमन?” बलराम को यह नहीं पूछना चाहिए था। उन्हें तो पहले से ही पता होना चाहिए था।

“वह अपनी प्रसिद्धि के लिए और भी बलिदान देने की योजना बना रहा है,” अकोरजी ने कहा। “और अपने आकर्षण के लिए भी।”

बलराम ने आह भरी। उन्होंने सामने हो रही लड़ाई को देखा और अकोरजी से पूछा, "धर्मा का क्या हुआ?"

“यह कुरुक्षेत्र में मर गया।”

उन शब्दों का उस पर गहरा असर हुआ और एक अशुभ आशंका का आभास हुआ।

“चलो चलते हैं,” बलराम ने कहा। “हमें एक बैठक में जाना है।”

*

बलराम के सन्नाटे वाले कमरे में प्रवेश करते ही सबसे पहले लाठी के जमीन पर पटकने की आवाज सुनाई दी।

आवाज गूंजी और भगवान कृष्ण के गंजे भाई एक विशालकाय आकृति के साथ खड़े हो गए। उनका शरीर पहलवान जैसा था, भुजाएँ विशाल और कंधे घावों और दरारों से भरे हुए थे। लेकिन उनकी आँखें एक बुद्धिमान व्यक्ति जैसी थीं, अपने भाई की तरह नीली। एक चीज़ जो सबसे अलग थी, वह थी उनकी टांग। ठीक कहें तो उनकी दाहिनी टांग। वह दूसरी टांग जितनी मांसल नहीं थी और बचपन से ही उसमें एक तरह का लकवा था। तब से वे किसी चीज़ का सहारा लेते थे। इस बार, वह अपनी लाठी का सहारा ले रहे थे। एक साधारण, अलंकृत लाठी, जिसका घुमावदार सिरा जरूरत पड़ने पर हथियार के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता था।

जैसे अभी।

बलराम जानता था कि उस अंधेरे कमरे में, जहाँ जलती हुई आग की बत्ती की रोशनी थी, मौजूद सात लोगों में से कोई एक गद्दार हो सकता है। ऐसी संभावना हमेशा बनी रहती थी। क्योंकि वह यहाँ जो कर रहा था, वह किसी भी मनुष्य द्वारा किए जा सकने वाले पाप से कहीं अधिक जघन्य था।

यह राजद्रोह था।

अपने ही राजा के विरुद्ध एक कृत्य। और एक तख्तापलट की साजिश जो द्वारका का चेहरा बदल देगी।

उसने उन आदमियों को देखा। सभी शराब पी रहे थे और ऐसे व्यवहार कर रहे थे मानो कोई सामाजिक क्लब हो, जबकि वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं था। वहाँ शरीयत, भोज, अवंती और सातवत संप्रदायों के पार्षद थे। हर पार्षद को उस प्यारे बूढ़े राजा प्रद्युमन से कोई न कोई शिकायत थी।

केवल दो जनजातियाँ, वृष्णि और अंधक, परिषद में उपस्थित नहीं थीं। उन्होंने प्रद्युमन से दूरी बना ली थी और रत्वाक पहाड़ियों के निकट अपने-अपने कबीले बसा लिए थे। लेकिन उनके बीच आपस में समस्याएँ थीं और वे लड़ते रहते थे। प्रद्युमन आसानी से वहाँ जाकर उन्हें जीत सकते थे

और अपने साम्राज्य का हिस्सा बना सकते थे, लेकिन उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं थी। इससे उनकी छवि अनावश्यक रूप से धूमिल होती और उन्हें बहुत से लोगों को निर्वासन में भेजना पड़ता।

"मुझे लगता है आपने मेरे बिना ही शुरू कर दिया है," बलराम ने मुस्कुराते हुए कहा। "चर्चा का विषय क्या है?"

"हाल की घटना।" पार्षदों में से एक अचानक बोल पड़ा। "क्या आपने सुना कि कैसे उसने कुछ लोगों को बेरहमी से उत्पात मचाने दिया, सिर्फ इसलिए कि वह अपनी शान दिखाना चाहता था? मुझे लगता है कि उसे बर्बाद करने के लिए हमें उसकी छवि खराब करनी होगी, यही हमें करना होगा।"

बलराम ने यह योजना कई बार सुनी थी। प्रद्युमन को नष्ट करने का कायरतापूर्ण तरीका। बलराम ऐसे दिखावे में विश्वास नहीं करते थे। वे ऐसे व्यक्ति थे जो आक्रमण की अग्रिम पंक्ति में जाकर अपनी जान की बाजी लगा देते थे। उनकी नजर राजा के सेनापति, बलराम के वफादार अकुरजी पर पड़ी, जिनकी भूरी दाढ़ी हल्की थी और पीछे की ओर बांस की डोरी की तरह बंधी चोटी थी। अकुरजी टिप्पणियों पर मुस्कुरा रहे थे।

"मजेदार बात यह है," बलराम ने बात शुरू करते हुए कहा, "कि जब मैंने आप सभी को एक जगह इकट्ठा किया था, तो मुझे यह भ्रम था कि हम इस भ्रष्ट शासन के खिलाफ क्रांतिकारी हैं। अब मुझे लगने लगा है कि हम सिर्फ गपशप करने वाले हैं।"

भीड़ में मौजूद सभी लोग आपस में फुसफुसाने लगे। कोने में अकोरजी हाथ जोड़कर खड़े थे।

"और अगर हम यह नहीं कर सकते तो क्या करें? हम सिर्फ योजना बना सकते हैं। अगर सेना हमारे साथ नहीं है, तो हमें ऐसे काम करने पड़ेंगे।" किसी और ने कहा।

"हम तो बस बातें करते रहते हैं। बातें करते हैं, गपशप करते हैं, शराब पीते हैं, घर जाकर अपनी पत्नियों के साथ सोते हैं," बलराम अचानक बोल पड़ा। "आप एक बात में सही हैं। हमें सेना की ज़रूरत है और जब मैंने आप सबको इकट्ठा किया था, तो मुझे विश्वास था कि आप अपनी सेना लाएँगे। आप सबके पास अपनी ज़मीनें हैं, अपने सैनिक हैं, फिर भी आप उनका इस्तेमाल नहीं करते।"

"उन सभी ने राजा के प्रति शपथ ली थी," पार्षद ने कहा। "यदि मैं दोबारा पूछूँ, तो आप क्या सुझाव देते हैं कि हमें क्या करना चाहिए?"

बलराम काफी देर से इस बारे में सोच रहे थे। बड़बड़ाते और विचार करते हुए उन्होंने अपनी लाठी फिर से पटकी, और चारों ओर देखते हुए अपना चेहरा घुमाया। "जब प्रद्युमन राजा बने, तो मैं खुश था। मेरा भतीजा, मेरा खून, सिंहासन पर बैठा था, ताज पहने हुए था। लेकिन जैसे-जैसे उन्होंने शासन किया, उन्होंने ऐसे काम करने शुरू कर दिए जो मेरे भाई की इच्छाओं के बिल्कुल खिलाफ थे। मेरा भाई एक बुद्धिमान व्यक्ति था, जितना कहा जा सकता है उतना चतुर। और वह शक्तिशाली भी था। बहुत शक्तिशाली। लेकिन उनमें एक ऐसी दुर्गुण थी जो शायद प्रद्युमन में भी आई: वह मानते थे कि हमें अपनी कमियों में आनंद लेना चाहिए। आदर्श राज्य की कल्पना में उनका विश्वास नहीं था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वह उसे हासिल करना नहीं चाहते

थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद, उन्होंने बहुत प्रयास किए और अब जब प्रद्युमन शासन कर रहे हैं, तो सब व्यर्थ हो गया है। वह प्रयास ही नहीं करते। मैं उस लड़के की बहादुरी की तारीफ करूंगा क्योंकि वह मेरे भाई की तरह दिखावा नहीं करता। लेकिन मैं जानता हूं कि उसके शासन में राज्य नष्ट हो जाएगा।"

पार्षद कहानी सुन रहे थे, हालांकि उनके द्वारा दिए गए आखिरी बयान से वे पूरी तरह से आहत थे, जिसमें उन्होंने उन्हें बिल्कुल बेकार कहा था।

उनमें से एक ने कहा, "मुझे बताओ, अगर वह नहीं, तो फिर कौन शासन करेगा? तुम?"

"नहीं। हमें एकजुट नहीं होना चाहिए। हमें अलग-अलग रहना चाहिए। अपनी-अपनी ज़मीनें और अपने-अपने राज्य बनाओ। एकीकरण ने हमें यहाँ तक पहुँचाया है। अंधकों और वृष्णियों को देखो। वे हमसे कहीं अधिक समृद्ध हैं। क्यों? क्योंकि वे आपस में गंदी राजनीति नहीं करते। वे किसी भी चीज़ से ज़्यादा अपना भला चाहते हैं।"

बलराम ये सब बातें कहता था, हालांकि वो इस बात को मानता था कि वो इन बातों पर विश्वास करता है। वो राजा बनना नहीं चाहता था। उसने कभी खुद को एक योग्य राजा नहीं समझा था। लेकिन बात इससे कहीं बढ़कर थी। वो उस धरती के लिए न्याय करना चाहता था जिसे उसने अपना बना लिया था।

और वह उस व्यक्ति के प्रति न्याय करना चाहता था जिसने इसे बनाया था—कृष्ण।

बलराम ने कई खोज दल भेजे, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। वह आदमी गायब हो गया था—क्यों, उसे खुद भी इसका कोई अंदाजा नहीं था।

"कितने उदार व्यक्ति हैं आप।" पार्षद ने व्यंग्यपूर्वक कहा। "कुछ तो बताइए, आपकी योजना क्या है?"

"काश मैंने ये काम महीनों पहले कर लिया होता," बलराम ने खिड़की की ओर बढ़ते हुए और बर्फ से ढकी पहाड़ियों के विशाल विस्तार को देखते हुए कहा। "मुझे एक सेना जुटानी चाहिए थी। अंधकों और वृष्णियों के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित करने चाहिए थे और उन्हें वापस लाकर हमारा समर्थन हासिल करना चाहिए था।"

सबने एक-दूसरे की तरफ देखा।

"क्योंकि उन्होंने अपने राजा के प्रति निष्ठा की शपथ नहीं ली है, तो यही बेहतर है।" बलराम ने कहा, किसी भी संभावित विरोध की प्रतीक्षा करते हुए, लेकिन उसे कोई विरोध नहीं दिखा, क्योंकि वह जानता था कि यह एक समझदारी भरा कदम है। "अकुरजी, वैसे, प्यारे बूढ़े सेनापति ने आपके घरों के आसपास रास्ते में कुछ जासूस लगा रखे हैं, इसलिए मेरे जाने के बाद और अगर मुझे पता चला कि कोई मेरी बात की चुगली कर रहा है क्योंकि अब आप मेरे विचार पर विश्वास नहीं करते, तो आपको रोका जाएगा, घायल किया जाएगा और दंडित किया जाएगा।"

कुछ पार्षदों ने दबी हंसी हंसी, जबकि अन्य भय से सफेद पड़ गए।

"क्या आपको हम पर भरोसा नहीं है, प्रधानमंत्री जी?" पार्षदों ने पूछा।

बलराम मुस्कुराया। "बुरा मत मानना। मैंने इस दुनिया में कभी किसी पर भरोसा नहीं किया।"

इतना कहकर वह बाहर निकल गया, और अकुरजी धुंधले गलियारे में उसके पीछे-पीछे चल

रहा था। वे चुपचाप गली में चलते हुए उस किले से बाहर निकले जो असल में एक वेश्यालय था। बलराम जानता था कि ये बैठकें करने के लिए यह एकदम सही जगह है, क्योंकि किसी को शक नहीं होगा।

"क्या आपको यकीन है कि आपने उन्हें योजना बताकर सही काम किया?" अकोरजी ने पूछा।

"हाँ," बलराम रुक गया। वह हर चीज़ से, जीवन से, ऊब चुका था। वह आराम करना चाहता था, लेकिन उसे सही काम भी करना था। "ऐसा करने से तुम्हें पता चल जाएगा कि न्याय के दिन कौन खड़ा रहेगा और कौन नहीं।"

लेकिन क्या मैं तुम्हारे साथ चलूंगा?

बलराम ने सिर हिलाया। "मेरे मित्र, जहाँ हम जा रहे हैं... मुझे अपने साथ हर भरोसेमंद व्यक्ति की ज़रूरत है। क्योंकि जिन जनजातियों से हम मिलेंगे... वे हमें मृत्यु से भी बदतर सज़ाएँ देंगी।"

4

मुझे खुद से नफरत है।

समवा ने छोटे से तालाब में अपने चेहरे का प्रतिबिंब देखते हुए सोचा। वे उस स्थान के पास ही ठहरे हुए थे जहाँ कथित तौर पर कृष्ण छिपे हुए थे। शिविर लगा दिया गया था। प्रकाश चमक रहा था। धुएँ के हल्के-हल्के गुबार आकाश की ओर चक्कर लगा रहे थे। बुलबुल की आवाज़, मेंढकों की टर्राहट और उल्लू की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वहाँ एक संकरी घाटी थी जो अपने आप में टेढ़ी-मेढ़ी और कंटीली थी, पृष्ठभूमि में बर्फ से ढकी पहाड़ियों की एक सुंदर जोड़ी थी।

"महाराज, क्या आपको यकीन है कि वह कुछ नहीं बोलेगा?" उसके तीन सैनिकों में से एक ने पूछा, जो एक कटा हुआ मुर्गा भून रहे थे। "मुझे पूरा यकीन है कि वह बोलेगा।"

समवा ने तालाब में फिर से अपना चेहरा देखा। उसका चेहरा... भयानक था। उसने अपना लोहे का मुखौटा उतार दिया था, और उस पर बने छोटे-छोटे उभरे हुए निशान साफ दिख रहे थे। त्वचा फटी हुई और सूखी थी। हर जगह यही हाल था। उसे कुष्ठ रोग हो गया था।

और इसी वजह से उसे शाप मिला। उसके अपने पिता द्वारा।

उसने जो किया वो मामूली बात नहीं थी, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण था। बल्कि बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण। वह अपने पिता को इसके बारे में बताना चाहता था। उसने ऐसा क्यों किया। उसने हत्या क्यों की। उसने लाश को वहीं सूखी जगह पर क्यों छोड़ दिया।

उसने अपने पिता की कई पत्नियों में से एक की हत्या क्यों की?

लेकिन वह कभी ऐसा कर नहीं पाया।

आह भरते हुए समवा ने कहा, "वह कर सकता है। लेकिन उस पर कौन विश्वास करेगा?"

"हमें उसे वैसे ही मार डालना चाहिए था जैसा हमने तय किया था।" एक और सैनिक नींद से भरी आवाज में उठा। "वह क्या कर सकता था?"

"हत्या करना हमेशा एक विकल्प नहीं होता," समवा ने कहा।

"और फिर भी हम उसी रास्ते पर हैं।" सिपाही हँस पड़ा।

हाँ। वह रास्ता। वे कहाँ जा रहे थे। वे जो कर रहे थे, वह क्यों कर रहे थे। इसके पीछे एक कारण था। सामवा ने अपने सैनिकों को मना लिया था। उसने उनसे कहा था कि यह करना ही होगा। और उन्हें इसी रास्ते पर चलना होगा, नहीं तो सब नरक में चले जाएँगे।

उसमें इतना रहस्य था कि वह अपने बारे में बात नहीं करना चाहता था और वह फुसफुसाहट और चुप्पी में ही रहता था।

"हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह व्यापक हित के लिए है," समवा ने कहा। "हम कुछ बनाने के लिए विनाश कर रहे हैं। जो हम सभी से कहीं अधिक महान है।"

सभी सैनिक—जो कभी छोटे-मोटे चोर, कसाई और समुद्री लुटेरे हुआ करते थे—अब सामवा के अधीन थे, जिसे बाद में लोहे के मुखौटे वाले कुष्ठ रोगी के नाम से जाना जाने लगा। कुछ लोग तो यह भी कहते थे कि कृष्ण का सुंदर चेहरा सामवा में कहीं छिपा हुआ था, और कुछ तो यह भी

कहते थे कि वह कृष्ण का पुत्र ही नहीं था।

“मैं अब यहीं रुकता हूँ,” उसने कहा। “और हम कल पश्चिम की ओर जाने के लिए अपनी घोड़ियों को चुनेंगे।”

“भगवान कृष्ण के दर्शन से ठीक एक दिन पहले,” सैनिकों में से एक चीखते हुए बोला। वह सबसे छोटा था। उसका सिर गोल-मटोल और ठुड्डी उभरी हुई थी। उसकी आँखें भालू जैसी चमकीली थीं। “मैं बहुत उत्साहित हूँ। मैंने उन्हें केवल एक बार देखा है, जब वे बालकनी से दर्शन देने के लिए निकले और फिर गायब हो गए।”

“तुम्हारे जीवन के लिए उन्होंने अपनी दिव्यता का त्याग कर दिया,” एक अन्य सैनिक, एक खूंखार सैनिक ने कहा। “हम उन्हीं की वजह से अजेय हैं। यह उनका दिया हुआ उपहार है...”

“जो एक अभिशाप बन गया,” समवा ने बीच में ही फुसफुसाते हुए कहा। उसके सीने में बहुत तेज़ दर्द हो रहा था और वह हर बात पर सवाल उठा रहा था। लेकिन सब ठीक था।

वह सोने के लिए अपने तंबू की ओर जाने लगा, लेकिन उससे पहले उसने पेशाब करने का फैसला किया। इसलिए वह ढलान पर चलने लगा और पेशाब करने की योजना बना रहा था कि तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी। चारों ओर इतनी शांति थी कि उसे लगा जैसे किसी चीज़ ने उसकी गर्दन को जकड़ लिया हो, उसका गला चमकते हुए चाँदी के करीब आ गया हो।

वह एक धारदार हथियार था।

“यह कौन है?” समवा ने निडर होकर पूछा, लेकिन उसे अपनी गर्दन के पास किसी के सांस लेने की आवाज सुनाई दे रही थी।

"मैं किसी कम महत्वपूर्ण व्यक्ति को भेज सकता था, लेकिन मेरा मानना है कि रक्त के साथ विश्वासघात करने वाले को स्वयं उस रक्त का साक्षी होना चाहिए।"

आवाज बहुत जानी-पहचानी थी।

“प्रद्युमन।”

"अच्छा, मुझे याद है ना? वही जिसे तुम धोखा देने की योजना बना रहे हो।"

"दूर जाओ!"

"ओह, तो बड़े भाई या बहन से ऐसे बात करते हैं?"

"क्या तुम्हें लगता है कि तुम मुझे चाकू से डरा सकते हो? हम अजेय हैं, क्या तुम भूल गए हो?"

"लेकिन इससे निश्चित रूप से दर्द होगा और ठीक होने में समय लगेगा, क्योंकि मैं तुम्हें जितना हो सके उतना गहरा छुरा घोंपूंगा।"

और फिर वह ऐसा करने ही वाला था कि समवा ने उसे खींचकर ज़मीन पर पटक दिया। हालाँकि वह प्रद्युमन से ज़्यादा कुबड़ा और कद में छोटा था, फिर भी वह ज़्यादा चौड़ा और मांसपेशियों वाला था। उसका शरीर उसके मामा बलराम जैसा था।

उसने प्रद्युमन की ओर देखा और पाया कि वह एक हुड पहने हुए था, जिसे उसने उतार दिया, क्योंकि उसके पीछे की खाई चुपचाप सरसरा रही थी।

हवा का झोंका आया और उसका चेहरा दिखाई दिया, होठों पर मुस्कान थी और सिर पर

ओढ़ा हुआ हुड पीछे हट गया था। उसकी आँखों में खुशी झलक रही थी और उसकी मुस्कान किसी भी स्त्री को मोहित करने के लिए काफी थी।

“तुम्हें पता है, जब मुझे पता चला कि तुम कहाँ जा रहे हो, तो मैं अपनी सेना तुम्हारे लिए भेज सकता था। लेकिन ऐसा करना...” वह उसके चारों ओर घूमते हुए बोलने लगा, “...बहुत निष्क्रिय, बहुत पिता जैसा होता। वह अपने सिंहासन पर बैठकर आदेश देते। मैं नहीं। नहीं।” उसने अपना सिर हिलाया। “मैंने सोचा कि मैं अकेला जाऊँगा और सबको वापस लाऊँगा, या शायद तुम सबको ज़मीन में गहराई में दफ़न कर दूँगा ताकि गिद्धों का सामना करना पड़े।”

समवा जानती थी कि इसकी प्रबल संभावना है। "मैं सही काम कर रही हूँ।"

"पिताजी को ढूंढकर और उनसे वापस आने के लिए कहकर, ताकि आप मुझे हटा सकें?"

समवा ने सोचा, उसे मेरी योजना का पता नहीं है। उसे इस बात की खुशी थी कि प्रद्युमन को इसका आधा ही पता था। पिता को प्रद्युमन को हटाने के लिए मनाना बचकाना और मूर्खतापूर्ण इच्छा थी, जो केवल प्रद्युमन ही सोच सकता था। वह एक ऐसा लड़का था जो कभी बड़ा नहीं हुआ, अधिकार और सत्ता का भूखा था, जो पाँच साल की उम्र तक अपनी माँ का दूध पीता रहा और जिसने समवा के कुत्तों के झुंड को सिर्फ इसलिए मार डाला क्योंकि उसे उसके पिल्ले नहीं मिले।

“लेकिन वह वापस नहीं लौटेगा। क्योंकि अगर उसे लौटना ही होता, तो वह कई साल पहले ही लौट चुका होता,” प्रद्युमन ने कहा। “भाई, हम सफलता और समृद्धि के शिखर पर हैं। तुम क्यों नहीं समझते? व्यापार पहले से कहीं बेहतर है, हर कोई हमसे डरता है, ससानिद और बीजान्टिन साम्राज्य के साथ हमारे संबंध आग की तरह फैल रहे हैं और इंद्रप्रस्थ कूटनीतिक रूप से हमारा समर्थन कर रहा है।”

लेकिन बस एक समस्या है।

“यह क्या है?”

“प्रद्युम्न, तुम कगार पर हो,” समवा ने कहा। “तुम्हें बस एक मौका चाहिए और फिर तुम पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त करने से बच सकते हो।”

“मैं कर सकता हूँ, लेकिन मैं नहीं करूँगा। आप जानते हैं कि हम जीतेंगे। हमें मारा नहीं जा सकता। लेकिन मैं अपनी असीमित शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहता। मैं दुनिया पर राज नहीं करना चाहता।”

"अभी तो आप यही कह रहे हैं, लेकिन नाग साम्राज्य पर विजय के बारे में क्या? आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी।"

“मानी परिवार हमारे कुछ सहयोगियों के लिए महत्वपूर्ण था। मुझे उन्हें यह बात समझानी पड़ी।”

“मानवाधिकार। यही समस्या है। आप हजारों लोगों का नरसंहार करेंगे और मैं चुपचाप खड़े होकर यह सब होते हुए नहीं देख सकता।”

प्रद्युमन ने सिर खुजाते हुए आह भरी। "प्रगति निर्दोषों के रक्तपात की कीमत पर ही मिलती है।"

“कौन कहता है?”

प्रद्युम्न ने अपनी भौंहें उठाईं, और ऊनी वस्त्र से अपनी काली तलवार बाहर निकाली। "इतिहास।" और फिर उसने तलवार के साथ आगे की ओर छलांग लगाई।

समवा को पीछे हटने में कुछ समय लगा, उसकी प्रतिक्रियाएँ बेकाबू हो गई थीं और उसने वही किया जो कोई भी करता: उसने अपनी बाहें ऊपर उठाईं और उन्हें काले पत्थर की तलवार से काटने की कोशिश की। उसकी कलाई नीचे गिरी और उसके शरीर में तीव्र दर्द की लहर दौड़ गई।

“ओह, इसे बढ़ने में समय लगेगा।” प्रद्युमन हँसते हुए तलवार को समवा की छाती के पास ले आया, लेकिन समवा बस लुढ़क गया, उसकी बांह से खून बहने लगा, या कहें कि उसके बचे हुए हिस्से से।

उसका दाहिना हाथ ही उसका मुख्य हाथ था और वह कट चुका था। वह मन ही मन बड़बड़ाता और कोसता हुआ उस तंबू की ओर बढ़ा जहाँ उसके सैनिक उसकी रक्षा के लिए मौजूद थे। वह जानता था कि वह सर्वकालिक महान योद्धा प्रद्युमन से लड़ने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं है। और वह ठीक से तलवार भी नहीं उठा सकता था। वह धनुष-बाण भी नहीं पकड़ सकता था। वह बिल्कुल नौसिखिया था और वह यह बात अच्छी तरह जानता था।

जैसे ही उसने अपने पीछे अपने क्रोधित भाई की आवाज सुनी, वह तंबू की ओर भागा:

मैं तुम्हारे इतने टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा कि जब तक तुम ठीक हो पाओगे, तब तक तुम्हारे पिता को देखने की उम्मीद ही खत्म हो जाएगी।

उस समय उसके दिमाग में सैकड़ों बातें चल रही थीं और वह बेहद परेशान और गुस्से में लग रहा था। लेकिन दुखी भी। वह हार मान लेना चाहता था, पर वह जीत के बेहद करीब था।

वह तम्बू में आया, और उसने अपने आदमियों को ठीक उसी हालत में देखा जैसा उसने सोचा था। धड़ से अलग। अंग बिखरे हुए। वे सब बेहोश थे। वे आखिरकार होश में आ जाएँगे, लेकिन तब तक प्रद्युमन उनके शवों को अलग-अलग जगहों पर, ज्वालामुखियों के अंदर या समुद्र की गहराई में फेंक देगा।

उसे अपने भीतर भय बढ़ता हुआ महसूस हो रहा था।

“तुम हमेशा की तरह भाग नहीं सकते, छोटे राक्षस। माँ तुम्हें हमेशा से नापसंद करती थी।” प्रद्युमन की आवाज़ पास ही से आई, जब उसने अपनी तलवार से समवा पर वार किया, जिसकी आँखों में आँसू आ गए। “पिताजी तुमसे घृणा करते थे। तुम एक शाही, सुंदर वंश में पैदा हुए अवांछित भिखारी हो। और मैंने तुम्हें ज़िंदा रहने दिया। मुझे पता होना चाहिए था कि तुम्हारे पास एक खंजर है, जो मुझे मारने के लिए तैयार है।”

“तुम नहीं समझते। यह हम सब से कहीं बड़ा है।”

प्रद्युमन ने आंखें घुमाईं। "तलवार निकालने के लिए मैं तुम्हें एक पल का समय देता हूं। तुम इसे बहुत आसान बना रहे हो।"

समवा ने ऐसा ही किया। उसने तलवार निकाली और वहीं खड़ा हो गया। उसके हाथ कांप रहे थे। उसने बगल में मुड़कर देखा तो एक घोड़ी सवार होने का इंतज़ार कर रही थी और पूरब की ओर खड़ी थी। प्रद्युमन आगे बढ़ा और समवा ने अपनी तलवार से उसकी तलवार को रोक दिया।

“पिताजी ने कहा, जैसे ही उन्होंने देखा कि तुमने अपने उस भयानक मुखौटे के पीछे क्या छिपा रखा है, उन्हें तुम्हें उसी क्षण मार देना चाहिए था।”

“यह मेरी गलती नहीं थी। उसने मुझे गाली दी।”

"छी! ये तो तुम्हारे कर्मों का फल था। तुमने उसकी पत्नी को मार डाला।"

“नहीं,” उसने कहा। “यह श्राप के कारण था।”

“कौन सा अभिशाप?”

“उन्होंने मुझे सज़ा दी। पिताजी।” उनकी आँखों में आँसू भर आए। “मैंने जो किया उसके लिए।”

“उसने यह कैसे किया?” प्रद्युमन ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। कोने में सुलगते अंगारे।

“उसने मुझे कुष्ठ रोग के संपर्क में लाया। उसने मुझे मजबूर किया और संक्रमण को मुझमें गहराई तक फैलने दिया।”

एक पल के लिए प्रद्युमन अचंभित रह गया। "वह ऐसा क्यों करेगा?"

"क्योंकि वह चाहता था कि मैं अपने अंदर की कुरूपता को देखूं और वह चाहता था कि यह हमेशा बाहर दिखाई दे।"

“तुमने उसकी पत्नी की हत्या की। अब तुम और क्या उम्मीद करते हो?”

और फिर उसने तलवार नीचे गिरा दी। गरजते काले बादलों के नीचे, दोनों तलवारों के आपस में टकराने से एक और कर्कश ध्वनि उत्पन्न हुई।

लेकिन समवा ने देर नहीं की। उसे भागना था और इसके लिए उसने तुरंत मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और प्रद्युमन के चेहरे पर फेंक दी, जिससे वह कुछ समय के लिए अंधा हो गया। समवा ने इस मौके का फायदा उठाया और अपने घोड़े को पकड़कर उस पर बैठ गया, जबकि प्रद्युमन मिट्टी के बीच से देखने की कोशिश कर रहा था।

समवा सवार हुआ। और वह सवार हो गया।

जब तक उसने स्वयं अंधकार को नहीं देख लिया।

*

उसकी नींद खुल गई।

वह बहुत देर तक सो गया था। उसकी घोड़ी पर खून लगा हुआ था, लेकिन घोड़ी उसे वहाँ ले गई जहाँ वह जाना चाहती थी। वह घोड़े से गिरकर ज़मीन पर आ गिरा। उठने की कोशिश करते हुए उसके शरीर में असहनीय दर्द हो रहा था। लड़खड़ाते हुए उसने ऊपर देखा और उसे जो दिखाई दिया वह उसे बेहद खूबसूरत लगा। वह कुछ देर पहले घटी घटना से बहुत दूर था और उसके सामने एक सुंदर कुटिया थी, सूरज नारंगी रंग का था और जंगल सामान्य से अधिक हरे-भरे थे।

जब उसने देखा कि उसका हाथ ठीक हो रहा है, तो उसने खड़े होने की कोशिश की। उसका चेहरा कमजोर और थका हुआ था, लेकिन वह अपनी घोड़ी को पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया।

उसे अपने भाई के इस तरह उसे जान से मारने की इच्छा का दर्द महसूस हो रहा था, लेकिन तब यह जायज भी था।

समवा झोपड़ी की ओर बढ़ा और उसने एक अलग खेत देखा जहाँ सैकड़ों गायें चर रही थीं। वह एक खाली मैदान था। वहाँ अस्तबल थे। वहाँ गिलहरियाँ थीं।

क्या मैं सही जगह पर हूँ?

उसने क्षितिज की ओर मुड़कर देखा; खाली मैदान में एक आदमी चल रहा था। उसके ऊपर एक साधारण कुर्ता था, उसके घने काले बाल और मोटी भूरी दाढ़ी साफ दिखाई दे रही थी। उसके चेहरे पर निशान थे, लेकिन उसकी नीली आँखें चमक रही थीं। सांवली त्वचा, बिल्कुल सामवा जैसी, और उसके हाथ में चरवाहे की लाठी थी।

"तुम कौन हो?" उस आदमी ने पूछा।

उन्हें सामवा को पहचानने में थोड़ा समय लगा, हालांकि सामवा के लिए उन्हें पहचानना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था। और जब उन्होंने सामवा को पहचाना, तो उनकी भौंहें तन गईं और उनकी आंखें नम हो गईं।

"समवा?" यह शब्द उसने हैरानी से पूछा और फिर बोला, "तुमने मुझे ढूंढ लिया!" मानो वह दिखना नहीं चाहता था।

समवा के चेहरे पर अब भी मुस्कान थी। क्योंकि उसकी यात्रा पूरी हो चुकी थी। वर्षों की खोज के बाद, वह ठीक उसी जगह पर था जहाँ उसे होना चाहिए था।

"पिताजी..." उसने कहा। "हमें किसी बात पर चर्चा करनी है।"

कुछ देर का सन्नाटा छा गया। "तुम यहाँ क्यों हो?" आवाज़ रूखी थी।

"क्योंकि..." समवा कहना चाहता था, लेकिन शब्द कठिन थे; दर्दनाक, फिर भी आवश्यक। "मैं चाहता हूँ कि तुम यायाती वंश के विरुद्ध नरसंहार करो, जो तुम्हारे ही वंशज हैं।"

दो लोग ऐसे थे जिन पर उसे भरोसा था।

अकुरजी, सेनापति और शहर में उनके सबसे वफादार व्यक्ति, और रेवती, उनकी पत्नी और उनके तीन बच्चों की माँ। और यहाँ बलराम अपने कमरे में बैठकर उन दोनों को देख रहे थे। यहाँ उन्हें सुरक्षा का एहसास हो रहा था। यहाँ उन्हें लग रहा था कि उनकी जाँच नहीं हो रही है और न ही उन्हें निशाना बनाया जा रहा है।

“अगर तुम्हें लगता है कि अभी चले जाना ही सबसे सही है, तो तुम पागल हो।” रेवती ने कहा, उसकी आँखें अपने पिता की तरह ही धूसर और तूफानी थीं। उसके बाल जूड़े में बंधे थे और उसने पूरे शरीर पर गहने पहने थे। “उन्हें अभी तुम्हारी ज़रूरत है, द्वारका द्वीप को तुम्हारी ज़रूरत है।”

बलराम ने अपने जबड़े भींच लिए। उसने अकुरजी की ओर देखा, जिन्होंने कंधे उचका दिए। बलराम से उम्र में बड़े होने के बावजूद, वे अपनी उम्र से काफी छोटे दिखते थे। उन्होंने अपने बालों को फारस की बेहतरीन दुकानों से लाए गए रंग से रंगा था।

“आप क्या सोचते हैं?” बलराम ने अकोरजी से पूछा।

“मुझे लगता है, यह महत्वपूर्ण है,” उन्होंने तुरंत कहा। “प्रधानमंत्री बलराम यहां कुश्ती के मैच देखने, बच्चों के जन्मदिन पर माला पहनाने और ऐसी नीतियां बनाने के अलावा कुछ नहीं कर रहे हैं जिनकी किसी को परवाह नहीं है।”

बलराम के दिल में एक अजीब सी चुभन महसूस हुई, लेकिन वह जानता था कि शब्द अपमानजनक थे, पर सच थे। उसने अपना शरीर दीवार से टिका लिया और अपनी बाहों से अपना सीना पकड़ लिया। उसका चेहरा भावहीन और शांत था।

“और वह यहीं सुरक्षित है,” रेवती ने निर्देश दिया। “इन सब के बीच में।”

“मेरा क्या होगा?” अब वह अपनी लंबी, सुनहरी, हल के आकार की लाठी पर झुक गया। वह एक किसान था और उसके शरीर और मांसपेशियों से यह साफ पता चलता था। “मैं ठीक हूँ। मैं पहले की तरह ही तंदुरुस्त हूँ।”

रेवती ने आंखें घुमाईं। “कमांडर अकुरजी, आपको कम से कम थोड़ी समझ तो होनी चाहिए। अंधक और वृष्णि बहुत क्रूर हैं। आप जानते ही हैं ना कि वे क्या करते हैं? वे घुसपैठियों के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं और उन्हें ज़मीन पर बिखेर देते हैं। आप शायद बच तो जाएँगे, लेकिन यह मौत से भी बदतर होगा, आपको यह भी नहीं पता होगा कि आपके अंग कहाँ हैं।”

उस स्थिति के बारे में सोचकर हंसी आ रही थी, लेकिन बलराम ने अपनी हंसी रोक ली। "मुझे लगता है मुझे जाना चाहिए। मैं वहां के शाही परिवार को जानता हूं। मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा।"

“तुम कट्टर दुश्मनों को सहयोगी बनाने की योजना बना रहे हो? भले ही वे एक पहाड़ साझा करते हों, लेकिन वे एक-दूसरे से बेहद नफरत करते हैं।” रेवती ने सिर हिलाया। “यह तो उससे

भी बदतर है जब तुमने बच्चों को भारतीय धरती पर वापस भेजने के बारे में सोचा था।"

"इसीलिए, प्रद्युमन के धन-संपन्न होने से भ्रष्ट न होने के लिए।"

"वह इतना भी बुरा नहीं है," रेवती ने कंधे उचकाते हुए कहा। "उसे बस सुधार की जरूरत है।"

बलराम जानता था कि यह एक चाची का अपने भतीजे को देखने का आदर्श तरीका था। वह प्रद्युमन में कभी कोई दोष नहीं देख पाएगी, भले ही वह किसी राक्षस से भी बदतर हो। लेकिन बलराम देखता था। वह यथार्थवादी था।

"मैं जा रहा हूँ," बलराम ने सख्ती से कहा।

"तो मैं भी।" रेवती अपने आरामदायक बिस्तर से उठी और अकोरजी की ओर देखा। "अगर आपके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं, तो मुझे आपके साथ रहना होगा।" लैवेंडर की खुशबू से महकती हुई वह उनके करीब आई और उन्हें गले लगा लिया।

बलराम अपनी हंसी नहीं रोक सका। "तुम तो मेरा ध्यान भटका दोगे।"

"अरे, मैं आपसे बेहतर राजनीतिज्ञ हूँ, महोदय। क्या आपको ऐसा नहीं लगता, अकोरजी?"

बलराम ने मुड़कर देखा तो कमांडर एक कोने में अजीब तरह से हाथ जोड़े खड़ा था।

मुझे यह बात स्वीकार करने में बुरा लग रहा है, लेकिन हाँ।

जैसे ही पृष्ठभूमि में रोशनी फीकी पड़ने लगी, बलराम ने रेवती को शरारती मुस्कान बिखेरते देखा, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। वे सब घबरा गए, और बलराम ने अकुरजी को घूरकर देखा, जो दीवार की छाया में उन दरारों में गायब हो गए जहाँ खिड़की की रोशनी नहीं पहुँच पाती थी।

बलराम ने धीरे से दरवाजा खोला, उनके करीबी विश्वासपात्र, शाही अंगरक्षक ने कहा: "महाराज, कोई है..." और उन्हें आगे कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि उनके सामने एक भव्य दृश्य था—छोटे बालों वाली स्त्री दुर्गाज्योति खड़ी थीं। बेहद सजी-धजी, सुंदर और आकर्षक, बलराम जानते थे कि वह प्रद्युमन की विशेष कृपा थीं और पहले तालजन वंश के एक राजा की रखैल थीं, जब तक कि उन्होंने धन-दौलत हासिल नहीं कर ली और संपत्ति, सेना और सबसे महत्वपूर्ण, वितीहोत्रों की मालिक बन गईं। उन्होंने यह सब इतनी जल्दी कैसे किया, यह अब भी रहस्य बना हुआ था। यह सब संयोग था और उनके चारों ओर एक रहस्य था, हालांकि वह एक अलौकिक रहस्य था।

हालांकि वह सोने की चमक से जगमगा रही थी, फिर भी उस पर अंधकार और मृत्यु की गहरी इच्छा का साया मंडरा रहा था।

"अरे, नमस्कार।" बलराम उसे पसंद नहीं करता था और न ही वह बलराम को, लेकिन उन्होंने शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। "मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?"

"क्या मैं आपसे थोड़ी देर बात कर सकती हूँ?" उसने बनावटी मुस्कान के साथ कहा।

बलराम ने सिर हिलाया। उसने अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया, जिसे देखकर उसे थोड़ा संदेह हुआ, लेकिन उसने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

"जी हाँ। क्या हम पैदल चल सकते हैं?"

उसने सिर हिलाया और वे साथ चलने लगे। एक गलियारे से दूसरे गलियारे में जाते समय

उनके कदमों की आहट और आवाज़ सुनाई दे रही थी। बलराम के लाठी पटकने की आवाज़ सुनाई दी, और उन्होंने पूछा: "मुझे यह सुख किस कारण मिला?"

“मैं आपको कुछ देने आई हूँ,” उसने कहा और अपने वस्त्रों की आस्तीनों के भीतर से एक स्क्रॉल निकाला।

खून से लथपथ।

बलराम चौंक गया, लेकिन जैसे ही उसने पांडुलिपि को पकड़ा और उसे पढ़ा, वह मन ही मन शांत हो गया। वह जानता था कि यह क्या है। वह इसे बहुत अच्छी तरह जानता था।

“मेरा मानना है कि यह राजा को सौंपा जाना था।” दुर्गाज्योति प्रधानमंत्री के मुख्य कार्यालय के सामने रुक गईं, जो एक विशाल मंडप था, जिसमें राजा के सिंहासन की तुलना में छोटा सिंहासन था।

“हां,” उसने सिर हिलाया। “जैसा कि आप जानते हैं, वह अपडेट चाहता है, लेकिन इसके लिए आपको मेरे संदेशवाहक की हत्या करने की ज़रूरत नहीं थी।”

“यह जानकर बहुत दुख हुआ कि वह ययाति नहीं था। हमने सोचा था कि हम उसे सज़ा दे सकते हैं, लेकिन हमने सिर्फ़ गला काटकर ही काम चला लिया।” वह थोड़ी देर रुकी। “लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह यह जानना चाहेगा कि उसकी सौतेली माँ दोबारा शादी कर रही है।” उसने रूखेपन से कहा। “वह राजा के लिए एक घृणित और विकर्षण थी। वह स्वस्थ नहीं थी। राजा ने उसके पहले साथी, शंबरा की हत्या कर दी थी, जिसके बाद उसने उसे देश निकाला दे दिया।”

“और फिर भी, वह अब भी उसके सपने देखता है, उसे पाने की चाह रखता है, उससे प्यार करता है और अगर वह किसी और से शादी कर ले तो वह बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। एक बेटे का जुनून। वह उसके लिए दूत भेजता है जो खाली हाथ लौटते हैं। मैंने बस यही सोचा...”

“नहीं, प्रधानमंत्री जी। मैं जानती हूँ कि आपने क्या सोचा था। आपने उसका ध्यान भटकाने की योजना बनाई थी। उसे उस बच्चे की तरह व्यस्त रखना चाहते थे, जैसा आप उसे समझते हैं, ताकि वह अपनी सौतेली माँ के लिए फिर से लड़ने लगे, भले ही वह उससे कितनी भी नफरत करती हो।”

योजना तो यही थी, बिलकुल। बलराम को पता था कि जब उसे प्रद्युमन की सौतेली माँ मायावती की शादी के बारे में पता चलेगा, तो प्रद्युमन भड़क उठेगा, निराश हो जाएगा और कुछ कठोर कदम उठाने का फैसला करेगा। और वह यही चाहता था, ताकि इस बीच वह अंधकों और वृष्णियों के पास जाकर गठबंधन बना सके और फिर वापस आकर सत्ता हथिया ले और तख्तापलट कर दे।

“तुम्हें नहीं पता, पर उसे पता है। जब वह नन्हा बच्चा था और नदी में खो गया था, तब उसने उसकी देखभाल की थी। वह अब भी उसकी परवाह करती है और मैंने सचमुच राजा को इस बारे में जानकारी देने की कोशिश की।” उसने झूठ बोला।

उसने बलराम को यथासंभव कठोर निगाहों से देखा, मानो उसकी लोहे जैसी आंखें उसकी आत्मा को भेद रही हों।

"मैं उनका सलाहकार हूं और मुझे लगता है कि उन्हें इस बारे में पता नहीं होना चाहिए।"

“जैसा आप कहें,” वह मुस्कुराया। “यह आपका विवेक है। और मुझे नहीं लगता कि हमारे राजा अब उतने तुच्छ हैं जितने पहले हुआ करते थे। वे उसके नए पति को जान से मारने की कोशिश नहीं करेंगे। बल्कि, वे उत्सव के रूप में शाही माला, धन-दौलत और फल भेजेंगे।” वह रुका। “हालांकि इससे एक सवाल उठता है—वह कैसे हैं? क्या वे अपने भ्रमण से लौट आए हैं?”

“हां। वह अकेले शिकार पर गया था। एक ध्यानपूर्ण कला।”

"अजीब बात है, वह ठीक उसी समय गया जब सामवा को अधिकारियों द्वारा देशद्रोही घोषित किया गया और उस पर राजद्रोह की साजिश रचने का आरोप लगाया गया।"

दुर्गाज्योति को आश्चर्य हुआ, लेकिन बलराम सामवा के बारे में जानकारी छिपा रहा था। सामवा योजना बना रहा था, लेकिन बलराम को इसके बारे में कुछ नहीं बता रहा था। उनके बीच कभी अच्छे संबंध नहीं थे और सामवा को कुष्ठ रोग से संक्रमित करने का विचार वास्तव में बलराम का ही था, इसलिए सामवा की घृणा वास्तविक और गहरी थी।

"मुझे यह मत बताओ कि तुमने अपने राजा को उसके ही भाई के पीछे दौड़ाया। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए तुम उसे कितना तोड़-मरोड़ कर पेश करोगे?"

“मेरे क्या लक्ष्य हैं?” उसने आंखें सिकोड़ते हुए कहा। “मैं एक साधारण महिला हूं जो हमारे राजा में विश्वास रखती है।”

बलराम जानता था कि वह झूठ बोल रही है। “एक औरत? मैंने तो आखिरी बार यही सुना था कि तुम एक असुर हो। मैं गपशप पर विश्वास नहीं करता, लेकिन कौन जाने?” वह मज़ाक करने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन इससे पहले कि वह जवाब दे पाती और उसके कहे को समझ पाती, उसने हॉल में किसी को चलते हुए देखा और वह सैनिक था - शाही महल का सैनिक, जिसके लोहे के कवच में चांदी और सोने की जड़ाई थी।

“महाराज,” उसने उन दोनों को प्रणाम करते हुए कहा, “राजा आप दोनों को बुला रहे हैं।” वह हांफ रहा था, मानो लंबे समय से बेचैनी से उन्हें ढूंढ रहा हो।

“क्यों?” दुर्गाज्योति ने पूछा।

सिपाही असमंजस में दिख रहा था।

बलराम के किले को छोड़कर वे दोनों महल की ओर चल पड़े और रथ को पकड़ लिया। वे चुप रहे। हालांकि वे सुन सकते थे। कौवे कांव-कांव कर रहे थे। अंधेरा चारों ओर छा रहा था। वे महल पहुंचे, जो दीपों से सजा हुआ था। वहां कई फव्वारे और मूर्तियां, चरागाह और लाल मिट्टी की ईंटों से बने किले भी थे। वे रथ से उतरे और महल के अंदर मुख्य गलियारों की ओर बढ़े, जहां राजा अपने दरबारियों से मिल रहे थे। सिंहासन बलराम के सिंहासन जैसा ही था, लेकिन बहुत बड़ा, भव्य और भाले व हेलमेट पहने कई रक्षकों से घिरा हुआ था। छतें ऊंची थीं और पर्दे लाल रंग के थे।

राजा अपने प्याले के साथ बैठे थे, उसमें से घूंट-घूंट कर पी रहे थे, शराब टपक कर कालीन

पर गिर रही थी। वे धीमी आवाज़ में कुछ बुदबुदा रहे थे और उनका मुकुट एक तरफ झुका हुआ था। उनके शरीर में कई छेद थे, नाक में भी छेद था। उनकी आँखें थकी हुई और लाल थीं। ऐसा लग रहा था जैसे वे नशे में हों। विशाल सिंहासन पर वे एक छोटे बच्चे की तरह दिख रहे थे, और वे थे भी एक छोटे बच्चे।

बलराम और दुर्गाज्योति दोनों ने प्रणाम किया और वे सिंहासन के दोनों सिरों पर खड़े हो गए, तभी प्रद्युमन को हिचकी आई और उसने कहा, "मैंने खबर सुनी है।"

“लेकिन...कैसे?” दुर्गाज्योति ने फुसफुसाते हुए पूछा।

“बलराम ने कृपा करके मेरे पास दूत भेजा था,” प्रद्युमन ने विनम्रता से और कृतज्ञता भरे स्वर में कहा। “धन्यवाद, चाचा जी, हालांकि खबर अप्रिय है।”

बलराम मुस्कुराया और स्तब्ध दुर्गाज्योति की ओर मुड़ा।

बेशक, बलराम मूर्ख नहीं था। उसने एक ही खबर पहुंचाने के लिए दो दूतों को लगाया। अगर एक पकड़ा जाता, तो दूसरा काम कर देता।

"मुझे पता है, मेरे स्वामी, और मुझे विश्वास है कि आप कुछ नहीं कर सकते।"

“मैंने उसे अपने साथ रहने का प्रस्ताव दिया है,” प्रद्युमन ने होंठ चाटते हुए सिर हिलाया। “वह नहीं चाहती। वह मुझसे नफरत करती है। लेकिन मैं उसके लिए तड़पता रहता हूँ!” उसने प्याला फेंक दिया और सबको चौंका दिया। “मैं उससे भी नफरत करता हूँ। उसे अपने भले की समझ नहीं है। जब वह अपने पति, लालची शंबरा के साथ थी, तब उसके साथ वेश्या जैसा व्यवहार किया जाता था। और अब वह फिर से एक पुरुष से शादी कर रही है। क्या उसे एहसास नहीं है कि उसका बेटा उससे सबसे ज़्यादा प्यार करता है? उसका ख्याल रखेगा। उसे रोकना होगा, ताकि वह फिर से वही गलती न करे। रोकना होगा!”

बलराम मुस्कुराए बिना नहीं रह सका, लेकिन उसने इसे दिखाया नहीं।

“मुझे एक सपना आया।” प्रद्युमन सिंहासन से उठ खड़ा हुआ, हिचकी लेते हुए लड़खड़ा गया और बोला: “सपना यह था कि अपनी माँ की रक्षा के लिए मुझे उसे मार डालना चाहिए। मैंने सपने में उसे गला घोंटकर मारते हुए देखा, ताकि कोई उसे छू न सके। वह मेरे लिए सब कुछ थी और वह वही करने की योजना बना रही है जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। वह जिससे भी शादी कर रही है, उसके साथ रहने के लायक नहीं है।”

ये अजीबोगरीब भावनाएँ थीं। बलराम जानता था कि प्रद्युमन की असली माँ रुक्मिणी उसे याद करती होगी, लेकिन वह अपनी सौतेली माँ को याद करता था। जिसने उसे पाला-पोसा, जिसने उसकी देखभाल की। उसके मन में उसके लिए अजीबोगरीब विचार आते थे, यहाँ तक कि विरोधाभासी भी।

“तुम क्या करना चाहते हो?” बलराम ने पूछा।

“कुछ नहीं, महाराज,” दुर्गाज्योति ने तुरंत हस्तक्षेप करते हुए कहा। “हमारी स्थिति अच्छी है और इस मामले में उलझने से अनावश्यक परेशानी होगी। यह मत भूलिए कि ये राक्षस हैं।”

“हाँ, तो?” प्रद्युमन ऊबा हुआ सा लग रहा था। “वे हमारे जितने शक्तिशाली नहीं हैं। उनके पास बस उनकी माया शक्ति है, उनका खूनी जादू।”

लेकिन, मेरे स्वामी, हमें इस पर अच्छी तरह से विचार करना चाहिए।

“मुझे उसे फिर से बचाना होगा।” वह अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और दुर्गाज्योति की अनदेखी करते हुए बोला, “मुझे उसे हर हाल में बचाना है। आशा है आप सब यह समझते होंगे। तो मुझे लगता है, अब सब ठीक है।”

बलराम उन शब्दों का मधुर अर्थ सुनना चाहता था, और उसने स्पष्ट रूप से पूछा: "आपका मतलब है..."

“हां,” प्रद्युमन ने सिर हिलाया। “हम युद्ध में जा रहे हैं।”

6

“नहीं,” कृष्ण ने तीसरी बार कहा, और साथ ही उन्होंने समवा के हाथ पर कपड़े का एक टुकड़ा लपेट दिया। “ऐसा नहीं हो रहा है।”

समवा चुप रहा। उसने दोबारा वही बात उठाई, लेकिन फिर से उसे अस्वीकृति मिली। वे झोपड़ी के अंदर थे और चूल्हा जल रहा था, लकड़ियों से आग जल रही थी। यहाँ शांति और सुकून था। उसके पिता की बांसुरी कोने में रखी थी।

"क्या आप अब भी इसे खेलते हैं?"

“मैं...” उसने आह भरी, “काफी समय हो गया है।” उसने पट्टी को देखते हुए कहा। “मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे अपने ही एक बेटे के घावों पर मरहम लगाना पड़ेगा, जबकि मुझ पर मेरे ही एक बेटे ने हमला किया था।”

“प्रद्युम्न पागल हो गया है।”

उसने आह भरी।

समवा ने एक पल के लिए अपने पिता को देखा; उनके चेहरे पर झुर्रियाँ थीं, बाल छोटे थे और दाढ़ी उनकी मांसपेशियों जितनी घनी थी। वे विशालकाय दिख रहे थे और अब उनका शरीर उनके पुत्र प्रद्युमन जैसा नहीं था, बल्कि उनके भाई बलराम जैसा था। वे चाहें तो नंगे हाथों से बाघ से भी लड़ सकते थे।

"क्यों?"

"यह मुझे उस जीवन की याद दिलाता है जिसे मैं पीछे छोड़ आया हूँ।"

और आपने क्यों छोड़ा?

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। आयुर्वेदिक औषधियों की महक चारों ओर फैल रही थी, तभी वह खड़ा हुआ और कमरे के कोने की ओर बढ़ा। "तुम जानते हो क्यों।"

“अपने ही खून के लोगों को अधर्म की ओर जाते देखकर कितना दुख होता है,” समवा ने कहा। “मैं यहाँ इसे सुधारने आया हूँ। मुझे पता है कि उन्हें कैसे कमजोर बनाया जाए।”

“और मैंने उन्हें जो दिव्य शक्तियां दी हैं, उन्हें मैं वापस क्यों नहीं ले सकता?” कृष्ण ने पूछा।

“क्योंकि अगर तुम कर सकते तो अब तक कर चुके होते। तुमने नहीं किया क्योंकि तुम कर ही नहीं सकते। तुम महज़ एक इंसान हो, भगवान नहीं। जैसे तुम पहले हुआ करते थे।”

कृष्ण के पास वर्षों का अनुभव था, उनकी आँखें क्षितिज पर डूबते सागर की तरह नीली थीं। उनकी त्वचा सांवली और मखमली थी। “तुम हमेशा से इतने बुद्धिमान नहीं थे। आखिर हुआ क्या?”

मैं बड़ा हो गया।

"तो फिर मेरी बात मानिए। आपको क्या मिला है, जिसके बारे में आपको लगता है कि उसमें मेरी शक्तियों को उलटने की क्षमता है?"

बहुत समय बाद समवा मुस्कुराया और अपना थैला उठाने लगा, जिसे उसने प्रद्युमन से भागते

समय पकड़ लिया था। उसने एक पीला सा कागज़ नीचे रखा, जिस पर एक कहानी लिखी थी। “यह देवनागरी लिपि में लिखा एक मौखिक वृत्तांत है, जिसमें स्पष्ट रूप से लिखा है कि इसे लिखने वाले, जो महान ऋषि दुर्वासा के शिष्य और अनुयायी थे, ने एक ऐसा लौह अयस्क पाया था जिसमें एक देवता को मारने की शक्ति है। तुम्हें मारने की। तुम्हारी शक्ति को नष्ट करने की। दुर्वासा ने अपनी यात्रा के दौरान, द्वारका के रहस्यमय तट के पास, इस अयस्क को देखा था और इसकी शक्ति को महसूस किया था और इससे भयभीत हुए थे, क्योंकि यह मृत्यु का संकेत था। हालांकि, जब मैं वहां गया, तो वहां कुछ नहीं था। मेरा मानना है कि इस कागज़ पर कुछ झूठ हैं, कुछ तो भ्रम पैदा करने के लिए हैं, लेकिन मेरा मानना है कि एक ऐसा अयस्क है जिससे ऐसे हथियार बनाए जा सकते हैं जो एक ययाति को मार सकते हैं।”

“अयस्क? आप चाहते हैं कि मैं आपके साथ अयस्क खोजने चलूँ?”

दुर्वासा को इस पर विश्वास था।

“वह एक गुस्सैल आदमी था। उसने कई ऐसी चीजें कीं जिनका कोई मतलब नहीं बनता था,” कृष्णा ने कंधे उचकाते हुए कहा। “इस अयस्क को क्या कहते हैं?”

“एराकस, वो फोन करता है। पता नहीं क्यों।”

"आपको यह कहां मिला?"

वह मुस्कुराया। “मैं काफी समय से ऐसी ही किसी चीज की तलाश कर रहा था। जानकारी देने वाले को इनाम दिया गया था और एक तांत्रिक ने मुझे वह जानकारी दी।”

“लड़के, तुम कहानियों और झूठ पर विश्वास करते हो। यह सब बनावटी और बेहद सौम्य लगता है। तुम ययातियों को खत्म करने के लिए जुनूनी हो, और ऐसा नहीं होना चाहिए। उन्हें अपना जीवन जीना चाहिए और जितना हो सके उतना लंबा जीना चाहिए।”

“कत्लेआम करना और अधर्म फैलाना? मुझे यकीन है कि आप उन्हें इस तरह देखना नहीं चाहते थे।”

कृष्ण ने सिर हिलाया। “अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम वही अभिशाप पैदा कर देंगे जिससे मैं उन्हें बचाने की कोशिश कर रहा था। कितनी विडंबना है! लेकिन मुझे अब भी इस पर विश्वास नहीं हो रहा।”

“तो फिर मेरे लिए करो। मेरे धर्म के लिए करो। तुम्हें इसमें विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है। तुमने मेरे लिए कभी कुछ नहीं किया। कम से कम अब तो मेरे लिए कर दो।”

वह रुका; उसकी आँखों में दर्द झलक रहा था। “क्यों मैं? मैं इंसान हूँ। मुझे मारा जा सकता है। मैं किसी के साथ यात्रा करने के लिए उपयुक्त नहीं हूँ।”

हाँ, तुम हो। क्योंकि मैंने तुम्हें सब कुछ नहीं बताया है।

“मैं यह तुम्हारे साथ करना चाहता हूँ। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी और दूसरों की नज़रों में खुद को सही साबित करो। तुम यहाँ अकेले पछतावे में जी रहे हो और मैं चाहता हूँ कि तुम इसे बदल दो। जीवन में एक बार तो मैं नहीं चाहता कि तुम्हें अपने किसी भी फैसले पर पछतावा हो,” समवा ने पूरी गंभीरता से अपनी बात रखी।

उसने उसकी ओर देखा। एकदम तीखी नज़र से। “मैंने एक सपना देखा। वह एक लंबी रात

थी।" वह ज़मीन पर बैठ गया और साइडबोर्ड से बांसुरी उठा ली। "सपने में एक गंजा आदमी था, जिसकी आँखें धँसी हुई थीं और शरीर पर बाल नहीं थे। उसने एक लंबा लबादा ओढ़ा हुआ था और वह अपने पंजों पर चल रहा था, और खिड़की के उस पार से चीखने जैसी आवाज़ निकाल रहा था।" खिड़की के टूटने की आवाज़ कृष्णा के कानों में गूँज रही थी, लेकिन उसने उसे अनसुना कर दिया। "उस आदमी ने कहा, यह आ रहा है। यह आ रहा है। अंत आ रहा है। क्या तुम जानते हो कि वह कौन था?"

समवा ने अपना सिर हिलाया।

"समय। काल।" कृष्ण ने उत्तर दिया। "समय हमें एक चक्र में ले आता है। मैं असुरों का शिकार करता था। फिर मैंने अपने मामा का वध किया, जिसके बाद मैं राजा बना और पांडवों से संबंध स्थापित किए, लेकिन अब मैं यहाँ अकेला हूँ और अब तुम मुझसे फिर से पूछ रहे हो। हमारे लिए यह संसार खतरनाक होगा," उन्होंने आगे कहा। "यात्रा कठिन होगी। मुझे नहीं लगता कि मैं इसे पूरा कर पाऊँगा। मेरा यहाँ जीवन अच्छा है। अकेला। ठीक वैसे ही जैसे मैं आया था।"

समवा समझ गया था कि वह घर पर सभी के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन उसने नहीं पूछा। वह जानता था कि इससे उसे और अधिक दुख होगा।

और इससे पहले कि वे इस मामले में आगे बढ़ पाते, एक कौआ खिड़की पर आया और अपनी चोंच से शीशे पर खरोंचने लगा। कुछ पल के लिए तो सब ठीक था, लेकिन फिर हद से ज़्यादा हो गया और खिड़की में दरार पड़ने लगी।

कृष्ण का चेहरा एकदम सफेद पड़ गया, और सबसे पहले वे अपने घर की गलियों से होते हुए दौड़े और एक लंबी रस्सी से बंधे अपने गदा और चक्र को लेकर आए। वे कवच पहने हुए थे और इतने बड़े कवच में वे अजीब लग रहे थे, मानो समय से परे कोई व्यक्ति हों।

"क्या हुआ?"

"क्या तुम्हें याद है जब मैंने तुम्हें..." उसने जल्दी से कहा, "जानवरों के शिकार के बारे में सिखाया था? हम उनका शिकार क्यों करते हैं?"

"हां। उनका मांस खाने से आनंद लेने के लिए नहीं, बल्कि जंगल को यात्रियों के लिए कम खतरनाक बनाने के लिए उन्हें जंगल से हटाने के लिए।"

"जी हां। बिल्कुल।" वह आगे कुछ भी उत्तर दिए बिना झोपड़ी से चला गया।

समवा ने भी अपनी तलवार उठाई और कृष्ण के पीछे-पीछे बाहर निकल गया। वे जंगल की ओर बढ़े, जहाँ घने पेड़ों, झाड़ियों, टहनियों, घूमते हुए लेमूरों और बहुतायत में मौजूद बबूनों की मौजूदगी थी। समवा को एहसास हुआ कि कोई उनका पीछा कर रहा है। उसे इसका आभास हो गया था।

जैसे ही वे अंदर गए, कृष्ण ने कहा: "यह कौआ भुसन्द है, एक प्राचीन रूप बदलने वाला ऋषि जिसने अजकाया नामक विषैले बिच्छू से लड़ने के लिए मेरी मदद मांगी थी।"

"एक बिच्छू? वह तो एक... से डरता है।"

और जंगल के घने अंधेरे से एक विशालकाय जीव झपटा, संवा और कृष्ण दोनों पीछे हट गए। कौवे ने ज़ोर से कांव-कांव किया, और उस जीव ने अपना रूप प्रकट किया और संवा ने उसे दूर

से ही स्पष्ट रूप से देख लिया। वह बीस फुट लंबा बिच्छू था, अपनी प्रजाति का एक विशालकाय जीव, जिसकी एक लंबी पूंछ थी जिससे वह विष उगल रहा था।

“यह बिच्छू नहीं है,” समवा ने कहा।

"जैविक रूप से, यह सच है।"

"लेकिन वास्तविकता में ऐसा नहीं है।"

“क्या तुम्हें याद है कि कैसे लड़ते हैं?” कृष्ण ने पूछा।

समवा को उसे बता देना चाहिए था कि वह अभी भी इसमें अच्छा नहीं है। लेकिन समय ने इसकी अनुमति नहीं दी, क्योंकि उस पर विष फेंका गया और उसने खुद को बचाने के लिए एक पेड़ के पीछे छिप गया। एक और थूक आया और वह पेड़ को भेद गया, जिससे तना लुढ़कते हुए जमीन पर गिर गया। कृष्ण के चिल्लाने पर समवा उसका पीछा करने लगा:

उसका ध्यान भटकाओ!

"साथ क्या?"

“किसी भी हालत में!”

समवा दौड़ते हुए पत्थरों को पकड़ने लगा, क्योंकि बिच्छू अपने पंजों के साथ आगे बढ़ रहा था, जबकि कृष्ण कहीं गायब हो गए थे। समवा ने तेजी से और तुरंत पत्थर फेंकना शुरू कर दिया, जो बिच्छू के सिर पर लगे। बिच्छू क्रोधित हो गया और उसने और अधिक विष उगला—जिससे पेड़-पौधे भी सूख गए और जंगल में मल जैसी एक अजीब, गंदी गंध फैलने लगी। समवा की सांस फूल रही थी और वह जानता था कि भले ही वह अपने वरदान के कारण मर न जाए, फिर भी उसे लंबे समय तक विष का असर रहेगा और वह दर्द से पीड़ित रहेगा।

बिच्छू ने जरा भी समय बर्बाद नहीं किया। उसने अपना पंजा समवा के करीब बढ़ाया, जो झट से उसके चारों पैरों के नीचे आ गया, अपनी तलवार निकाली और बिच्छू के दिल में गहराई तक घुसा दी। बिच्छू ने तलवार झटक दी और फिर जमीन पर गिर पड़ा।

बिच्छू पीछे हट गया और अपनी पूंछ को समवा के करीब ले आया, जिससे उसे चोट लगी। समवा लुढ़क गया और उसकी पूंछ जमीन पर धंस गई।

समवा और आगे नहीं लुढ़क सका, क्योंकि बिच्छू के दोनों पैर रुक गए और उसे पता चल गया कि उसकी पूंछ उसके चेहरे के करीब है, जिससे जहर निकल रहा है, जो उसके चेहरे को बुरी तरह से घायल और नष्ट करने के लिए तैयार है, चाहे उसका बचा हुआ हिस्सा ही क्यों न हो।

जब उसने एक परछाई देखी।

पेड़ों से कूदते हुए, हाथ में एक विशाल गदा लिए हुए, उसने बिच्छू की खोपड़ी पर ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे खोपड़ी चूर-चूर हो गई। एक ज़ोरदार चीख निकली और बिच्छू एक तरफ गिर गया, जिससे सामवा ने राहत की सांस ली।

कृष्ण बिच्छू के शव के दूसरे छोर पर थे और वे खिलखिलाकर हंसे, मानो उन्हें फिर से जीवन का अहसास हो गया हो। सामवा भी हंस पड़ा।

वे दोनों ऊपर उड़ते हुए कौवे को देखने लगे और उसने कांव-कांव की, लेकिन इस बार उसकी आवाज नरम और मधुर थी, फिर वह उड़ गया।

हमें बदले में कुछ तो मिलना चाहिए था।

"मौन कृतज्ञता सबसे बड़ा उपहार है जो किसी व्यक्ति को दिया जा सकता है," कृष्ण ने खड़े होते हुए कहा।

समवा उसे मनाने से बाज नहीं आया, इसलिए उसने एक बार फिर कोशिश की, क्योंकि वह जानता था कि माहौल और भी जोशीला और ऊर्जावान हो गया था: "तुममें अभी भी दम है। संकोच मत करो। मेरे साथ आ जाओ।"

“मुझे प्रद्युमन पर भरोसा है। वह अपना रवैया बदल लेगा। मेरा भाई कोई न कोई रास्ता निकाल लेगा। अगर एराका मौजूद हैं तो उन्हें ढूंढना आखिरी उपाय होना चाहिए।”

ओह, वह कितना गलत था।

“अगर तुम वाकई में अपनी कही बात पर यकीन करते हो,” समवा ने कहा, “तो मुझे तुम्हें कुछ दिखाना होगा।”

"क्या?"

समवा का चेहरा गंभीर हो गया। "तुम्हें पता चल जाएगा।"

7

वे एक बड़े, पर्दे से ढके हुए कारवां में थे, शराब की चुस्कियां ले रहे थे और अपनी राजनीति पर चर्चा कर रहे थे।

बलराम अपने आरामदायक कोने में थे, जबकि उनकी पत्नी दूसरे कोने में थीं और उनके सामने अकुरजी भी वहीं बैठे थे।

सैनिकों के एक छोटे से दल के साथ, उन्होंने अपने लक्ष्य की ओर अपनी यात्रा शुरू कर दी थी: रतावका पर्वत।

बलराम ने प्रद्युमन को यह विश्वास दिलाया कि वह अंधक और वृष्णि से राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए जा रहा है ताकि वे मायावती को खोजने में प्रद्युमन की सहायता कर सकें। प्रद्युमन को उनकी सहायता की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन उन्होंने निर्णय लिया कि युद्ध के मैदान में प्रधानमंत्री की आवश्यकता नहीं है। उनके पास पहले से ही इतने सैनिक थे कि वे रसातल, राक्षसों के राज्य में जाकर अपनी माता को वापस ला सकें।

"उसे मनाना बहुत आसान था," बलराम ने अंगूर खाते हुए कहा। "उसकी लापरवाही देखकर मुझे डर लगता है। द्वारकीपुर में तो पक्का उथल-पुथल मच जाएगी। न राजा होगा, न प्रधानमंत्री।"

"चिंता मत करो," रेवती ने उसके कंधों पर थपथपाते हुए कहा, "सब ठीक हो जाएगा। तुम भी ठीक रहोगे। यह बस कुछ दिनों की बात है और तुम्हारे पार्षदों के साथ तुम्हारी एक बेहतरीन प्रक्रिया और व्यवस्था मौजूद है।"

बलराम ने सिर हिलाया। "उस गोत्र में लौटना अजीब लग रहा है जहाँ मेरा और कृष्ण का जन्म हुआ था।" उनका इशारा वृष्णि वंश की ओर था।

"मुझे अब भी आश्चर्य होता है कि कृष्ण ने वृष्णियों को द्वारकीपुर छोड़ने की अनुमति कैसे दी। वे तो उनके अपने लोग थे।"

"यह ऐसा फैसला था जो वह नहीं ले सकता था," बलराम ने सिर हिलाते हुए कहा।

उन्हें वर्षों पहले का वह दृश्य याद आया, जब कृष्ण राजा थे। कुरुक्षेत्र का युद्ध समाप्त हो चुका था और वे अब भी एक देवता, एक दिव्य शक्ति थे। उन्होंने अपनी शक्तियाँ नहीं त्यागी थीं। अंधक रानी देवमिधा ने अपने पुत्र को खो दिया था। उसकी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। शक वृष्णि राजा युधजित और उनके पुत्रों पर था। देवमिधा न्याय के लिए कृष्ण के पास आई थीं। कृष्ण न्याय नहीं दे सके, क्योंकि सबूत बहुत कम थे और वे वृष्णियों के विरुद्ध सीधे कार्रवाई नहीं कर सकते थे। इस कारण अंधक कृष्ण से दूर हो गए, जबकि वृष्णि इस बात से दुखी थे कि कृष्ण ने वृष्णियों के बारे में ऐसा सोचा—फिर भी वे उनसे दूर हो गए।

उस दिन कृष्ण ने अपनी दो भुजाएँ खो दीं।

"जी महाराज, मुझे लगता है कि इस पर चर्चा करने का यही सही समय है," अकोरजी ने कुछ दस्तावेज़ दिखाते हुए और अपने मुख्य बिंदु लिखते हुए कहा। "हमें इस पर विचार करना चाहिए।

हम उन क्षेत्रों में शांति कैसे स्थापित कर सकते हैं जहाँ केवल हिंसा ही देखी गई है?"

वे इस समय किस बात पर द्वंद्वयुद्ध कर रहे हैं?

"एक सुअर।"

"सूअर?" रेवती खिलखिलाकर हंस पड़ी। "यह सब क्या हो रहा है?"

अकुरजी ने बस अपना सिर हिलाया। "सूअर दुश्मन की सीमा में था और उसके बाद वह फिर कभी नहीं दिखा। अंधकों ने वृष्णियों को दोषी ठहराया, वृष्णियों ने अंधकों पर बेवजह हंगामा खड़ा करने का आरोप लगाया, जबकि हाल ही में उनका इस मुद्दे पर युद्ध भी हुआ था।"

"वे उम्र के साथ मूर्ख हो गए हैं," बलराम ने सिर हिलाते हुए कहा।

"क्या आप मुझे इन दोनों कुलों के बारे में और बता सकती हैं?" रेवती ने पूछा। "मैं मूर्ख नहीं दिखना चाहती, लेकिन बलराम जानता है कि मैं यह सब होने के बाद द्वारका आई थी, इसलिए मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है कि क्या हो रहा है।"

बलराम ने अकोरजी को बोलने का निर्देश दिया, और उन्होंने कहा: "अंधक जाति का नाम राक्षस अंधक से लिया गया है, हालांकि उनके पूर्वजों का रक्त यदु की रगों से बहता है। अंधक जाति के लोग अपनी आँखों पर गांठें बांध लेते हैं और देख नहीं पाते। वे अपनी अन्य इंद्रियों का उपयोग करते हैं, क्योंकि प्राचीन काल में, जिस अंधक के नाम पर इनका नाम रखा गया है, उसने भगवान शिव की पत्नी पार्वती को उस समय देख लिया था जब उसे नहीं देखना चाहिए था, जिससे क्रोधित शिव ने अपनी आँखें जला ली थीं। अंधक जनजाति भगवान शिव से क्षमा मांगने के तरीके के रूप में इसका पालन करती है। वे स्वभाव से अधिक बर्बर होते हैं और हिंसा का सहारा लेने के लिए जाने जाते हैं, और हथियारों के व्यापार में लगे रहते हैं। वे अपनी दोधारी तलवार बेचते हैं जो रोम के युद्धक्षेत्रों में काफी लोकप्रिय है।"

"लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है," बलराम ने आगे कहा। "वे गुलामों को बेचते और खरीदते भी हैं। वे गुलामी में काफी हद तक लिप्त हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि गुलामों को मानवाधिकार न मिलें। ये गुलाम उनके अपने खून के नहीं होते, बल्कि अप्रवासी, पर्यटक और हर तरह के विदेशी होते हैं, जिसके कारण द्वारका द्वीप के अलावा कई अन्य द्वीपवासियों के साथ उनके संबंध खराब हैं।"

"दूसरी ओर, वृष्णि जनजाति के लोग धनी होते हैं। आलीशान, खर्चीले और आकर्षक। युधजित एक भोगी पुरुष है। कहा जा सकता है कि उसने सबसे अधिक स्त्रियों के साथ संबंध बनाए हैं। उसके पास बेहतरीन शराब है और उसके निवास स्थान पर एक खास तरह का फूल उगता है जिसे काला पत्थर कहते हैं, जिसका वह मिस्रवासियों के साथ व्यापार करता है—इसका उपयोग एक विशेष सुगंधित भोजन बनाने में मसाले के रूप में किया जाता है," अकोरजी ने समझाया। "लेकिन, हर महान जनजाति की तरह, वे भी काफी बदनाम हैं।"

"के लिए?"

"ये ययाति की भूमि से आए हैं," बलराम ने बीच में कहा। "तुम्हें पता है, वो राजा जिसने अपने पुत्र की जवानी को गले लगाकर उसे बुढ़ापा दिया था। सभी वृष्णि देवताओं में लोगों की जवानी छीनने की शक्ति है। जादू उनके खून में है। इसी तरह वे अपने शत्रुओं को मारते हैं। उन्होंने

ययातियों को मारने और कृष्ण द्वारा दिए गए वरदान से बचने का एक तरीका खोज लिया है। वे मनुष्यों की जवानी छीन लेते हैं और उन्हें बुढ़ापे से मार डालते हैं।"

"तो वृष्णि अंधकों से अधिक शक्तिशाली हैं?" रेवती ने पूछा.

लेकिन अंधकों की संख्या अधिक है। उनकी दास प्रथा के कारण वे बहुत विशाल हैं और वृष्णि लगातार जीवन चूसते नहीं रह सकते, अन्यथा वे बहुत कम उम्र में ही बड़े हो जाएंगे और मर जाएंगे..."

"एक बच्चा!" रेवती ने आगे कहा। "तो जादू का एक दूसरा पहलू भी है और इसीलिए वे इसका इस्तेमाल संयम से करते हैं।"

कारवां में बैठे दोनों पुरुषों ने सिर हिलाया।

बलराम ने कहा, "मैं युधजित से शुरुआत करना चाहता हूँ। मेरे उससे अच्छे संबंध हैं। उसका सबसे छोटा बेटा बहुत ही प्रतिभाशाली है। मैंने सुना है कि वह अपने चारों भाइयों से बेहतर राजा साबित होगा।"

आपकी योजना क्या है?

वह जवाब देना चाहता था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, काफिला अचानक रुक गया। वे सब झटके से काफिले से बाहर गिर पड़े। चीख-पुकार मच गई, बलराम ने यह सब सुना और इससे पहले कि वह अपने एक पैर पर खड़ा हो पाता, उसने देखा कि अकुरजी बिल्ली की फुर्ती से काफिले से निकल गया।

बलराम ने भी ऐसा ही किया और रेवती को निर्देश दिया: "जाओ मत।"

उसकी आँखों में भय झलक रहा था। बलराम भी तनाव में था और उम्मीद कर रहा था कि सब ठीक हो जाएगा, इसलिए वह अपने कर्मचारियों के सहारे लड़खड़ाते हुए कारवां से बाहर निकला। वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ, तभी उसे एहसास हुआ कि क्या हुआ है—पूरा आकाश अंधेरा हो गया था और चारों ओर घना कोहरा छाया हुआ था। इतना घना और काला कि कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

उसके सैनिकों ने दीपक कतार में लगा दिए थे, और बलराम जानता था कि दीपकों से उन्हें कुछ मदद तो मिल रही थी, लेकिन वे विशाल छह पैरों वाले घोड़ों के खुरों की आवाज के अलावा कुछ भी नहीं सुन पा रहे थे।

"वे यहाँ हैं।" उसने झुंझलाहट भरी आवाज़ में कहा।

उसके आदमी वहाँ मौजूद थे, कटे हुए सिर चारों ओर उड़ रहे थे। चीख-पुकार और विलाप की आवाज़ें आ रही थीं। अकुरजी ने बलराम को दीपक के पास कोने में धकेल दिया।

हमें भागना होगा। हम इंतजार नहीं कर सकते।

वे यहाँ थे, उन लोगों के करीब जो ययातियों को नुकसान पहुँचा सकते थे—जिनकी जादूई शक्ति इतनी शक्तिशाली थी कि उसने कृष्ण द्वारा ययातियों को दिए गए वरदान को भी तोड़ दिया था। वे सबके लिए सबसे बड़ा खतरा थे। लेकिन उन्हें केवल कुछ खास मौकों पर ही प्रकट किया जाता था।

वे वितिहोत्र थे। दूसरे लोक के प्राणी, जिन पर तालजनों का नियंत्रण था। कोई नहीं जानता

था कि उनका जन्म कैसे हुआ, वे कहाँ से आए थे।

और उन्हें किसी ने नहीं देखा था। बस यही अफवाहें सुनी थीं कि उनके पास छह टांगों वाले घोड़े हैं और वे जहाँ भी जाते हैं, कोहरा उनका पीछा करता है...

जैसे अभी।

बलराम ने रेवती को काफिले से बाहर निकाला और वे कोहरे की ओर बढ़ने लगे। घोड़ों की आवाज़ें करीब आती जा रही थीं, और जब एक विशाल घोड़ा उनके सामने आया और सफेद कवचधारी एक आकृति प्रकट हुई, जिसके हाथ में एक बड़ी तलवार थी, जो उनके सिर पर वार करने के लिए उनके ऊपर से गुज़री, तो वह आवाज़ और भी तेज़ हो गई।

बलराम ने अपनी लाठी से उसे मोड़ दिया। ओब्सीडियन से बनी लाठी ने अपनी पकड़ तो बनाए रखी, लेकिन उस झटके से होने वाली कंपकंपी को रोकना मुश्किल था। घोड़ा गायब हो गया और तलवार भी। वे आगे बढ़े, अकोरजी के हाथ में पकड़े दीपक की रोशनी कम होने लगी, लेकिन उन्हें आगे कुछ रोशनी दिखाई दी...

तभी बलराम को एक झटका लगा और किसी ने उसका गला पकड़कर उसे हवा में बहुत ऊपर उठा लिया, उसका डंडा अभी भी उसके हाथ में था। कवचधारी वितिहोत्र नामक विशालकाय प्राणी उसे उठाकर ले जा रहा था, तभी उसने उस प्राणी का चेहरा देखा—वह बिल्कुल काला था, उस पर सुनहरी धारियाँ थीं और उसका चेहरा किसी जानवर जैसा था, लेकिन किस तरह का जानवर, यह उसे पता नहीं था। लेकिन वे स्पष्ट रूप से विकृत लग रहे थे।

बलराम ने वितीहोत्र से लड़ने की कोशिश की, अपनी लाठी को बाएँ से दाएँ घुमाते हुए, संयोगवश उसने वितीहोत्र के सिर पर प्रहार कर दिया, जिससे वह थोड़ा बेहोश हो गया और उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। बलराम ने इसे अवसर समझा और खुद को धुंध में जमीन पर गिराने का फैसला किया, तभी उसने वितीहोत्र की सतर्क निगाह देखी और...

एक तेज आवाज आई—जो धातु जैसी थी।

और वह जाग गया। वह अब किसी की पकड़ में नहीं था, बल्कि एक गहरे खून से लथपथ समुद्र के ऊपर खड़ा था।

वह जानता था कि यह कोई दिमागी खेल है, कोई विकृत भ्रम है। क्या वितीहोत्र मूल रूप से राक्षस थे? वे यहाँ माया का प्रयोग कर रहे होंगे, लेकिन फिर कौन जाने?

बलराम मुड़ा और उसने सफेद कवचधारी प्राणी को अपनी ओर आते देखा। उसके सिर पर अभी भी वही हेलमेट था, जिसका डिज़ाइन विचित्र था—जिस पर बड़ी-बड़ी आँखें और बड़े-बड़े दाँत बने हुए थे। बलराम को एहसास हुआ कि जब उसे ऊपर उठाया गया था, तब उसने वितीहोत्र का चेहरा नहीं देखा था, बल्कि उसके शरीर पर लगा हुआ यह रंग देखा था। बलराम को याद आया कि यह उसी तरह का युद्धकालीन रंग था, जिसे भारत की अन्य जनजातियाँ इस्तेमाल करना पसंद करती थीं।

“मैं कहाँ हूँ?” उसने पूछा।

“आप अधर में लटके हुए हैं।” जवाब तुरंत और कर्कश स्वर में आया।

मैं यहाँ क्यों हूँ?

“क्योंकि तुम्हें पता होना चाहिए।” वह प्राणी पास आया और लगभग आठ फीट लंबा था। पानी के ऊपर से उसके धातुई कदमों की आहट सुनाई दी।

"क्या?"

“इन दोनों में से एक चिड़िया है,” उसने उसके चारों ओर चक्कर लगाते हुए कहा।

“तुम यहां दूत बनकर आए हो?” बलराम ने पूछा।

“जी हां। मैं ही हूं। योद्धा वितीहोत्र आज यहां नहीं आए हैं।”

"और इतनी सारी तबाही, अफरा-तफरी और मौतें सिर्फ एक व्यक्ति की वजह से?"

“तुम मुझे ये सब क्यों बता रहे हो? तुम तो उसी के लिए काम करते हो, है ना? दुर्गाज्योति के लिए?”

“मैं नहीं। मैं आज़ाद रहना चाहता हूँ,” वितिहोत्र ने कहा। “वह हम सबको बाँधे रखती है। और उनमें से ज़्यादातर को यह पसंद है, लेकिन मुझे नहीं। मैं यह एहसान के तौर पर कर रहा हूँ क्योंकि मैंने यह उससे सीखा है। किसी ने उसे इस रास्ते के बारे में बताया था और यह आपके दो विश्वासपात्रों में से एक ने किया था। उस व्यक्ति को लेजर कहा जाता है।”

"तो, उसने इस प्रक्रिया में उनमें से एक को मरने दिया और आपको यह नहीं बताया कि वह कौन था?"

“नहीं, उसने ऐसा नहीं कहा। उसने मुझसे कहा था कि मैं उन दोनों को चोट न पहुंचाऊं और इससे मैं भ्रमित हो गया।”

"तुम मुझे ये क्यो बता रहे हो?"

“क्योंकि मैं उससे छुटकारा पाना चाहता हूँ। प्रद्युमन को नष्ट करो और उसे दूर ले जाओ। उसे मार डालो। उसे मारने या फंसाने का कोई तरीका ढूंढो। मुझे नहीं पता। बस कुछ करो।” वह हताश लग रहा था। “मैं यहाँ आ सका और मैं तुम्हें मार सकता हूँ, लेकिन मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता। मैं तुम्हारी रक्षा करना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि मुझे इसका पछतावा नहीं होगा।”

“नहीं। बताने के लिए धन्यवाद।” बलराम ने आह भरी, हालाँकि उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे वितीहोत्र पर भरोसा करना चाहिए या नहीं और उसके पीछे से आ रही धातु की आवाज़ पर भी।

"रुको, एक और बात?"

"हाँ?"

"तो, अगर उसने तुम्हें भेजा है, तो वह प्रद्युमन की अनुमति के बिना ऐसा नहीं कर सकती थी।"

“जी हां। प्रद्युमन जानता है कि तुम परिवर्तित हो चुके हो।”

बलराम का दिल बैठ गया। वह इसे और छिपा नहीं सका।

"जाहिर तौर पर, लेजर ने बोल दिया। उन्हें सब कुछ पता था।"

बलराम ने अपना सिर हिलाया और फिर धुंध छंट गई। वह वर्तमान में लौट आया, जहाँ उसके चारों ओर लाशें पड़ी थीं और वह ज़मीन पर बंधा पड़ा था। वह व्याकुल और क्रोधित था, लेकिन इस बात से राहत महसूस कर रहा था कि सब कुछ समाप्त हो गया। वह लाठी के सहारे टिका

हुआ था।

उसने रेवती और अकोरजी को अपनी ओर दौड़ते हुए और उसे उठाने की कोशिश करते हुए देखा।

“अभी क्या हुआ?” अकोरजी ने पूछा।

रेवती ने आगे कहा, "मुझे लगता है कि वह बस चला गया।"

वे दोनों उसे पकड़े हुए थे। लेकिन उनमें से एक गलत था। क्या यह अकोरजी हो सकता है, जो उसके जीवन में सबसे वफादार व्यक्ति था, या क्या यह उसकी पत्नी, उसके बच्चों की माँ हो सकती है? वह दोनों में से किसी पर भी विश्वास नहीं कर पा रहा था, जिससे एक तीसरी संभावना भी खुल गई—

क्या यह सब भी झूठ हो सकता है? दुर्गाज्योति द्वारा रची गई एक चाल।

एक रथ था जो अभी भी अच्छी हालत में था, वे सभी उसमें बैठ गए और रत्वाका पर्वत की ओर बढ़ने लगे - यह जानते हुए कि वह वापस नहीं जा सकता और जहां वह जा रहा है वहां वह किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकता।

दुर्गाज्योति उतनी दुष्ट नहीं थीं जितना लोग उन्हें समझते थे।

दरअसल, वह एक उद्देश्य वाली महिला थी, जो उसे हासिल करने के लिए पूरी कोशिश कर रही थी। दुर्भाग्य से, लोगों ने उसे गलत समझा, जिनमें से एक बलराम भी था।

अपने छोटे बालों और सीधी आँखों के साथ वह युद्ध कक्ष की ओर चल पड़ी जहाँ प्रद्युमन थे, उनके पीछे दासियाँ और उनके अंगरक्षक भी खुशी से झूमते हुए चल रहे थे। लोग उनके चलने पर फुसफुसा रहे थे, उन्हें डायन, राक्षसी आदि कह रहे थे। लेकिन दुर्गाज्योति एक इंसान थीं।

लोगों का उस पर विश्वास न करना उसकी समस्या नहीं थी।

जब वह महल के प्रवेश द्वार के सामने बने गलियारों में चल रही थी, तो उसने सामने खड़े नग्न पुरुषों की एक लंबी कतार देखी, जिन्हें एक दास व्यापारी कोड़े मार रहा था। दुर्गाज्योति ने देखा कि वे सभी वास्तव में राजद्रोह के जल्लाद, राष्ट्र और सिंहासन के गद्दार थे। ये वही लोग थे जो सबसे बड़े गद्दार बलराम के साथ चलते थे। उन्हें बेरहमी से दंडित किया गया और बाद में निर्वासित या कैद कर दिया गया, या तब तक बार-बार कोड़े मारे गए जब तक कि उन्हें क्षमा नहीं कर दिया गया।

उसने मुस्कुराया नहीं, लेकिन प्रभाव दिखाने के लिए वह उस जगह से चली गई और नग्न पुरुषों की निगाहों को पीछे छोड़ दिया, जो मन ही मन उसे कोस रहे थे। वह युद्ध कक्ष की ओर चली, जहाँ उसने प्रद्युमन को देखा।

सदा प्रकाशमान पुरुष। राजा। मनुष्यों के बीच देवता।

उनमें वही चमक और वैभव था जो कृष्ण में उनके चरम उत्कर्ष के समय था। लंबे भूरे बाल, नीली आँखें और तराशा हुआ चेहरा। वे आंशिक रूप से नग्न थे, उनके सहायक ने उन्हें वस्त्र पहनाए थे जबकि वे एक द्वार खोलने की बारीकियों में लगे हुए थे। उनके साथ एक पुरुष और एक स्त्री थे। स्त्री स्पष्ट रूप से एक विद्याधर थी, एक जादूगरनी जो रसातल के द्वार खोलेगी।

दूसरे आयाम में प्रवेश करने के लिए विद्याधर का होना आवश्यक है, जो द्वार बना सकता है। लेकिन सेना के साथ द्वार में प्रवेश करना कठिन है क्योंकि...

"लोकपाल से निपटना मुश्किल होगा," विद्याधर ने द्वारपाल का जिक्र करते हुए कहा। प्रत्येक आयाम का एक द्वारपाल होता है और वे सभी शक्तिशाली योद्धा होते हैं, जो ऐसे मंत्र और जादू जानते हैं जो किसी को भी, चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, प्रवेश करने नहीं देते।

बाईं ओर प्रद्युमन का सेनापति था, जिसने निर्देश दिया: "यदि हम रक्षा पंक्ति को तोड़ दें और आप हमें बता सकें कि हम यह कैसे करें, तो हमें ऐसा करने में खुशी होगी..."

“लोकपाल की शक्तियों को इतनी आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता। उनसे तर्क किया जा सकता है। उन्हें चुनौती दी जा सकती है, लेकिन तोड़ा नहीं जा सकता।”

प्रद्युम्न ने दुर्गाज्योति को देखने के लिए ऊपर देखा।

“और अगर हम इसे तोड़ भी दें,” उसने आगे कहा, “तो राक्षसों को पता चल जाएगा। और

जैसे ही उन्हें पता चलेगा, मायावती भाग जाएगी। हमें सावधानी और चतुराई से काम लेना होगा। इसे जल्दी करो, ताकि उसे हमारे आने की उम्मीद न हो।"

"मुझे लगा था कि तुम इस मामले में मेरा साथ नहीं दे रहे हो," उसने नम आंखों से कहा।

वह हर बात में उसका साथ देती थी। उसे उस पर पूरा भरोसा था।

"मैं हूँ।"

प्रद्युमन मुस्कुराया। "क्या मेरे चाचा मर गए?"

"बच गया। वितीहोत्र को उसने छल में फंसा लिया।"

प्रद्युमन ने सिर हिलाया। "सबसे शक्तिशाली होने का उसका दावा तो धराशायी हो गया।"

"चिंता मत करो, हम उसे पकड़ लेंगे। लेजर उनके साथ है। और मैंने उसे पकड़ने के लिए और भी हत्यारे भेजे हैं। वह ज्यादा देर तक जीवित नहीं रहेगा।"

"लेजर उपयोगी था," प्रद्युमन ने कहा। "तो इसके लिए बहुत बढ़िया काम किया।"

राजनीति में सात कदम आगे की सोच रखनी चाहिए।

"अरे, मुझे तो कभी यकीन ही नहीं हुआ कि मेरे चाचा ऐसी साजिश रचेंगे।" उन्होंने सिर हिलाया। "अफ़सोस, समय बदल जाता है। जाने से पहले उन्होंने एक अच्छा काम किया। उन्होंने मुझे मायावती के बारे में बताया।"

"निश्चित रूप से, इसके पीछे कुछ छिपे हुए इरादे थे।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है?" उसने पूछा। "तो लोकपाल प्रकरण के बारे में आपकी क्या राय है?"

"मेरा मानना है कि लोकपाल को जबरदस्ती हटाने से काम नहीं चलेगा।"

"तो चलिए उससे तर्क करते हैं," प्रद्युमन ने कहा। "प्रक्रिया शुरू कीजिए," उन्होंने विद्याधर से कहा।

"अभी?" महिला ने तेवर चढ़ाए। "क्या आप वाकई अभी उनसे मिलना चाहती हैं?"

उसने शराब का गिलास उठाया और कुछ नहीं बोला। अपने कवच के साथ वह अपनी कुर्सी पर वापस गया और विद्याधर के आदेशानुसार कार्य करने की प्रतीक्षा करने लगा। यहाँ के जादूगरों की कुछ सीमाएँ थीं; वे केवल उतना ही जादू कर सकते थे जितना संसार की व्यवस्था उन्हें करने देती थी। और व्यवस्था हत्या या दूसरों को हानि पहुँचाने की अनुमति नहीं देती, जिसके कारण विद्याधर बिल्कुल बेकार हो जाते थे। वे राजाओं का मनोरंजन मसखरे बनकर या मज़ाक-मस्ती करके कर सकते थे। इससे अधिक कुछ नहीं। लेकिन कुछ विद्याधर ऐसे भी थे जो व्यवस्था के बजाय अराजकता में लिप्त रहते थे और वे ही थे जिन पर कोई सीमा नहीं थी।

लेकिन अराजकता का अभ्यास हर कोई नहीं कर सकता, सिवाय उन लोगों के जिनमें अत्यधिक घृणा और क्रोध रखने की क्षमता हो; अराजकता में लिप्त होना स्वयं को नष्ट करने के समान होगा।

दुर्गाज्योति को पता होगा।

विद्याधर ने मंत्रोच्चार शुरू कर दिया था, जिससे उसकी उंगलियों से निकल रही विद्युत धाराओं से शक्ति उत्पन्न हो रही थी। चीजें गिरने और इधर-उधर उड़ने लगीं। दुर्गाज्योति एक कोने में खड़ी

थी और सभी भयभीत थे, यहाँ तक कि सेनापति भी, जो मंत्रों की बजाय मुक्केबाजी में अधिक माहिर था। चीजें हिलने लगीं और कमरे में धुंधलापन बढ़ता चला गया, जब तक कि दुर्गाज्योति ने वह दृश्य नहीं देख लिया जो उसके लिए निर्धारित था।

दीवार से एक छोटा सा लाल रंग का द्वार खुला, और दूसरी तरफ से एक आदमी निकला जिसके हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में एक बड़ी छड़ी थी। उसके बाल छोटे और उलझे हुए थे, दाढ़ी थी और वह बिल्कुल एक साधु जैसा दिखता था। वह वहाँ ऊबकर खड़ा था, मानो नींद से जागकर वापस अपनी उस छोटी सी गुफा में जाना चाहता हो जहाँ से वह आया था।

वह लंबा या बड़ा भी नहीं था। वास्तव में, वह काफी छोटा था। वह कमजोर और हड्डियों का ढांचा था। कोई भी उसे कुचलकर काम खत्म कर सकता था।

हालांकि, उस धोखे भरे बाहरी रूप के पीछे एक अंधकारमय आंतरिक शक्ति छिपी थी, एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास बाहर के किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक शक्ति थी।

“मुझे किसने बुलाया?” आवाज दमदार थी। “तुच्छ मनुष्यों। मैं यहाँ क्यों हूँ?”

प्रद्युमन ने शराब का गिलास वहीं रखा और दुर्गाज्योति के विपरीत निडर होकर सीधे लोकपाल के पास चले गए। "आप कैसे हैं, बूढ़े?"

लोकपाल जरा भी विचलित नहीं हुए। “अगर यह कृष्ण के पुत्र, प्रद्युमन नहीं हैं, तो मैं आपकी कैसे सहायता कर सकता हूँ? क्या मैं आपकी प्रिय माता को एक और उपहार भेज सकता हूँ?”

“नहीं, लेकिन एक सेना काफी होगी।” उन्होंने बड़ी चतुराई से उस व्यक्ति को निहत्था कर दिया।

“एक सेना? क्या तुम एक ऐसे नरभक्षी कबीले पर हमला करने की योजना बना रहे हो जिसने शांति से रहने और अब इंसानों को नुकसान न पहुँचाने के तरीके खोज लिए हैं?” उसने पूछा। “एक ऐसा कबीला जिसने हज़ारों सालों से मानवता को व्याकुल रखा है, तुम्हारे चाचा और तुम्हारे पिता से युद्ध किया है, सबसे बड़े देवताओं से लड़ाई लड़ी है और कई ज़मीनों पर विजय प्राप्त की है। और तुम उन पर हमला करने की योजना बना रहे हो? शाबाश, नन्हे लड़के।”

“छोटा बच्चा?” प्रद्युमन को झुंझलाहट महसूस हुई। वह गुस्से में मुट्ठी भींच रहा था। दुर्गाज्योति को उम्मीद थी कि कुछ बुरा नहीं होगा, लेकिन कौन जाने। “मैं छोटा बच्चा नहीं हूँ। मुझे पता है मैं क्या कर रहा हूँ। राक्षसों की कहानियों के बारे में अपने उस छोटे से भाषण में, तुम एक बात भूल गए?”

"क्या?"

“वे हमेशा हार जाते हैं,” प्रद्युमन मुस्कुराया। “अगर मैं उन पर आक्रमण करके उन्हें दरिंदों से सभ्य कुलीन बना दूं तो यह अच्छा सौदा होगा। यही तो समझदारी है।”

“असीमित सत्ता तुम्हें भ्रष्ट कर देती है, बालक,” लोकपाल ने कहा। “मुझे तुम्हारे भीतर गहरा भय दिखाई दे रहा है, अपने पिता के नाम को सार्थक साबित करने का भय, जिन्हें तुम हमेशा प्रभावित करने का प्रयास करते हो।”

“अरे! मुझे परवाह नहीं।” वह शर्मिंदा था, लेकिन लोकपाल मुस्कुरा रहा था।

“मैं बुराई को अपने द्वार में प्रवेश नहीं करने दे सकता,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “यह

अमानवीय है और उन शपथों के विरुद्ध है जो मैंने ली हैं। मैं जानबूझकर रक्तपात नहीं होने दे सकता। मैं नरसंहार भी नहीं होने दे सकता। इसलिए, मैं क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि अब यहाँ हमारा काम समाप्त हो गया है।"

उसने अपनी छड़ी पटकी और धुंधले पड़ चुके लाल द्वार दीवार पर फिर से खुल गए। प्रद्युमन दांत पीस रहा था और जैसे ही लोकपाल हिलने लगा, वह भी हिलने लगा। उसने क्रोध में आकर पीछे से उस पर हमला किया, हाथ में तलवार लिए हुए, जिसे उसने म्यान से निकाल लिया था और लोकपाल के सिर के पास ले आया, तभी बूढ़े ने पलटकर अपनी छड़ी से वार को रोक दिया, जिससे ऊर्जा की एक लहर धरती पर फैल गई।

दुर्गाज्योति ने अपने कान बंद कर लिए, लेकिन वह देखती रही क्योंकि प्रद्युमन एक बच्चे की तरह लोकपाल की जादुई रक्षापथ पर अपनी क्षत-विक्षत तलवार से प्रहार करता रहा। वह उसे तोड़ने के लिए लगातार वार करता रहा, लेकिन तलवार ही टूट गई और लोकपाल ने खोपड़ी के आकार की छड़ी से प्रद्युमन पर प्रहार किया। एक क्षण के लिए प्रद्युमन कुछ भी रोक नहीं पाया और उल्टी करते हुए जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

"उसकी हिम्मत कैसे हुई..." लोकपाल की आंखों से अब चिंगारियां निकल रही थीं, तभी दुर्गाज्योति बीच में आ गईं।

उसे चोट मत पहुँचाओ!

लोकपाल ने दांत पीसते हुए कहा, "हट जाओ, स्त्री। मैं इसे अधर में लटका दूंगा और इसे वहीं कष्ट सहने दूंगा।"

"नहीं," उसने कहा। "वह माफी मांग रहा है और हम यह सुनिश्चित करेंगे कि वह दोबारा ऐसा न करे।"

"बेशक, वह ऐसा नहीं करेगा क्योंकि वह ऐसा करेगा..."

"आपने कहा कि आप जानबूझकर किसी को भी उन लोगों को नुकसान नहीं पहुँचाने देंगे जिनकी आप रक्षा करते हुए दिखते हैं," दुर्गाज्योति ने कहा। "जानबूझकर वाली बात मुझे अटपटी लगी। आप उसे नुकसान पहुँचाने के लिए तैयार हैं, बस इसका बोझ अपने अंतरात्मा पर नहीं लेना चाहते।"

एक क्षण के लिए लोकपाल ने अंगारे विसर्जित किए और फिर दुर्गाज्योति को दयालु दृष्टि से देखा। "तुम एक बुद्धिमान लड़की हो।"

दुर्गाज्योति मुस्कुराईं। "लोकपालों को एक लोक की रक्षा का दायित्व सौंपा जाता है और कई बार ऐसा होता है कि वे उस लोक की रक्षा करना पसंद नहीं करते, लेकिन कर्तव्य के कारण ऐसा करना अनिवार्य हो जाता है। हम दोनों जानते हैं कि राक्षस अच्छे नहीं होते। सच में, उन पर जो घृणा बरसाई जाती है, वे उसके पात्र ही हैं। हम बस उन्हें नमस्कार करके दूसरी तरफ धकेलना चाहते हैं, आपको कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। हम एक उपहार लेकर प्रवेश करेंगे और आपको पता भी नहीं चलेगा कि उसमें क्या है। आप बस एक उपहार को अंदर आने दे रहे हैं, उसके बाद क्या होता है, यह आपके लिए मायने नहीं रखता।"

लोकपाल ने अपनी निगाहें संकुचित करते हुए विद्याधर और सेनापति पर, और उनके पीछे

खड़े खूंखार सैनिकों पर एक नजर डाली।

"उपहार को आगे देने के बदले मुझे क्या मिलता है?"

“तुम्हें क्या चाहिए?” उसने पूछा। “लोकपाल को किसी चीज की जरूरत नहीं होती। उन्हें जो दिया जाता है, उसी से वे संतुष्ट हो जाते हैं।”

"हमेशा नहीं। हम अक्सर ऊब जाते हैं। कहानियां अक्सर हमें मंत्रमुग्ध कर देती हैं, वे हमें अपने अकेलेपन का आनंद लेने देती हैं।"

“आप किस तरह की कहानियां सुनना चाहते हैं?”

“आपका।”

उसकी मुस्कान गायब हो गई। उसका अतीत एक रहस्य था जिसे उजागर नहीं किया जा सकता था। उसे कोने में प्रद्युमन के कराहने की आवाज़ सुनाई दी और उसे एक फैसला लेना था। उसके लिए...

“हाँ। ठीक है। ले लो। मेरी कहानियाँ ले लो।”

वह मुस्कुराया और खोपड़ी के आकार वाली छड़ी को उसके माथे के पास लाकर धीरे-धीरे थपथपाया। एक पल के लिए, उसने महसूस किया—वह सब कुछ जो उसने अपने भीतर दबा रखा था।

बचपन में वह अनाथ थी। वह सड़कों पर भटकती रहती थी। उसकी जिंदगी तब बदल गई जब उसे एक आदमी को बेच दिया गया। फिर वह उसे बेरहमी से पीटता था। वह बड़ी हुई और उसने अपने भीतर के बदलाव को स्वीकार किया।

या कोई और।

और उसके बाद सब कुछ बदल गया। यह बेहद भयानक था। उसकी हड्डियाँ चकनाचूर हो गई थीं और यह चीज़ उसके अंदर तभी प्रवेश कर सकती थी, जब उसका कोई उद्देश्य हो—प्यार करना। और उसका उद्देश्य था। उसने अपने पूरे जीवन में केवल एक ही पुरुष से प्रेम किया था।

वह व्यक्ति फर्श पर पड़ा हुआ था, अपने ही उल्टी से लथपथ।

और छड़ी की थपथपाहट बंद हो गई, यह महसूस करते हुए कि सारी कहानियाँ लोकपाल को सुना दी गई थीं, जो उस समय मुस्कुरा रहे थे।

“ओह, तुम तो एक सुखद आश्चर्य हो,” उसने कहा। “तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई है। तुम्हारे पास मेरे लिए उपहार लेकर आने के लिए अड़तालीस घंटे का समय है, जिसे मैं उसे सौंप दूँ।” वह द्वार की ओर बढ़ने लगा और मुड़कर उसे देखने लगा:

“सावधान रहो, लड़की। तुम्हारे भीतर बहुत बड़ी बुराई छिपी हुई है। इसे अपने ऊपर हावी मत होने दो।”

और फिर वह चला गया।

9

कृष्ण को अपने बेटे के साथ अकेले यात्रा करते समय जितना असहज महसूस हुआ, उतना पहले कभी नहीं हुआ था। उन्होंने इस तरह की भावना अपने बेटे के साथ कभी साझा नहीं की थी। वे हमेशा उससे दूसरों के बीच मिलते थे, लेकिन कभी आमने-सामने नहीं।

लेकिन अब वह यहाँ था, उसके साथ एक घोड़ी पर सवार होकर, उस जगह की ओर जा रहा था जिसके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी।

कृष्ण ने सामवा से कई रहस्य छिपा रखे थे, जिनमें से कई रहस्य उसे दुख पहुंचा सकते थे, और उसे साक्षात देखने से वे यादें फिर से ताजा हो गईं।

“लक्ष्मण कैसा है?” उसने पूछा।

“मुझे नहीं पता,” समवा ने कहा। उसका चेहरा कहीं और था और उसकी आवाज़ में उदासीनता थी।

"क्या तुम्हें वो मिली?"

“नहीं। वह एक दिन अचानक गायब हो गई,” समवा ने कहा।

कृष्णा ने सिर हिलाया। नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। वह जानता था।

“मैंने उसका अपहरण नहीं किया,” समवा ने हमेशा की तरह विरोध किया। वह उन असामाजिक बच्चों में से एक था जो अपने हर गलत काम को सही ठहराने की कोशिश करते थे। “उन्होंने कहा कि मैंने किया। लेकिन मैंने नहीं किया। हम एक-दूसरे से सबसे ज़्यादा प्यार करते थे, लेकिन कुछ ईर्ष्यालु लोग भी थे।”

कृष्ण ने सिर हिलाया। उन्होंने यह कहानी कई बार सुनी थी, लेकिन अन्य वृत्तांतों से उन्होंने सुना था कि जिस लड़की का उन्होंने अपहरण किया था, वह भागना चाहती थी और दुखी थी। कृष्ण अपनी घोड़ी को आगे बढ़ाते हुए, अपने सुरक्षात्मक आलिंगन से बाहर निकलकर द्वारका के खुले मैदान में आ गए, जहाँ उन्होंने उज्ज्वल आकाश, ऊँचे पेड़ों और अंतहीन चरागाहों को देखा। वे यहाँ तब आए थे जब यह मात्र एक द्वीप था।

और उसके विचार डगमगाने लगे। वह अतीत में चला गया, उस समय में जब सब कुछ तबाह हो चुका था। और उन्होंने यहाँ यह भूमि पाई थी। केवल बंजर चट्टानें। और सन्नाटा। जनजातियों द्वारा शासित। द्वारका कई द्वीपों में से एक था।

कृष्ण एक बालक थे जिन्होंने महाराजा जरासंध के दामाद और उनके मामा कंस की हत्या करके उन्हें क्रोधित कर दिया था। मथुरा राज्य कृष्ण के निवास पर खतरा मंडरा रहा था और मथुरा के राजा उग्रसेन ने उन्हें कोई दूसरा स्थान खोजने का आदेश दिया। उनकी पत्नी गर्भवती थीं और उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्होंने लंबे समय तक खोज की और अंततः उन्हें अपना स्थान मिल गया।

“यह बहुत सुंदर और भव्य दिखता है!” कृष्ण ने अपने दो सबसे भरोसेमंद साथियों, दुर्जय और बलराम के सामने घोषणा की।

बलराम उसका भाई होने के नाते हमेशा उसका साथ देता था, लेकिन दुर्जय उसका सबसे अच्छा दोस्त था। वह तालजन वंश का वंशज था, उस समय से बहुत पहले जब तालजन वंश का विस्तार हुआ था।

“लेकिन हमें स्थानीय लोगों को हटाना होगा,” कृष्णा ने सुझाव दिया। “उन्हें रहने के लिए अलग जमीन दे दो।”

“क्या आपको नहीं लगता कि उन्हें हमारे साथ ऐसा करना चाहिए?” दुर्जय ने पूछा।

“मुझे पता है। लेकिन हम ज़्यादा बड़े और बेहतर हैं। हम ज़्यादा समय तक टिकेंगे।” कृष्ण की आवाज़ में अहंकार झलक रहा था। वे शक्तिशाली थे। वे सर्वज्ञ और सर्वव्यापी थे।

असीमित सत्ता पूर्णतः भ्रष्ट कर देती है। यहाँ तक कि सबसे नेक हाथों में भी।

और यद्यपि उसने जो किया वह नेक काम नहीं था, यानी स्थानीय लोगों को वहां से भगा देना, फिर भी उसने अंततः उन्हें आशीर्वाद लेने के लिए सड़क के किनारे एक जगह रहने के लिए उपहार में दी।

एक बुद्धिमान व्यक्ति वह नहीं होता जो गलतियाँ नहीं करता, बल्कि वह होता है जो उनसे जल्दी सीखता है।

वह मौन और शांति से समवा के साथ वर्तमान में आगे बढ़ता रहा, तभी समवा ने पूछा:

"क्या आपको सच में लगता है कि गांधारी का श्राप असर करेगा?"

“मुझे नहीं पता। श्राप बहुत शक्तिशाली जादू हो सकते हैं क्योंकि वे सबसे बुरी भावना—नफरत—से उत्पन्न होते हैं।” कृष्णा ने समझाया। “मैं नफरत का निशाना नहीं बनना चाहता। लेकिन मुझे सुरक्षित रहना होगा।”

“क्या होगा अगर वो गांधारी के मात्र शब्द हों? आपने अपनी शक्तियां त्याग दीं और उन्हें कुछ मूर्खों के हाथों में सौंप दिया।”

“मैंने इसे अपने खून के लोगों को दिया,” कृष्ण ने उत्तर दिया। “अगर मुझे कोई पछतावा है, तो मैं उसके साथ जीऊंगा। मैं इसे बदलने की कोशिश नहीं करूंगा।”

समवा ने उपहास उड़ाया, मानो यह मानना मुश्किल हो और वास्तव में यह मूर्खतापूर्ण हो।

वे किसी तरह ज़मीन की ओर बढ़ने में कामयाब हो गए। सूरज डूबने लगा था और ज़मीन भी ढलानदार होती जा रही थी, मानो नीचे की ओर मुड़ रही हो और घास खत्म हो रही हो। सड़न की बदबू साफ महसूस हो रही थी और मक्खियाँ भी बहुत थीं। मक्खियाँ तो बहुत सारी थीं।

कृष्ण आगे बढ़े और उन्होंने देखा कि संवा उन्हें वहां किसलिए लाया था।

लाशें।

उनमें से सैकड़ों।

विपरीत परिस्थितियों में। सौंदर्य से सराबोर संपूर्ण दृश्य अब एक भयानक, खूनी दृश्य में बदल गया था।

वह अपनी घोड़ी से उतरा और लाशों की ओर बढ़ा, उन्हें देखते हुए बोला, “यह क्या है?” वे हज़ारों की संख्या में थीं, कुछ इतनी सड़ चुकी थीं कि कंकाल बन गई थीं, कुछ पहले से ही सड़ रही थीं।

समवा उसके पीछे-पीछे चलने लगी। "यह तुम्हारे कर्मों का फल है।"

"आपका क्या मतलब है?"

“इसे मृत्युस्थान कहते हैं,” समवा ने कहा। “इसे शालीनता से कहें तो, मृतकों की भूमि।”

कृष्ण एक बच्चे के शव के पास घुटने टेककर बैठ गए, जिसकी त्वचा धंस गई थी और उससे मृत्यु की गंध आ रही थी। तब तक कृष्ण ने अपना चेहरा कपड़े से ढक लिया था।

“ये ययाती नहीं हो सकते,” उसने कहा। “मैंने ही तो उन्हें सत्ता दी थी। मैंने...”

“ये ययाती नहीं हैं,” समवा ने मुस्कुराते हुए कहा। “ये वो है जो उन्होंने सत्ता मिलने के बाद किया था। ये इस बात की याद दिलाता है कि जब तुमने उन्हें निरंकुश सत्ता सौंप दी थी तो उनके साथ क्या हुआ था। ये वही है जो उन्होंने अपने दुश्मनों के साथ किया था।”

कृष्ण ने सिर हिलाया, आँखें बंद कर लीं और आँखों में आँसू भर आए। उन्हें कुछ अलग सा महसूस हो रहा था। जैसे उनका दिल सीने से अलग होकर हवा में उछल गया हो। वे वहीं बैठे रहे और प्रार्थना करते रहे। जो भी सुन रहा था, उससे प्रार्थना करते रहे। पश्चाताप और भी बढ़ता जा रहा था।

मैं आपको और अधिक असहज महसूस नहीं कराना चाहता था, लेकिन आपको यह जानना चाहिए। दर्द का ज्ञान बहुत शक्तिशाली होता है, बशर्ते उसका परिणाम अनुकूल हो।

“ठीक है। हमें चलना चाहिए।”

“क्यों? क्या आप इस पर और विचार नहीं करना चाहते?”

“नहीं। मृतकों की भूमि खतरों का जवाब देती है। असल में, मरे हुए लोग मरे नहीं होते। उन्हें विधिवत दफ़नाया नहीं जाता, इसलिए अगर वे मेरे जैसे किसी खतरे को देखते हैं, जिसने यह सब किया है, तो वे...”

और वे उठने लगे। सभी शवों में प्रकाश आ गया और वे कांपते हुए अपने पैरों पर खड़े हो गए, अपनी गिरी हुई तलवारों और भालों के पास।

“आपने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बताई?” समवा ने डर को छुपाते हुए कहा।

“क्योंकि मुझे लगा था कि तुम जानते होगे। लेकिन मुझे लगता है मैंने तुम्हें फिर से ज़्यादा समझ लिया,” कृष्ण अपने चारों ओर मृतकों की मौजूदगी महसूस कर सकते थे। “ये पिशाच हैं। मरे हु।” उन्होंने अपनी गदा निकाली। “अब भागने के लिए तैयार हो जाओ।”

और वे दौड़ने लगे, तभी उनके रास्ते में और भी लाशें आ गईं, खासकर वह लाश जिसने उसे पैरों से पकड़कर जमीन पर गिरा दिया। उसे अपने शरीर में तेज दर्द महसूस हुआ, लेकिन उसने अपने गदा से उस लाश की खोपड़ी तोड़ दी और सामवा का हाथ थामे हुए लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ गया।

उसके चारों ओर और भी लाशें पड़ी थीं, और उसने अपने गदा से उन्हें चीरते हुए, इधर-उधर फेंक दिया। उसका गदा पहले की तरह ही शक्तिशाली था। उसके पास चक्र थे, जिनका वह जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल करता था।

जैसे ही वह भागने लगा, उसका शरीर आग की लपटों में घिर गया, जिससे पीछा कर रहे शवों ने उसका पीछा करना बंद कर दिया। सामवा और कृष्ण ने राहत भरी नज़रें एक-दूसरे से मिलाईं।

"मुझे लगता है कि वे अपनी विश्राम स्थल को नहीं छोड़ सकते," समवा ने कहा।

“नहीं,” कृष्ण ने सिर हिलाया। “कुछ तो गड़बड़ है...”

और फिर उसे इसका एहसास हुआ। किसी ने उसकी कमीज पकड़कर उसे कीचड़ में पटक दिया, और उसका गदा एक तरफ गिर गया।

उसने ऊपर देखा कि कौन है। उसे एहसास हुआ... कि वह एक बड़ा, बूढ़ा, तगड़ा आदमी था जिसके नुकीले दांत थे और त्वचा पीली और झुलसी हुई थी। वह पहले से कहीं ज़्यादा खतरनाक लग रहा था। उसने समवा पर हमला नहीं किया, यहाँ तक कि उसे देखा तक नहीं।

कृष्णा को अपने पेट पर एक घूंसा और एक लात महसूस हुई, क्योंकि यह आदमी आम पिशाचों की तुलना में कहीं अधिक मांसल और शक्तिशाली था। वास्तव में, वह कद-काठी में भी बड़ा था।

"मुझे खेद है..."

लेकिन पिसाख ने उसकी बात नहीं मानी और उसे लगातार मुक्के मारता रहा। तभी सामवा ने अपनी तलवार से उसकी पीठ पर छलांग लगाई और उसके सिर पर वार करने लगा। उस प्राणी ने सामवा को मक्खी की तरह पकड़कर एक तरफ फेंक दिया, जिससे चारों ओर धूल उड़ने लगी।

“मुझे खेद है,” कृष्ण ने अपने हाथों में दो चक्र धारण करते हुए कहा।

पिसाख बोल नहीं सकते थे। इसलिए वे समझ भी नहीं सकते थे। उन्हें बस इतना पता था कि उनका दुश्मन उनके सामने खड़ा है।

जैसे ही पिशाच आगे बढ़ा, कृष्ण ने चक्रों का प्रयोग करते हुए उसे चकमा दिया और उसकी भुजाओं और पैरों से बचा हुआ मांस जितनी जल्दी हो सके काट डाला। पिशाच पहले तो आगे नहीं बढ़ा, लेकिन फिर अचानक उस पर झपटा और कृष्ण को पकड़कर जमीन पर पटक दिया, उनका गला घोंटने लगा। तभी कृष्ण ने अपने दो चक्रों को फिर से उस पिशाच के कानों में घुसा दिया, जिससे उसका खून बहने लगा और उसके चेहरे पर छिटक गया।

लेकिन यह कारगर नहीं हुआ।

वह उसे लगातार गला घोंटता रहा।

दो बाण उसके कंधे पर लगे और ये बाण सामवा ने दूर से चलाए थे। इससे वह प्राणी थोड़ा विचलित हो गया और कृष्ण ने तुरंत एक चक्र उठाकर उसकी आंख में घोंप दिया। वह प्राणी दर्द से कराह उठा और पीछे गिर गया।

कृष्ण ने उसके ऊपर छलांग लगाई और दूसरे चक्र से उसके मस्तिष्क और आँखों को चीर-फाड़ करना शुरू कर दिया, उसके मांस और आंतों पर जितना हो सके आक्रमण करते हुए उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। कुछ देर बाद पिशाच ने प्रतिरोध करना बंद कर दिया और कृष्ण समझ गए कि उन्होंने उसे मार डाला है। लेकिन वास्तव में नहीं... उन्होंने उसे शांति प्रदान की थी। पिशाच का कृष्ण के प्रति क्रोध समाप्त हो गया था।

वह हमेशा की तरह अपराधबोध से ग्रस्त होकर खड़ा हुआ और उसने दूसरी तरफ से उसे देख रहे अन्य शवों की ओर देखा। लेकिन उसने हमला नहीं किया। शायद डर के मारे।

या शायद निराशा के कारण।

उसके कर्मों के भूत उसके सामने जीवित थे, और उसे उन लोगों द्वारा धोखा दिए जाने के अलावा और कुछ महसूस नहीं हुआ जिन पर उसने भरोसा किया था, जिन लोगों से उसने उम्मीद की थी कि वे उसे सौंपी गई शक्ति का सही उपयोग करेंगे।

लेकिन कोई नहीं।

ऐसा प्रतीत होता है कि अच्छाई का अस्तित्व ही समाप्त हो चुका था। ऐसा प्रतीत होता है कि युद्ध ने सभी को इन भयावह प्राणियों में बदल दिया था, जिन्हें समाप्त करना आवश्यक था।

"क्या तुम ठीक हो?" समवा ने पूछा।

कृष्णा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, खून पोंछते हुए वह घोड़ी की ओर बढ़ा और उस पर बैठ गया। उसके सिर में तेज दर्द हो रहा था।

"मैं दो साल का था," उसने कहना शुरू किया, "जब मैंने एक असुर का वध किया था। मैंने उसके स्तनों से उसका खून चूस लिया था," उसने आगे कहा। "उसके बाद, मैंने हर तरह के असुरों का वध किया है। मैंने सबसे बड़े राक्षस, अपने मामा कंस का वध किया है। मैंने अब तक के सबसे बुरे दुष्टों से लड़ाई लड़ी है।" उसने अपनी छाती की ओर देखा, और अपना कुर्ता फाड़कर अपनी छाती दिखाई, जहाँ श्रीवत्स का चिन्ह बना हुआ था, वही चिन्ह जो न्याय के दूत, वीरों को दिया जाता है।

विष्णु के अवतार का।

"लेकिन अब मैं अपने जीवन के सबसे कठिन दौर से गुजर रहा हूँ," उन्होंने कहा। "मुझे अपने ही लोगों को मारना पड़ रहा है।"

10

दुर्गाज्योति दुर्जय को काफी समय से जानती थी।

उसका पति एक दास व्यापारी था। एक ऐसा दुष्ट व्यक्ति जिसमें कोई भी अच्छाई नहीं झलकती थी। दुर्गाज्योति जानती थी कि कुछ लोग बुरे तो होते हैं, लेकिन उनमें अच्छाई के अंश भी होते हैं।

लेकिन दुर्जय नहीं।

वह एक क्रूर, फासीवादी और अत्याचारी व्यक्ति था।

शायद इसलिए कि दुर्गाज्योति उसके लिए महज एक रखैल थी। एक वेश्या जिसे वह थप्पड़ मारता था। उसके हाथों में सबसे बड़ी शक्ति थी—विठोत्र, लेकिन उसे उन्हें प्रकट करना नहीं आता था। दुर्जय से विवाह के शुरुआती दिनों में, दुर्गाज्योति उसकी किताबों का संग्रह देखती थी जिसमें विठोत्रों के बारे में जानकारी होती थी और यह बताया जाता था कि वे केवल किंवदंतियाँ और मिथक हैं। वह हमेशा सोचती रहती थी कि क्या वे उसके राजकुमार बनेंगे और उसे उस पुरुष की क्रूरता से बचाएंगे जिसके साथ वह रहती थी।

जब तक उसकी मुलाकात उससे नहीं हुई, तब तक सब कुछ बदल गया। उसे एक नई रोशनी दिखाई दी। एक रहस्योद्घाटन। उसकी पुतलियाँ फैल गईं और उसका शरीर कमजोर हो गया, लेकिन उससे मिलना महत्वपूर्ण था।

दुर्जय का शीघ्र ही निधन हो गया और सत्ता दुर्गाज्योति को सौंप दी गई। पितृसत्तात्मक व्यवस्था को देखते हुए यह उपाधि उनके पुत्र को दी जानी चाहिए थी, लेकिन इसे सौंपने का यह एक लापरवाही भरा तरीका था। हालांकि, अपनी मृत्यु से पहले दुर्जय ने सभी उपाधियाँ और ताज दुर्गाज्योति को सौंप दिए थे।

और उस समय उनके पास वितीहोत्र थे, तो भला उनका विरोध कौन करता?

और वह द्वारका के लिए निकल पड़ी, प्रद्युमन की तलाश में, उस लड़के की तलाश में जिससे उसकी पहली शादी के समय मुलाकात हुई थी। वह उसकी उम्र की थी। दोनों ही युवा थे, लेकिन उसने उसके मन में ऐसे स्वाद भर दिए, जैसे शरद ऋतु में तितलियाँ उड़ रही हों, वैसे ही उसके सीने में एक अजीब सी अनुभूति पैदा कर दी।

दुर्गाज्योति अपने कमरे में बुनाई कर रही थी। यह उसका पसंदीदा शौक था। लेकिन उसे कंपकंपी हो रही थी, जैसा कि वह खुद कहती थी। वह किसी चीज को ज्यादा देर तक पकड़ नहीं पाती थी। उसकी उंगलियां कमजोर पड़ जाती थीं, नसें दुखने लगती थीं। उसे लगता था जैसे वह मर रही हो, लेकिन जब से वह उसके साथ थी, तब से ऐसा हो रहा था। उसने दुर्गाज्योति से कहा कि सब ठीक है। कोई बात नहीं। यह तो बस बदलाव की प्रक्रिया का एक हिस्सा है।

जब किसी ने दरवाजा खटखटाया।

दुर्गाज्योति ने ढीले वस्त्र में लिपटी हुई ऊपर देखा और दरवाजे की ओर बढ़ी, उसे खोला और अपने सामने खड़े उस आकर्षक पुरुष को देखा। उसने उसके बाल, उसकी आँखें, उसका सीना

और उसकी मांसपेशियाँ देखीं। वह वहाँ खड़ा था, कुछ नहीं कर रहा था, बस उसे निहार रहा था। वह साफ-सुथरा भी लग रहा था।

“यह थोड़ा अजीब था,” प्रद्युमन ने घोषणा की।

और वे दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े।

“कोई बात नहीं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।

मुझे लगा कि मैं उससे लड़ सकता हूँ।

“राजा के लिए आडंबर एक आवश्यकता है।”

उसने कंधे उचका दिए। उन दोनों की बातचीत में एक तीसरा व्यक्ति भी शामिल था—प्रद्युमन का अंगरक्षक।

“क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?” उसने पूछा।

उसने कमज़ोरी से सिर हिलाकर उसे अंदर आने दिया, यह जानते हुए कि वह बस उस पर चढ़कर उसके साथ संबंध बनाना चाहती थी, उसके होंठों को चूमना चाहती थी और उसकी गर्दन चाटना चाहती थी। जैसे ही दरवाज़ा उनके पीछे बंद हुआ, उसे अपनी जांघों के बीच की जलन को काबू में रखना पड़ा।

कंपकंपी और भी बढ़ गई, और वह एक कुर्सी पर आराम से बैठ गई, जबकि वह बिस्तर पर बैठा रहा।

उन्होंने कहा, "आप इसी तरह मेरी मदद करते रहिए। लोकपाल प्रकरण मेरे लिए शर्मनाक था, लेकिन आप विजेता बनकर उभरे।"

“सच नहीं है। आपने मुझ पर भरोसा किया और मुझे अब तक आपके साथ यहाँ रहने दिया। उस भरोसे को कम करके नहीं आंका जा सकता।”

“दुर्गाज्योति, तुम मेरे बारे में कुछ ज़्यादा ही सोचती हो।” उसने सिर हिलाया, रुका और सोचने लगा। “तुम्हारी अभी तक शादी नहीं हुई है, है ना?”

उसकी उम्मीदें बढ़ गईं। क्या वह शादी का प्रस्ताव रखेगा? लेकिन वह सिर्फ उसकी पत्नी बनकर नहीं रहना चाहती थी। वह उसकी पत्नी बनना चाहती थी। इकलौती पत्नी। और इस समय उसकी कई पत्नियां थीं, जिनमें सबसे पसंदीदा रुक्मिणी थी, जो बेहद लापरवाह और शराबी थी।

नहीं, मैंने नहीं किया है।

“तो फिर इसका इंतजाम कर दिया जाएगा,” उन्होंने कहा।

"महाराज, मुझे सिर्फ दिखावे के लिए शादी करने की जरूरत नहीं है। मैं अपनी शर्तों पर शादी करना चाहती हूं।"

वह मुस्कुराया। “कृष्ण के जाने के बाद दुर्जय के नेतृत्व वाले तलजन मुझसे दूर हो गए। दुर्जय को लगता था कि मैं अयोग्य हूँ, लेकिन तुम दुर्जय का शव लेकर लौट आए। मुझे उस व्यक्ति के लिए दुख हुआ जो मेरे लिए चाचा समान था, लेकिन मुझे खुशी भी हुई कि मुझे एक सहयोगी मिल गया। वह दिन बहुत महत्वपूर्ण था और जबकि अंधक और वृष्णि मेरा साथ छोड़ते जा रहे हैं, तलजन मेरे साथ उस ज्ञानोदय और क्रांति में शामिल होंगे जिसकी मैं योजना बना रहा हूँ।”

“कैसी क्रांति?” उसकी आँखें बड़ी हो गईं।

“रसातला पर आक्रमण की शुरुआत तो नशे में की गई एक शरारत भरी हरकत थी, जब तक मैंने उनकी ताकत नहीं देखी। अगर उन्हें काबू में कर लिया जाए, तो वे अब तक की सबसे खूंखार सेनाओं में से एक हैं। हम उनकी माया शक्ति का उपयोग करेंगे, कम से कम उसके स्रोत का, और अपने सैनिकों को शक्तिशाली बनाएंगे। खुद को शक्तिशाली बनाएंगे। वितीहोत्रों और माया शक्ति के साथ—सोचो, हम अपने दुश्मनों पर कितना कहर बरपा सकते हैं।” वह ठंडी मुस्कान के साथ मुस्कुराया और पहली बार दुर्गाज्योति उससे डर गई। उसकी नीली आँखों में पहले जैसी ऊर्जा या गर्माहट नहीं थी, बल्कि एक ऐसी भट्टी थी जिसे काफी समय से गर्माहट नहीं मिली थी। वह अंधेरे में छिपा हुआ था और उसका सुंदर, तराशा हुआ चेहरा एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत कर रहा था।

"महामहिम, इतनी शक्ति हमें अंधा कर देगी।"

"शायद। या इससे हमें दूसरों की तुलना में कहीं अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी।"

आप क्या करने की योजना बना रहे हैं?

“हर किसी का कोई न कोई मकसद होना चाहिए। अब मुझे मेरा मकसद मिल गया है।” उन्होंने यह नहीं बताया कि वह मकसद क्या था और शायद उनका बताने का मन भी नहीं था।

वह उससे पूछना चाहती थी, लेकिन उसे अज्ञात से डर लगता था। बालक राजा की आँखें आश्चर्यजनक रूप से गहरी थीं और विष्णु के पुत्र होने के बावजूद, वह किसी भी प्रकार के धार्मिक नियमों का पालन नहीं करता था जो उसे प्रदत्त होने चाहिए थे।

उसने उसे गले लगाया। उसने कहा, "मैं तुम्हारे लिए एक अच्छा लड़का ढूंढूंगा।"

“नहीं,” उसने जवाब दिया।

लेकिन उसने नहीं सुना। वह दरवाज़ा खुला छोड़कर चला गया, जिससे दुर्गाज्योति का दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। वह कुछ देर तक वहीं जम सी गई, मानो इस बात को पचा रही हो। उसके लिए इतना सब करने से उसे किसी न किसी चीज़ से तो राहत मिलनी चाहिए थी, लेकिन बदले में उसे कुछ नहीं मिला। दुर्गाज्योति ने आह भरी और भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा, जब उसने यह सुना—

“लगता है तुमने उससे उम्मीद खो दी है।” आवाज़ आई। यह किसी साँप की फुफकार जैसी थी, लेकिन यह कहीं से नहीं आई थी। अभी यह बस एक आवाज़ थी।

नहीं। मैं अब भी उससे प्यार करती हूँ।

“वह आदमी विस्फोटक है। उसके आसपास रहने से आप खुद को जला लेंगे।”

“नहीं,” उसने कांपती उंगलियों से कहा।

"दुखी मत हो, बच्चे।"

दुर्गाज्योति के सामने एक परछाई बनी और उसने उस परछाई को ऐसे देखा मानो वह कोई असली इंसान हो। तभी परछाई से एक हाथ निकला जिसने उसकी ठोड़ी को छुआ और उसका चेहरा आगे की ओर कर दिया। एक स्त्री दिखाई दी, सांवली त्वचा, काले होंठ और सिर पर ऑक्टोपस जैसे लंबे बालों वाली एक युवती। उसकी आंखें जलते अंगारों जैसी थीं और ऐसा लग रहा था मानो वह किसी को भी घृणा से घूरकर मार सकती हो।

“बागुल,” दुर्गाज्योति ने फुसफुसाते हुए कहा, “क्या बात है? तुमने खुद को क्यों प्रकट किया है?”

"मेरे प्रति अपना जीवन समर्पित करने से तुम्हारा जीवन बदल गया, लड़की।"

“मुझे पता है। इसने इसे भी बर्बाद कर दिया।” उसने अपनी उंगलियां दिखाते हुए कहा। “इससे मेरी नसें दुखती हैं।”

“और ऐसा होगा ही। आपके भीतर एक शक्तिशाली देवता विद्यमान हैं।”

लोकपाल का कहना है कि तुम दुष्ट हो।

“काले जादू की देवी? बुरी?” बागुल हँसते हुए बोला। “लोकपाल अक्सर मूर्ख होते हैं। उन पर भरोसा मत करो।”

“तुम क्या चाहती हो?” दुर्गाज्योति ने ताना मारा।

“सीधी बात पर आओ। बहुत बढ़िया।” परछाई पीछे की ओर चली गई और आराम से बैठ गई। “हमारे पास एक समस्या है। असल में, आपके पास है।”

"क्या?"

मेरे कीड़े बोलते हैं।

"बोलना?"

“हां,” उसने कहा। “वे इस क्षेत्र में एक जागृति की बात कर रहे हैं, सद्गुण और वफादारी की, सम्मान और व्यवस्था की।”

“कौन है?” उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।

“कृष्ण।”

"लेकिन..."

“हां,” बागुल ने सिर हिलाते हुए कहा। “वह पूरी तरह से गायब नहीं हुआ है और वह हमारे नायक प्रद्युमन के लिए एक बड़ा खतरा है।”

“उनका एजेंडा क्या है?”

“ज़ाहिर है, यायाती वंश का अंत करने के लिए। वैसे, वे बड़े ही घिनौने लोग हैं, इसलिए उसे दोष मत दो। लेकिन अगर यायाती वंश को मारा जा सकता है, तो तुम्हें भी मारा जा सकता है, जिससे तुम अंदर ही अंदर नष्ट हो जाओगे और मैं ऐसा होने नहीं दे सकता। तुम ही एकमात्र कारण हो जिसकी वजह से मैं अभी जीवित हूँ।”

उसने आंखें घुमाईं। "बेशक। और साथ ही आपके वे दूसरे रहस्यमय इरादे भी हैं जिनके बारे में आप बात नहीं करते।"

“ऐसा कुछ नहीं है। मैं सिर्फ इसी की बात कर रही हूँ,” उसने झूठ बोलते हुए कहा।

“अगर आपको पता है, तो आप मुझसे क्या करवाना चाहती हैं?” वह थोड़ी देर रुकी। “क्या मैं सेना भेजूँ?”

“नहीं। इसके बारे में कुछ करो,” बागुल ने मुस्कुराते हुए कहा।

दोनों ने सिर हिलाया। दुर्गाज्योति ने आह भरी, मन ही मन एक मंत्र पढ़ा और बागुल को जाने दिया। "उम्मीद है तुम जाओगे और उसे रोकोगे," उसने व्यंग्य से कहा।

“नहीं हो सकता। मेरी वजह से तुम यहाँ हो, मेरी वजह से तुम अपने जीवनसाथी के दर्द से मुक्त हुए हो और मेरी वजह से तुम सबसे शक्तिशाली सेना का नेतृत्व कर रहे हो। अपनी इच्छाओं के बारे में सावधान रहो, वरना तुम सब कुछ खो दोगे।”

और इतना कहकर वह दुर्गाज्योति को अकेला छोड़कर गायब हो गई।

और कई वर्षों में पहली बार, उसके हाथ एक बार भी नहीं कांपे।

लेकिन वह जानती थी कि कृष्णा उसके और उसके सपनों के लिए मुसीबत खड़ी करेगा। वह उथल-पुथल मचाएगा और अगर उसका पता चल गया तो उसकी सारी योजनाओं पर बुरा असर पड़ेगा। दरअसल, उसी ने कृष्णा को भेजने की योजना बनाई थी और इस तरह का नाटक रचा था।

वह चुपचाप बैठी रही और सोचने लगी कि क्या करे। उसे पता था कि उसे अपने लिए कृष्ण के बारे में कुछ करना होगा और इसका कोई रास्ता ढूंढना होगा। उसे बागुल पसंद नहीं था, लेकिन वह सही थी।

मुझे कोई दूसरा रास्ता ढूंढना होगा।

दुर्गाज्योति ने कमरे से बाहर निकलने का फैसला किया और जब वह प्रद्युमन के केबिनों की ओर जा रही थी, तो वह रुक गई।

क्या यह बेहतर नहीं होगा कि मुझे मेरी तरफ से कृष्ण का सिर मिल जाए?

वह प्रद्युमन को आश्चर्यचकित कर सकती थी, उसे प्रसन्न कर सकती थी। यह उसकी ओर से एक उपहार हो सकता था। उसके दिल में जगह बनाने का एक तरीका। वह मुस्कुराई, जैसे ही उसने अपनी उंगलियों पर थोड़ा सा जादू किया, जिससे उसके दिल के करीब उथल-पुथल मच गई और विस्फोट हुआ, उस व्यक्ति को बुला लिया जो कृष्ण का सिर वापस ला सकता था।

लेकिन वह कोई साधारण इंसान नहीं था।

वितीहोत्र खतरनाक थे, कोने में बुराई घात लगाए बैठी थी।

जैसे ही उसने अपनी उंगलियां चटकाईं, परछाइयां बनने लगीं और खाली गलियारे में धुंध ने उसे घेर लिया, वहां गार्ड भी मौजूद था।

“तुम जल्दी आ गए,” उसने वितीहोत्र से कहा।

“हमेशा यहीं। जल्दी नहीं।” आवाज़ सुकून देने वाली थी।

उसने मुड़कर उस प्राणी को देखा—वह लंबे बालों वाला, कोड़े खाए हुए लोगों जैसा था, जिसकी आँखें आत्माहीन प्राणियों जैसी गहरी थीं और उसके चेहरे पर एक लंबी मुस्कान थी, मानो किसी चाकू से तराशी गई हो। उसकी त्वचा अन्य वितीहोत्रों की तरह संगमरमर जैसी पीली थी।

मुझे यह आनंद किस कारण से मिल रहा है?

अन्य वितीहोत्रों के विपरीत, यह व्यक्ति निर्जीव नहीं था। वह बेहद आकर्षक था। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था, लेकिन वह सबसे घातक भी था। इसीलिए उसने उसे बलराम के पास भेजा था, लेकिन वह असफल रहा, जो उसके लिए अजीब बात थी। उसे आसानी से हराया नहीं जा सकता था। लेकिन उसने उसके मन में कुछ ऐसी यादें भी जगा दीं जिनसे निपटना उसके लिए

असहज था। उसके गले में नैतिक दुविधा उठ रही थी, लेकिन उसने उसे नजरअंदाज करना ही बेहतर समझा।

मैं चाहता हूं कि तुम किसी का खून करो।

“जी हां, बिलकुल। नहीं तो मैं यहां नहीं होता,” वितीहोत्र ने सिर हिलाकर सहमति जताई।

मुझे उम्मीद है कि आप पिछली बार जैसी गलती नहीं करेंगे: यानी असफल नहीं होंगे।

वितीहोत्र ने कहा, "उन्होंने मुझे धोखा दिया। ऐसा दोबारा नहीं होगा, बिल्कुल।"

“अच्छा।” उसने कहा और फिर अपनी मुट्ठी भींच ली, जिससे उसके अंदर का बागुल जागृत हो गया, जिसका मतलब केवल मुसीबत ही था।

वितीहोत्र को तुरंत घुटन होने लगी और वह दर्द और पीड़ा से कराहते हुए जमीन पर गिर पड़ा। "क्योंकि अगली बार अगर तुम जल्दी और सही चीज लेकर नहीं लौटे, तो तुम्हारी हालत और भी बदतर हो जाएगी।"

वितीहोत्र ने सिर हिलाया और लगभग रो पड़े।

“क्या आप रहस्यवाद के उस्ताद नहीं हैं? तो मेरे लिए इस समस्या का समाधान कीजिए।”

उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी और वह फिर से सांस लेने लगा, उसके चारों ओर छाई धुंध छंटने लगी।

“लेकिन वो कौन है?” उसने थकावट भरे स्वर में पूछा।

“आप उन्हें जानते हैं ना?” वह मुस्कुराई और वितीहोत्र से निकलने वाला धुआँ और धुंध और भी घना हो गया, जब उसने उत्साह और आश्चर्य से अपनी बात जारी रखी। “वह आपके दोस्त हुआ करते थे, दुर्जय। उनका नाम कृष्ण है!”

11

वह सांप वही था। और वह सांप था।

वह हिलने-डुलने लगा, कुंडली मारकर बलराम के चारों ओर लिपट गया, मानो कोई पालतू जानवर हो जिसे वह सहलाता हो। लेकिन गर्माहट के बजाय उसे ठंड लगने लगी। उसे लगा कि वह सांप को डंक मार देगा, लेकिन सांप ने उससे पहले ही कुंडली खोल ली, मानो उसे उसका इरादा पता हो।

बलराम को एहसास हुआ कि वह कहाँ है, सूखी ज़मीन की सरसराहट की आवाज़, जहाँ सूरज खूनी था और आसमान भी वैसा ही था। वह कहीं था और कहीं नहीं भी। लेकिन जो चीज़ उसे अपनी ओर खींच रही थी और डरा भी रही थी, वह था सामने खड़ा विशालकाय सरीसृप, जो सूरज को रोक रहा था, जिसके नुकीले दांत और कोबरा जैसा फन था और जो उसे तिरस्कार और निराशा से देख रहा था।

“मैं कहाँ हूँ?” उसने साँप से पूछा, मानो जवाब की उम्मीद कर रहा हो। “शायद एक सपना, एक बुरा सपना...”

और इसके बजाय, जवाब मिला: "आप घर पर हैं।"

बलराम असमंजस में था, भौंहें चढ़ाते हुए वह अपने से दस गुना बड़े सरीसृप की ओर बढ़ने लगा...तभी अचानक उसे एक और बात सूझी—

वह चल रहा था। मानो बिना किसी सहारे के, बस चल रहा हो। बल्कि, देखा जाए तो उसके पास कोई लाठी थी ही नहीं। उसके पैर बिल्कुल ठीक थे।

"मैं उलझन में हूं।"

"आपको होना चाहिए।"

"आप क्या चाहते हैं?"

“तुम्हारी रक्षा के लिए। तुम दुश्मनों से घिरे हुए हो।” सांप की आवाज आई और ये साधारण फुफकार नहीं बल्कि सटीक शब्द थे।

“मुझे पता है। द लेजर।” वह रुका। “आप मेरी रक्षा क्यों करना चाहते हैं?”

"क्योंकि मैं इसके जरिए अपनी रक्षा कर रहा हूं।"

उसे समझ नहीं आया और इसी बात ने उसे अंदर ही अंदर परेशान और भ्रमित कर दिया।

“यायति वंश का अंत निकट है। तुम्हें मुझे अपने भीतर समाहित करने देना होगा। और मुझे तुम्हारा रूप धारण करने देना होगा। समय आ गया है।” साँप आगे की ओर झुका, उसकी पूंछ पीछे की ओर उठी और आसमान और भी लाल हो गया।

“नहीं...” वह उदास और भ्रमित होता जा रहा था। “आप गलत हैं। हमारे पास अभी भी उम्मीद है।”

"आशा करना अज्ञानता का कार्य है।"

उसका शरीर कांपने लगा, उसके पैर कमजोर पड़ गए और वह जहर खाकर जमीन पर गिर

पड़ा। वह बेकाबू होकर कांपने लगा और फिर उसने सिकुड़ते हुए ऊपर देखा, अब डर से कि नुकीले दांत पास आ गए थे, सरीसृप का मुंह खुल रहा था...

और यह बात सचमुच उसे अंदर से खा रही थी।

उसकी आंखें खुल गईं। बुखार ने उसे जकड़ लिया था और वह अपने शरीर को डगमगाता हुआ महसूस कर रहा था।

वह असमंजस में था, पसीना बहाते हुए इधर-उधर देख रहा था, तभी उसने देखा कि रुक्मिणी उसके सिर पर हाथ फेर रही है और उसकी देखभाल कर रही है।

"ठीक ठाक है।"

"क्या हुआ?"

“हम महल की ओर बढ़ रहे हैं, वृष्णि परिवार से मिलने के लिए।”

उसने आह भरी। उसकी निगाहें रथ के द्वार पर पड़ीं, जहाँ उसने देखा कि ज़मीन पहले से कहीं ज़्यादा ठंडी हो गई थी, चारों ओर से बर्फ़ ने उन्हें घेर लिया था और ऐसा लग रहा था मानो वे देवताओं के निवास की ओर बढ़ रहे हों। आसमान पहले से कहीं ज़्यादा नज़दीक लग रहा था, बारहसिंगे और खच्चर दिखाई दे रहे थे, दूर से हिम तेंदुए की म्याऊँ की आवाज़ आ रही थी और पेड़ लाल चेरी के पत्तों से ढके हुए थे।

दूर से वह समर्रा घाटी को निहार सकता था, जहाँ रत्वक वंश के अन्य पर्वत ऊँचे खड़े थे और जहाँ अंधक वंश के लोग रहते थे। उसने लोहे की ऊँची-ऊँची बाड़ें भी देखीं और उसे एहसास हुआ कि दो युद्धरत कुलों को अलग करने वाली एकमात्र चीज एक घाटी थी। वह जानता था कि उपजाऊ भूमि के लिए अंधक वंश पहले यहाँ आया था, लेकिन वृष्णि वंश बाद में आया। यह भी दोनों के बीच एक बड़ा विवाद था। ये पहाड़ियाँ किसकी हैं? और यह तय किया गया कि जब तक वे एक-दूसरे के क्षेत्र में प्रवेश नहीं करते, तब तक सब ठीक रहेगा।

बलराम द्वार के निकट पहुँच रहे थे और उन्होंने अपने चारों ओर व्यापारियों, किसानों, शिकारियों और सैनिकों को देखा। सभी लोग उस जर्जर और झुलसे हुए रथ को देख रहे थे जिसमें वे यात्रा कर रहे थे और बलराम को बीमार और बुखार से ग्रस्त देखकर कई लोग आपस में फुसफुसा रहे थे। वे उन्हें जानते ही थे। उनकी प्रतिमा यहाँ स्थापित थी। उनका हमेशा स्वागत किया जाता था, लेकिन वे कभी कृष्ण का साथ छोड़कर यहाँ नहीं आए। वे जानते थे कि उनका जीवन शांतिपूर्ण हो सकता था।

हालांकि ये लोग साधारण दिखते थे, लेकिन उन सभी के पास ऐसी शक्तियां थीं जो किसी दूसरे व्यक्ति की जवानी छीन सकती थीं। इतनी शक्ति होने से समस्याएं उत्पन्न हो सकती थीं। बलराम और कृष्ण के पास यह शक्ति नहीं थी, भले ही वे वृष्णि थे, क्योंकि उन्हें गोद लिया गया था। वे रक्त से वृष्णि नहीं थे।

कई घरों और पत्थर की इमारतों से गुज़रते हुए वह किले के दरवाज़े पर पहुँचा, जहाँ हर कोई फैशनेबल कपड़े पहने हुए था और रोमन कलाकृति की तरह सुंदर दिख रहा था। उसने यहाँ विदेशियों को भी देखा।

उसने किले की ओर देखा और सेना को देखकर अपनी आँखें बंद कर लीं, यह महसूस करते

हुए कि वह यहाँ सुरक्षित है। सोने से पहले उसे अपनी पत्नी की थपकी का एहसास हुआ।

*

उसने कामना की कि वह फिर कभी सपना न देखे।

और उसने ऐसा नहीं किया।

जब उसकी आंखें दोबारा खुलीं, तो वह किसी लाल आसमान की तस्वीर में नहीं था, न ही घिनौने सरीसृपों से भरे फ्रेम में, बल्कि वह यहीं था, तकियों के आराम में।

“आशा है आपकी नींद अच्छी रही होगी।” उसने अपने सामने एक युवक को देखा, जो शायद जवानी का भरपूर आनंद लेने के कारण काफी जवान लग रहा था। उसके घुंघराले, सुनहरे बाल थे, जो रंगे हुए थे, और उसकी भूरी आँखें थीं, साथ ही एक मनमोहक मुस्कान भी थी। उसका नाम युधाजित था और वह बलराम का पुराना दोस्त था। “कैसे हो दोस्त?”

"काफी बेहतर।"

“अच्छा,” वह मुस्कुराया। “आपकी पत्नी और आपके कमांडर चिंतित हैं।”

"वे कहां हैं?"

“तुम भी आराम कर रहे हो। किसी और जगह पर। शहर में प्रवेश करके तुमने लोगों को चौंका दिया है।” उसके चेहरे के आसपास मंडराती परछाइयाँ चिढ़ गईं।

बलराम ने सिर हिलाया। "मुझे आपसे बात करनी है।"

“और आप जरूर बोलिए। अभी आराम कीजिए। चलिए रात के खाने पर मिलते हैं।”

बलराम कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसने नहीं कहा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और फिर से सो गया। सफ़र और सपनों से थककर वह आराम कर रहा था।

*

बलराम ने अपना चेहरा धोया, कपड़े साफ किए और अपने पलंग के पास रखी वृष्णि की चादर ओढ़ ली। उनका दैनिक ध्यान समाप्त हो चुका था और वे भोजन के लिए आए। बलराम ने अपनी अलंकृत चप्पलें पहनी हुई थीं और उनकी त्वचा हमेशा की तरह कांसे जैसी चमक रही थी। उनका चेहरा सुशोभित था लेकिन कमजोर था, और उन्होंने भोजन कक्ष में अपने लिए तैयार भोजन की एक लंबी दावत देखी, जहाँ बांसुरी और बैंजो बज रही थीं।

बलराम ने देखा कि रुक्मिणी और अकोरजी पहले से ही मेज पर बैठे थे और युधजित भी वहीं मौजूद थे, वे आपस में बातचीत कर रहे थे।

“अच्छा, स्लीपर आ गया है,” युधाजित ने घोषणा की। “बैठ जाओ, मेरे पुराने दोस्त।”

मुझे आपका बेटा दिखाई नहीं दे रहा है।

"ओह, वह आजकल काफी विद्रोही हो गया है, इसलिए वह हमारे साथ शामिल नहीं होगा।"

बलराम पुत्र से मिलना चाहते थे। उनके इतनी दूर आने का यही उद्देश्य था। पुत्र को अंधकों की पुत्री से विवाह करना था और इस विवाह से उन्हें दोनों राष्ट्रों से व्यापक कूटनीतिक समर्थन प्राप्त होता।

“हम इस बारे में बात कर रहे थे कि आप ही अकेले ऐसे व्यक्ति थे जो बैल को अकेले ही हरा सकते थे,” रुक्मिणी ने मुस्कुराते हुए कहा। वह भी तरोताज़ा और साफ-सुथरी लग रही थी।

उलझे बालों और दाढ़ी वाले अकुरजी गंभीर भाव से भोजन कर रहे थे और बलराम वास्तव में उन्हें लेजर समझ रहे थे, क्योंकि वे अपनी सब्जियां खा रहे थे।

“जब मैं छोटा था,” बलराम मुस्कुराया।

“तुम अब भी वैसे ही हो,” युधाजित ने प्रशंसा करते हुए कहा।

"आपकी तरह, हमारे पास वास्तविक जीवन की समस्याएं हैं।"

“अरे वाह!” युधजित हँसते हुए बोला। “मैं भले ही जवान दिखता हूँ, लेकिन मेरी उम्र सौ साल या शायद उससे भी ज़्यादा है। हे भगवान, मुझे तो याद भी नहीं।” वह चौंक गया।

बलराम ने सिर हिलाया। उन्होंने खाना खाया, बातें कीं और हँसे। रुक्मिणी और अकुरजी के सामने युधजित ने व्यापार के बारे में कुछ नहीं कहा। जब रात अभी जवान थी और खाना खत्म हो गया, तो युधजित ने कहा: "अगर आप दोनों को कोई आपत्ति न हो तो मैं बलराम से अकेले में बात करना चाहूँगा।"

उन्होंने सिर हिलाया।

"कमरे में मिलते हैं," रुक्मिणी ने उसे थपथपाते हुए और आँख मारते हुए कहा।

बलराम भी मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। उसके जाते ही उसने देखा कि युधजित उसे घूर रही है।

“मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें बढ़िया शराब पिलाऊंगा,” उसने कहा।

वे एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने लगे, जब तक कि वे एक ऐसे कमरे में नहीं पहुँच गए जहाँ एक विशालकाय द्वारपाल खड़ा था। लेकिन इससे पहले कि वे निकल पाते, युधजित के सैनिकों ने उन्हें रोक दिया, जो रस्सियों और हथकड़ियों में जकड़े हुए बूढ़े, घावों से भरे योद्धाओं के एक समूह को ला रहे थे।

"मेरे स्वामी, हमने आपके लिए सीमावर्ती क्षेत्रों से कुछ गुलाम ढूंढ निकाले हैं।"

“आह,” युधजित मुस्कुराया, अपनी शराब की चुस्की लेते हुए युद्धबंदियों की ओर बढ़ा। “ये तो परिपक्व और युवा लग रहे हैं।” उसने बलराम की ओर मुड़कर देखा। “मेरे प्रिय मित्र, मुझे बस एक पल दीजिए।”

बलराम ने कुछ नहीं कहा। लेकिन उन्होंने देखा कि युधजित क्या कर रहा था। वह अपना हाथ दास के ऊपर ला रहा था और उसके हाथ से एक नीली ऊर्जा निकल रही थी, जिससे युधजित की उम्र और भी कम हो गई, जबकि उसके सामने खड़ा व्यक्ति पल भर में बूढ़ा हो गया, कागज़ की तरह सफेद और झुर्रियों से भर गया। ऊर्जाहीन होकर वे ज़मीन पर गिर पड़े और युधजित ने मंत्रोच्चार करते हुए कहा: “आह, पहले से कहीं ज़्यादा अच्छा लगा। क्या शानदार दावत है! बाकी तुम लोग ले लो, लड़कों,” उसने अपने सैनिकों से कहा और उन्होंने आदेश का पालन करते हुए कैदियों को पकड़ लिया और उन्हें ले गए, जबकि चीखें और उपहास भरी हंसी सुनाई दे रही थी।

बलराम ने कहा, "नाटकीयता हमेशा से आपकी खासियत रही है।"

"अरे प्लीज़। मथुरा में याद है जब हम खेलते थे तो मैं बाहरी लोगों को प्रभावित करने में कितना बुरा था?"

जब बलराम, कृष्ण और बाकी सब साथ खेलते थे, तब युधजित भी दूसरे लड़कों जैसा ही था।

युधजित शर्मीला था। और अब उसे इस हालत में देखकर बिल्कुल अलग तरह की यादें ताजा हो गईं।

युधाजित ने बलराम को एक कमरे से दूसरे कमरे में ले जाते हुए एक ऐसी जगह तक पहुंचाया जहां असंख्य घड़े और मोमबत्तियां थीं।

“मुझे रोमनों द्वारा पी जाने वाली सबसे उत्तम किस्म की बीयर मिली है,” उसने एक प्याला डुबोते हुए कहा। “इसे पीजिए।”

“ज़रूर,” बलराम मुस्कुराया। उसने एक घूंट लिया और खुशी से झूम उठा। “ओह, यह तो बहुत ही बढ़िया है।”

“सचमुच,” युधजित के होंठ लाल हो गए थे, लेकिन उसने और पिया।

“आपके बेटे के साथ क्या हुआ?”

“वह एक योद्धा है। युवा जोश से भरा है, भले ही वह मुझसे बड़ा दिखता हो,” उसने आह भरी। “लड़का पागल हो गया है क्योंकि वह अंधकों से लड़ना चाहता है, उन्हें नष्ट करना चाहता है, जबकि मुझे एक प्रतिद्वंद्वी होने से कोई आपत्ति नहीं है।”

"तो, वह आपसे बात नहीं करता।"

“इससे भी बुरा, वह गायब हो गया है,” युधजित ने बेपरवाही और निर्दयता से कंधे उचकाते हुए कहा। “सत्यकी का गुस्सा बहुत जल्दी आता है।”

"क्या उसकी बातों में सच्चाई की कोई संभावना है?"

“नहीं। उसका स्वभाव थोड़ा गुस्सैल है,” युधजीत ने कहा। “बिल्कुल तुम्हारी तरह, जब तुम बच्चे थे।”

“मैं बुद्धिमान था। कृष्ण मूर्ख थे और तुम शांत थे। मुझे यही याद है।”

दोनों हँसे और पाँचवाँ ड्रिंक पीते-पीते वे पुराने दिनों के बारे में गर्मजोशी से बातें करने लगे।

“लेकिन आपने मुझे जवाब नहीं दिया,” युधजित ने कहा। “आपने मुझे यह भी नहीं बताया कि आप यहाँ क्यों आए हैं। मैंने सुना है कि क्या हुआ है। प्रद्युमन पागल हो रहा है और रसातल पर हमला करने के लिए विजय यात्रा पर निकल पड़ा है। छल करने वालों को चोट पहुँचाना गलत फैसला है।” वह रुका। “लेकिन आप प्रधानमंत्री हैं, और आप टूटे हुए रथ के साथ इतनी जल्दी में यहाँ आए हैं। इन दीवारों के भी कान हैं, लेकिन मेरी आँखें भी हैं। आखिर बात क्या है?”

उन्होंने कहा, "एक समस्या आ गई है। लेकिन कोई बात नहीं। मैं इसका हल निकाल लूंगा।"

क्या मैं किसी अपराधी को शरण दे रहा हूँ?

"शायद।"

उसने अपनी पीठ थपथपाई। “और भी अच्छा! मुझे प्रद्युमन को जितना हो सके परेशान करना अच्छा लगता है। वह छोटा लड़का तो सच में सिरदर्द है। लेकिन शराब पीने और एक बूढ़े आदमी की बातें सुनने के अलावा तुम यहाँ किसलिए आए हो? क्या तुम्हारे मन में कुछ और भी है?”

बलराम ने कहा, "हां।"

"और वह यह है कि?"

विवाह और शांति।

“किसके बीच?”

"तुम्हारे और देवमेधा के बीच।"

युधाजित ने एक पल के लिए उसकी ओर देखा और फिर जोर से हँस पड़ा। "और यह कितना बेतुका विचार है? वे तो जंगली हैं और हम कुलीन हैं।"

यायाती समुदाय में कोई वर्गभेद नहीं है।

“अच्छा, तो तुम ऐसे देश में रहते हो जहाँ आज भी लोग सिंहासन के लिए लड़ते हैं। बाला,” उसने धीरे से कहा, “तुम्हें यह समझना होगा कि अंधक लोग इंसान की खाल में छिपे जानवर हैं। उनसे विवाह करके उन्हें वश में करना शेर को अपने बिस्तर पर सुलाने जैसा है। तुम जानते हो कि अंततः वे तुम्हारा वध कर देंगे।”

"मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"लेकिन आप ऐसा क्यों चाहेंगे?"

वह नशे में था, लेकिन वह अभी अपने इरादे ज़ाहिर नहीं करना चाहता था। "क्योंकि मैं द्वारका में शांति चाहता हूँ। दो शक्तिशाली राष्ट्रों का एक साथ आना एक ऐसी ताकत है जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।"

“सुनो, मुझे शयनकक्षों में ले चलो,” वह खड़ा हुआ और लड़खड़ा गया, “और अगर यह एहसान किया गया, तो मैं कल यह सुनिश्चित करूँगा कि हम इस विषय पर एक सार्थक बातचीत कर सकें।”

बलराम ने शर्त मान ली, फिर उसे बांह से पकड़कर ले जाने लगे। रास्ते में सैनिकों और दासियों ने मदद करने की कोशिश की, लेकिन बलराम अपने एक हाथ में लाठी और दूसरे हाथ में अपने मित्र को लिए कछुए की तरह धीरे-धीरे चलते रहे और किसी भी मदद को ठुकरा दिया। उन्होंने कहा कि ताज पहनने से पहले वे दोस्त थे और हमेशा एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे।

जैसे ही बलराम ने युधजित को पलंग पर लिटाया, उसने कमरे में चारों ओर नजर डाली और उसकी नजर किसी चीज पर पड़ी।

यह एक साइड टेबल थी और उस पर कुछ पत्र बिखरे पड़े थे। ये पत्र पीले रंग के थे, किसी प्राचीन भाषा में तिरछी लिखावट में थे, लेकिन बलराम उन्हें समझ गया क्योंकि वह भाषाओं का पारखी था। उसे भाषाओं का अध्ययन करना बहुत पसंद था। उसने पत्रों को देखा और पाया कि वे बलराम के बारे में लिखे गए थे—कि वह अपने रास्ते पर है, और उसके साथी उसके साथ हैं।

और इसमें दोनों देशों के बीच संघ को लेकर उनके एजेंडे भी शामिल थे।

लेकिन इन सभी पत्रों में एक बात समान थी।

ये सभी लेख लेजर द्वारा लिखे गए थे।

12

कृष्ण हमेशा सोचते थे कि सामवा अपनी लंबी मौन अवधि के दौरान क्या सोच रहा होगा।

बचपन में वह एक शांत लड़का था। वह कोने में बैठा रहता था। वह ज्यादा बोलता नहीं था। प्रद्युमन को दिखावा करना बहुत पसंद था। लेकिन सामवा बिल्कुल विपरीत था। अगर वह कुछ भी हासिल कर लेता, तो उसका जिक्र करना भी जरूरी नहीं समझता था। लेकिन कृष्ण जानते थे कि इसमें सामवा की भी गलती थी, क्योंकि बचपन में सामवा अपनी उपलब्धियां दिखाता तो था, लेकिन कृष्ण उन्हें नजरअंदाज कर देते थे और प्रद्युमन की उपलब्धियों पर ज्यादा ध्यान देते थे।

इसमें कोई भेदभाव नहीं था। यह तो बस किसी व्यक्ति के काम का मूल्यांकन करना था। प्रद्युमन बेहतर था और कृष्ण यह सुनिश्चित करते थे कि उसे यह बात पता चले। लेकिन इसी वजह से सामवा में असुरक्षा की भावना पैदा हो गई और वह पतित बन गया।

उसकी मासूमियत तब खत्म हो गई जब उसने एक मुर्गी का गला घोंटकर उसे अपने कमरे के कोने में छोड़ दिया।

कृष्ण जानते थे कि समवा एक समाजविरोधी व्यक्ति है और वह कृष्ण की बात को सही साबित करने के लिए बड़ा हुआ, और उसने कृष्ण और उनकी पत्नी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

शायद वह अब फिर से वही कर रहा है। शायद वह चाहता है कि कृष्ण उसे जरूरतमंद पुत्र के रूप में स्वीकार करें।

लेकिन कृष्ण यह भी जानते थे कि प्रद्युमन उनके पुत्र के समान था, जबकि सामवा ऐसा नहीं था। उनके मन में उसके लिए वैसी भावनाएँ कभी नहीं थीं। उन्होंने कभी ऐसा महसूस नहीं किया।

वे दुर्वासा जा रहे थे। द्वारका के शुष्क क्षेत्रों में बसा एक छोटा सा गाँव, जो कृष्ण और उनके साम्राज्य की महिमा से अछूता था। यह एक लंबी, बल्कि थकाऊ यात्रा थी। वे चुपचाप अपनी घोड़ियों पर सवार थे, कुछ दिन पहले पिशाच के साथ हुए भयंकर युद्ध के बारे में एक शब्द भी नहीं बोल रहे थे। वे इसके बारे में इसलिए नहीं बोल रहे थे क्योंकि कृष्ण को उस युद्ध का अपराधबोध था।

क्या उसने सचमुच अपने भले बेटे को सबसे बुरी स्थिति में पहुँचने दिया? प्रद्युमन का क्या हुआ? वह ये सवाल पूछना चाहता था, उसके पास जाना चाहता था, उससे विनती करना चाहता था, लेकिन फिर उसे याद आ जाता कि उसने वह जगह क्यों छोड़ी थी। उसे ऐसा करने के लिए कहा गया था। खुद प्रद्युमन ने। उसने कृष्ण से विनती की थी कि अगर कृष्ण चाहते हैं कि प्रद्युमन गुमनामी में जीना बंद कर दे, तो उन्हें स्वयं वनवास ले लेना चाहिए।

और एक और वजह थी। एक ऐसी बात जिसका उसने किसी से जिक्र नहीं किया था।

“हम करीब हैं,” समवा ने लंबी चुप्पी तोड़ते हुए कहा।

मुझे उम्मीद है कि आप इस बारे में सही हैं।

समवा ने उसकी ओर देखा। "मुझे विश्वास है।"

आस्था तर्कसंगत आधार से आनी चाहिए।

"नहीं," समवा ने घोड़े से उतरकर गाँव के पास ही डेरा डाला और आराम करने लगा, क्योंकि रात हो चुकी थी और ठंडी हवाएँ शरीर पर महसूस हो रही थीं। "विश्वास तब काम आता है जब तर्क भी काम करना बंद कर देता है। बस उस पर भरोसा कर लो।"

कृष्ण ने उपहास किया।

लड़का बड़ा हो गया था।

*

एक और रहस्य था जो उसने साझा नहीं किया था।

कृष्णा को सोने में बहुत परेशानी हो रही थी।

कई बार ऐसा होता था कि उसे लंबे समय तक नींद नहीं आती थी। कई बार तो ऐसा लगता था कि वह अचानक मर जाएगा। क्योंकि जब भी वह अपनी आंखें बंद करता, अतीत फिर से उसके सामने आ जाता था।

और वे अपने साथ भूकंप और भयानक दृश्य लेकर आएंगे। वे लहरों के साथ भी आएंगे। और जैसे उदासी भरे आसमान के नीचे उसे ठंडक महसूस होती थी, वैसे ही उसे यहाँ भी महसूस हुआ जब वह उन यादों में खो गया—जब उसने युद्ध जीता था। उसने पांडवों से दूरी बना ली थी और खुद पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया था। उसने अर्जुन से भी दूरी बना ली थी क्योंकि कृष्ण ने उसके सबसे अच्छे दोस्त के साथ जो किया था।

जहां तक उसे याद था, वह हमेशा से ही पश्चाताप करने वाला व्यक्ति था। और जंगल में अकेले शांति से रहना और धीरे-धीरे मृत्यु को प्राप्त होना ही उसकी एकमात्र इच्छा थी।

लेकिन अब वह ऐसा नहीं कर सकता था।

कर्म का फल अवश्य मिलता है।

कृष्णा ने अपनी आँखें बंद कर लीं, होंठ दबाए, कंबल ओढ़कर सोने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ महसूस नहीं हुआ। उसकी हालत और खराब हो गई। उसे लगा जैसे उसकी सारी ऊर्जा खत्म हो गई हो। उसने आह भरी और खुद को गर्म करने के लिए आग जलाने के लिए अपने तम्बू से बाहर आया। वह आग के पास बैठकर उसे देख रहा था, तभी उसके चारों ओर धुंध छाने लगी। धुआँ और धुंध। कोहरा घना और काला था।

आसपास का वातावरण असामान्य था।

कृष्णा तुरंत समझ गया कि यह क्या है, लेकिन डर के मारे वह जम सा गया। जब से उसने घर से बाहर कदम रखा था, तब से वह बहुत डरा हुआ था।

सबसे ज्यादा, मरने का डर।

जब आप इतने लंबे समय तक भगवान की तरह जीते हैं, तो अंततः आपको एहसास होता है कि इंसान होने के भी अपने नुकसान होते हैं।

कृष्ण सामवा को पुकारना चाहते थे, लेकिन उनका मुँह बंद हो गया था, जबड़ा जम गया था और मुट्ठी भींच गई थी। वे तंबू के अंदर रखे अपने हथियारों को लेने के लिए कूदना चाहते थे, लेकिन इससे पहले कि वे ऐसा कर पाते, एक व्यक्ति उनके सामने प्रकट हो गया।

और वह देखने में किसी इंसान जैसा लग रहा था, हालांकि वह इंसान नहीं था। सफेद कवच पहने एक लंबा आदमी खड़ा था। उसका हेलमेट भी सफेद था।

वह कुछ देर वहीं खड़ा रहा। उनके बीच सन्नाटा छा गया। फिर हेलमेट उतारा गया, और एक पीले, गुस्से से भरे आदमी का चेहरा उसकी ओर मुड़ा, उसकी आँखें गहरी धँसी हुई थीं और उसके लंबे काले बाल कमर तक लटके हुए थे।

लेकिन उसके बारे में सबसे घिनौनी बात उसका मुंह था—उसके मुंह के दोनों तरफ एक लंबा घाव था।

कृष्णा ने आह भरते हुए कहा, "दुर्जय, तुम पर यह लुक बहुत अच्छा लग रहा है।"

“मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं तुम्हें फिर देखूंगा।” दुर्जय ने आह भरी और कृष्ण के चारों ओर चक्कर लगाने लगा, उस पर झपटने की कोशिश नहीं की। “पर देखो, हम यहाँ हैं।”

“मुझे लगता है कि तुम्हें मुझे मारने के लिए भेजा गया है,” कृष्णा ने कहा।

उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "हाँ।"

और आपको इसमें मजा आएगा।

"बिल्कुल।"

“हम कभी दोस्त थे,” कृष्ण ने सिर हिलाते हुए कहा। “हमने मिलकर इस धरती की नींव रखी थी। तुम और मैं।”

"मुझे निर्वासित करने से पहले," दुर्जय ने कहा।

“तुम राक्षस बना रहे थे। जीव-जंतु बना रहे थे। जादू और विज्ञान के साथ प्रयोग कर रहे थे। तुम्हें मौत से डर लगता था।”

“बेशक, मैं डरता था। मुझे आज भी मौत से डर लगता है।” दुर्जय के चेहरे पर चिंता और उदासी झलक रही थी। “मेरे माता-पिता दोनों की स्वाभाविक मृत्यु हुई थी और मुझे डर लगता था कि कहीं मेरी भी न हो जाए। मैं जीना चाहता था। मुझे जीना अच्छा लगता था।”

“अच्छा, भगवान ब्रह्मा...”

“फिर से वो सब शुरू मत करो,” उसने आँखें घुमाते हुए कहा। “मैं हम सबको अमर बनाने की कोशिश कर रहा था और तुमने मेरी बात नहीं मानी। तुमने मेरे कबीले को देश निकाला दिया, मुझे द्वीप से बाहर निकाल दिया।”

"यही करना सही था।"

“और जीवन में अन्य चीजें भी इतनी ही सही रही हैं?”

कृष्ण इसका उत्तर नहीं दे सके। उन्होंने आह भरी। “खैर, तुम्हारी मनोकामना पूरी हो गई। तुम वितिहोत्र हो।”

और मैं तुम्हें मार सकता हूँ।

“नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते। क्योंकि जादू से खेलने पर कुछ सीमाएँ होती हैं।” कृष्ण मुस्कुराते हुए, पीठ पर हाथ बांधे चल रहे थे। उन्हें लग रहा था कि वे विजय के कगार पर हैं। “और तुम्हारी सबसे बड़ी सीमा यह है कि तुम मुझे जानते हो। सोच रहे हो कि मैंने तुमसे वह छोटी सी बात क्यों की? वह उस जादू को सक्रिय करने के लिए थी जिसका उपयोग करके तुम

वितिहोत्र बने थे। तुम मुझे मार नहीं सकते क्योंकि तुम मुझे जानते हो। वितिहोत्र अपने परिचितों को चोट नहीं पहुँचा सकते। यही उनकी समस्या है। एकमात्र समस्या। असीमित शक्ति में खामियाँ तो होती ही हैं। इसे मत भूलो।"

दुर्जय ने निराशा से भरी निगाहों से नीचे देखा। "मैं बलराम से भी मिला था। मैंने उसे न मारने का फैसला किया।"

"दफा हो जाओ, तुम नहीं कर सके। तुमने कोशिश की। तो, तुमने कोई दूसरा रास्ता ढूंढ लिया होगा।" कृष्णा दुर्जय के करीब आया, चारों ओर धुंध छाई हुई थी। उसकी आँखें अपने पुराने दोस्त की आत्मा में गहराई से उतर रही थीं। "मुद्दा यह नहीं है दुर्जय कि तुम बहुत बुद्धिमान हो, बल्कि यह है कि तुम दूसरों को मूर्ख समझते हो।"

दुर्जय जम सा गया। वह अपने हाथ उठाकर तलवारें आगे बढ़ाना चाहता था, उस पर हमला करना चाहता था। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। कोई चीज़ उसे रोक रही थी।

कृष्णा ने उसका साथ छोड़ दिया और उससे दूर चले गए, और जैसे ही वह गए, दुर्जय जोर-जोर से हंसने लगे।

"क्या बात है?" कृष्णा मुड़ा, उसकी नीली आँखें चौड़ी हो गईं।

आप एक बात भूल गए।

"क्या?"

"मैं तुम्हें मार तो नहीं सकता, लेकिन दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रभावित कर सकता हूँ," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "और जहाँ तक मुझे याद है, तुम्हारे पास अब कोई शक्ति नहीं बची है। तुम महज़ एक इंसान हो।"

और धुंध छंटने लगी, धुआं गायब हो गया, और कोहरा कहीं भी नजर नहीं आ रहा था।

दुर्जय भी ऐसा ही था।

कृष्ण वहीं बैठे रहे, जबकि अलाव जलता रहा। समवा तम्बू से बाहर निकला और अपनी शर्मिंदगी भरी, नींद से भरी आवाज में पूछा:

"क्या हुआ?"

कृष्ण स्तब्ध और भयभीत थे। उन्हें सतर्क रहना होगा। अब उनसे बदला लिया जाएगा। और यह यात्रा उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक खतरनाक हो गई है।

उन्होंने जवाब में कहा, "कुछ नहीं। अभी तक कुछ नहीं।"

*

वे एक ऐसे गाँव में दाखिल हुए जिसे एक तरह का विशाल बाज़ार कहा जा सकता था। उनके चारों ओर बहुत हलचल थी—नृत्य, संगीत, ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते लोग और तरह-तरह की चीज़ें बिक रही थीं। रेतीली हवाओं के झोंके आते और उन्हें परेशान करते, लेकिन उन सभी ने अपने चेहरे ढके रखने के लिए सिर पर पट्टियाँ बाँध रखी थीं।

"यहाँ तो बहुत भीड़ है। आप दुर्वासा को कैसे ढूँढेंगे?"

"नहीं, मैं उस शिष्य को ढूंढने की योजना बना रहा हूँ जो दुर्वासा के साथ यहाँ था। यहीं से वह चर्मपत्र आया था और फिर इस द्वीप के चारों ओर मैंने जिन कई दूतों की खोज की है, उनके

माध्यम से मुझ तक पहुँचा। सबा को शायद उस तट का सटीक पता हो जहाँ से दुर्वासा ने अयस्क देखा था।"

"शिष्य का नाम क्या है?" कृष्णा ने पूछा।

"सबा," उसने कहा। "दुर्वासा ने एक पेड़ के नीचे शरण ली थी और सबा आकर उन्हें खाना खिलाती थी। हालांकि, उसके साथ क्या हुआ, मुझे इसका कोई अंदाजा नहीं है।"

"क्या संदेशवाहक ने आपको यह नहीं बताया था?"

"दुर्भाग्यवश, मेरा वह दूत चेचक से मर गया," समवा ने दांत पीसते हुए कहा। "कोई बात नहीं। हम सबा को खुद ढूंढ लेंगे।"

कृष्णा को इधर-उधर घूमने में बहुत मुश्किल हो रही थी, लोग उसे धक्का दे रहे थे और खींच रहे थे, और उसे एहसास हो रहा था कि यहाँ उसके लिए कहीं भी जगह नहीं है। यहाँ बहुत कुछ चल रहा था।

बाजार में दही और मक्खन के जार बेच रहे एक लड़के पर उनकी नजर पड़ी। कृष्णा रुक गए, उनकी आंखें चौड़ी हो गईं।

"मुझे कुछ और खाने की ज़रूरत है।" वह रुक गया और समवा ने उससे पूछने की कोशिश की कि क्या हुआ, लेकिन उसने जार उठाया और उसमें से खाने लगा, मानो उसने महीनों से कुछ खाया ही न हो।

समवा ने मुड़कर देखा तो उसके बूढ़े पिता के होंठ दही से सने हुए थे। "हे भगवान! आप तो बिल्कुल बच्चे जैसे हैं!"

मुझे यह काफी समय से नहीं हुआ है।

"क्या आपके खेत में दही नहीं बनता?"

"यह बहुत ज्यादा मेहनत का काम है," कृष्णा ने कंधे उचकाते हुए कहा।

समवा ने अपनी आँखें घुमाईं।

वे एक झोपड़ी की ओर बढ़े, क्योंकि कृष्ण ने दही खत्म करने का संकल्प लिया था। सांव, अपने हुड और लोहे के मुखौटे के साथ, अंदर गया और पूछा: "मैं सबा को ढूंढ रहा हूँ। वह एक युवती है..."

फिर वह एक झोपड़ी से दूसरी झोपड़ी में जाने लगा। कृष्ण भी उसके साथ-साथ चलने लगे और थकने लगे।

जब वे आखिरी कुछ जगहों में से एक पर पहुँचे, तो उन्हें बताया गया कि वहाँ एक छोटा सा अस्तबल है जहाँ उन्हें सबा मिल सकती है। इसलिए, वे अस्तबल की ओर चल पड़े, और जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ कोई घोड़ा नहीं था। अस्तबल खाली था। उन्होंने दरवाजा खटखटाया और किसी के बाहर आने का इंतजार करने लगे।

एक बूढ़े आदमी ने ऐसा किया। थकी हुई आँखों और तिरस्कार तथा घोर उदासी से भरी नज़रों के साथ।

"हेलो," समवा ने बात शुरू की, "हम सबा को ढूंढ रहे हैं।"

"क्या तुम उनमें से एक हो?" बूढ़े, गंजे व्यक्ति ने कहा।

“वे कौन हैं?”

“डाकू,” उसने कहा।

“डाकू?”

बूढ़े व्यक्ति की आंखों में आंसू आ गए और उसने कहा: "वे लोग जो उसे ले गए।"

और कृष्ण ने समवा से नजरें मिलाईं क्योंकि दोनों को एहसास हुआ कि उनकी यात्रा उनकी अपेक्षा से भी बदतर हो गई है।

13

मछुआरा जो कुछ उसने देखा उससे दंग रह गया। एक बच्चा। उसने अभी-अभी एक बच्चे को पानी की लहरों पर बहते हुए देखा था, जो ज्वार और सूरज की रोशनी से सुरक्षित था।

“ये क्या...” उसका चेहरा पीला पड़ गया जब उसने बेंत की टोकरी पकड़ी, इस प्रक्रिया में वह अपनी सरकंडे की नाव से लगभग गिरते-गिरते बचा लेकिन किसी तरह उसे पकड़े रहा।

जब उसे होश आया, तो उसने धुंधले आसमान के नीचे बच्चे को अपनी बाहों में उठाया और उसकी ओर देखा। "प्यारे बच्चे, तुम कौन हो?"

लड़के की नीली आँखें थीं। और वह देखने में राजसी लग रहा था। लगभग इंसान जैसा।

“तुम गलत जगह पर हो, बच्चे।” मछुआरे ने मुस्कुराते हुए कहा। “यह राक्षसों का इलाका है और यहाँ किसी मनुष्य का होना सरासर गलत है।”

मछुआरे के बड़े-बड़े दांत, चौड़ा जबड़ा, उभरा हुआ माथा, सांवली त्वचा और खूंखार दिखने वाली आंखें थीं, लेकिन फिर भी उसका चेहरा अत्यंत दयालु और स्नेहपूर्ण था। उसने नाव को किनारे की ओर चलाना शुरू किया और जब वह किनारे पर पहुंचा, तो उसने वहां अन्य नावें, अन्य मछुआरे भी देखे, जो सभी अपने-अपने शिकार, जालों में फंसी मछलियां और सैल्मन मछली बटोर रहे थे। लेकिन उसके पास कुछ नहीं था।

उनके यहाँ अभी-अभी एक बच्चा हुआ है।

“सब लोग! देखो मुझे क्या मिला!”

जब मछुआरे ने बच्चे को ऊपर उठाकर प्यार से सबको दिखाया, तो बाकी सभी मछुआरे उसके चारों ओर जमा हो गए थे।

मुझे एक मानव बच्चा मिला।

सभी लोग अचंभित थे।

और फिर वे अपने होंठ चाटने लगे।

चलिए इसे पकाते हैं!

“चलो इसे पकाते हैं!”

चलो इसे भूनते हैं!

मछुआरे ने तुरंत अपने साथियों को सिर हिलाकर सहमति दी। उसे भी भूख लगी थी। मछली से उसकी भूख उतनी नहीं मिटती जितनी इंसान के मांस से मिटती। और वह उसे कुतरना, खाना और चबाना चाहता था।

उन्होंने कहा, "चलिए इसके साथ सारी सब्जियां भी तैयार कर लेते हैं।"

और सबने खुशी से जयकार की, ताली बजाई और आनंद मनाया। मछुआरा उसे झोपड़ी की ओर ले गया, और जैसे ही वह चलने लगा, उसने किसी को पुकारते हुए सुना:

“लड़के!”

उसने मुड़कर देखा तो उसे काले बालों और लंबे काले गाउन में एक युवती दिखाई दी। लेकिन

फर्क यह था कि उसने अलंकृत आभूषण पहन रखे थे, जो उसकी राजसी उपस्थिति को दर्शाते थे। हालांकि उसे किसी परिचय की आवश्यकता नहीं थी। आखिरकार, वह रसातल के पूर्वी राजा शंबरा के महल से आई थी।

और वह जानता था कि वह कौन थी। दरअसल, वह एक रसोइया थी, शंबारा की पसंदीदा रसोइया, जो उसकी अत्यधिक भूख का ख्याल रखती थी और मछुआरों के समुदाय में आकर खुद मछलियाँ चुनती थी। वह मिलावटी या खराब किस्म की मछलियाँ नहीं लेती थी। उसके लिए सही मछलियाँ ही ज़रूरी थीं और वह बहुत ही चुनिंदा और पूर्णतावादी थी। वह अक्सर यहाँ आती थी, अच्छी मछलियों को चुनती थी और खराब मछलियों से अलग करती थी।

“तुम्हारे पास वहाँ क्या है?”

"माया, चलो भी, ये कुछ नहीं है। ये मेरी खोज है। मैं इसे बेचना नहीं चाहता।"

“तुम्हें पता है राजा को शिशु कितने प्यारे होते हैं?” माया ने अपनी भौंहें उठाईं। “मैं तो वो नहीं हूँ जो उन्हें यह बताएगी कि एक मामूली मछुआरा, जो उन्हें कर देता है, उनसे चोरी कर रहा है, है ना?”

मछुआरे ने गुर्राते हुए कहा, "यह ठीक नहीं है। मैं उसे खाना चाहता था।"

“वर्ग व्यवस्था का यही सार है,” माया आगे बढ़ी और बच्चे को उससे छीन लिया। “अमीरों को सब कुछ मिलता है और गरीबों को कुछ नहीं।”

और वह बच्चे को दूर ले गई, जहाँ तक संभव हो, सबकी नज़रों से ओझल। वह उसे कारवां में ले जाना चाहती थी। वह उसे खुद खाना चाहती थी और जब वह उसे खाने के लिए घुटने टेकने लगी, तो बच्चे ने उसकी उंगलियाँ कसकर पकड़ लीं और नहीं छोड़ीं। उसने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा।

माया ने कुछ देर तक उसे देखा और फिर मुस्कुरा दी। बच्चा खिलखिलाकर हंसा और तुरंत अपने हाथ हिलाने लगा।

“तुम कौन हो, मेरी प्यारी?” माया ने पूछा। “तुम कुछ खतरनाक इलाकों में हो।”

लड़के ने बस एक हल्की सी आवाज़ निकाली और फिर अपनी आँखें बंद कर लीं। माया ने उसे बड़ी सावधानी से अपनी बाहों में उठाया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि उसके लंबे नाखून उसके नाज़ुक शरीर को न छूएं, और फिर उसे अपने सीने से लगा लिया।

“मुझे उम्मीद है कि तुम ठीक हो,” उसने कहा। “मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हें अभी खा जाऊंगी। मेरी भूख मर गई है। लेकिन यह मत सोचना कि मैं तुम्हें बाद में नहीं खाऊंगी।”

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। लड़का भी खिलखिलाकर हंस पड़ा।

उन्होंने आँखें मूँद लीं।

*

उसने इसे खोला।

प्रद्युम्न अपने बिस्तर पर हांफते हुए लेटा था। वह कुछ देर तक छत को देखता रहा। फिर उसने करवट बदली और अपनी पत्नी की ओर देखा। वह भी ऊंघ रही थी और उससे शराब की बदबू आ रही थी। उसने हाल ही में बहुत ज्यादा शराब पी ली थी। उसने अपने होंठ दबाए और अधनंगा

होकर फर्श पर लेट गया और अपने बेटे को देखने के लिए कमरे में चला गया।

अनिरुद्ध।

वह लकड़ी के पालने में था और प्रद्युमन ने यह सुनिश्चित किया कि वह उसके पास ही रहे। अनिरुद्ध तेजी से बढ़ रहा था।

वह उसे जगाकर उसके साथ खेलना चाहता था, लेकिन यह तो सरासर क्रूरता होगी, है ना? इस विचार पर प्रद्युमन मन ही मन मुस्कुराया और उसकी शांति भंग हो गई जब उसने दरवाजे पर दस्तक सुनी।

उन्हें पता था कि दरवाजा खटखटाना तभी संभव है जब कोई अत्यावश्यक बात हो। प्रद्युमन जल्दी से चले ताकि कमरे में मौजूद बाकी दो लोग जाग न जाएं। जब उन्होंने दरवाजा खोला तो देखा कि उनका अंगरक्षक खड़ा है।

हमारे यहाँ एक मेहमान है।

"क्या वह अब यहाँ है?" प्रद्युम्न मुस्कुराया.

"जी महाराज।"

प्रद्युम्न अपने अंगरक्षकों के साथ चलते हुए अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया।

रसतला के वास्तुकार और मूल राक्षस से मिलने के लिए।

*

राक्षस जन्म से ही अमर थे। वे बुढ़ापे से नहीं मर सकते थे और प्रद्युमन ने शंबरा के महल की घेराबंदी के दौरान और उस मोटे पेट वाले राक्षस को हराने और मारने के समय सभी प्रकार के राक्षसों का सामना किया था।

और मायासुर उनमें सबसे बड़ा था। वह मूल राक्षस था। लेकिन दुर्भाग्य से उसे वह सम्मान नहीं मिला जिसका वह हकदार था।

प्रद्युम्न अपने सिंहासन पर बैठे रहे और अपने कुछ अंगरक्षकों को मायासुर के साथ दुर्व्यवहार करने, उसे धक्का देने और धकेलने की अनुमति देते रहे, जबकि उनके अन्य अंगरक्षक सतर्क खड़े रहे। वास्तव में, दुर्गाज्योति भी एक सलाहकार की तरह सिंहासन के एक कोने में खड़ी थीं। उन्होंने उन्हें प्रधानमंत्री नियुक्त करने के बारे में सोचा था, लेकिन यह बहुत जल्दबाजी होगी।

मायासुर देखने में आकर्षक लग रहा था। उसके लंबे बाल, बड़ी-बड़ी आंखें और बाकी राक्षसों की तरह उभरा हुआ जबड़ा था। उसने मनुष्यों की तरह एक चोगा, पतलून और जूते पहने हुए थे।

“आप आ गए,” प्रद्युमन ने घोषणा की। “हमारे पास आने के लिए भगवान मायासुर आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।”

“आपने मुझे बुलाया था,” मायासुर मुस्कुराया। “और मैं यहाँ हूँ।”

“अरे, रहने दीजिए। आप एक शराबखाने में नशे की हालत में पाए गए थे। जब से आपको रसातल से निर्वासित किया गया है, जादू से आपको अंदर जाने से रोका गया है, तब से आप कृष्ण के आसपास मंडरा रहे हैं क्योंकि आपको यहाँ शरण मिल गई है।”

“उन्हें अपने बड़ों के साथ ऐसा बर्ताव नहीं करना चाहिए,” मायासुर ने कांपती आवाज़ में कंधे उचकाते हुए कहा। एक समय वह एक महान व्यक्तित्व थे, लेकिन अब समय ने उन्हें धूल बना

दिया था। अमरता का यही हाल होता है।

"एक बुजुर्ग व्यक्ति ने कुछ बेहद संदिग्ध प्रवेश द्वार बनाए थे, जिसके कारण दुश्मन की भारी संख्या में अतिरिक्त सेना आई और उन्होंने उन द्वारों को नष्ट कर दिया।"

“खैर...” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “सच कहूँ तो, मुझे समय नहीं दिया गया था। क्या तुम सिर्फ मुझे बुरा महसूस कराने के लिए यहाँ आए हो?”

“नहीं, ऐसा नहीं है,” प्रद्युमन अपने आसन से उठे और अपने ऊंचे सिंहासन से नीचे उतरते हुए उस दुबले-पतले बूढ़े व्यक्ति की ओर बढ़े और उसके चारों ओर चक्कर लगाते हुए बोले, “मैं आपसे आपके उस खास प्रोजेक्ट के बारे में पूछ रहा हूँ।”

"क्या?"

इसके बारे में कई मिथक प्रचलित थे।

"यह क्या है?"

“मायासभा।”

मायासुर गुर्राया। "दुर्भाग्यवश, यह सच नहीं है। जैसा कि आपने कहा, महाराज, यह सब मिथक हैं।"

“हाँ, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि माया का स्रोत वहीं है। वही है जो तुम सभी राक्षसों को शक्ति प्रदान करता है।”

मायासुर ने प्रद्युमन पर झपट्टा मारा। “तुम्हारे मन में क्या चल रहा है? क्या तुम हर राक्षस के भीतर की ज्योति को प्रज्वलित करना चाहते हो?”

"अगर इससे मुझे माया मिल जाएगी, तो ठीक है।"

“इससे होकर गुजरना असंभव है। मायासभा अभेद्य है।”

“यह तुम्हारी चिंता का विषय नहीं है,” प्रद्युमन मुस्कुराया। “तुम्हें भरपूर इनाम मिलेगा—धन, सोना, महल, स्त्रियाँ, तुम्हें और क्या चाहिए?”

मायासुर रुक गया। वह असमंजस में था। यह उसके पूरे वंश, उसकी पूरी वंशावली के साथ विश्वासघात करने जैसा था।

“तुम पहले ही बहुत कुछ त्याग चुके हो। तुम यहाँ सुख-सुविधाओं के साथ अपना जीवन जी सकते हो। और मैं तुम्हें सब कुछ प्रदान करने के लिए तैयार हूँ।”

“तुम माया का क्या करना चाहते हो? यह इंसानों के उपभोग के लिए नहीं है।”

मुझे पता है। लेकिन हम साधारण इंसान नहीं हैं।

“मायासभा...इसमें बहुत सारे भ्रम हैं, यह आपकी परीक्षा लेती है, आपको भ्रमित करती है और आपको तोड़ देती है। केवल बलवान ही बचेंगे। और इसे समझ लो।”

“मुझे पता है। और मैं मजबूत हूँ,” प्रद्युमन ने कहा। “मैं इसे खुद हासिल करूँगा। और इसके लिए मैं हर बंधन तोड़ दूँगा।”

मायासुर ने अपने जबड़े भींच लिए और द्वारका के राजा से आँखें मिलाईं। “तुम सच में गंभीर हो, है ना? ओह, रावण की तलवार की कसम, मैं तुम्हें बता सकता हूँ, लेकिन उम्म...” उसने गले में अटके हुए स्वर को निगलते हुए कहा, “ठीक है, मैं तुम्हें बताता हूँ।”

और आपकी कीमत क्या है?

“कुछ नहीं।” उसने अपना सिर हिलाया।

"क्यों?"

“क्योंकि मैं एक ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ जहाँ मुझे पता हो कि मुझे यह करना पड़ा क्योंकि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था,” उसने कहा। “और क्योंकि अगर मैं ऐसा नहीं करूँगा तो तुम मुझे मार डालोगे।”

प्रद्युमन ने उसके कंधे थपथपाते हुए कहा, “समझदार आदमी। मेरा मानना है कि उम्र के साथ परिपक्वता आती है। और दूरदर्शिता भी, हालांकि मैं तुम्हें पहले यातना देता और फिर ज़रूरी कार्रवाई करता। लेकिन अफसोस, तुम मेरे सेनापति को इसकी सूचना दे सकते हो। बहुत-बहुत धन्यवाद।”

गार्ड आए और उसे अपने साथ ले गए।

प्रद्युमन दुर्गाज्योति की ओर बढ़ा। "आप क्या सोचती हैं?" कमरे में मौजूद लोग तितर-बितर हो चुके थे और केवल सैनिक ही बचे थे।

मुझे लगता है कि तुमने उसे धमकाने का बढ़िया काम किया।

“मैं नाटकीय होना चाहता था। इसके लिए मुझे पिताजी का शुक्रिया अदा करना चाहिए,” प्रद्युमन ने अपने सुंदर दांत दिखाते हुए मुस्कुराते हुए कहा। “अगर उन्होंने मायासुर को शरण न दी होती, तो मैं आज यहाँ नहीं होता। उनसे बात नहीं कर पा रहा होता।”

दुर्गाज्योति मुस्कुराईं।

मेरे साथ चलो।

फिर वे महल और पिछले द्वार से होते हुए, पहरेदारों के साथ, अपनी रणनीति, योजना और उसे अंजाम देने के तरीकों पर चर्चा करते हुए आगे बढ़े। तभी उनकी नज़र निर्माणाधीन विशाल हाथी की आकृति पर पड़ी। यह हाथी बेंत, बांस और लकड़ी से बना था।

“यह सभी उपहारों में सर्वश्रेष्ठ उपहार है,” दुर्गाज्योति ने कहा।

“मुझे उम्मीद है कि यह काम करेगा,” उसने जवाब दिया। “लेकिन मुझे एक बात बताओ।”

"हाँ?"

"अगर मेरा मायासभा जाना संभव नहीं हुआ, तो मैं चाहता हूं कि तुम जाओ।"

"क्यों?"

“क्योंकि तुम्हें किसी के लिए नहीं रुकना चाहिए। तुम्हें पूरी ताकत लगाकर इसे हासिल करना होगा। तुम्हें इसे राज्य के लिए और जिसके लिए हम लड़ रहे हैं, उसके लिए हासिल करना होगा। मेरी माँ के सामने मैं कमज़ोर पड़ जाता हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम वहाँ मज़बूत रहो,” प्रद्युमन ने उसे कंधों से पकड़ते हुए कहा। “मुझे उम्मीद है कि अगर मुझे कुछ हो जाता है, तो तुम नहीं रुकोगी।”

“तुम्हें कुछ नहीं होगा। तुम अब तक के सबसे शक्तिशाली योद्धा हो।”

“मुझे उम्मीद है,” प्रद्युमन मुस्कुराया। “लेकिन आपने मुझसे वादा तो नहीं किया था।”

दुर्गाज्योति ने पलकें झपकाईं। वह थोड़ी हैरान थी, लेकिन उसने सिर हिलाकर कहा, "हाँ, मैं

जाऊंगी। चाहे कुछ भी हो जाए।"

वह दुश्मनों से घिरा हुआ था।

बलराम जानता था कि वह जहाँ भी जाएगा, उसके चारों ओर वही लोग होंगे जो उसके और उसके आदर्शों के खिलाफ खड़े हैं। और उसे समझ नहीं आ रहा था कि इनसे कैसे निपटा जाए। युधजीत के लेजर से जुड़े होने का पता चलने के बाद से उसे यह एहसास होने लगा था कि किसी भी दिन कोई आकर उसे ले जा सकता है। डर उस पर हावी होता जा रहा था। इससे भी बुरा यह था कि वह जानता था कि उसका एक करीबी साथी ही लेजर है। लेकिन कौन? दोनों ही अच्छे लगते थे। दोनों ही भरोसेमंद लगते थे। क्या वितिहोत्र उसके दिमाग से खेल रहा था? हो सकता है।

और मन की बात करें तो, वह फिर से सपना देख रहा था। साँप का सपना। इस बार साँप बोल नहीं रहा था। वह बस उसके सामने एक विशालकाय सरीसृप की तरह खड़ा होकर फुफकार रहा था। परछाइयाँ और भी गहरी होती जा रही थीं, और यह सिलसिला चलता रहा।

उसने युधाजित से भी बात नहीं की। वह सामान्य व्यवहार करता रहा। युधाजित को इस तरह व्यवहार करते देख बलराम को समझ नहीं आया कि उसके मन में क्या चल रहा है। क्या वे उसे बस रोके रख रहे थे? समय के साथ खेल रहे थे? उसे जाने नहीं दे रहे थे। क्या वह किसी पिंजरे में बंद था, लेकिन उसे इसका एहसास नहीं था?

बलराम जानता था कि बहीखाते के बारे में जानने और वहाँ से भागने का एकमात्र तरीका उन्हें भागने का रास्ता देना था। अगर यह कोई पिंजरा होता जिसमें वह रह रहा होता, तो बहीखाता उसे मना कर देता। वह इस बात से असहमत होता कि उन्हें नहीं जाना चाहिए। वे सुरक्षित हैं और उन्हें इंतजार करना चाहिए।

उसने चुपके से अपना सामान पैक कर लिया था और रात के लिए एक रथ का इंतजाम कर लिया था। लेकिन उससे पहले, वह अपने दो साथियों के पास पहुंचा।

शुरुआत अकोरजी से हुई। जब वह वहाँ पहुँचा, तो उसने देखा कि अकोरजी अदालत भवन के पीछे के आँगन में हंसों को दाना खिला रहे थे, जो उन्हें दिया गया था। चारों ओर हरी-भरी हरियाली का मनमोहक दृश्य था, और ज़मीन पर जमी हुई बर्फ़ झरती हुई बह रही थी। उनके चारों ओर कॉटन चेरी के पौधे थे, और ऊपर सफ़ेद बादल मंडरा रहे थे। हंसों की चहचहाहट और उनके द्वारा पानी में गिरती रोटी की आवाज़ के साथ-साथ अकोरजी की हल्की गुनगुनाहट भी सुनाई दे रही थी।

“ये क्या है?” बलराम ने अपनी बाहों और चौड़ी छाती पर एक कपड़ा ओढ़े हुए पूछा। “ये जो आवाज़ तुम निकाल रहे हो?”

“क्या तुमने मुझे ऐसा करते कभी नहीं सुना?” अकोरजी मुड़े, उनकी चोटी और सफेद दाढ़ी उस बर्फ की तरह चमक रही थी जिस पर वे खड़े थे।

"कभी नहीं।"

“उस बेटी के लिए लोरी जो असमय ही दुनिया से विदा हो गई।” उनकी आवाज़ में नरमी आई, लेकिन उन्होंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा।

"मुझे लोरी के बारे में पता नहीं था," बलराम ने उसे थपथपाते हुए कहा, साथ ही यह भी ध्यान में रखा कि वह लेजर हो सकता है।

अकुरजी की एक बेटी हैजा से मर गई थी। यह वरदान मिलने से बहुत पहले की बात है, और हालांकि कृष्ण उसे बचा सकते थे, उन्होंने मृत्यु के साथ खिलवाड़ न करने का फैसला किया। वे मृत्यु को रोक नहीं सकते। वे इसे टाल नहीं सकते।

“जब कृष्ण ने आपकी बेटी को दोबारा जीने की अनुमति नहीं दी, तो आपको कैसा लगा?”

“मैं समझ गया,” अकोरजी ने कहा। “एक वफादार सेवक की तरह, मैं समझ गया। मैंने हमेशा उनका समर्थन किया है। वे सही थे। इस दुनिया में कौन आएगा और कौन जाएगा, यह तय करने का अधिकार हमें नहीं है।”

लेकिन फिर वह पलटकर सभी ययातियों को जीवन की शक्ति प्रदान करता है?

अकोरजी चुप रहे।

“क्या इससे तुम्हें गुस्सा नहीं आता?” बलराम ने चिढ़ाते हुए कहा।

नहीं। भगवान कृष्ण जानते हैं कि उन्हें कब क्या करना है और कब नहीं।

“मुझे तो यह पाखंड जैसा लगता है,” उन्होंने कहा। बलराम थोड़ा मज़ाक करना चाहते थे, अपनी प्रतिक्रिया देखना चाहते थे, यह देखना चाहते थे कि अकुरजी प्रद्युमन और बहीखाते के साथ हैं या नहीं, लेकिन बूढ़े के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी। “मुझे आज भी याद है जब कंस ने मुझे उसे लाने के लिए कहा था, धनुष-बाण के उत्सव में भाग लेने के लिए। मुझे विशेष रूप से बताया गया था कि उसे इसलिए लाया जा रहा है ताकि कंस उसे मार सके, यह जानने के बाद कि कृष्ण उसका भतीजा है। मैं अपने मुखिया का समर्थन करने के लिए वहाँ था, लेकिन जब मेरी मुलाकात उस लड़के से हुई, जो प्रतिभा और आकर्षण से भरपूर था—मैं दंग रह गया, और अंत में कंस के बजाय कृष्ण का साथ दिया। वह लड़का, जो बड़ा होकर आदमी बना, उसने कभी मुझे नीचा नहीं दिखाया, मुझे स्वीकार किया और मुझे क्षमा किया। जब मैं तुम्हारे साथ खड़ा होता हूँ, बाला, तो मुझे वह दिखाई देता है। मुझे यह तथ्य दिखाई देता है कि तुम दोनों एक ही आदर्शों के लिए खड़े हो और मैं सूर्यास्त तक उन आदर्शों की रक्षा करूँगा और उनके लिए लड़ूँगा।”

बलराम ने अपने होंठ दबाए और मन ही मन बड़बड़ाया। उन शानदार और मीठे शब्दों से अकोरजी वास्तव में खुद को ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा, ज़रूरत से ज़्यादा वफादार और हद से ज़्यादा अच्छा साबित कर रहे थे। बलराम ने अपनी आँखें बंद कीं और भगवान शिव से प्रार्थना की कि उन्हें वह दूरदृष्टि दें जिससे वे पता लगा सकें कि बहीखाता कौन है, और फिर अकोरजी की पीठ थपथपाकर वे वहाँ से चले गए।

अपनी पत्नी से मिलने के लिए। जिसकी संभावना अब बहुत कम लग रही थी।

*

रेवती ने धनुष को सही ढंग से पकड़ रखा था और क्षितिज पर बने लक्ष्य-पट्टों को देख रही थी, जिन पर वह सरकंडे के तीरों को निशाना बनाने की योजना बना रही थी। उसने अपना पैर पीछे

धकेला और सामने देखा—फिर उसने तीर चलाया। तीर हवा के विपरीत दिशा में गया और तख्ते को भेद दिया।

बलराम अपने हाथ पीछे करके आगे बढ़ा। मैदान में अन्य तीरंदाज भी थे, जो उसी तरह अभ्यास कर रहे थे और एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। “तुम्हारा शरीर तो मजबूत है, लेकिन तुम्हें अपनी स्थिति पर थोड़ा काम करने की जरूरत है।”

“मुझसे मजाक मत करो, लड़के,” उसने आँख मारते हुए कहा। “मुझे पता है मैं जो भी करती हूँ वो अच्छा ही होता है। कैसा चल रहा है?”

उन्होंने कहा, "मैं जाने की योजना बना रहा हूं।"

"कहाँ?"

उन्होंने कहा, "अंधकाओं के लिए।"

“लेकिन क्यों? क्या आप युधाजित के साथ गठबंधन की योजना नहीं बना रहे हैं?”

उन्होंने कहा, “मेरे अपने कारण हैं। साथ ही, मैं सत्याकी से नहीं मिला हूँ और उनसे मिलने की उम्मीद कर रहा हूँ। वह यहाँ नहीं आए हैं, और यह सब प्रयास फलदायी नहीं रहा है। हम एक ही जगह घूम रहे हैं और मुझे लगता है कि मुझे और अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है।”

“सत्यकी यात्रा पर गया है, है ना?”

“मुझे इस पर संदेह है। मुझे लगता है कि उसे देश निकाला दे दिया गया है, या इससे भी बुरा —वह किसी और कारण से यह जगह छोड़कर चला गया है। अब सत्यकी और देवदम्मा की बेटी का विवाह खतरे में है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं।”

रेवती ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। “वही करो जो सही है। तुम्हें हमेशा पता होता है कि सही क्या है।”

"क्या आपको लगता है कि मैं सही काम कर रहा हूँ?"

"निश्चित तुम हो।"

बलराम ने उसकी दृढ़ उंगलियों को पकड़ा और कसकर थाम लिया। "जब कृष्ण ने हम सबको अजेय बना दिया था, तब क्या तुम इस बात से सहमत थीं?"

"हाँ बेशक।"

"हमारे बच्चों को छोड़कर।"

वह रुकी। “हाँ, सब ठीक था। यह पूरी तरह से समझ में आने वाला था।” उसने ये शब्द कहे, लेकिन उसके कथन में बहुत उतार-चढ़ाव थे। जब कृष्ण ने शक्ति प्रदान की थी, तो उसका प्रभाव द्वारका द्वीप पर मौजूद सभी लोगों पर पड़ा था। लेकिन बलराम के दोनों बच्चे बाहर हस्तिनापुर में पल-बढ़ रहे थे, जिसके कारण वे नश्वर बन गए थे, द्वारका में रहने वालों की तरह अजेय नहीं। रेवती ने कृष्ण से उन्हें भी वही शक्ति देने का अनुरोध किया, लेकिन कृष्ण ने मना कर दिया। वे ऐसा नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्होंने दूसरों को शक्तिशाली बनाने के लिए अपनी शक्तियाँ त्याग दी थीं। अब उनके पास कोई शक्ति नहीं थी। रेवती को उन पर विश्वास नहीं हुआ। दोनों में झगड़ा हुआ। ये कृष्ण के वनवास जाने से पहले के अंतिम दिन थे।

द्वारका के आसपास कई रहस्य थे। बलराम ने कई बार उसे ढूंढने की कोशिश की, लेकिन हर

बार नाकाम रहा। वह अपने भाई को अच्छी तरह जानता था। अगर वह चाहता तो खुद मिल जाता।

"ठीक है।"

तो क्या मैं आपके साथ चलूँ?

“नहीं, मैं चलता हूँ।” उसने उसके माथे पर चुंबन किया, यह समझते हुए कि उसके दोनों साथियों के इरादे थे, लेकिन कानून के अनुसार, उसे अपनी पत्नी पर अधिक भरोसा था। वह उसका परिवार थी। अकुरजी ही परिवार की रक्षा करने वाला था। “मैं देवधेम्मा से सत्याकी के बारे में और जानकारी जुटाने की कोशिश करूँगा। मुझे पूरा यकीन है कि उसके जासूसों को कुछ न कुछ पता चल ही जाएगा, है ना?”

“शायद। मुझे युधाजित से क्या कहना चाहिए?”

“अकेले शिकार पर गया था। शेरों से कुश्ती करना उसे बहुत पसंद है!” वह हँस पड़ा।

"अरे, छोड़ो भी, वो तो बस एक ही बार हुआ था।" उसने आंखें घुमाईं।

और उन्होंने एक दूसरे को चूमा।

*

बलराम का रथ तैयार था। उन्होंने किसी भी दासी, दासी, दास या सैनिक को सूचना नहीं दी। वे पेलिकन की तरह फुर्ती से आगे बढ़े, रथ पर सवार हुए और सवार को जल्दी चलने का आदेश दिया। रथ ने आदेश पर तुरंत चलना शुरू किया और रात के सन्नाटे में घोड़ों के खुरों की आवाज सुनाई दी। बलराम को पता नहीं था कि वे देवधेम्मा से क्या बात करेंगे, लेकिन उन्हें यकीन था कि वे उस बर्बर स्त्री को मना लेंगे। वह एक जंगली स्त्री थी, और बलराम भी काफी समय से वनवास में थे। जब बलराम और कृष्ण छोटे थे, तब वे काले जादू का इस्तेमाल करके कंस द्वारा भेजे गए असुरों का शिकार किया करते थे। उन्हें इसमें बहुत मजा आता था। इन यात्राओं के दौरान, अपनी जान जोखिम में डालकर, उन्होंने बहुत कुछ सीखा था।

बलराम ने आंखें बंद करके थोड़ी देर झपकी लेने का फैसला किया, तभी नींद से अचानक जाग उठे और उन्हें दूर से रथों के गिरने, घोड़ों के हिनहिनाने और खुद के जमीन पर गिरने की तेज आवाज सुनाई दी। आंखें खोलने पर उन्होंने देखा कि उनके चारों ओर कोहरा और अंधेरा छा रहा है।

फिर नहीं।

धुएँ में से वितीहोत्र प्रकट हुआ। सफेद कवच पहने हुए। लेकिन इसका हेलमेट अलग था, उस पर खून से रंगा हुआ एक अलग डिज़ाइन था। बलराम समझ नहीं पा रहा था कि यह क्या है, लेकिन उसने अपनी लाठी के सहारे खड़े होने की कोशिश की।

इस बार मैं लड़ूंगा।

वितीहोत्र अपनी तलवार लेकर आगे बढ़ा और बलराम ने उसे धक्का देकर चकमा दिया, तथा अपनी लाठी से वितीहोत्र के कवच पर वार किया। कवच ज़मीन पर गिर गया, और जैसे ही वे उठने लगे, बलराम ने उसे बलराम के पैरों पर घुमाया। बलराम पीछे की ओर पलटी मारते हुए लाठी को वितीहोत्र के हेलमेट पर दे जाएँगे, जिससे वितीहोत्र भ्रमित हो जाएगा। वितीहोत्र ने

गुर्राहट की आवाज़ निकाली और तुरंत बलराम की ओर झपटा, उन पर पूरे क्रोध से हमला किया और उन्हें ज़मीन पर गिरा दिया। बलराम ने उनके चेहरे पर मुक्का मारने की कोशिश की, जिससे हेलमेट टूट गया और उनकी मुट्ठी लोहे पर धंस गई, जिससे हेलमेट में गड्ढा हो गया और उनके हाथ खून से लथपथ हो गए।

वितीहोत्र कराहते हुए एक तरफ गिर पड़ा, और बलराम उस पर टूट पड़ा और उसे ज़ोर से थप्पड़ मारा, जिससे उसका हेलमेट उसके चेहरे से हट गया और मृत व्यक्ति के शरीर के जटिल दृश्य सामने आ गए। जी हाँ। वह सचमुच एक मृत व्यक्ति था, सड़ी हुई त्वचा और खोपड़ी, जिस पर चारों ओर कीड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे कवच के नीचे एक शक्तिशाली मृत व्यक्ति छिपा हो। लेकिन वह कौन था? ये वितीहोत्र कौन हैं? वे जो सबसे भयानक तरीके से मृत्यु से लौट आते हैं।

बलराम ने उसका गला दबाने और उसे गला घोंटकर मारने की कोशिश की, क्योंकि धुंध और धुएं का तूफान उनके चारों ओर सबसे भयावह तरीके से घूमने लगा था।

फिर वितीहोत्र ने उसे पीछे खींचकर उठा लिया, और इस प्रक्रिया में वह स्वयं भी उठ गया। उसने बलराम को कसकर पकड़ रखा था, उसकी सुनहरी आँखों में सामर्थ्य, लालच और भय झलक रहा था। बलराम ने उस शक्तिशाली पुरुष की पकड़ से छूटने की कोशिश की, लेकिन यह कठिन होता जा रहा था। वह उसे घूंसे और लात मार रहा था, लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि उसकी जान निकल रही है।

उसने देखा कि वितिहोत्र की शक्तिशाली भुजाएँ गिरी हुई तलवार की ओर बढ़ रही थीं, जो ययाति को मारने वाली एकमात्र दूसरी कल्पना योग्य वस्तु थी...

तभी अचानक कुछ घटित हो गया।

घने कोहरे और धुएं के बीच से एक आकृति तेज़ी से अंदर आई, जिसने उन दोनों को चौंका दिया। उसके लंबे बाल और गोरा, सुंदर चेहरा बलराम को किसी की याद दिला रहे थे, लेकिन उस समय वह जिस दर्द और पीड़ा से गुज़र रहा था, उसमें वह किसी की छवि नहीं बना पा रहा था। उस आकृति ने अपने विशाल घोड़े की मदद से वितीहोत्र को ज़ोरदार प्रहार किया और जैसे ही वितीहोत्र एक तरफ गिर पड़ा, उस आकृति ने बलराम का हाथ मांगा।

“जल्दी करो!” उसने कहा। “इससे पहले कि वह चीज फिर से उठ खड़ी हो जाए।”

बलराम ने जरा भी नहीं सोचा। अपनी लाठी को झटके से घुमाते हुए, वह घोड़े के ऊपर से कूद गया और देखते ही देखते वे कोहरे को पीछे छोड़ते हुए, बाधाओं को तोड़ते हुए भाग निकले।

मैं आपका पीछा कर रहा था और मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि कोई आपका पीछा कर रहा है। क्या आप मुझे इसके बारे में बता सकते हैं?

"हत्यारे हैं, लेकिन मुझे कोई सुराग नहीं है कि वे मेरे पीछे क्यों पड़े हैं," बलराम ने अजनबी से झूठ बोला।

“ओह, अंकल बाला, झूठ मत बोलिए,” उसने कहा।

“चाचा? आप कौन हैं?”

“क्या तुम भूल गए?” आधी रात को बाजार के लिए निकलते हुए वह मुस्कुराया। “मैं

सत्यकी, युधजित का पुत्र हूँ। और मैं तुमसे व्यापार की बात करने आया हूँ।”

15

उस बूढ़े व्यक्ति का नाम जाग्रत था।

कृष्ण और समवा को कुछ भी परोसा नहीं गया था, और अगर जाग्रत को पता होता कि उसके सामने स्वयं कृष्ण हैं, तो वह उन्हें बेहतरीन भोज परोसता। लेकिन वह अपराधबोध और उदासी में डूबा हुआ था, जब वे एक घेरे में बैठे एक-दूसरे को देख रहे थे।

“तुम उससे क्यों मिलना चाहते हो?” जाग्रत ने पूछा।

“वह यहाँ एक ऋषि की सेवा करती थी,” समवा ने उत्तर दिया।

“हाँ, कुछ तो था।” उसने सिर हिलाया। “मैं सैनिकों से मदद मांगता रहा, लेकिन कोई मदद नहीं करता था।”

“क्यों?” कृष्ण ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।

"क्योंकि उन्हें पुताना से पैसे मिलते हैं। वे आसपास के सभी लोगों को रिश्वत देते हैं।"

“पुताना? वही डाकू जिसका आपने जिक्र किया?”

बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया।

“एक महिला डाकू, दिलचस्प!” कृष्णा ने कहा। “उसने एक और महिला का अपहरण कर लिया।” कुछ तो गड़बड़ थी जिसके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन वह और जानना चाहता था।

“मुझे खेद है कि मैंने नहीं पूछा—लेकिन आप कौन हैं? मेरे पास शोक मनाने का समय नहीं है, इसलिए कृपया काम पर लग जाइए,” जाग्रत ने कहा।

“मैं केशव हूँ,” कृष्ण ने कहा, और अपने उस ग्वाले वाले नाम का जिक्र किया जो उन्हें बचपन में दिया गया था। “और यह संवा है। हम आपकी मदद करने आए हैं।”

"क्यों?"

“क्योंकि हम भी उसी व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं,” समवा ने झूठ बोलते हुए कहा। “उसे मार डालो और उसका मांस उस पशुपालक को दे दो जिसने हमें काम पर रखा है, इसलिए हम उसकी तलाश कर रहे हैं।”

“वह शक्तिशाली है, एक योग्य प्रतिद्वंद्वी है।” जाग्रत की आँखों में आशा की चमक आ गई। “और कोई उसे हरा नहीं सकता। एक बूढ़ा आदमी और एक बदसूरत लड़का क्या कर सकते हैं?” उसके शब्द विषैले थे।

कृष्णा ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। “महोदय करने की कोई आवश्यकता नहीं है, महोदय। हम आपकी सहायता के लिए यहाँ हैं। तो क्या आप हमें बता सकते हैं कि वह कहाँ गई?”

जाग्रत रुक गई, उसकी आँखों में आँसू आ गए। “मुझे माफ़ करना... मेरे कार्यों पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था। यह सब दर्जनों घोड़ों के आने से शुरू हुआ, वे चारों ओर धूल उड़ाते हुए मेरे घोड़ों को भी पकड़ लाए और सबा को अपने साथ ले गए। जब तक मैं कुछ कर पाती, वे मुझसे सैकड़ों फीट दूर जा चुके थे। मैंने चारों ओर खोजना शुरू किया और मुझे पता चला कि वे उत्तरी

रेत के टीलों के पास थे। मैंने अपने दोस्तों को इकट्ठा करने की कोशिश की, लेकिन उनमें से कोई भी मेरे साथ आने को तैयार नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें डर था कि पुताना उन पर हमला कर देगी।"

कृष्णा ने सिर हिलाया, बूढ़े आदमी के लिए उसे दुख हो रहा था। वह असहाय दिख रहा था और कृष्णा, जिसने अपना जीवन लोगों की मदद करने में समर्पित कर दिया था, इस स्थिति में वही करना चाहता था। "मैं समझता हूँ। हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे।"

जाग्रत ने सिर हिलाया, हालांकि कृष्ण देख सकते थे कि उन्हें कृष्ण और सामवा पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं था। उन्होंने पहले ही उनसे उम्मीद खो दी थी।

कृष्ण और समवा ने विदाई ली और घर से चले गए। समवा, जो अभी भी सोच में डूबा हुआ था, बोला, "क्या आपको नहीं लगता कि उन्होंने उस लड़की को बिना किसी कारण के ले लिया, यह अजीब बात है?"

कृष्ण ने झुंझलाहट भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। "तुम्हें हमेशा बड़ों की बातों पर अविश्वास करने की आदत है।"

उसने अवज्ञापूर्ण लहजे में कहा, "अगर वे अपनी आदतों को लेकर इतने रहस्यमय न होते, तो मुझे ऐसा करने की ज़रूरत ही न पड़ती।"

"रहस्यमय? क्या आपको लगता है कि जाग्रत वह होने का नाटक कर रहा था जो वह नहीं था?"

"मैं बस इतना कह रहा हूं कि हम हर बात को बिना सोचे-समझे सच नहीं मान सकते," समवा ने विरोध जताया।

दोनों ने एक-दूसरे को निराशा से देखा और कृष्ण समझ गए कि वे जाग्रत और सबा के बारे में बात कर रहे होंगे, लेकिन वास्तव में वे अपने बारे में बात कर रहे थे। इस बारे में कि कृष्ण कभी सम्व के लिए उपलब्ध नहीं थे, कि उनसे बातें छुपाई गईं, कि उनके अपने माता-पिता, जिन्हें उनका पालन-पोषण और देखभाल करनी चाहिए थी, ने उनके साथ एक तुच्छ व्यक्ति जैसा व्यवहार किया।

कृष्णा ने कहा, "सूरज डूब रहा है। मुझे लगता है हमें चलना चाहिए।"

"ज़रूर।"

*

कृष्ण और समवा ने एक रेगिस्तानी खच्चर लिया और पगडंडियों और रेत के टीलों को पार करते हुए, नखलिस्तान, घाटियों और उस अंतहीन अंधेरे रेगिस्तान से गुज़रे जहाँ मानव जाति का कोई नामोनिशान नहीं था। एक पल के लिए, सब कुछ व्यर्थ सा लग रहा था, सिवाय उनके बीच की बातचीत के, जिसमें वे दोनों एक-दूसरे से कुछ पूछना चाहते थे, लेकिन खुद को रोक रहे थे।

"तुमने लक्ष्मण के बारे में क्यों पूछा?" समवा ने पूछा। "उस समय।"

"ऐसे ही।"

"तुम यूं ही सवाल नहीं पूछ सकते," समवा ने उसे संदेह भरी नजरों से देखा। "तुम्हें पता है जब वह गायब हुई थी, तब से मुझे हमेशा लगता था कि इसमें तुम्हारा हाथ है।"

"उसे गायब करने में? उफ़!" कृष्णा ठहाका लगाकर हँसा। "तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है।"

"आपने मुझे ऐसा करने का अवसर कभी नहीं दिया।"

“मैंने हमेशा तुम्हारा ख्याल रखा है, बेटा,” कृष्ण ने आह भरी। “तुम मेरे बारे में बहुत कम सोचते हो।”

“ध्यान रखा?” समवा पलटकर जवाब देना चाहता था, लेकिन कुछ उसे रोक रहा था। “मुझसे इस बारे में बहस मत करो, समझे?”

कृष्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। उन्हें अपनी गलती का एहसास था और ऐसा कहना साँप को काटने का मौका देने जैसा था। उन्होंने अपनी जीभ काट ली। “ठीक है। मैं सबसे अच्छा पिता नहीं रहा, लेकिन मुझे खुशी है कि तुम अभी भी यहाँ हो। इस मूर्खतापूर्ण कारनामे में शामिल होने के बावजूद, तुम यहाँ हो। तुम कुछ बदलाव लाना चाहते हो।”

“यह तो बेहद अपमानजनक प्रशंसा है!” समवा ने आह भरी।

कृष्ण कुछ नहीं कर सके। आखिर, सामवा वही बालक था जिसने उनकी एक पत्नी की हत्या की थी। कृष्ण ने भारी मन से उसे कुष्ठ रोगी बना दिया था। उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, और उसके बाद सामवा ने उनसे कभी बात नहीं की। क्या उन्होंने उस बालक पर बहुत सख्ती की थी? उन्हें ऐसा नहीं लगता था। वे न्यायप्रिय और निष्पक्ष थे। लेकिन कई रातें ऐसी भी थीं जब उन्हें अपने उस कृत्य पर पछतावा होता था।

वे चुपचाप, दबे पांव आगे बढ़ते रहे, जब तक कि कृष्ण और समवा के आधी रात के विश्राम का समय नहीं हो गया। वे उन रेत के टीलों के करीब थे जिनका ज़िक्र जाग्रत ने किया था, लेकिन फिर भी वे अनंत शून्यता से घिरे हुए थे और यह बात उन्हें परेशान कर रही थी। उन्होंने कुछ लकड़ियाँ गर्म कीं और कुछ स्टू पकाया, और इंतज़ार करने लगे। कृष्ण ने अपने चारों ओर एक शॉल लपेटा और आँखें बंद कर लीं, यह सोचते हुए कि वे यहाँ क्यों हैं। वे अपने घर के आराम में रहना चाहते थे।

उसकी आंखें बंद रहीं और आग जलती रही, अंगारे रेतीली जमीन पर गिरते रहे, और वह गहरी नींद में डूब गया, अपने किसी भी विचार को खुद को परेशान नहीं करने दिया...

और जब वह जागा... तो उसने अपने सामने कुछ देखा। उसके चेहरे के ठीक बगल में एक तलवार पड़ी थी।

समवा के सामने एक और व्यक्ति था, और वह भी जागा हुआ था।

कृष्णा को इस बात का अंदाजा नहीं था कि कितना समय बीत चुका है, लेकिन अभी भी अंधेरा था और उसका पूरा शिविर डाकुओं के कब्जे में था, सभी ने नकाब, मुखौटे और रंग लगा रखे थे, और उनके काले घोड़े उनके छोटे से तंबू के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे।

आधे कटे बालों वाली एक महिला, जिसके हाथ में भाला था, ने पूछा: "कृपया अपना लूटा हुआ माल दीजिए?"

“हमारे पास कुछ नहीं है, प्रिय,” कृष्णा ने शांत रहने की कोशिश की।

“उनके तंबू तलाशी लो,” महिला ने आदेश दिया। वह युवा थी और उसके चेहरे पर दृढ़ता स्पष्ट झलक रही थी।

“तुम्हें पता है, मुझे ययातियों के आपस में लड़ने का मकसद कभी समझ नहीं आया। तुम सब

तो अजेय हो, इसलिए...” कृष्ण ने कंधे उचका दिए।

“बुजुर्ग, तलवार पर वुल्फ्सबेन (जंगली भालू का जहर) लगा हुआ है।” लड़की मुस्कुराई। “आप भले ही जीवित हों, लेकिन यह जहर आपके जीवन में एक बहुत ही दर्दनाक बाधा है जो लगातार बनी रहेगी।”

कृष्ण भयभीत थे, क्योंकि वे भी नश्वर थे और जानते थे कि विष उन्हें भी मार देगा।

“हम पुतना की तलाश में हैं,” समवा ने कहा। “हम किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। हम बस उससे कुछ पूछना चाहते हैं।”

“और तुम्हारा उससे क्या काम है?” लड़की ने भाला समवा की ओर करते हुए पूछा।

“हम उस लड़की की तलाश कर रहे हैं जिसका उसने अपहरण किया है। सबा। उसके पास किसी विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी है और मुझे वह जानकारी जानना जरूरी है।”

“कौन सा ज्ञान?”

मुझे लगता है कि मैं इस बारे में सबा से बात करूंगा।

“ठीक है।” लड़की सीधी खड़ी हो गई और फिर अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे कृष्ण और समवा को बांस के मुखौटे पहना दें ताकि वे यह न देख सकें कि वे कहाँ जा रहे हैं।

उसके बाद सब कुछ अंधेरा हो गया।

*

जब तक नकाब हटाया गया, कृष्ण की सांसें लगभग फूल रही थीं। उन्हें अंधेरा बिल्कुल पसंद नहीं था। उन्हें उसमें रहना अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने आंखें खोलीं तो खुद को एक अंधेरी गुफा में पाया, चारों ओर मोटे-मोटे कपड़े पहने आदिवासी लोग थे और उनके सामने एक महिला खड़ी थी जिसके चेहरे पर सफेद रंग लगा था, बाल बैंगनी रंग से रंगे हुए थे जो एक सिरे से कटे हुए थे—बिल्कुल पिछली लड़की की तरह। शायद यह डाकुओं के कबीले में घुसने का रास्ता था। लेकिन कृष्ण ने गौर किया कि उनमें से कोई भी दूसरे डाकुओं जैसा नहीं लग रहा था। वे साधारण लग रहे थे। शायद कूड़ा बीनने वाले। और गुफाओं में लंबी-लंबी गलियां थीं, छोटी-छोटी जगहें थीं जिनमें लोग दुबक कर रहते थे। यहां से कैसे निकलें? यही पहला सवाल उन्होंने खुद से पूछा।

"तुम सबा को ढूंढ रही हो।" आगे खड़ी लड़की ने पूछा, जबकि उन्हें अगवा करने वाली दूसरी लड़की सिंहासन के बगल में खड़ी थी।

“हां,” समवा ने कहा, जो कृष्ण के बगल में खड़ा था।

“यह तो बहुत अच्छी बस्ती है,” कृष्णा ने कहा। “इसे बनाने में आपको काफी समय लगा होगा—मेरा अनुमान है, यह पुतना है?”

लड़की मुस्कुराई। "जी हां। और आप कौन हैं?"

“केशव। ग्वाला,” कृष्णा ने मनमोहक मुस्कान के साथ कहा।

“एक चरवाहा सबा की तलाश में क्यों है?”

समवा ने कहा, "मुझे लगता है कि उससे सीधे बात करना ही सबसे अच्छा रहेगा।"

"मुझे लगता है कि तुम्हें जहर से लकवाग्रस्त करके वहीं छोड़ देना सबसे अच्छा था जहाँ हमने तुम्हें पाया था।"

समवा और कृष्ण ने एक-दूसरे को देखा, फिर समवा ने स्थिति समझाते हुए कहा: “हम उसके पिता पर एहसान कर रहे हैं। वह उसे वापस चाहते हैं। और हमारे कुछ निजी इरादे भी हैं—हम दुर्वासा के बारे में जानना चाहते हैं। जब वह यहाँ आए थे तब वह उनकी शिष्या थीं और हमें लगता है कि उन्हें पता होगा कि वह कहाँ गए थे, क्योंकि उनके पास कुछ महत्वपूर्ण जानकारी है।”

"कितनी उलझन है!" पुताना ने सिर हिलाते हुए कहा।

लेकिन कृष्ण ने देखा कि पूतना के ठीक बगल में बैठी लड़की की पुतलियाँ फैल रही थीं। वही लड़की जिसने उनका अपहरण किया था। वह सवाल सुनकर तुरंत असहज हो गई।

“अच्छा, इससे तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी... सबा?” कृष्णा ने पूछा।

और लड़की ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। "तुम्हें कैसे पता चला?"

“मैंने लोगों की आँखों का अध्ययन करने के लिए लंबा जीवन जिया है,” कृष्णा ने कहा। “मुझे विश्वास है कि आप हमारे प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं,” वह थोड़ा रुके। “लेकिन इसके अलावा, यह भी बताइए कि आपने उन डाकुओं का साथ क्यों दिया जिन्होंने आपका अपहरण किया था।”

“क्योंकि हम डाकू नहीं हैं,” पुताना ने नाराज़गी जताते हुए कहा। “हम एक कबीला हैं जो एक-दूसरे का साथ देते हैं। और सबा हमारे साथ इसलिए है क्योंकि उसने अपने घर में बहुत कुछ सहा है। उसका बाप ज़ालिम और नीच इंसान था। वह उसे पीटता और परेशान करता था। वह उसे अच्छे पैसों के लिए मर्दों, सैनिकों को बेच देता था। एक दिन जब वह भाग निकली तो हमने उसे ढूंढ लिया और उसकी मदद की पेशकश की। लेकिन वह इतनी डरी हुई थी कि वह अपने पिता को दिखाना चाहती थी कि उसका अपहरण हुआ है, ताकि उस पर इल्ज़ाम न लगे। और इसलिए हमने वही किया जो हमने किया। हमने उसकी घोड़ियाँ भी ले लीं।”

कृष्ण ने अपने जबड़े भींच लिए और सामवा की ओर देखा। वह वाकई इस पूरे नाटक के बारे में सही था और कृष्ण उसके बारे में इस बात को नज़रअंदाज़ कर रहे थे। अगर उन्हें बांधने वाली रस्सियाँ और उसकी नसों के पास चुभते भाले न होते, तो वह अपने बेटे की पीठ थपथपाना चाहते।

“मैं समझ गया। मुझे खेद है,” कृष्णा की आँखों में नरमी आ गई।

“हमें तुम्हारी दया की ज़रूरत नहीं है, बूढ़े आदमी,” पुताना अपनी कुर्सी से खड़ी हो गई। “तुम एक घुसपैठिए हो और तुम अजीबोगरीब सवाल पूछते हो, इसलिए मुझे नहीं लगता कि सबा इन सब बातों से सहज महसूस कर रही है और हम चाहते हैं कि तुम चले जाओ,” उसने कहा और थोड़ी देर रुक गई।

“उसे तुम्हें जवाब देने का कोई हक नहीं है। उसे नहीं देना चाहिए।” पूतना ने हाथ हिलाए और जब कृष्ण और समवा ने संघर्ष करना शुरू किया तो उसके रक्षकों ने उन्हें पकड़ लिया।

“हम बस यह जानना चाहते हैं कि दुर्वासा कहाँ गए!” कृष्ण संघर्ष कर रहे थे और उन्होंने देखा कि सबा कुछ कहना चाहती थी, लेकिन अपनी ज़बान और इस व्यवस्था में अपनी स्थिति के कारण वह चुप थी।

लेकिन उनकी बात नहीं सुनी गई।
पुताना चिल्लाई: "इन्हें गड्ढों में ले जाओ। इन्हें हमारे पालतू जानवर द्वारा चबाया जाए।"
"पालतू पशु?" कृष्ण संव की ओर मुखातिब हुए।
“पालतू जानवर?” उसके बेटे ने भी यही बात कही।
और उन्हें पता था कि वे बहुत बड़ी मुसीबत में हैं।

16

मायावती प्रद्युम्न को इस आड़ में छुपा रही थी कि वह उसका मानव दास था।

यदि राक्षसों को मनुष्यों के साथ हीन व्यवहार किया जाता था, तो उन्हें मनुष्यों के सामने प्रकट होने की अनुमति दी जाती थी, क्योंकि मनुष्य जीवन भर राक्षसों को हीन मानते आए थे। अतः, मनुष्यों की दासता एक महत्वपूर्ण वस्तुकरण थी।

वह दुनिया को दिखाती थी कि वह घर के काम कर रहा है, लेकिन असल में वह उसे लड़ना, बलवान बनना सिखा रही थी, उसे वह ज्ञान दे रही थी जो उसे प्राप्त होना चाहिए था और कई अन्य क्षमताएं जो वह गुप्त रूप से सीख रहा था। मायावती, प्रद्युमन से कहीं अधिक माँ थीं।

लेकिन आज का पाठ सबसे महत्वपूर्ण था। वह उसे माया के बारे में सिखाने वाली थी। नन्हा-सा, नन्हा-सा, आँखों में चमक लिए लड़का प्रद्युमन पालथी मारकर बैठा था, तभी मायावती ने अपनी उंगलियाँ आपस में मिलाईं और चटकाईं, जिससे एक चिंगारी निकली।

“क्या तुम जादू के बारे में जानने के लिए उत्साहित हो?” उसके हाथों में एक नीली लौ उठी और उससे एक कंपकंपी जैसी आवाज़ आने लगी। “तो ये रहा। तुम्हें क्या दिख रहा है?”

“आग।” उसकी आँखें चौड़ी हो गईं।

"इसे छूओ।"

लेकिन मैं जल जाऊंगा।

मायावती ने लौ को उसके करीब लाया। "नहीं, इसे छुओ।"

उसने एक घूँट निगला और अपनी उंगलियों को लौ की ओर बढ़ाया, हालाँकि यह उसे अंदर तक झकझोर रहा था—जब उसने उसे छुआ, अपनी उंगलियों से उसके चारों ओर फेरा, तो उसे पता चला कि यह वास्तव में कुछ भी नहीं था। उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। जलने का कोई निशान नहीं था। यह बस एक...

“यह तो भ्रम है, है ना?” वह मुस्कुराई। “आपको अभी-अभी एक भ्रम का अनुभव हुआ।”

"आख़िर कैसे?"

“माया। राक्षस वंश में व्याप्त जादू का सबसे बड़ा स्रोत। हम मायावी हैं, भगवान ब्रह्मा की सांस से पैदा हुए हैं जिन्होंने अंततः अपने ही सृष्टिकर्ता को खा लिया,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।

क्या मैं इसे सीख सकता हूँ?

उसने आग की लपटों को गायब कर दिया। "दुर्भाग्यवश, यह केवल राक्षसों के लिए है।"

उसने उदास चेहरा बनाया और उसे विकृत कर दिया।

"लेकिन मैं आपको इसके बारे में थोड़ा और बता सकता हूँ।"

“ऐसी चीज सीखने का क्या फायदा जिसे आप अमल में नहीं ला सकते?” प्रद्युमन ने पूछा।

वह मुस्कुराई, मंद मोमबत्तियों की रोशनी में उसके काले होंठ चमक रहे थे। "क्योंकि ज्ञान ही सबसे बड़ी ताकत है जो आपके पास हो सकती है। जादू नहीं।"

*

“तुम शराब पीना कब बंद करोगे?” प्रद्युमन ने पूछा।

वह और रुक्मावती अपने महल के बरामदे में बैठी थीं, जबकि सुंदर लकड़ी के हाथी का निर्माण कार्य चल रहा था। यह लगभग पूरा होने वाला था।

रुक्मावती नशे की हालत में मुस्कुराते हुए बोली, "तुम्हें पता है क्यों?"

नहीं, मैं नहीं करता।

"ठीक है, आपके सामने देखने के लिए एक काफी ठोस जीता-जागता उदाहरण मौजूद है।"

“तुम्हारा क्या मतलब है?” उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

“तुम यहाँ अपनी माँ को पाने के लिए ये सब कर रही हो, और तुम्हारा पूरा जीवन उन्हीं को समर्पित रहा है।” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “कुछ समय बाद, तुम्हें एहसास होता है कि तुम एक ऐसे आदमी के साथ हो जिसने अपना पूरा जीवन किसी और को समर्पित कर दिया है और तुम उसके लिए कमरे के कोने में रखी एक साधारण वस्तु मात्र हो।”

प्रद्युम्न ने अपने जबड़े भींच लिए। उसने अपनी शराब की चुस्की ली और कुछ नहीं बोला। हालाँकि, वह उससे बिल्कुल सहमत नहीं था। वह जानता था कि वह मायावती के प्रति आसक्त नहीं था, लेकिन उसकी भलाई की उसे चिंता थी। लेकिन वह माया को पाना चाहता था, जो सभी जादू और भ्रमों का स्रोत थी। और यह हाथी इसके लिए एकदम सही रास्ता था।

“मुझे इस बात की परवाह नहीं कि तुम क्या सोचती हो। तुम बिलकुल भी ठीक नहीं हो और तुम यह जानती हो,” प्रद्युमन ने कहा। “मैं तुम्हें इसलिए बर्दाश्त कर रहा हूँ क्योंकि तुम मेरे बच्चे की माँ हो, वरना तुम्हें यहाँ से बहिष्कृत कर दिया जाता।”

“और इसीलिए मैं पीती हूँ, देवियों और सज्जनों।” उसने शराब का एक और घूंट लिया और ऐसे पी गई जैसे पानी हो। “और वो कमीनी... उसका नाम क्या है? दुर्गाज्योति? वो भी घर तोड़ने वाली है।”

"आपका क्या मतलब है?"

"तुम उसे अपने चारों ओर कसकर पकड़ लेते हो, भले ही तुम जानते हो कि वह तुम्हारे कपड़े फाड़ देना चाहती है।"

"वह मेरी विश्वासपात्र है और बलराम द्वारा मुझे अंधेरे में छोड़ दिए जाने के बाद मुझे एक विश्वासपात्र की जरूरत है।"

"तुम अवश्य करो।"

प्रद्युमन ने सिर हिलाया। अपनी पत्नी के प्रति उसकी नापसंदगी एक आम बात थी। वे अक्सर एक-दूसरे की कमियों के बारे में बड़बड़ाते रहते थे। वह कुछ और बुरा कहने ही वाला था कि दुर्गाज्योति ने उन्हें रोक दिया। वह पसीने से तरबतर थी और चिंतित लग रही थी। वह फाटकों और पहरेदारों को पीछे छोड़ते हुए लड़खड़ाते हुए खुले बरामदे की ओर बढ़ी। उसे देखकर प्रद्युमन के जबड़े कस गए और उसने पूछा:

"क्या हुआ?"

उन्होंने कहा, "हमें थोड़ी सी समस्या है।"

"यह क्या है?"

"उस बूढ़े बदमाश ने..." दुर्गाज्योति ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए कहा। "उसने राक्षसों को हमारे इरादों के बारे में बता दिया। द्वार खुल गया है और राक्षसों का एक समूह अंदर आ गया है।"

प्रद्युम्न तुरंत उठ खड़ा हुआ, उसे पता था कि क्या करना है। उसने देर नहीं की। वह अपने सहायक को बुलाने गया और युद्ध के लिए तैयार हो गया। उसने दुर्गाज्योति से बात नहीं की क्योंकि वह जानता था कि इस स्थिति में उसे शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। वह कहना चाहता था कि उसकी योजना अचूक है, लेकिन ऐसा नहीं था।

और अब उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ा।

*

सामने के द्वार बंद थे, लेकिन घेराबंदी जारी थी। घेराबंदी के यंत्रों से बना एक विशाल मायावी हथियार था, जिससे वे अंदर घुसने की कोशिश कर रहे थे। सैकड़ों राक्षस वहाँ मौजूद थे और वे चीख-चिल्ला रहे थे।

जब तक स्वर्ण कवच पहने प्रद्युमन वहाँ पहुँचे, उनके सभी सैनिक भयभीत थे। इतने कम समय में, जब राक्षस बिल्कुल भी तैयार नहीं थे, उनसे सीधे निपटना एक चुनौती थी।

लेकिन प्रद्युमन जानता था कि हालात और बिगड़ने से पहले उसे कुछ करना होगा। और सच्चाई यह भी थी कि राक्षसों के खिलाफ उनकी लड़ाई व्यर्थ थी क्योंकि वे जानते थे कि ययातियों को मारा नहीं जा सकता, लेकिन उन्हें खाया जा सकता है। और राक्षस नरभक्षी थे। प्रद्युमन जानता था कि वह भोजन नहीं बनना चाहता, इसलिए उसने आदेश दिया:

"घुड़सवार सेना, दक्षिण की ओर आगे बढ़ो, ढोल बजते ही हमला करो। तीरंदाजों, अपना निशाना साध लो, वे फाटक तोड़कर अंदर घुसने ही वाले हैं। अब तो हमें भयंकर मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा..."

और इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाता, द्वार टूट गए और तुरंत ही राक्षसों के झुंड अंदर घुसने लगे, अपने लोगों पर हमला करने लगे, उन्हें कुतरते हुए आगे बढ़ने लगे। वे अपने पंजों और लंबे, नुकीले दांतों से यायाती लोगों के सिर फाड़ने लगे और उनके मांस में घुसकर उन्हें खाने लगे।

प्रद्युमन ने अपनी तलवार आगे बढ़ाई और रथ पर सवार होकर चक्कर लगाते हुए, तलवार से राक्षसों पर एक-एक करके हमला किया, उनके सिर धड़ से अलग कर दिए। तभी अचानक आकाश से एक भाला उड़ता हुआ आया और तेज हवा को चीरते हुए प्रद्युमन की छाती में जा लगा। वे पीछे की ओर उछले, रथ टूट गया और वे जमीन पर गिर पड़े। दर्द से कराहते हुए वे भाले को निकालने लगे, और जैसे-जैसे वे निकालते गए, दर्द उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक बढ़ गया।

और अंत में उसने भाला फेंक दिया, अपनी बची हुई ताकत से अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसके दांत किटकिटा रहे थे क्योंकि युद्ध के नारों, गंदी जमीन और धातु के टकराने की आवाज के बीच दोनों राक्षस उसके चारों ओर आ गए थे।

प्रद्युम्न लुढ़क गया, अपने खून से सने भाले को पकड़कर हवा में घुमाया और एक राक्षस को घायल कर दिया। तभी दूसरा राक्षस उसकी ओर बढ़ा और प्रद्युम्न ने पूरी ताकत से उस पर हमला कर उसके सिर में भाला घोंप दिया। प्रद्युम्न की ताकत उसकी फुर्ती और लचीलेपन में थी। वह

बहुत तेज भी था।

जैसे-जैसे और भी राक्षस उस पर हमला करने के लिए आगे बढ़ते गए, वह फुर्ती से आगे बढ़ता गया और अपने पास मौजूद सभी हथियारों—अपने साथ ले जा रहे सभी खंजरों और चाकुओं—से उन पर पलटवार करता रहा...

उस पर एक जाल गिर पड़ा।

एक लंबा, मकड़ी के जाले जैसा जाल उसके ऊपर ऐसे फड़फड़ा रहा था मानो वह राक्षसों का शिकार हो। लेकिन वास्तव में वह उनका भोजन था। उन्होंने तुरंत जाल को ज़मीन पर गाड़ दिया और उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे, अपने इस शिकार पर हंसते हुए। प्रद्युमन हताश हो रहा था क्योंकि वह जाल को फाड़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह किसी मजबूत चीज़ से बना था। उसकी मांसपेशियां तन रही थीं, लेकिन वह उसे फाड़ नहीं पा रहा था।

“आखिरकार द्वारका के राजा को घुटनों पर ला दिया।” एक राक्षस ठहाका लगाते हुए बोला। “सोचो हमारे राजा को कैसा लगेगा।”

प्रद्युम्न को यह नहीं पता था कि राक्षसों का एक नया राजा है। उसे लगता था कि कई छोटे सरदार हैं जो अब स्वतंत्र रूप से काम करते हैं और मायावती सबसे अधिक उम्र तक जीवित रहने वाली वरिष्ठ राक्षसी थीं जो इन सरदारों से सलाह लेती थीं।

“तुम्हें लगा कि हमें पता नहीं चलेगा। लोकपाल पर हमारा बहुत बड़ा कर्ज़ है।” एक और राक्षस ने दांत पीसते हुए फुफकारा। “हमने उससे अपने सारे राज़ बाँट लिए हैं। अब उसे ये कहानियाँ लंबे समय तक भोगनी पड़ेंगी।”

प्रद्युमन ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, "तुम्हारा नया राजा कौन है?"

“तुम्हें जल्द ही पता चल जाएगा। तुम उससे मिलोगे।” दोनों मुस्कुराए।

और जबकि प्रद्युमन को यह सुनकर बहुत खुशी होती कि वे उसे पकड़ने पर कैसे गर्व कर रहे थे, उसके आदमियों ने पहले ही उन्हें पकड़ लिया और उनके बीच झड़प हुई, जबकि प्रद्युमन उन हिस्सों से होकर गुजरा जहां कीलें गड़ी हुई थीं और उसने अपनी पूरी ताकत से उन्हें खींचना शुरू कर दिया, जिससे चारों कील वाले हिस्से बाहर आ गए और वह फिर से मुक्त हो गया।

उसने गिरी हुई तलवार उठाई और तुरंत पास के राक्षस की ओर बढ़कर उसके सिर में वार कर दिया। जब राक्षस गिरा, तब तक उसने देखा कि उसके आदमियों ने घुड़सवार सेना की पर्याप्त टुकड़ियाँ इकट्ठा कर ली थीं, जो रस्सियों का इस्तेमाल करके पुल को ऊपर खींच रही थीं और साथ ही साथ राक्षसों से लड़ भी रही थीं। अग्नि बाणों से लैस तीरंदाज अधिकांश राक्षसों को जला रहे थे और वे भी पीछे हट रहे थे।

प्रद्युमन ढालों और भालों को चीरते हुए तेजी से आगे बढ़ा, और द्वार तक पहुँचते ही उसने दोनों हाथों से द्वार को पकड़ लिया और बाकी दल के साथ उसे धकेलने की कोशिश की।

“एक...दो...तीन—हियाह!” और वह जोर से चिल्लाया, जिससे गेट ऊपर आकर ठीक उसी जगह पर फिट हो गया जहाँ उसे होना चाहिए था।

“बाकी सबको मार डालो।” उसने गुस्से से तेवर चढ़ाए और चिल्लाते हुए बचे हुए राक्षसों को अपने क्रोध का सामना करने के लिए छोड़ दिया। उसके चेहरे पर एक मुस्कान आ गई। “लगता

है, आज रात के खाने में हम इन्हीं को खाने वाले हैं।"

और उसके आदमियों ने उत्साह से चिल्लाते हुए अपने दुश्मनों का खून, मांस और अंग बहाना शुरू कर दिया।

*

प्रद्युमन अपने कमरे के एक कोने में, जो उनका निजी अध्ययन कक्ष था और जिसे उन्होंने केवल अपने लिए ही रखा था, कुछ देर तक अपने घावों को दबाते रहे। वे खुद पर क्रोधित थे। एक मूर्ख हाथी के चक्कर में उन्होंने इतने सारे लोगों को खो दिया और अब खुद को मजबूत बनाने के चक्कर में भी उन्होंने अपने ही लोगों को गंवा दिया। उन्हें लोकपाल पर भरोसा नहीं करना चाहिए था। उन्हें किसी पर भी भरोसा नहीं करना चाहिए था। ये सोचते हुए उनके विचार उनके पिता की ओर चले गए, जिन्होंने उन्हें सिखाया था कि जीवन में अक्सर लोग आपको निराश करते हैं।

इसलिए उनसे कभी कोई उम्मीद मत रखो। उन पर कभी भरोसा मत करो। तुम अकेले पैदा हुए हो और अकेले ही जाओगे।

प्रद्युमन ने इस बात को दिल पर बिठा लिया था। आख़िरकार, उनके पिता ने सबसे बड़ा युद्ध जीता था और वे एक कुशल रणनीतिकार थे। उन्हें अक्सर अपने पिता की याद आती थी और उनके दिल में एक टीस उठती थी, लेकिन वे कुछ कहते नहीं थे। जब वे निराश और पराजित होते, तो वे इस कमरे में आकर उदास हो जाते थे।

"आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" एक आवाज आई।

प्रद्युमन ने मुड़कर देखा कि आवाज़ कहाँ से आ रही है, वह अपने विचारों से बाहर निकला और लगभग असुरक्षित महसूस करने लगा। उसने परछाई में किसी को खड़े देखा। लेकिन वह व्यक्ति अंदर कैसे आया?

"अब तक का सबसे बड़ा जादू कौन सा है?" महिला की आवाज ने पूछा और उसने तुरंत उसे पहचान लिया।

प्रद्युमन को पसीना आ रहा था और सीने पर लगे घाव के कारण उसे बुखार था। "दुनिया को यह यकीन दिलाना कि युद्ध चल रहा है, जबकि वास्तव में कोई युद्ध नहीं है।"

"बिल्कुल सही।" महिला परछाई से बाहर आई। "नमस्ते बेटे।"

"ये तुम हो।" उसने अपनी माँ मायावती की तरफ देखा और एकदम सुन्न हो गया। उसे ऐसा बहुत समय बाद महसूस हुआ था। "ऐसा कैसे... रुको... मुझ पर हमला करना तो बस ध्यान भटकाने की चाल थी। तुम मुझ तक पहुँचना चाहती थी।"

"चुपके से, हाँ।"

"क्यों?"

वह मुस्कुराई। उसके काले होंठ दमक रहे थे। "तुम्हें पता चल जाएगा।" उसने अपने काले वस्त्र फैलाए और प्रद्युमन को एक नई दुनिया खुलती हुई दिखाई दी। वह तुरंत उसकी ओर और उसकी ऊर्जा की ओर आकर्षित हो गया।

"यह क्या है? तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं तुम्हें तुम्हारे मुकदमे के लिए भेज रही हूँ," उसने मुस्कुराते हुए कहा।

और फिर उसके वस्त्रों से निकलने वाली रोशनी इतनी तेज हो गई कि वह उसमें समा गया और खुद को घोर अंधेरे में पाया।

सांप एक बार फिर दिखाई दिया। उसके सपनों में।

लेकिन इस बार वह उससे काफी दूर था, दस सिरों वाले राक्षस के आकार और रूप में, जो कुंडली बनाकर जमीन पर लोट रहा था। बलराम को एक और आदमी दिखाई दिया जो दूर खड़ा था, जिसके बाल भूरे और आंखें पेड़ की छाल जैसी भूरी थीं। उसके चेहरे पर भी वही भाव थे जो बलराम के चेहरे पर थे - उलझन भरे।

“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” उसने अपने सामने खड़े आदमी से पूछा।

"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"

मैं हमेशा यहीं हूँ।

"आपका क्या मतलब है?"

दुनिया का अंत हो जाएगा, लेकिन हम नष्ट नहीं होंगे।

उसी क्षण, दस सिर वाला सांप बलराम के चारों ओर चक्कर लगाने लगा और उसे घूरने लगा, अपनी पुतलियों से उसे भेदने लगा।

बलराम को लगभग खतरा महसूस हुआ। "हम क्यों नहीं मरेंगे?"

लेकिन सांप ने उस आदमी को निगल लिया जो स्वेच्छा से निगले जाने के लिए सहमत हो गया था, और दोनों को एक होने दिया। सांप ने जवाब दिया: "क्योंकि हम अनंत हैं। मुझे मुक्त करो..."

“नहीं...” बलराम ने गुस्से में कहा। “मैं नहीं जानता कि तुम क्या हो।”

"आप।"

"क्या मुझे?"

"मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

बलराम जाग उठा। पसीने से तरबतर, जैसा कि उसे ऐसे सपने आने पर हमेशा होता था, वह अपनी ही पीड़ा से व्याकुल था। वह एक जर्जर पलंग पर था, फिर उठ खड़ा हुआ। वितीहोत्र से लड़ने ने उसे थका दिया था और वह काफी देर तक सोता रहा था। लेकिन सबसे दिलचस्प बात यह थी कि इस दौरान उसकी मुलाकात सत्यकी से हुई, जो युधजीत का बिछड़ा हुआ पुत्र था।

“सोया हुआ प्यारा बच्चा आ गया है, चाचा जी,” उसे कदमों की आहट सुनाई दी और उसने ऊपर देखा तो उसे हमेशा मुस्कुराते रहने वाला सत्यकी दिखाई दिया, “कैसा रहा? मज़ा आया?”

"क्या हो रहा है?"

“तुम थके हुए हो।” उसने उसके कंधे पर थपथपाया और उसके बगल में बैठ गया।

बलराम ने आसपास के वातावरण का जायजा लेने में समय लिया और देखा कि वह एक गुफा के प्रवेश द्वार के पास है, जहाँ कवच पहने कई पुरुष और महिलाएं मौजूद थे, बर्तनों में स्टू और सूप परोसा जा रहा था। वह जगह विशाल थी और वहाँ बहुत सारे लोग थे, सभी चुपचाप बैठे थे और अपने-अपने बच्चों की देखभाल कर रहे थे। यह जगह उस जगह से कहीं अधिक गंदी और

भयावह लग रही थी जहाँ से वह अभी आया था।

मैं कहाँ हूँ?

सत्याकी की चंचलता गायब हो गई, “एक समझौता... विद्रोहियों का।”

“विद्रोही?”

“मेरे पिता के खिलाफ,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।

बलराम ने अपना माथा दबाया और अपने गंजे सिर के पिछले हिस्से को सहलाते हुए आगे की ओर देखते रहे। "वितिहोत्र को मेरे ठिकाने का पता कैसे चला?"

"बेशक, पिताजी से।"

हाँ। वह बहीखाते से संबंधित काम कर रहा था। बहीखाता दुर्गाज्योति आदि के साथ काम करता है। बलराम को अकुरजी और उनकी पत्नी रेवती के बारे में तुरंत चिंता सताने लगी, हालाँकि उसे यह पक्का नहीं पता था कि उनमें से बहीखाता कौन है। फिर भी वह उनके लिए चिंतित था। वह जानता था कि रेवती, जिस पर उसे अधिक भरोसा था, वास्तव में अपना ख्याल रखने में सक्षम थी।

“तो इसीलिए आप हमारे रात्रिभोज में नहीं आए। आप तख्तापलट की योजना बना रहे थे।”

“बिल्कुल नहीं। मैं तो उनकी देखभाल कर रहा था,” सत्याकी ने कहा। “ये सभी लोग मेरे पिता द्वारा प्रताड़ित किए गए थे। कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या चाचा कृष्ण का वरदान अभिशाप था, क्योंकि उन्होंने लोगों को दूसरों को चोट पहुँचाने की अनुमति दी और उन्हें मृत्यु की शांति से वंचित रखा।”

बलराम ने भी अक्सर इस बारे में सोचा था। उनका भाई संदिग्ध विचारों पर आधारित काम करता था। कर्ण के कुछ मामलों में सही होने के बावजूद उन्होंने कर्ण के बजाय अर्जुन का साथ दिया था।

“तुम अच्छा काम कर रहे हो,” बलराम ने कहा। “लेकिन तुम्हारे पिता को क्या हुआ? वो ऐसे क्यों हो गए?”

“क्योंकि पहले उसके पास ययाति की शक्ति थी, जिससे वह लोगों की जान ले लेता था, और अब उसके पास अमर होने की शक्ति है। संक्षेप में, वह अमर है। वह कभी नहीं मरेगा, जिससे वह एक सर्वशक्तिशाली शासक बन जाएगा।”

बलराम को उसकी आवाज में सच्चाई दिखाई दी, लेकिन फिर भी उसका दिल उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं था।

मैं पूरी तरह से असमंजस में हूँ।

“क्यों?” सत्यकी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।

"यह उसकी आवाज नहीं लग रही है।"

"क्या?"

“युद्धजीत।” बाकी सब कुछ भी। दुर्गाज्योति के साथ उसका होना, बहीखाते की जानकारी होना, वितीहोत्र भेजना और अब यह... उसकी नाक के नीचे उसके बेटे के नेतृत्व में विद्रोह चल रहा था।

मुझे इस पर संदेह है। मुझे लगता है कि उसे फंसाया जा रहा है। मैं युधजीत को जानता हूं। हम बचपन से एक-दूसरे को जानते हैं, और यह उसके स्वभाव जैसा नहीं लगता।

सत्याकी अविश्वास भरी हंसी हंसा। "अच्छा, चाचा जी, तो मेरे पास आपको दिखाने के लिए कुछ है।"

बलराम असमंजस में पड़ गया; लगभग घबरा गया।

"आशा है आप एकदम तरोताजा महसूस कर रहे होंगे, क्योंकि आप मेरे साथ सवारी पर चल रहे हैं।"

*

बलराम सत्यकी और अपने दो सैनिकों के साथ कुछ देर से बैलगाड़ी में सफर कर रहे थे। उन्हें एक खच्चर खींच रहा था और उन सभी ने अपने सिर को ढकने वाले बड़े-बड़े हुड पहन रखे थे ताकि युद्धजीत के सैनिक उन्हें देख न सकें। वे बर्फ से ढकी संकरी गलियों से गुजर रहे थे, सुबह का रंग बैंगनी होता जा रहा था और दूर से चीलों की दहाड़ सुनाई दे रही थी।

आपके पिता को कितना पता है?

"उसे पता है कि मैं उसे पसंद नहीं करता।"

“लेकिन यह नहीं? कि आप सीधे-सीधे राजद्रोह कर रहे हैं?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बस बलराम को देखकर मुस्कुरा दिया। उसका चेहरा सुंदर था और उसकी भौहें घनी थीं, पीछे की ओर लहराते हुए बाल प्रद्युमन जैसे थे, बस थोड़े छोटे।

“मुझे कहाँ ले जा रहे हो?” बलराम ने फिर पूछा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। उसने अपनी लाठी को कसकर पकड़ रखा था और सोच रहा था कि अभी तक उसे उससे क्यों नहीं लिया गया।

सत्याकी ने कहा, “आपको कुछ देखना चाहिए। हम काफी समय से एक गांव पर नजर रखे हुए थे। हमारा काम जरूरतमंदों को बचाना है।”

और फिर आगे की योजना क्या है? बस अच्छा काम करते रहना है?

"कम से कम मैं कोशिश तो कर रहा हूँ।"

बलराम चुप रहे। जैसे ही वे गाँव के पास पहुँचे, वहाँ का नजारा देखकर उनकी आँखें स्तब्ध रह गईं। वृष्णि राज्य की पूर्ण सीमा के बाहर, उन्होंने देखा कि असंख्य स्त्रियों और पुरुषों को रथों से जंजीरों में बाँधकर उनके दासों और जमींदारों को रथों में ले जाया जा रहा था, जबकि कई अन्य लोगों को जमीन या उनके घरों की दीवारों पर कीलों से ठोंका गया था। वहाँ युधजित के सैनिक थे जो कुछ अन्य ग्रामीणों को कोड़े मार रहे थे।

“ऐसा क्यों है?” बलराम ने पूछा, जब वे एक कोने में खड़े होकर छिपने के लिए नीचे बैठ गए।

“क्योंकि उन्होंने अपना टैक्स देर से भरा। एक तरह से कहें तो उन्होंने बगावत की।” उन्होंने सिर हिलाया। “पिताजी को यह सुनिश्चित करना होगा कि गरीबों से पैसा आता रहे।”

बलराम ने अपने जबड़े भींच लिए। क्या यह सचमुच सच था? क्या युधजित अमानवीय व्यवहार कर रहा था? उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

“वृष्णि वंश कृष्ण के रक्त से उत्पन्न हुआ है। मेरे रक्त से।” बलराम ने सिर हिलाया। “मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि ऐसा हो रहा है।”

सत्यकी ने उत्तर दिया, “समय के साथ हम पतित हो गए हैं। हमें अपने पापों का प्रायश्चित करना होगा।”

“तो, यह विद्रोही सेना जिसे आप गठित कर रहे हैं, वृष्णि वंश के लिए मुक्ति का मार्ग है?”

“शायद। शायद नहीं।” वह उलझन में लग रहा था, मानो उसे दिशा और स्पष्टता चाहिए थी, लेकिन वह लोगों के बीच लोकप्रिय नहीं था। “इतने समय में तुमने मुझसे यह नहीं पूछा कि मैंने तुम्हें क्यों बचाया। मैं वितीहोत्र को तुम पर हावी होने दे सकता था। नहीं। लेकिन मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मुझे किसी बड़े, किसी समझदार व्यक्ति की ज़रूरत है। मुझे मार्गदर्शन चाहिए। मुझे एक योजना चाहिए। एक रणनीति। मेरे पास शारीरिक बल तो है, लेकिन विचारों के मामले में मैं बिल्कुल अनाड़ी हूँ।” उसने दूसरी ओर देखा।

बलराम ने चर्चा शुरू होने से पहले ही विचार करना शुरू कर दिया। उसके मन में कुछ करने की योजना थी, लेकिन उसकी भावनाओं ने उसे युधाजित को चोट पहुँचाने से रोक दिया। वह अपने मित्र के विरुद्ध राय बनाने से खुद को रोक नहीं पाया। लेकिन फिर सारे सबूत युधाजित के खिलाफ इशारा कर रहे थे, और बलराम समझ गया कि उसे कुछ करना ही होगा। और जब उसके विचार भटकने लगे, तो वह एक पल के लिए खोया हुआ महसूस करने लगा। तभी उसने एक युवती को अपने शिशु के साथ क्रूरता से भागते हुए, उनकी ओर जाते हुए देखा, जहाँ वे बर्फ में छिपे हुए थे। सैनिक उसके पीछे दौड़ रहे थे, उनमें से कुछ अपने घोड़ों पर सवार होकर तेज़ी से भाग रहे थे...

“उसने राशन चुरा लिया! उसने तो चुरा लिया!” सैनिकों ने चिल्लाते हुए और गुस्से से देखते हुए कहा।

बलराम ने इंतज़ार नहीं किया; जैसे ही महिला पास आई, वह आगे खड़ा हो गया और महिला उसे पहचान न पाने की उलझन में उसके पास से गुज़र गई। उसके हाथ में लाठी थी और वह महिला और सैनिकों के बीच एक दीवार की तरह खड़ा था। पृष्ठभूमि में सूरज डूब रहा था, और सभी ने एक-दूसरे को देखा और फिर बलराम को, जिसका चेहरा भावहीन था।

"उसे अकेला छोड़ दें।"

“तुम कौन हो?” मुंह में पान का पत्ता लिए एक पहरेदार ने उसे ज़मीन पर थूक दिया, जिससे उसका लाल रंग बर्फ पर फैल गया। “हमें घुसपैठिए पसंद नहीं हैं।”

“मैं घुसपैठिया नहीं हूँ। मैं यहीं का हूँ।” वह मुस्कुराया।

उनके साथ सत्यकी और उनके दो सैनिक भी खड़े थे, जो उनसे लड़ने के लिए तैयार थे।

“आओ, मुझसे भिड़ो,” बलराम ने तिरस्कारपूर्वक कहा।

और युधजित के आदमियों ने हार नहीं मानी। वे तुरंत बलराम की ओर दौड़े और उन पर टूट पड़े। बलराम को खुद को तैयार करने का समय नहीं मिला, लेकिन लंगड़ाते हुए उन्होंने अपनी लाठी से एक पहरेदार पर वार किया और उसे ज़मीन पर पटक दिया। तभी दूसरा सिपाही पीछे से आया और बलराम को कसकर पकड़ लिया, जिससे उसकी लाठी पर से मुट्ठी ढीली पड़ गई।

बलराम को गुस्सा और निराशा हुई, लेकिन फिर उन्हें कुश्ती के दिन याद आ गए और उन्होंने पीछे से धक्का देकर सिपाही को ज़मीन पर गिरा दिया। इस पूरी प्रक्रिया में उन्हें कुछ समय लगा, लेकिन वे सफल रहे और खुद को छुड़ाने के बाद सबसे पहले उन्होंने सिपाही का चेहरा तोड़ दिया, जिससे उसकी कॉलरबोन और नाक टूट गई।

बलराम फिर अपनी लाठी ढूंढने के लिए बेहोश सैनिकों से लथपथ खून से सनी ज़मीन पर रेंगते हुए आगे बढ़े। तभी उनकी नज़र सत्यकी और उसके आदमियों पर पड़ी जो ज़ोरदार लड़ाई लड़ रहे थे। सत्यकी अपनी तलवार से उनका मुकाबला कर रहा था और एक सैनिक उस पर हावी हो रहा था। बलराम पहाड़ की तरह आगे बढ़े और उनके बीच आ गए। उन्होंने सत्यकी पर तलवार के वार होने दिए, लेकिन अपनी लाठी से उन्हें रोकते हुए लाठी का ऊपरी हिस्सा सैनिक के चेहरे पर दे मारा। सत्यकी मरा तो नहीं, लेकिन जीवन भर बदसूरत ही रहेगा।

बलराम ने देखा कि सत्यकी एक बार फिर जमीन पर गिर गया है, पिघली हुई बर्फ उसके कपड़ों पर जमी हुई है। बलराम ने अपने हाथ आगे बढ़ाए तो सत्यकी ने उसे पकड़ लिया और खुद को उठा लिया।

“आपकी मदद के लिए धन्यवाद, चाचा जी। हमें बाकी लोगों के आने से पहले निकल जाना चाहिए। हमारी पड़ताल पूरी हो चुकी है और अब मेरी टीम आक्रमण की तैयारी करेगी।” वह रुका, बलराम की उलझन भरी निगाहों को देखते हुए सोचने लगा। “लेकिन सबसे ज़रूरी बात, मैं आपको यहाँ इसलिए लाया हूँ ताकि आप मेरी बात मानें, मेरा नेतृत्व करें, मेरी मदद करें।”

बलराम ने सिर हिलाया। उसने डरी हुई लड़की और शिशु की ओर देखा, जो अब पेड़ के पीछे छिपे हुए थे और अपने लिए एक नया घर ढूंढने के लिए तैयार थे। "मेरे पास एक विचार है।"

“क्या?” सत्यकी ने जिज्ञासा से भरी निगाहों से देखा।

“आप इसके बारे में क्या सोचते हैं...” वह रुका, “अंधकों के साथ गठबंधन करने के बारे में?”

18

समवा को यह जगह पसंद नहीं थी। वह डरा हुआ था।

क्योंकि अंधेरा था। वह जगह सुनसान थी।

वह अपने पिता के साथ एक कोठरी में बैठा था और उनके बीच सन्नाटा गहराता जा रहा था। कई घंटे बीत चुके थे। वह कोठरी तोड़कर भाग जाना चाहता था, लेकिन उसके सारे हथियार छीन लिए गए थे। यहाँ तक कि उसके पिता भी हार मानकर एक बूढ़े आदमी की तरह ऊंघ रहे थे। वह पिंजरे के चारों ओर देख रहा था; वह एक छोटे से कमरे में था, जो चारों ओर जलते हुए दीयों से रोशन था, साथ ही गलियों से भी, जो उन्होंने अपने लिए बनाई छोटी-छोटी गुफाएँ थीं। पिंजरे में इधर-उधर धकेले जाने के दौरान समवा ने कहीं ऊपर जाती हुई कुछ सीढ़ियाँ देखी थीं, और वह जानता था कि वे बाहर निकलने के रास्ते थे।

लेकिन वह दुर्वासा के बारे में और उसने एराका अयस्क कहाँ देखा था, इसके बारे में पता नहीं लगा सका। उसकी तीव्र इच्छा थी कि ययाती जाति को उनके कर्मों के फल के लिए जलाकर राख कर दे। उसने सोचा, उन्हें मर जाना चाहिए।

समवा ने अपने पिता की ओर देखा और वे चुप रहे। उनके बीच बहुत कुछ छिपा था, लेकिन वह कुछ कह नहीं पा रहा था। ऐसा नहीं था कि वह कहना नहीं चाहता था, बल्कि उसे डर था कि उसकी बात पर विश्वास नहीं किया जाएगा।

“क्या सोच रहे हो, बालक?” कृष्ण ने जागते हुए पूछा। उन्होंने आँखें बंद करके पूछा।

"आप कैसे जानते हो?"

“मैं पहले इन सब चीजों में काफी अच्छा था,” उसने सामान्य लहजे में कहा। “अब मेरी कुशलता फीकी पड़ गई है।”

“कुछ नहीं। बस यही कि अगर तुमने ययाति को यह असीमित शक्ति न दी होती तो चीजें कितनी बेहतर होतीं।”

कृष्णा ने आह भरते हुए कहा, "हम सब गलतियां करते हैं। मुझे नहीं पता था कि वे इसका फायदा उठाएंगे।"

“हाँ,” उसने कहा। “तुमने कुछ ज़्यादा ही बना ली थी, तुम्हें पता है।”

"आपका क्या मतलब है?"

समवा कुष्ठ रोग की पूरी घटना के बारे में बात नहीं करना चाहता था। इसलिए वह चुप रहा।

समवा ने उसकी बात अनसुनी कर दी और बाहर देखने लगा, उसके हाथ कोठरी के दरवाजों के बीच की जगह से लटक रहे थे। वह कुछ देर तक इंतज़ार करता रहा, उम्मीद कर रहा था कि कोई आएगा। जब वह हार मानकर वापस मुड़ा, तो उसने पिंजरे के कोने में, ठीक बाहर, एक परछाई को रेंगते हुए देखा। उसने परछाई को बनते देखने के लिए अपना सिर घुमाया और कोने से सबा अपने बिखरे बालों और उलझी हुई आँखों के साथ प्रकट हुई।

समवा ने उससे कुछ नहीं कहा। उसने अनिश्चित कदमों से पिंजरे के पास जाकर उसे सहारा

दिया।

“तुम दुर्वासा को कैसे जानते हो?” उसने सबसे पहले यही सवाल पूछा।

समवा ने कृष्ण की ओर देखा, जो अभी भी दीवार के सहारे लेटे हुए थे, बिल्कुल सहज भाव से।

“हमने उनके बारे में सुना है। एक महान, प्रभावशाली गुरु,” समवा ने समझाया, हालांकि यह पर्याप्त नहीं था। “लेकिन उन्हें वर्षों में बहुत कुछ सीखने की आदत है। एक अमर ऋषि।”

“सचमुच। एक महान व्यक्ति,” सबा ने कहा। “मेरे अत्याचारी पिता के समय में, वह मेरे लिए एक सहारा थे। एक दिन जब वह चले गए, तो मैं राखदानी के साथ अकेली रह गई और फिर पुताना ने मुझे ढूंढ लिया।” उसकी आँखें सिकुड़ गईं, उसकी आवाज़ कांप उठी। “वे दिन मेरे लिए बहुत दुखदायी थे।”

समवा उसे दिलासा देना चाहता था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह यहाँ क्यों आई है। "जब तुमने दुर्वासा की बातें सुनीं, तो तुम स्तब्ध रह गए थे।"

“जो लोग उसकी तलाश करते हैं, मुझे लगता है कि उन्हीं का कोई महान उद्देश्य है,” उसने कहा। “दरअसल, उसने मुझसे कहा था। उसने कहा था कि जो लोग मुझे खोजना चाहते हैं, उन्हें हमेशा मेरे पास लाओ। मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह दिन आएगा।”

समवा ने अपनी भौंहें उठाईं। "क्या उसने कभी एराकास के बारे में बात की थी?"

उसने सिर हिलाया। “कई चीजों में से, एराका ही वह चीज थी जिसके बारे में वह निश्चित रूप से बात कर रहा था—हथियारों की दुनिया में एक अविनाशी पदार्थ। एक बार किसी भी तलवार पर इस्तेमाल करने के बाद...यह आपको किसी को भी, किसी भी चीज को मारने में सक्षम बना सकता है।”

तो, यह अयस्क नहीं है?

“नहीं।” उसने सिर हिलाया।

“यह कहाँ है? उसने इन एराकाओं को कहाँ देखा?”

“मुझे इसके बारे में पता नहीं है।” वह थोड़ी देर रुकी। “लेकिन मुझे यह ज़रूर पता है कि वह यहाँ से जाने के बाद कहाँ गया। वह इसके बारे में बहुत बातें करता था। शांति पाने के लिए। सुकून पाने के लिए।”

"जहां यह था?"

“अंतरद्वीप।” उसने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा, “लेकिन आप यह जानकारी क्यों चाहते हैं?”

उसी क्षण कृष्णा अपने पैरों पर खड़ा हुआ और कोठरी के द्वार के पास पहुंचा। “तुमने अभी क्या कहा?” उसकी आवाज गंभीर और कठोर हो गई।

“अंतर द्वीप।”

कृष्ण का चेहरा पीला पड़ गया।

समवा ने उसकी ओर देखा। "तुम्हें इसके बारे में पता है?"

“बिल्कुल।” उसने सिर हिलाया। “जब मैं जरासंधा से भागना चाहता था, तब मुझे यही पहली ज़मीन मिली थी। पर यह छोटी थी, इसलिए मैंने एक दूसरा रास्ता खोज लिया, हालाँकि मैंने उसे

व्यापारिक बंदरगाह बना लिया था। लेकिन मैंने उसे बहुत पहले हटा दिया था, किसी को... किसी चीज़ को पनाह देने के लिए।" उसकी आवाज़ धीमी थी।

"वहाँ का माहौल कैसा था?"

कृष्ण ने कोई जवाब नहीं दिया। वे बस अवज्ञा में अपना सिर हिला रहे थे। "वह वहाँ क्यों गया था? उसका उद्देश्य क्या था? वहाँ क्या था?"

सबा इसका जवाब नहीं दे सकी। उसे खुद भी इसके बारे में पता नहीं था। इसी बीच समवा उसकी ओर मुड़ी। "तो एराकाओं का पता लगाने के लिए, हमें उस आदमी को ढूंढना होगा।"

सबा ने सिर हिलाया। "लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप ऐसा कर सकते हैं। पुताना को घुसपैठिए पसंद नहीं हैं और मुझे लगता है कि वह आप सभी के साथ बहुत सख्ती से पेश आएगी।"

"क्या आप हमें भागने में मदद कर सकते हैं?"

"मैं इस समुदाय का हिस्सा हूँ। भले ही मैंने जानकारी लीक कर दी, लेकिन मैंने अपने गुरु की बात मानी। लेकिन मेरे मन में आपके प्रति कोई निष्ठा या प्रेम नहीं है, इसलिए मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"हम सही काम करने की कोशिश कर रहे हैं!" समवा रो पड़ी।

"क्या हम सब नहीं हैं?" सबा पीछे से गायब हो गई...

ठीक उसी समय पहरेदार आ गए, उन्हें पता ही नहीं चला कि वह अभी-अभी भाग निकली थी। उन्होंने कोठरी के द्वार खोले और समवा और कृष्णा को बाहर धकेल दिया।

"पुताना आपसे मिलना चाहती है।"

*

मेहमानों का जमावड़ा लग जाने पर कृष्ण को आगे धकेला और धक्का दिया गया। कमरा छोटा था और हवा पसीने से तर थी। वह कोने में बैठे सभी डाकुओं को मुस्कुराता हुआ देख सकता था, जबकि पूतना अपने अस्थायी सिंहासन पर बैठकर आनंद ले रही थी। वह अपना श्रीवत्स चिन्ह दिखाना चाहता था, लेकिन उसे डर था कि इससे अनावश्यक ध्यान आकर्षित होगा। वह अपना प्रयास जारी रखना चाहता था। वह कई लोगों को बीयर के घड़े और शराब के प्याले लिए हुए भी देख सकता था। वे पी रहे थे और मेहमानों का तमाशा देखना चाहते थे।

"हम सोच रहे थे कि तुम दोनों का क्या करें," पुतना ने कहना शुरू किया, जब कृष्ण को संवा के किनारे धकेल दिया गया। "और हमने फैसला किया कि द्वंद्वयुद्ध करना सबसे अच्छा रहेगा। फिर हमने सोचा कि किसके साथ? हमारे पास अंधेरे के कुछ जीव तैयार थे जो तुम पर हमला करने वाले थे, लेकिन फिर यह उतना दिलचस्प नहीं रहा।"

"तो फिर बात क्या है?" कृष्ण ने भावहीन चेहरे से पूछा। अंतर्द्वीप के बारे में जानने के बाद से उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। वे उस जगह से कोई वास्ता नहीं रखना चाहते थे। उससे जुड़ी कई बुरी यादें थीं और वे उससे दूर रहना चाहते थे।

लेकिन अब उसे जाना ही था। यह जानने की उत्सुकता प्रबल थी कि दुर्वासा वहाँ क्यों गए थे।

"आपस में लड़ रहे हैं।" पूतना ने ताली बजाई, और तुरंत ही कृष्ण और समवा की लोहे की

जंजीरें खुलने लगीं और नीचे गिरने लगीं। सैनिकों ने उन्हें तलवारें दीं, एक-एक करके। “एक आज रात चला जाएगा, दूसरा हमारे साथ यहीं रहेगा और पालतू जानवर की तरह पाला जाएगा क्योंकि हमें मारा नहीं जा सकता।”

“मुझे तलवारबाजी का ज्यादा शौक नहीं है,” कृष्णा ने लापरवाही से कहा।

“खैर, तुम्हारे पास कोई विकल्प नहीं है,” पुताना कराहते हुए बोली। “क्या हम शुरू करें?”

समवा ने कृष्ण की ओर रुख किया, तभी कृष्ण ने पूछा: "क्या तुम्हारे पास कोई योजना है?"

समवा ने अपना सिर हिलाया।

“मैं यह नहीं कर सकती,” समवा ने कहा।

“क्या यही तुम्हारी योजना है?” कृष्ण ने पूछा और फिर उन्होंने सामवा के कान में फुसफुसाते हुए कहा, “मैं चाहता हूँ कि तुम यहाँ से चले जाओ। मुझसे लड़ो। मुझे हराओ और फिर मुझे यहीं रहने दो।”

“नहीं, तुम मेरे साथ आओगे,” समवा ने सिर हिलाते हुए कहा। “हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे।”

“ऐसा हो ही नहीं सकता। मुझे हारने दो और हार मान लेने दो।”

“आप हार जाएँगे, पिताजी,” उसने कहा। “क्या आपको लगता है कि मैं आपको हरा नहीं पाऊँगा?”

मैं नहीं चाहता कि तुम्हें इस बात का बुरा लगे, लेकिन तुम कभी अच्छे तलवारबाज नहीं थे।

समवा ने अपनी नाक फुला ली। “मैं बेहतर हो गया हूँ!” उसने अपनी लोहे की तलवार भींच ली। “लेकिन तुम इसे देख नहीं पाओगे। तुम हमेशा मुझमें बुराई ही देखते हो।”

कृष्ण समझ गए कि कृष्ण के हार मानने की पेशकश से वह थोड़ा नाराज़ था। "देखो, अगर हम लड़ेंगे तो मैं तुम्हें हरा दूंगा और मैं ऐसा नहीं चाहता।"

“तुम वाकई असाधारण हो,” समवा ने कहा और फिर उसने तलवार आगे बढ़ाई जिसे कृष्ण ने जोरदार आवाज के साथ रोक दिया। “तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें हरा नहीं सकता, इसलिए तुम मुझे दया करके जीत दिला रहे हो। मैंने अपने कौशल को निखारा है।”

“हम एक ही पक्ष में हैं, क्या तुम भूल गए हो?” कृष्ण ने पूछा, लेकिन समवा ने उनकी बात नहीं सुनी। उनके भीतर अनियंत्रित क्रोध उमड़ रहा था और वे फूट रहे थे। उन्होंने अपनी तलवार एक बार फिर कृष्ण की ओर बढ़ाई, जिसे कृष्ण ने रोक दिया। “मुझे लगता है तुम भूल गए हो।”

समवा आगे बढ़ा और उसने कृष्ण के करीब वार किया, लेकिन इस बार कृष्ण ने उस पर दया नहीं दिखाई और पलटकर उसके चेहरे पर एक जोरदार थप्पड़ मारा और उसे गिरा दिया।

“तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे सामने कमजोर न पड़ूँ? मैं ऐसा नहीं करूँगा। लेकिन खुद को तैयार कर लो,” कृष्णा ने गुस्से से कहा।

समवा ने होश में आकर खुद को संभाला और खड़ा हो गया। "मैं हूँ।" और फिर बिना सोचे समझे वह कृष्ण की ओर दौड़ा और उन्हें नीचे गिरा दिया। उसी क्षण बीयर के प्याले खाली हो गए, और आसपास के लोगों का शोर बढ़ता जा रहा था, हर कोई तालियाँ बजा रहा था और जयकारे लगा रहा था।

समवा कृष्ण के ऊपर था और उसने अपनी तलवार अपने पिता के चेहरे के पास लाकर कहा, “तुम्हें अंदाजा भी नहीं है कि मुझे ऐसा करने में कितनी खुशी हो रही है। तुम्हें हराने में।”

"क्यों?"

क्योंकि तुम मेरी बात नहीं सुनते। तुम कभी नहीं सुनते।

"किस बारे मेँ?"

समवा रुका नहीं। वह आगे बढ़कर उसे चाकू मारने ही वाला था कि कृष्ण ने अपनी विशाल भुजाओं से तलवार को अपने सिर में घुसने और जान से मारने से रोक दिया। “मैंने तुम्हारी पत्नी की हत्या इसलिए नहीं की क्योंकि उसने मुझे ठुकरा दिया था और मैं उससे प्यार करता था। बल्कि इसलिए की क्योंकि वह मुझे प्रताड़ित करती थी। दिन-रात। वह मेरी जिंदगी बदतर बना देती थी और कोई मेरी सुनता नहीं था। यह प्रताड़ना सालों तक चलती रही और जब मैं इसे और सहन नहीं कर सका, तो मैंने खंजर उसके शरीर में घोंप दिया और उसे खून बहने से मरने दिया। लेकिन तुमने नहीं सुना। मैं रोया। मैंने तुम्हें बताया। लेकिन तुमने नहीं सुना। तुमने सोचा कि मैं झूठ बोल रहा हूँ। तुमने सोचा कि मैं...” उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, क्योंकि कृष्ण ने अपना बचाव करना बंद कर दिया था और तलवार सीधे उसके पिता के चेहरे की ओर बढ़ गई थी...

बस एक इंच से चूक गए।

कुछ देर तक वे चुप रहे और समवा एक कोने में बैठकर रोता रहा, अपने पिता को मारने से खुद को रोक रहा था। कृष्ण वहीं असमंजस में खड़े रहे।

समवा लगभग भूल ही गया था कि बाहर इतने सारे लोग हैं और उसके अंदर एक आग सुलग रही है। उसने चारों ओर देखा और उसे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। उसने पुतना को घूरकर देखा, जिसने ताली बजाना शुरू कर दिया था।

“वाह! क्या बात है! क्या ही सही, क्या बात है!” वह सिंहासन से उठीं। “सत्ताधारियों के बीच जानलेवा लड़ाई का मकसद यह देखना होता है कि क्या वे अपनी पुरानी दुश्मनी को हावी होने देते हैं और उसे अपना दुश्मन बना लेते हैं, जिससे उनका पतन हो जाता है। आप दोनों ने ऐसा नहीं किया। आपने अच्छी लड़ाई लड़ी, एक-दूसरे के प्रति नफरत को खुद पर हावी नहीं होने दिया। इसलिए, मैं आपको इसके लिए बधाई देती हूं और आप जा सकते हैं।”

समवा ने आंसू पोंछते हुए सिर हिलाया, लेकिन उसे कृष्ण के ये शब्द सुनाई दे रहे थे: "मैं उससे नफरत नहीं करता" या शायद ये वही कल्पना कर रहा था क्योंकि वह जानता था कि उसके पिता उसके प्रति इतने दयालु नहीं होंगे।

जैसे ही वे खड़े हुए और उन्हें एहसास हुआ कि अब बाहर निकलने का रास्ता खुल गया है, समवा ने सबा को देखा जिसने उसे सिर हिलाकर अभिवादन किया। वे चुपचाप कमरे से बाहर निकलने लगे...

जैसे ही कोहरा उनके चारों ओर छाने लगा, और अधिक धुआँ दिखाई देने लगा और हल्की सी घरघराहट की आवाज़ सुनाई दी, मानो किसी को खाँसी आने में बहुत देर लग गई हो। इतना अधिक कोहरा देखकर समवा अचंभित रह गई।

“यह ठीक नहीं है,” कृष्णा ने अपने जबड़े भींचते हुए कहा। “बिल्कुल भी ठीक नहीं है।”

"आपका क्या मतलब है?"

दुर्जय।

धुंध ने पुताना, सबा और उनके आसपास के सभी लोगों को भ्रमित करना शुरू कर दिया, लेकिन जैसे ही उन्होंने ऐसा किया - यह उनकी नाक में घुसने लगी, तुरंत उन्हें अपने वश में कर लिया, चटकने की आवाजें करने लगी और उनकी आंखें बर्फीली नीली और उनके चेहरे पत्थर जैसे हो गए।

“क्या हो रहा है?” समवा ने पूछा।

“उसने उन पर कब्ज़ा कर लिया है,” कृष्णा ने कहा। और उसे याद आया कि दुर्जय सीधे तौर पर तो नहीं मार सकता था, लेकिन दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रभावित कर सकता था। “अपना हथियार निकालो। अब लड़ने का समय आ गया है।”

19

जब यह सब हो रहा था, दुर्गाज्योति युद्ध कक्ष में मौजूद थीं। युद्ध कक्ष में एक बालकनी थी, जहाँ खड़े होकर उन्होंने सारी घटनाएँ देखीं। जब सब कुछ समाप्त हुआ और वे जीत गए, तब दुर्गाज्योति प्रद्युमन से मिलने वाली थीं, लेकिन वे अपने अध्ययन कक्ष में काफी अंदर चले गए थे और काफी देर तक वहीं रहे...

जब तक कि उन्हें वह सुबह तड़के नहीं मिला। सो रहा था। वह जाग नहीं पा रहा था।

दुर्गाज्योति बाकी लोगों की तरह उसके कमरे के बाहर खड़ी इंतज़ार कर रही थी, क्योंकि अंदर डॉक्टर ज़रूरी काम निपटा रहा था। वह बाहर मौजूद लोगों को देख सकती थी जो आपस में फुसफुसा रहे थे। वहाँ पार्षद थे। द्वार पर युयुधना भी था। एक आकर्षक, काले बालों वाला आदमी जिसकी एक आँख पर निशान था, जहाँ उसने पुतली की जगह एक संगमरमर का टुकड़ा लगवा रखा था। किसी युद्ध में उसने अपनी आँख खो दी थी। लेकिन जैसा उसने सुना था, वह एक बहुत अच्छा योद्धा था।

"वह कैसा है?" उसने उससे पूछा।

युयुधान उसे खास पसंद नहीं करता था क्योंकि कई लोग उसे डायन मानते थे, उसे बाहरी समझते थे, लेकिन वह अपनी नापसंदगी नहीं दिखा सकता था क्योंकि वह अभी भी एक सेनापति था जबकि वह तालजन वंश की रानी और वितीहोत्रों की नेता थी।

"बिल्कुल वैसा ही। जिस भी वजह से वह युद्ध में गया, उसका उस पर बहुत बुरा असर पड़ा है।"

अपनी भौंहें चढ़ाते हुए दुर्गाज्योति सोचने लगी कि आखिर बात क्या है। उसने अफवाहें सुनी थीं—कि वह लकवाग्रस्त हो गया है, उसे जहर दिया गया है, और न जाने क्या-क्या। लेकिन उसे पता था कि कुछ तो गड़बड़ है। जैसे ही उसे उससे मिलने का मौका मिला, वह कमरे में घुस गई और उसे बिस्तर पर लेटे हुए देखा, डॉक्टर और उसकी पत्नी रुक्मिणी उसके बगल में शांति से सो रहे थे। रुक्मिणी ने दुर्गाज्योति की तरफ देखा तक नहीं, बल्कि अपने पति के गाल पर थपथपाया और उसके बालों से खेलने लगी।

"उसे क्या हुआ है?" उसने रुक्मिणी से नहीं बल्कि डॉक्टर से पूछा।

"वह कोमा में है। इतनी गहरी नींद में है कि अब जाग नहीं सकता।" लंबे गाउन पहने डॉक्टर ने कहा। "इसका कोई इलाज नहीं है। उसे समय चाहिए। और हमें उम्मीद है कि वह जाग जाएगा।"

डॉक्टर कमरे से चले गए और दुर्गाज्योति चुपचाप वहीं खड़ी रही, प्रद्युमन के शांत चेहरे को देखती रही और सोचती रही कि आखिर क्या गड़बड़ हुई। वह गुस्से से दांत पीस रही थी और जबड़े भींच रही थी।

"क्या तुम अपना काला जादू करके इसे ठीक नहीं कर सकतीं, डायन?" रुक्मिणी ने ज़मीन पर थूका। अब वह नशे में चूर नहीं थी। बस एक चिंतित बूढ़ी औरत थी।

“मुझे नहीं पता उसे क्या हुआ है।” दुर्गाज्योति मार्गदर्शन और सलाह के लिए बागुल को फोन करने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह जवाब नहीं दे रही थी। दुर्गाज्योति जानती थी कि यहाँ कोई अलौकिक घटना घट रही है, क्योंकि जहाँ तक उसे याद था, लौटने तक वह बिल्कुल ठीक थी। तो आखिर हुआ क्या?

“इस अनावश्यक रक्तपात ने मेरे पति को मुझसे छीन लिया,” रुक्मिणी ने कांपती आवाज़ में कहा। “मैं अब और यह सब नहीं चाहती। यह सब यहीं समाप्त होता है। मैं सभा बुला रही हूँ।” और दुर्गाज्योति को देखते हुए उसकी आँखें गुस्से से लाल हो उठीं, मानो वह उसके लिए खतरा हो।

दुर्गाज्योति जानती थी कि उसका वहां स्वागत नहीं है, इसलिए वह भावहीन चेहरे के साथ कमरे से बाहर निकल गई क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि अब चीजें पहले जैसी नहीं रहेंगी और जिस व्यक्ति पर उसने भरोसा किया था कि वह उसकी रक्षा करेगा, वह गहरी नींद में सो गया है।

“क्या हुआ?” आवाज उस तक पहुंची। यह बागुल की आवाज थी।

"अरे वाह, आपका आना बहुत अच्छा लगा!"

“तुम तनाव में लग रही हो, मेरी प्यारी। क्या बात है?”

“प्रद्युमन। वह बीमार पड़ गया है और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है,” दुर्गाज्योति गलियारों में चलते हुए खुद से बोली।

भीतर से एक आवाज़ आई। "मैं जानती हूँ कि यह क्या है। मैं इसे हवा में महसूस कर सकती हूँ।"

"क्या?"

“एक राक्षस ने उसके दिमाग पर कब्जा कर लिया है और उसे स्वप्नलोक में ले गया है।”

“क्या? सपनों की दुनिया?”

"हाँ।"

मैं आपकी मदद कैसे कर सकता हूँ?

“तुम नहीं कर सकते,” उसने कहा। “तुम बस इंतज़ार कर सकते हो और उम्मीद कर सकते हो कि वह लौट आएगा। यह हमारे बस की बात नहीं है। यह माया है।”

दुर्गाज्योति ने श्राप दिया। वह उसकी मदद करने का कोई रास्ता ढूंढना चाहती थी और अपनी लाचारी उसे खल रही थी। इससे भी बुरी बात यह थी कि परिषद की बैठक होने वाली थी और उसे उस पर भी ध्यान देना था।

*

परिषद की बैठक सार्वजनिक हॉल में हुई और दुर्गाज्योति को आमंत्रित तक नहीं किया गया था। जब उसे पता चला कि बैठक शुरू हो गई है, तो वह तुरंत वहाँ पहुँची और एक कोने में खड़ी हो गई, उसने किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं किया क्योंकि अगर वह कुछ करती तो अनावश्यक हंगामा हो जाता।

वह देख सकती थी कि हॉल में अर्थव्यवस्था से लेकर कृषि तक के सभी प्रकार के मंत्री, वरिष्ठ

परोपकारी, व्यापारी, वित्तपोषक और राजघराने के अधिकारी मौजूद थे। कोषाध्यक्ष भी वहां थे। लेकिन बीच में रुक्मिणी और उनके विश्वासपात्र युयुधन भी थे, जो उनकी मदद कर रहे थे।

"हम अभूतपूर्व घटनाओं के दौरान यहाँ एकत्रित हुए हैं," रुक्मिणी ने बोलना शुरू किया। "मुझे आशा है कि आप सभी बैठे होंगे और आप सभी को हाल ही में घटी घटनाओं की जानकारी होगी। मेरे पति, द्वारका के राजा, कृष्ण के पुत्र, ने दुष्ट राक्षसों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा। लेकिन परिस्थितियाँ बहुत जल्दी बिगड़ गईं और हमने एक हारी हुई लड़ाई तो जीत ली, लेकिन इसकी कीमत चुकानी पड़ी। आज सुबह मेरे पति कोमा में घोषित कर दिया गया है और हमें नहीं पता कि वे कब जागेंगे। यह कल हो सकता है, या अगले सप्ताह, या उसके अगले महीने, या फिर दस साल बाद भी।"

सभी लोग आपस में फुसफुसाते हुए और अपनी मेजों पर थपथपाते हुए बातें कर रहे थे।

"अब मैं बस इतना ही कह सकती हूँ," उसने कहा, "कि हमें समझदारी से काम लेना होगा। मैं चाहती हूँ कि आप सभी रसातला पर आक्रमण के खिलाफ वोट दें।"

"लेकिन क्या यह हमारे राजा के शब्दों के विरुद्ध नहीं है?" उनमें से एक ने पूछा और दुर्गाज्योति इस बात से तुरंत उत्साहित हो गई कि कोई प्रद्युमन के निर्णय का बचाव कर रहा है।

"हाँ, ऐसा ही है और मैं जानती हूँ, लेकिन हमने इसके परिणाम देखे हैं," रुक्मिणी ने कहा। "इससे हमें कुछ हासिल नहीं होगा। हम भले ही अजेय हों, लेकिन हमारे संसाधन सीमित हैं और जैसे-जैसे हम अपने संसाधनों को बढ़ाते रहेंगे, हम भुखमरी और आर्थिक समस्याओं से जूझने लगेंगे, जिससे हमारे बीच संबंध और भी खराब हो जाएँगे। हमें पहले खुद का निर्माण करना चाहिए, न कि दूसरों का विनाश। इन अभूतपूर्व समय में आत्म-चिंतन एक महत्वपूर्ण कदम है।"

और भी फुसफुसाहटें। कानाफूसी।

"तो इस फैसले से कौन-कौन सहमत है? मैं यह इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सभी एकमत हों। मैं चाहता हूँ कि आप सभी हमारे द्वारा लिए गए फैसले का सम्मान करें और रसातला के प्रमुखों से औपचारिक माफी मांगें।"

उन शब्दों पर कुछ असहमति थी क्योंकि ययाती एक स्वाभिमानी जाति थी और वे किसी के सामने झुकना नहीं चाहते थे। लेकिन रानी होने के नाते रुक्मिणी शक्तिशाली थीं। जैसे-जैसे लोग निर्णय का समर्थन करने लगे, वैसे-वैसे कई लोगों ने विरोध भी किया। यद्यपि बहुमत की जीत होनी थी, दुर्गाज्योति जानती थीं कि इस समय उन्हें हस्तक्षेप करना ही होगा...

उन्होंने कहा, "मुझे नहीं लगता कि राजा प्रद्युमन के खिलाफ जाना बुद्धिमानी होगी।"

रुक्मिणी ने उसकी ओर मुड़कर अपने जबड़े भींच लिए। "मुझे नहीं लगता कि आपको बुलाया गया था, रानी दुर्गाज्योति।"

"मैं तलजन वंश का प्रतिनिधित्व करता हूं और हम प्रद्युमन के सहयोगी हैं। अगर मुझे अनुमति दी जाए तो मैं अपनी बात रखूंगा।"

रुक्मिणी इस बात का विरोध नहीं कर सकती थीं, और दुर्गाज्योति यह जानती थीं। उन्होंने बीच में आकर बोलना शुरू किया, "प्रद्युमन का जीवन हमारे लिए समर्पित रहा है और वे चाहते हैं कि हम सबसे शक्तिशाली जाति बनें; अपनी शक्ति में दुर्जेय हों क्योंकि जब हम शक्तिशाली नहीं

होंगे तो हम अधीनता की दिनचर्या में फंस जाएंगे। और मेरा मानना है कि अधीनता वह चीज नहीं है जिसका हम पालन करते हैं। प्रद्युमन यह जानते थे और मेरा मानना है कि अपनी नींद में भी वे यही चाहेंगे कि हम इस यात्रा को जारी रखें ताकि हम एक शक्तिशाली शक्ति बन सकें और माया, राक्षसों के स्रोत को खोज सकें।"

"लेकिन हम पहले से ही बहुत शक्तिशाली हैं, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?" रुक्मिणी ने पूछा। "हमें और अधिक शक्ति की आवश्यकता नहीं है। भोग-विलास का लालच कुरूप है।"

दुर्गाज्योति ने इस बात पर लगभग उपहास करते हुए सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि हमें वही करना चाहिए जो महाराज चाहते हैं। मैं यह फैसला आप पर छोड़ती हूँ, लेकिन मैं इस निर्णय से सहमत नहीं हूँ।"

जैसे ही निर्णय और मतदान हो रहा था, वह केंद्रीय स्थान से चली गई। वह बेसब्री से परिणाम का इंतजार कर रही थी और अंत में उसने वोटों की गिनती देखी। रुक्मिणी गिनती करते समय मुस्कुरा रही थी, जबकि उसके बगल में खड़ा युयुधन चुपचाप दुर्गाज्योति को गहरी सोच में डूबा हुआ देख रहा था।

"मुझे लगता है हमने फैसला कर लिया है," रुक्मिणी ने घोषणा की। "हम रसातल से औपचारिक रूप से माफी मांगते हैं और अपने प्रिय राजा द्वारा लिए गए फैसले को वापस लेते हैं।"

*

उस रात दुर्गाज्योति सो नहीं सकीं।

उसके मन में विचारों की बाढ़ सी दौड़ रही थी और वह आराम से लेटी हुई सोच रही थी कि क्या करे। उसे प्रद्युमन को ढूंढना था, उसे स्वप्नलोक से बाहर निकालना था, नहीं तो वह स्वयं माया के पास पहुँच सकती थी। उसे प्रद्युमन से हुई बातचीत याद आ रही थी और उसमें साफ तौर पर लिखा था कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह माया को पाने की उम्मीद न छोड़े। लेकिन यह उसका प्यार था, उसकी जिंदगी थी। उसे उसकी रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करना था।

लेकिन ज़्यादा ज़रूरी क्या था? उसकी बात मानना या उसे बचाना? वह जानती थी कि प्रद्युमन खुद को बचाने में सक्षम था। वह सबसे शक्तिशाली योद्धा था। और जब वह बिस्तर पर छटपटा रही थी, तभी उसे कुछ सुनाई दिया। वह मुड़ी और तुरंत ही एक आकृति ने उसे पकड़ लिया। देखते ही देखते उसके चेहरे पर नकाब पड़ गया, और अंधेरा छाते ही उसके हाथ-पैर भी बंध गए।

उसने धक्का देने, खींचने और हिलने की कोशिश की, लेकिन भारी हाथों ने उसे पकड़ लिया और उसे ऐसी जगह ले गए जिसके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं थी।

उसे बस इतना पता था कि उसका अपहरण किया जा रहा है। उसने और संघर्ष करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, तभी किसी ने उसके पेट पर वार करते हुए कहा:

"इतनी नखरे मत करो, बच्ची!"

वह गुर्रा रहा था।

उसने अपनी नाक फुलाई और उसे पता चल गया कि उसे क्या करना है। उसने उंगलियां चटकाईं, अपने भीतर बागुल की शक्ति को जागृत किया और प्रकाश भड़क उठा, लपटें उस बोरी

को जलाती हुई आगे बढ़ीं जिसमें वह थी, और वह खुद को उससे बाहर निकाल कर गली में गिर पड़ी। वहीं तीन लोग खड़े थे, शाही लिबास में पहरेदार, जो यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए।

"तुमने कैसे किया..."

उसके भीतर की बागुल ने कहा, "तुम तीनों ने गलत किया है।"

फिर उसने अपनी उंगलियों से ऊर्जा निकालकर उन आदमियों को बिजली का झटका दिया और वे तुरंत लकवाग्रस्त हो गए। उसे एहसास हुआ कि वह एक ऐसी गली में थी जो समुद्र की ओर खुलती थी, जहाँ वह डूब जाती और पानी में तड़पती रहती। वे उसे फेंकने ही वाले थे।

उसने एक गार्ड को पकड़ लिया और पूछा: "तुम्हें किसने भेजा है?" लेकिन उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, उसके मुंह में कुछ था जिसे वह उस पर थूकने ही वाला था, तभी अचानक कहीं से एक चांदी जैसी चमक निकली और उसने उसके मुंह में वार कर दिया, जिससे चारों ओर खून फैल गया और गार्ड रोने और कराहने लगा।

दुर्गाज्योति ने ऊपर देखा और युयुधन को अपनी चांदी की तलवार के साथ देखा।

“तुमने ऐसा क्यों किया?” उसने कर्कश स्वर में पूछा, उसकी उंगलियों में ऊर्जा का विस्फोट हो रहा था और उसकी आंखें बागुल के पीले रंग की हो गई थीं।

“क्योंकि उसके मुंह में मसालों का एक ऐसा बम था जिसे खाकर आप अंधे हो सकते थे,” उसने कहा। “ये रुक्मिणी ने भेजे थे।”

आप मेरा बचाव क्यों कर रहे हैं?

“क्योंकि सभा में आप सही थे। भले ही हमारे राजा आदेश देने में असमर्थ हों, हमें उनकी बात माननी चाहिए। मैं तो अपने सिद्धांतों का पालन करता हूँ। लेकिन बहुत से लोग इस पर विश्वास नहीं करते और न ही इसका पालन करेंगे। हालांकि, जो लोग करेंगे, वे इस आदर्श की रक्षा करेंगे,” उन्होंने समझाया।

दुर्गाज्योति ने सिर हिलाया। "धन्यवाद, जनरल।"

"क्या आपको पता है कि अगला कदम क्या होगा?"

“जी हां,” वह मुस्कुराई। “जी हां, जनरल।”

20

सूअर को खुला छोड़ दिया गया।

वह चलता और रौंदता हुआ आगे बढ़ता। उसे घास की भूख थी। वह खाई की तरह बहता और शेर की तरह दहाड़ता। उसके लंबे सींग थे और सूअर जैसी मोटी चमड़ी थी। उससे गंदी बदबू आती थी और वह खांसने जैसी घरघराहट की आवाजें निकालता था। वह अंधों के इलाके में चलता था। अंधकों के इलाके में।

*

बलराम चट्टान की चोटी से सामने की घाटी को बड़ी उत्सुकता से देख रहा था, और उसकी निगाहें बार-बार सामने सड़क पर टिकी हुई थीं। उसे अंधका क्षेत्र तक पहुँचने के लिए घाटी पार करनी थी। जैसे ही उसने अपनी शॉल लपेटी और गहरी साँस ली, उसके मुँह के चारों ओर धुंध छा गई, तभी सत्यका आकर उसके बगल में खड़ा हो गया।

“तो आप चाहते हैं कि मैं अपने कट्टर दुश्मनों से गठबंधन कर लूँ?” सत्यका ने कहा।

क्या आपके पास सेना है?

उसने उसके सिर को हिलाकर रख दिया।

“तो फिर आपके पास कोई विकल्प नहीं है,” बलराम ने कहा। “हमें अंधकों को मनाना ही होगा।”

“बदले में तुम्हें क्या चाहिए?” सत्यका ने पूछा।

“तुम्हें क्या लगता है कि मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत क्यों है?” बलराम ने कहा। “क्या मेरी प्रतिष्ठा मुझसे पहले ही नहीं पहुँच चुकी है?”

“ऐसा हुआ है, इसलिए मैं यह सवाल पूछता हूं।”

बलराम मुस्कुराया। "अगर मैं प्रद्युमन के खिलाफ जाऊं और तुम्हारे पिता से ताज जीतने में तुम्हारी मदद करूं, तो मुझे तुम्हारे प्रति अटूट निष्ठा की शपथ चाहिए।"

एक पल के लिए सत्यका चुप हो गया, मानो स्तब्ध रह गया हो। “हमें देखो। अपने चचेरे भाइयों, अपने पिताओं और अपने भतीजों से लड़ रहे हैं। हम राक्षस बन गए हैं। हिंसक वंशागत। मुझे यकीन है कि तुम्हारे भाई ने इस बारे में ठीक से नहीं सोचा होगा।”

बलराम ने कहा, "उसने कई बातों पर ठीक से विचार नहीं किया। तो आप क्या कहेंगे?"

“ठीक है। मेरी वफादारी तुम्हारे साथ है,” सत्याकी ने बच्चे की तरह मुस्कुराते हुए कहा।

बलराम ने सिर हिलाया। वह उसके बोलने का इंतजार करता रहा, लेकिन वे दोनों गंभीरता से देखते रहे।

“लेकिन क्या आप जानते हैं कि हाल ही में अंधकों के साथ क्या हुआ है?” सत्यकी ने पूछा।

बलराम ने अपना सिर हिलाया।

*

कीचड़ से सनी और अंधेरी, कुचली हुई बर्फ पर सूअर लगातार कराह रहा था और गोल-गोल घूम

रहा था, तभी उसने झाड़ियों में कुछ हिलता हुआ देखा। वह तेज़ी से हिलने लगा और जीवित रहने की प्रवृत्ति के कारण सूअर भाग जाना चाहता था। लेकिन जैसे ही उसने एक व्यक्ति को देखा, वह रेंगने लगा।

उस व्यक्ति की आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी।

*

सत्यकी ने कहा, "मेरे पिता द्वारा शिकार किए जाने के बाद अंधक वंश के लोग घने जंगलों और छाया में छिप गए। उन्होंने बहुत संघर्ष किया, लेकिन वे वृष्णियों जितने शक्तिशाली नहीं थे। अब वे गुप्त रूप से रह रहे हैं, और साथ ही साथ एक मजबूत सेना का निर्माण कर रहे हैं ताकि एक दिन वृष्णियों से मुकाबला कर सकें।"

"तो, आपका मतलब यह है कि मैं उनसे सीधे नहीं मिल सकता?"

"नहीं। वे सिर्फ उन्हीं से मिलते हैं जिनसे वे मिलना चाहते हैं। मुझे लगता है यह बात समझ में आ गई होगी," सत्यकी मुस्कुराया। "देवमेध ने इस बात का खास ख्याल रखा था कि उसके आदमियों को गुलाम न बनाया जाए। उसके आदमियों ने मौत से भी बदतर हालात झेले थे। आप कल्पना कर सकते हैं। मेरे पिता तो काफी क्रूर स्वभाव के हैं।"

"हम्म, हाँ। उन्हें बाहर निकालने का एक तरीका है," बलराम ने कहा।

वह क्या होगा?

बलराम ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "उन्हें जंगली सूअर का शिकार करना हमेशा से पसंद रहा है। पता नहीं क्यों, लेकिन उन्हें इसे खाना भी बहुत पसंद है।"

"एक जंगली सूअर? क्या आपको यकीन है कि एक साधारण जंगली सूअर उन्हें बाहर निकाल लाएगा?"

"कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है। और इससे कम से कम कोई तो बाहर निकल आएगा। क्या तुम्हारे पिता ने कभी कोशिश नहीं की?"

"उन्हें उनका शिकार करते-करते ऊब गया और वापस चला गया। बिलकुल उसकी आदत है," उसने आह भरते हुए कहा।

बलराम ने सिर हिलाया। "तो फिर हम यही करते हैं, बच्चे। हम यही करते हैं। क्या तुम्हें पता है कि जंगली सूअर कहाँ मिलते हैं?"

"मेरे एक आदमी का एक खेत है। मुझे यकीन है कि हमें वहां एक जंगली सूअर मिल जाएगा।"

या फिर एक ऐसा सुअर जो जंगली सूअर जैसा दिखता हो।

और वे दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े।

*

शिकारी ने हाथ में नुकीला भाला लिए हुए सूअर के ऊपर से छलांग लगाई और तेज़ हवा में उसे घुमाते हुए सीधे उसके मांस और हड्डियों पर वार किया, जिससे वह भेद गया। सूअर ज़ोर से चिल्लाया और रोया, लेकिन अंधा शिकारी आगे बढ़ा और खंजर अंदर डालकर उसकी खाल उतारने लगा।

वह उसे फाड़कर कपड़े में लपेटने की कोशिश कर रहा था। ताकि उसे घर ले जा सके। अपने परिवार के पास ले जा सके। अपने बच्चों के पास ले जा सके और उन्हें खिला सके।

आकाश में बिजली कड़क रही थी और वातावरण घना था। हवा ज़ोरों से बह रही थी और आस-पास कोई नहीं था, जब उसने शिकार करने और अपने घर की ओर जाने का रास्ता खोजना शुरू किया।

जैसे ही एक और गड़गड़ाहट हुई और बर्फ उसके नंगे पैरों की उंगलियों के बीच उछलने लगी, उसके पीछे एक परछाई ने उसे पीछे से पकड़ लिया और कसकर पकड़ लिया, जिससे वह जमीन पर गिर गया।

“चिंता मत करो,” एक गंजे आदमी की परछाई शिकारी से बोली, जो उस पर मंडरा रही थी। “मैं तुम्हें नुकसान पहुंचाने नहीं आया हूँ।”

शिकारी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसे पता नहीं था कि वह कौन है, इसलिए उसने तुरंत उसके पैर पकड़ लिए और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। शिकारी ने अपनी टखने में गठी हुई कटार निकाली और उसके पैरों पर वार कर दिया। गंजा आदमी ज़ोर से चिल्ला उठा।

मैं एक सहयोगी हूँ!

शिकारी ने बात नहीं मानी। उसने वही खंजर उठाया, टखने से निकालकर गंजे आदमी की छाती में घोंप दिया और अगले ही पल गले पर वार करने की तैयारी में था, तभी गंजे आदमी ने शिकारी को टांगों के बीच लात मारकर कमर में घूंसा मारा, जिससे वह एक तरफ गिर गया और फिर उसके चेहरे पर घूंसा मारा।

“अब सुनो,” गंजे आदमी ने कहा। “मेरा नाम बलराम है, मैं कृष्ण के भाई यदु का वंशज हूँ और देवमेधा का मित्र हूँ। मुझे उसके पास ले चलो। वह जानती है कि मैं कौन हूँ।”

शिकारी ने ध्यान से सुना। शब्द सत्य प्रतीत हुए। उसने शांतिपूर्वक सिर हिलाया।

बलराम ने कहा, "आगे बढ़ो।"

*

जहां उन्होंने प्रवेश किया, वहां केवल बंजर भूमि और बर्फ थी।

वे धीरे-धीरे चल रहे थे। तलवार शिकारी के ठीक पीछे थी और बलराम की निगाहें ध्यान से देख रही थीं कि वह सही रास्ते पर है या नहीं। वास्तव में, तलवार शिकारी की रीढ़ की हड्डी के बहुत करीब थी और शिकारी यह जानता था, हालांकि वह चुप था। वह सांसों की आवाज सुन रहा था। वह आकाश की आवाज सुन रहा था और अपनी गंध से रास्ते का अनुसरण कर रहा था।

बलराम उसे जाते हुए देखता रहा। दोनों धीरे-धीरे लेकिन स्थिर गति से चलते रहे। जैसे ही वे उस जगह के करीब पहुँचे जहाँ रास्ता खत्म होता था, बलराम ने खुद को पहाड़ियों के बीचोंबीच पाया, जहाँ बहुत गहराई थी। उसने देखा कि रास्ते खतरनाक हो गए थे। चारों ओर घना अंधेरा था, लेकिन वह शांत भाव से चलता रहा...

जब तक ऐसा नहीं हुआ।

परछाइयाँ हिलने लगीं। विष से सने तीर उनके हाथों में आ गए। वे सैनिक थे, और बलराम ने देखा कि उनके तीर उनकी ओर ताने हुए हैं। बलराम ने वृष्णि देव के स्वागत और अंधकों के इस

क्रूर, दरिंदे जैसे स्वागत में अंतर स्पष्ट रूप से देखा। ऐसा लगा मानो वे किसी राक्षस, अंधकार के पुत्र हों।

और वे आश्चर्यजनक रूप से उनके लिए प्रकाश, उनकी मुक्ति का स्रोत बनेंगे।

बलराम आगे बढ़ते रहे और अंधक भी कुछ नहीं कर रहे थे। वे संशय से भरे मन से सोचते रहे कि अगर कुछ गड़बड़ हो जाए तो सत्यकी के साथ एक बैकअप तैयार रखना चाहिए या नहीं, लेकिन वे साहसी थे, उन्हें जोखिम लेना पसंद था।

बलराम ने अपने सामने देखा कि रास्ता साफ हो गया है और पेड़ों के घने पत्तों के बीच, जो अभी-अभी दिखाई दिए थे, एक महिला ऊँची जगह पर खड़ी थी, और उसके आसपास भाले, तलवारें और कटार लिए कई योद्धा थे। बलराम को उनके बीच फुसफुसाहट और कानाफूसी सुनाई दी। वे उसके बारे में बात कर रहे थे।

फिर उसने सबसे ऊपर वाली महिला की ओर देखा, जो ऊंचे चबूतरे पर खड़ी थी।

“देवमेधा, उम्मीद है तुम्हें अपने पुराने चचेरे भाई की याद होगी?” बलराम मुस्कुराया।

महिला ने आवाज पहचान ली और मुस्कुराई। “तो तुम हो, बाला। कैसे हो? और हाँ—मेरे शिकारी, तुम जा सकते हो। हमारे बीच शांति है।”

बलराम ने शिकारी के हिलने-डुलने पर सावधानीपूर्वक खंजर को रीढ़ की हड्डी से निकाला। उसने देवमेधा की ओर देखा, जो अत्यंत प्रभावशाली थी। उसकी त्वचा राख जैसी थी और बाल भूरे थे। वास्तव में, उसके आसपास मौजूद सभी लोगों के बाल भूरे थे, उनकी आंखों पर पट्टी बंधी थी और उनके सीने पर राख लगी हुई थी। वे बर्बर थे और अपने व्यवहार के अनुरूप ही लग रहे थे।

"क्या तुमने यह किया?"

"हाँ।"

“अच्छा, तो आपको पता होना चाहिए कि यहाँ आने से आप खतरे में पड़ गए हैं,” उसने कहा। “आप बिना अनुमति के यहाँ घुस आए हैं। हमने बाहरी दुनिया से हर तरह का संबंध तोड़ दिया है।”

लेकिन मैं शांति के साथ आया हूं और मैं विजय की सुगंध लेकर आया हूं।

उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "दिलचस्प। और यह जीत किस लिए है?"

“युद्धजीत की हत्या,” उसने कहा।

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। "मेरे पास कम पुरुष हैं। मैं उन्हें कमतर नहीं बनाना चाहती।"

नहीं, लेकिन मेरे पास एक प्रस्ताव है।

देवमेधा अपने पैरों पर खड़ी हुई और एक-एक कदम करके नीचे उतरने लगी, तभी उसने देखा कि वह उसके करीब आ रही है।

“तुम्हें पता है समस्या क्या है?”

बलराम इंतजार करता रहा। उसे आभास था कि उसे इसके बारे में बता दिया जाएगा और उसे इस सवाल का जवाब देने की जरूरत नहीं है।

समस्या यह है कि मुझे तुम पर और तुम्हारे जैसे लोगों पर भरोसा नहीं है।

हम चचेरे भाई हैं। हम एक ही तरह के हैं।

“मुझे नहीं,” उसने कहा। “मेरे बेटे की हत्या युधाजित ने बेरहमी से की और किसी ने मदद नहीं की। न तुमने, न तुम्हारे उस दिव्य भाई ने जिसकी दिव्यता भी सीमित है। किसी ने नहीं! और फिर युधाजित ने हमें मिटाने का अपना शक्तिशाली अभियान शुरू किया; हम सबको बूढ़ा बनाने का। यह सब तुम्हारी वजह से हुआ...और तुम्हें लगता है कि मैं इससे सहमत हो जाऊंगी। मुझे माफ करना, लेकिन मैं सहमत नहीं होऊंगी।”

बलराम ने कहा, “कम से कम मेरी बात सुनो। मैं मदद कर सकता हूँ। हम किसी न किसी तरह से मिलकर काम कर सकते हैं। इसलिए चिंता मत करो। बस मुझे इसके लिए मंच दे दो।”

नहीं, मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा करूंगा।

“पुराने दिनों की याद में।” उसने पलकें झपकाईं और फिर पास आती हुई लड़की के गाल पर चुंबन किया। “चचेरी बहन? चलो ना।”

देवमेधा गुर्राई। “तुम मुझे इस तरह बुरा महसूस नहीं करा सकतीं। तुम जानती हो कि मैं तुम्हें पसंद करती हूँ।” उसने दृढ़ भाव से मुस्कुराते हुए कहा और फिर दोनों ने एक-दूसरे को गले लगा लिया। “भाई, तुम्हें देखकर अच्छा लगा। उम्मीद है मैंने तुम्हें अपनी बातों से डराया नहीं होगा।”

“नहीं, अभिनय तो ज़बरदस्त था,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “और सुनो, मुझे बहकाने वाली बात के लिए माफ़ कर दो...”

“नहीं, नहीं, मैं समझती हूँ, आपको ऐसा करना ही था।” वह मुस्कुराई।

जैसे ही वे आगे बढ़ने लगे, उसने उसे आसपास का नजारा दिखाया। यह पहाड़ के किनारे के करीब था। वह देख सकता था कि वे अंदर एक नई दुनिया बना रहे थे। वहाँ बहुत से लोग और उनके रहने के लिए झोपड़ियाँ थीं। नीचे एक और दुनिया थी जहाँ सड़कें बड़ी खूबसूरती से बनाई जा रही थीं।

"यह क्या है?"

हम छिपकर रह रहे हैं, लेकिन हमने हार नहीं मानी है।

"यह तुम्हारी आवाज़ जैसी लगती है।"

“तो, युधाजित का क्या हुआ?” उसने उनके बैठने के लिए एक कमरा ढूंढते हुए पूछा। “क्या कोई प्रस्ताव आने वाला है?”

"हां, यह बहुत प्रभावशाली है और मेरा मानना है कि आपको इसे सुनना चाहिए।"

“हम्म, बोलो,” उसने कहा। “लेकिन भाई, बात ये है कि मैं तुम्हें पसंद तो करती हूँ, पर ये भी जानती हूँ कि तुम्हारे इरादे बुरे हैं। तो मैं तुम्हें एक बात बताती हूँ—मुझे अपने सूत्रों से पता चला है कि तुम्हारी तलाश हो रही है। पता नहीं किस वजह से, पर प्रद्युमन ने इनाम घोषित किया है। उसने कहा है कि अगर हम तुम्हें मार देंगे, तो हमें शरण मिल जाएगी। तो...” वो मुस्कुराई। “कैसा रहेगा?”

और अब बलराम को पता चल गया कि वह मजाक नहीं कर रही थी, क्योंकि दो आदमियों ने उसे पीछे से पकड़ लिया और दुनिया अंधेरी हो गई।

21

कृष्ण ने तलवार को समवा की ओर फेंका, जिसने अपनी तलवार जमीन पर टिका रखी थी, और समवा ने तलवार को उस पिशाच बन चुके डाकू के धड़ पर चलाया, जिससे वे टुकड़े-टुकड़े हो गए।

कृष्णा ने अपनी पूरी गति से भागना शुरू कर दिया क्योंकि नीली आंखों और काले मुंह वाले डाकू, जिनसे घुरघुराहट की आवाजें निकल रही थीं, उसका पीछा करने लगे।

वह उनके पैरों के नीचे से तेजी से गुजरा, गिरी हुई तलवार को उठाया और जो करीब आया उसके सिर पर वार कर दिया।

"हमें भागना होगा!" समवा चिल्लाया, क्योंकि वह अपने करीब आ रहे कई डाकुओं से लड़ रहा था।

“हाँ, बिल्कुल,” कृष्णा ने व्यंग्य से गुर्राते हुए कहा और भागने का रास्ता ढूंढने लगा। उसे ऊपर जाती हुई सीढ़ी दिखाई दे रही थी, और वह वास्तव में इसका अनुमान लगा रहा था। “हमें पूरब की ओर जाना होगा।”

"कैसे?"

कृष्ण कुछ कह नहीं पाए, तभी एक डाकू उन पर झपटा और उन्होंने तलवार की एक ही वार से उसे रोक दिया, जिससे डाकू ज़मीन पर गिर पड़ा। वह आधा घायल था, लेकिन फिर भी हिलने की कोशिश कर रहा था। वे मर नहीं रहे थे, बल्कि दुर्जय के रहस्यवाद के प्रभाव में थे।

“ये तो बहुत ज्यादा हैं!” समवा चीख उठा और कमरे के दूसरे छोर पर चला गया।

कृष्ण ने गुफा के प्रवेश द्वार के दोनों सिरों पर जलते हुए दीपकों को देखा और उन्हें पकड़कर, उनके टुकड़े तोड़कर उनमें भरी आग को उन डाकुओं के झुंड की ओर फेंक दिया जो सामवा को घेरने की कोशिश कर रहे थे। आग लगते ही वे जलने लगे और जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगे। कृष्ण मुस्कुराए, क्योंकि सामवा को मौका मिल गया था कि वह उन डाकुओं के बीच से निकलकर कृष्ण के पास पहुँच जाए।

वे दोनों पूर्व दिशा की ओर दौड़े, जहाँ उन्होंने सीढ़ी देखी थी। जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, कृष्ण ने कमरे के पास से गुजरते हुए अपनी गदा देखी। पीछे से कीचड़ उछलने पर वे रुक गए और लड़खड़ाते हुए फिसल गए।

“मेरा हथियार!”

और वह अपने चक्रों को भी देख सकता था। शायद यही वह कमरा था जहाँ कैदियों का सामान रखा जाता था। वह उनकी ओर बढ़ा और गदा और चक्रों को पकड़ लिया, तभी सामवा ने ज़ोर से कहा:

“यह महत्वपूर्ण नहीं है,” उसने कहा। “महत्वपूर्ण बात तो इस खूनी जगह से भाग निकलना है।”

"हां, मेरा सामान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि वह।"

कृष्ण जब चक्रों से सुसज्जित सुअर की खाल की कमरबंद पहने हुए थे और साथ ही अपनी गदा को करतब दिखा रहे थे, तब उन्हें अपने पीछे से आती कराहने की आवाज सुनाई दी।

समवा इंतज़ार करता रहा और मन ही मन सीटी बजाता रहा, क्योंकि उसे उनके पीछे धीमी गति से चलते हुए ज़ॉम्बी बन चुके डाकू उनका पीछा करते हुए दिखाई दे रहे थे। "क्या हम जा सकते हैं?"

“हां, हां, हम कर सकते हैं।”

लेकिन जैसे ही कृष्ण मुड़ने वाले थे, समवा ने देखा कि डाकुओं की गति बढ़ गई थी और वे पल भर में मनुष्य से भी तेज़ गति से चलने लगे थे। गुफाओं की संकरी गलियों में वे सब एक-दूसरे से सटकर खड़े थे, फिर भी गुफा के प्रवेश द्वार को तोड़कर उनकी ओर बढ़ने में कामयाब हो गए। उनमें से एक समवा के करीब आया और समवा ने तुरंत उसका मुकाबला करते हुए उसके चेहरे पर वार कर दिया, तभी दूसरा भी उसके पास आ गया...

और उसे सीधे सिर पर गदा से जोरदार प्रहार किया गया।

कृष्ण ने डाकू के अचानक हमले का तुरंत जवाब दिया और इससे पहले कि समवा उन्हें धन्यवाद दे पाता, और भी डाकू उनकी ओर आ गए। कृष्ण ने अपनी गदा को तिरछे रूप से उनके और समवा के बीच में रखा और अपने बेटे पर चिल्लाते हुए कहा: “तुम यहाँ से जल्दी निकलो! जल्दी!”

"आप कैसे हैं?"

"मैं ठीक हूं।"

समवा को उसकी आवाज़ में आत्मविश्वास सुनाई दे रहा था, लेकिन वह अब भी असमंजस में था कि उसे अपने पिता को पीछे छोड़ना चाहिए या नहीं। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ा, उसे पता चल गया कि वह सीढ़ी के पास पहुँचने ही वाला है, उसका चेहरा खिल उठा, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं, तभी अचानक एक साया उसके सामने आ गया और वह अपनी तलवार के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा।

उसने देखा कि वह कौन है। और वह कोई और नहीं बल्कि सबा थी, वह महिला जिसे उन्हें बचाना था।

"ओ प्यारे!"

उसकी आंखें काली और मुंह भी काला था। उसके शरीर से धुआं निकल रहा था और वह बेतरतीब ढंग से, बिल्कुल भी मानवीय तरीके से नहीं, उसकी ओर बढ़ रही थी। समवा को नहीं पता था कि इन लोगों के साथ क्या हुआ था, लेकिन उसके पिता ने दुर्जय नाम के किसी व्यक्ति का जिक्र किया था, जिसके बारे में उसे पता होना चाहिए था।

“मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता,” उसने सबा से कहा।

लेकिन लड़की ने उसकी बात नहीं मानी। मकड़ी की तरह, वह उस पर झपटी, वह ज़मीन पर लुढ़क गया और उससे बच गया। वह म्याऊं-म्याऊं करते हुए फिर से उस पर झपटी, जिसे उसने अपनी तलवार से रोक दिया। वह तलवार को काटने लगी, अपने दांत तोड़ने लगी, लेकिन ऐसा करती रही, उसका गुस्सा बढ़ता जा रहा था और उसके मुंह से लार निकल रही थी।

“मैं ये नहीं करना चाहता...” समवा रोते हुए बोली, और रोते हुए उसने उसे धक्का देकर ज़मीन पर गिरा दिया और झट से वार करते हुए उसके दिल में चाकू घोंप दिया। “मैं ये नहीं करना चाहता था।”

सबा का शरीर झटका खाकर वहीं पड़ा रहा। समवा ने उसे नहीं मारा था और न ही वह मारना चाहता था। वह सीढ़ी की ओर बढ़ा तभी उसने पीछे देखा कि उसका पिता भीड़ को रोकने की कोशिश कर रहा है।

वह पीछे मुड़े बिना ऊपर चढ़ने लगा।

कृष्ण अभी भी अपने शक्तिशाली गदा से लड़खड़ाते हुए डाकुओं को थामे हुए थे। फिर जब उन्होंने देखा कि डाकू उन पर कूदकर हमला करने की कोशिश कर रहे हैं, तो उन्होंने अपनी पूरी ताकत से उन्हें पीछे धकेल दिया और खुद सीढ़ी की ओर दौड़ पड़े। जैसे ही वे ऊपर पहुँचे, उन्होंने देखा कि कोई उनका पैर पकड़े हुए है और वे अपना पैर छुड़ाने और खुद को दूर धकेलने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने डाकू को अपनी एड़ियों से लात मारी और फिर अपने एक चक्र का इस्तेमाल करके उसके सिर पर प्रहार किया—और फिर वहाँ से चले गए और बाँस का ढक्कन बंद करके उस जगह के द्वार को बंद कर दिया।

वह ज़मीन पर लेट गया। ज़ोर-ज़ोर से हांफ रहा था। उसने देखा कि समवा ठीक वहीं, दूसरी तरफ़ था।

“वाह, ये तो कमाल था!” समवा ने आह भरी। “वो क्या था?”

“वितिहोत्र की रहस्यमयी शक्तियां। वे दूसरों को अपने वश में कर सकते हैं।”

“एक वितिहोत्र मेरे पीछे क्यों पड़ा है?”

"क्योंकि वे हमारे बारे में जानते हैं।"

सामवा ने सिर हिलाया। "प्रद्युम्न ने ही भेजा होगा। वो दुर्गाज्योति..."

कृष्णा को उस औरत के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन वह जानता था कि उसका बेटा ऐसा कर सकता है। "हमें यहाँ से चले जाना चाहिए। हमें उसकी गंध को मिटाना होगा।"

समवा ने सिर हिलाया।

और वे दोनों अपने-अपने रास्ते पर चल पड़े।

*

कृष्ण और समवा ने अपने पुराने तंबू में शरण ली थी, जहाँ से उनका अपहरण किया गया था। तब तक, उनका अधिकांश सामान भेड़ियों या चोरों द्वारा तहस-नहस कर दिया गया था। यहाँ तक कि उन डाकुओं ने भी उनका सामान चुरा लिया था, जब उन्होंने उनका अपहरण किया था।

कृष्णा ने कहा, “लकड़ी जला दो। जो कुछ भी बचेगा, उसी में रात बिताएंगे और सुबह पैदल चलेंगे।”

समवा ने चुपचाप सिर हिलाया और लकड़ियों को व्यवस्थित करना शुरू कर दिया, फिर उन्होंने अपने पास मौजूद जार से थोड़ा तेल गिराकर उन्हें जला दिया।

कुछ देर बाद कृष्णा ने उदास स्वर में कहा, "मुझे खेद है।"

“हम्म?” समवा पीछे मुड़ा, चांदनी में उसका लोहे का मुखौटा चमक रहा था। “क्या?”

“मुझे आप पर भरोसा न करने के लिए खेद है। मुझे नहीं पता था कि ऐसा हुआ था। दुर्व्यवहार और सब कुछ।”

मैंने तुमसे कहा था। तुमने नहीं सुना। लेकिन अब तुमने सुन लिया है।

“अब मुझे तुम पर पहले से ज़्यादा भरोसा हो गया है,” कृष्ण ने शांत स्वर में उत्तर दिया। उन्हें इस बात का गहरा दुख था कि उन्होंने अपने बेटे को कुष्ठ रोग की इतनी असहनीय पीड़ा से गुज़रने दिया, सिर्फ़ इसलिए कि उन्हें उस पर विश्वास नहीं था।

समवा अपने पिता को देख रहा था और उसने देखा कि उनके चेहरे पर पछतावा साफ झलक रहा था। समवा उन्हें तीखे शब्दों में फटकारना चाहता था, वह उन्हें और भी बुरा महसूस करा सकता था, लेकिन वह रुक गया और आह भरी। वह आगे कुछ नहीं कहना चाहता था।

"क्या मैं इतना बुरा बेटा था कि आपने मेरी एक भी बात पर विश्वास नहीं किया?"

“नहीं, तुम बस निराशाजनक थे,” कृष्णा ने सीधे-सीधे कहा। “लेकिन अब तुम ऐसे नहीं हो। बल्कि, तुम मुझे गर्व महसूस कराते हो।”

समवा मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी।

“अब हम कहाँ जाएँ?” लड़के ने अपने पिता से पूछा। “मुझे कुछ पता नहीं। यही आखिरी उम्मीद थी। और सबा से हमें बस यही पता चला कि दुर्वासा अंतरद्वीप चले गए हैं।”

"हाँ।"

और आपको इसके बारे में पता है?

कृष्णा इससे बचने की कोशिश कर रहा था और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, क्योंकि उस जगह की यादें उसे सता रही थीं। "हाँ, मैं इसके बारे में अच्छी तरह जानता हूँ।"

"कितनी अच्छी तरह?"

“इतना अच्छा कि हम अंतरद्वीप को अपनी नंगी आंखों से नहीं देख सकते। हम उसे केवल जादू की कला के माध्यम से ही खोज सकते हैं।”

“जादू?”

“हां,” कृष्ण ने आह भरी। “हमें नाग मणि पर सूर्य की रोशनी को परावर्तित करना होगा ताकि द्वीप की छाया बन सके और तभी हम उसे ढूंढ पाएंगे।”

“इसका मतलब है कि हमें नागों के राज्य में जाना होगा। ये खूनी सर्प मुझे हमेशा से डराते आए हैं,” समवा ने धीमी आवाज़ में कहा। “लेकिन मुझे लगा था कि महान युद्ध के दौरान सभी नागमणि नष्ट हो गए थे।”

“हाँ, सब ठीक था। सिवाय एक के। और मुझे वो इंसान बिल्कुल पसंद नहीं है। मैं उससे मिलना नहीं चाहता।”

समवा के कुछ पूछने से पहले ही, कृष्ण जलती हुई लकड़ियों के पास जमीन पर बैठ गए और वहीं लेटकर सो गए।

समवा जानता था कि उसके पिता अपने बीते जीवन के बारे में बात नहीं करना चाहते थे। वे फिलहाल उन यादों से जुड़ना नहीं चाहते थे और समवा इस बात का सम्मान करता था। जहाँ वे पहले सोए थे, वहाँ दोबारा सोना खतरनाक था, इसलिए समवा ने फैसला किया कि वह अपने

पिता के खर्राटे लेते और सोते रहने के दौरान पूरी रात जागता रहेगा, जब तक कि उन्हें नींद न आ जाए।

लेकिन वह झटके से जाग उठा, मानो किसी ने उसे धक्का दिया हो, और उसने देखा कि उसके पिता अब जाग चुके हैं। वे कुछ कर रहे थे। उनके पास थोड़ा सा पेस्ट और मसाले थे और एक छोटा कटोरा था जिस पर वे कुछ पीस रहे थे। वे ऐसा करते रहे, जबकि समवा नींद में डूबा रहा। नींद से भरी आवाज़ में उसने पूछा: "आप क्या कर रहे हैं?"

मैं एक पोर्टल बना रहा हूँ।

“एक पोर्टल।”

दूसरे लोक में प्रवेश करने के लिए।

लेकिन इसके लिए आपको विद्याधर की आवश्यकता होगी।

“जब तक आपको इसे खुद खोलना नहीं आता,” कृष्णा मुस्कुराया। “और हाँ, आपको सुप्रभात।”

और वह शिविर के दूसरे छोर पर चला गया, सुदूर उत्तर की ओर बढ़ते हुए उसने अपने द्वारा बनाए गए पाउडर को फेंक दिया। पाउडर जमीन पर गिरा और गिरते ही वह पत्तियों, धूल और आसपास की लाल मिट्टी पर चक्कर लगाने लगा, इससे पहले कि उसके सामने एक बैंगनी रंग की धुंधली ऊर्जा का निर्माण शुरू हो गया। यह गति तेज और शक्तिशाली थी।

पोर्टल खुल गया। वह वहीं था, और उसमें से सरसराहट और फुसफुसाहट की आवाज़ें आ रही थीं, तरह-तरह की इलेक्ट्रॉनिक भिनभिनाहट की आवाज़ें निकल रही थीं। समवा उसके पास गया और पूछा: "क्या यह नागलोक जाने का रास्ता है?"

"हाँ।"

और इससे पहले कि वे कुछ उत्तर दे पाते—एक साधु जैसे दिखने वाला व्यक्ति द्वार से बाहर निकला, उसके हाथ में एक लंबी छड़ी थी, उसका शरीर राख जैसा था और उसके बाल उलझे हुए थे। उसके शरीर पर एक कुंडली मारे हुए सर्प था जो हिल रहा था, और उसकी छड़ी के ऊपर एक कोबरा बैठा था।

यह नागलोक के लोकपाल की ओर से था, जो उस भूमि का द्वारपाल और संरक्षक था जिसमें वे प्रवेश करने की योजना बना रहे थे। कृष्ण को पहली बार नंगे बदन, गठीले पेट और श्रीवत्स चिन्ह के साथ खड़े देखकर लोकपाल मुस्कुरा उठा।

उन्होंने कहा, "अगर ये विष्णु का अवतार नहीं हैं, तो मैं किस प्रकार आपकी सेवा कर सकता हूँ?"

हम राजा कालिया से मिलना चाहते हैं।

“किन कारणों से?”

“लोकपाल को इस बारे में कोई परवाह नहीं है। हम बस उनसे मिलना चाहते हैं और हम शांति से आए हैं।”

“बिल्कुल, आप ऐसा करते हैं।” लोकपाल ने अपनी छड़ी पटकते हुए कहा, “आप तो एक शांतिप्रिय व्यक्ति हैं जिन्होंने मानवता के इतिहास में होने वाले सबसे बड़े युद्ध को रोका।”

कृष्णा ने आंखें घुमाईं। "क्या हमें अंदर जाने की अनुमति है?"

"ज़रूर करो। अगर कोई गड़बड़ी हुई तो तुम जानते हो कि मैं तुम्हें ढूंढ निकालूंगा।"

कृष्ण ने सिर हिलाया और समवा की ओर मुड़े। "क्या तुम तैयार हो?"

“हाँ, लेकिन उम, कालिया?” उसने पूछा। “मैंने यह नाम कहाँ सुना है?”

कृष्ण अपने बचपन में वापस नहीं जाना चाहते थे जब कालिया ने भारत के वृंदावन में यमुना नदी पर कब्जा कर लिया था और नदी को विषैला बना दिया था, और कृष्ण को सभी को उस पानी को पीने से बचाना पड़ा था और कालिया को मारने की प्रक्रिया में भी थे, लेकिन अपनी छह पत्नियों के कहने पर उसे मुक्त कर दिया था।

लेकिन उसे ऐसा करना ही पड़ा। क्योंकि यह यात्रा धीरे-धीरे उसके लिए और भी रहस्यमय और महत्वपूर्ण होती जा रही थी।

उन्होंने कहा, "अगर आपको याद नहीं है, तो यह हमारे लिए अच्छा है। क्योंकि कालिया में लोगों को कई मौकों पर याद दिलाने की कला है।"

22

प्रद्युमन लाल मिट्टी पर जागा।

उसे अपने ऊपर रेत का एहसास हो रहा था, रेत उसे छू रही थी और उसकी त्वचा पर उसके निशान बना रही थी। उसने खड़े होने की कोशिश की, लेकिन उसमें बची हुई ऊर्जा न के बराबर थी। उसने गहरी सांस ली और खुद को संभाला, तभी उसकी दृष्टि साफ होने लगी। उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी और वह ठीक से बोल नहीं पा रहा था, उसके मुंह का स्वाद खराब हो रहा था। उसे कुछ आवाजें सुनाई दे रही थीं—एक लंबी, चौड़ी आवाज, और जब उसने ऊपर देखा तो वह साफ होती जा रही थी और उसे तालियां, वाहवाही सुनाई दे रही थी, एक बेहतरीन एहसास।

प्रद्युम्न ने पलकें झपकाईं और अपनी आँखें मलीं, और ऐसा करते हुए उसने चारों ओर देखा, वातावरण का जायजा लिया। वह किसी अखाड़े में था, जो घर के अखाड़े जैसा ही था, जहाँ उसने कीड़े से लड़ाई की थी। लेकिन वह जगह ऐसी थी जहाँ स्थिति नियंत्रण में थी, जबकि यहाँ ऐसा नहीं था। उसने उन चबूतरों को देखा जहाँ भीड़ बैठी थी और उसके लिए तालियाँ बजा रही थी। लेकिन इस भीड़ के चेहरे भावहीन थे—उन पर बस एक खालीपन छाया हुआ था, वे अलग-अलग तरह के कपड़े पहने हुए थे और तालियाँ बजा रहे थे।

उसने ऊपर लाल, तूफानी आसमान की ओर देखा, जो अशांत था और सब कुछ एक सपने जैसा लग रहा था। लेकिन सपने तो अच्छे होते हैं—ये तो डरावने सपने जैसे थे—उसे अपनी हड्डियों तक ठंडक महसूस हो रही थी। उसने आगे देखा, और ठीक ऊपर जहाँ वह बैठा करता था, वहीं मायावती थी। वह अब भी अलौकिक लग रही थी, तभी कुछ हुआ। उसकी त्वचा बदलने लगी, उसकी लंबाई कम होने लगी और वह एक...

लाल नाक और लंबे दांतों वाला, घनी भौंहों और घुंघराले बालों वाला एक मोटा-ताज़ा आदमी। वह कद में छोटा और मोटा था। वास्तव में, वह बहुत ही मोटा था।

वह एक लंबे गाउन पहने और चेहरे पर एक बड़ी, विजयी मुस्कान लिए किनारे के पास खड़ा था।

प्रद्युमन उसे जानता था। वह उसे बहुत अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से जानता था।

“शंबरा,” उसका जीवन भर का शत्रु। “तुमने माया का इस्तेमाल करके अपना रूप बदला। तुम आज भी रसातल के राजा हो।”

“बेशक। नहीं तो तुम मुझ पर तुरंत हमला कर देते। मुझे तुम्हारी मम्मी का वेश धारण करना पड़ा और तुम्हें सुलाना पड़ा, ताकि तुम यहाँ रह सको। संक्षेप में कहूँ तो—कैसे हो मेरे बेटे?” वह हँसते हुए ताली बजाने लगा।

लेकिन तुम तो मर चुके हो। मैंने तुम्हें मारा है।

“तो तुमने कर दिखाया।” वह ज़ोर से हँसा और भावहीन चेहरे वाले दर्शक और भी ज़ोर से तालियाँ बजाने लगे। “लेकिन देखो, मैं वापस आ गया। इसके लिए मेरे बहुत से लोगों को एक

साथ आना पड़ा, हर तरह के जादू का इस्तेमाल करना पड़ा और मुझे वह बनाना पड़ा जो मैं आज हूँ। मेरी वापसी मज़ेदार थी और इसमें कई साल लग गए। लेकिन सबसे पहले मैंने वही किया जो मैं सबसे ज़्यादा करना चाहता था—एक योजना बनाना। तुम्हें नष्ट करना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता थी।"

प्रद्युमन ने चारों ओर देखा, वह असमंजस में था। उसे अपने चारों ओर बहुत कुछ दिखाई दे रहा था। उसने फिर से शंबरा की ओर देखा, लेकिन वह गायब हो चुका था।

"जहां..."

लेकिन वह और इंतजार नहीं कर सका, क्योंकि पीछे से कुछ आया और उसने उसे महसूस किया—उसकी पीठ के दाहिनी ओर एक वार हुआ और वह यह देखने के लिए घूम गया कि उसे किसने चोट पहुंचाई है—यह शंबारा थी, जो मुस्कुरा रही थी।

"नमस्ते।"

प्रद्युमन ने ब्लेड को बाहर निकालने की कोशिश की और पीछे की ओर गिर गया, जबकि छोटा आदमी उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगा।

उन्होंने कहा, "यहां मैं अजेय हूं।"

"आपका क्या मतलब है?"

"यहाँ, मैं तुम्हें मार भी सकता हूँ और तुम्हें फिर से जीवित भी कर सकता हूँ।"

और अपनी बात को साबित करने के लिए, प्रद्युमन ने देखा कि उसने अभी-अभी लगी चोट को ठीक कर लिया था।

लेकिन मैं तुम्हें मारना ज्यादा पसंद करूंगा।

फिर उसने उसी घाव को फिर से खोल दिया और प्रद्युमन जोर-जोर से रोने लगा। "हे भगवान!" वह जोर से चिल्लाया। "तुमने यह कैसे किया..."

"क्योंकि यही वो दुनिया है जो मैंने उन कैदियों के लिए बनाई है जिन्हें मैं कैद रखना चाहता हूँ, जिनके लिए मौत खुद मौत की अवधारणा से भी बदतर होनी चाहिए। मैं उन्हें नरक की यातना देना चाहता हूँ। सपनों की दुनिया। दर्पणों की दुनिया। वो दुनिया जिस पर आप भरोसा नहीं कर सकते। वो दुनिया जहाँ आप खुद पर भी भरोसा नहीं कर सकते..." शंबरा ने कहा।

"यह सब एक सपना है...यह वास्तविक नहीं है..."

उनका यह बयान सुनकर सारी जनता सन्नाटे में आ गई। यहां तक कि नकली प्रद्युमन, शंबरा ने भी भावहीन होकर अपने जबड़े भींच लिए। "यह तो वाकई निराशाजनक होगा।"

प्रद्युमन हँस पड़ा। "हाँ, तो मैं चाहूँगा कि तुम अभी चले जाओ और मुझे भी मुक्त कर दो।"

"ओह, दुर्भाग्य से ऐसा नहीं होने वाला है क्योंकि देखो, तुम शायद सही हो कि मैं तुम्हें मार नहीं पाऊंगा, क्योंकि आखिरकार तुम इस स्थिति में हो, लेकिन मैं तुम्हें आंतरिक नींद में डाल सकता हूं। तुम कभी नहीं जागोगे और इस वीरान जगह पर ही फंसे रहोगे," वह मुस्कुराया। "तलवार को तुम्हारे शरीर में घोंपकर तुम्हें मार डालने से तुम यहीं फंस जाओगे।"

नहीं, यह असंभव है।

"तुम्हें क्या लगता है कि तुम अभी क्या कर रहे हो? असल दुनिया में, तुम कोमा में हो। लोग

तुम्हारे जागने की उम्मीद कर रहे हैं। सोचो, तुम कभी जाग ही न पाओ। कितना दुखद और दयनीय जीवन होगा।"

प्रद्युम्न गुर्राया और शंबरा की ओर झपटा, उसे पकड़ने की कोशिश की लेकिन शंबरा गायब हो गया। फिर वह उसके पीछे प्रकट हुआ और उसकी पीठ पर लात मारी जिससे प्रद्युम्न ज़मीन पर गिर पड़ा। यह देखकर सारी भीड़ हंसने लगी।

"तुम मुझसे यहाँ क्या करवाना चाहते हो? मैंने तुम्हें मारकर सही काम किया है।"

मुझे पूरा यकीन है कि आपने ऐसा किया होगा।

"तुमने मेरी माँ को प्रताड़ित किया। तुमने उसके साथ बलात्कार किया। तुमने उसे जबरन तुमसे शादी करने के लिए मजबूर किया।"

"बिल्कुल, लेकिन तुम्हारी माँ ने मेरे बारे में झूठ बोला था। इसलिए, उसे अपने कर्मों का फल मिल गया।"

नहीं, मैं तुम्हें फिर से मार डालूंगा।

"ओह, तुम्हारी यही इच्छा है।"

प्रद्युमन ने दोबारा खड़े होकर उसे पकड़ने की कोशिश की और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसने शंबरा को भागते हुए देखा और इस बार वह वापस उसी शीर्ष पर पहुँच गया जहाँ से उसने शुरुआत की थी।

मैं तुम्हारा जीवन दुखमय बना दूंगा। मैं तुम्हारा जीवन भयानक बना दूंगा।

तभी प्रद्युमन को धरती के नीचे कंपन महसूस होने लगी और उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा, वह सोचने लगा कि आखिर क्या हो रहा है। उसने अपने घाव को पकड़ते हुए इधर-उधर हिलने की कोशिश की और साथ ही अपनी तलवार तक पहुँचने का प्रयास किया। वह तलवार पकड़ने के लिए दौड़ा और जैसे ही वह आगे बढ़ा, कंपन रुक गई और प्रद्युमन ने देखा कि धरती से क्या निकल रहा है...

और वह कीड़ा रेत में से तेज़ी से नीचे आया और उसकी ओर झपटा, यह समझते हुए कि यह वही कीड़ा है जिसे प्रद्युमन ने पहले मारा था। प्रद्युमन ने तलवार को कसकर पकड़ लिया और जैसे ही कीड़ा उसकी ओर आया, वह एक तरफ लुढ़क गया।

"तुम्हें कैसे पता चला कि मैंने एक कीड़े से लड़ाई की थी?"

"तुम्हारे सपने, तुम्हारे बुरे सपने, सब सच हैं," शंबरा हँसते हुए बोला। "मेरे दर्पणों की दुनिया में तुम्हारा ही प्रतिबिंब दिखता है, मेरे बच्चे। इसे भूलने की हिम्मत मत करना!" और तभी दो राक्षसी औरतें वहाँ आ गईं, हवा में फूंक मारते हुए, मानो वह उन्हें अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहता हो, और वह खुशी से उछलने लगा।

कीड़ा बड़ी तेजी से उसकी ओर सरकने लगा और प्रद्युमन, पिछली बार की तरह अप्रस्तुत होकर, कीड़े का इंतजार करने लगा...

और वह उस पर झपटा, हवा में उछलता और कलाबाजी करता हुआ, फिर तलवार को कीड़े के केंद्र में घुसा दिया।

कुछ नहीं हुआ। वह चुभ गया। उसके चेहरे पर खून के छींटे पड़े, लेकिन कीड़े ने उसे झटक

कर दूर कर दिया और वह जमीन पर गिर गया।

वह कृमि फिर से प्रद्युमन की ओर बढ़ने लगा, इतना विशाल और दैत्य कि उसकी विशाल छाया प्रद्युमन पर पड़ रही थी, उसका मुँह खुला हुआ था। प्रद्युमन को कृमि के पास आते ही एक तेज़ घरघराहट की आवाज़ सुनाई दी और उसके पास कोई हथियार नहीं था...

और उसने उसे खा लिया।

फिर गायब हो जाने के लिए।

यह हवा में बस हल्का सा फूल गया।

"ओह, क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैंने तुम्हें यहाँ सिर्फ इतनी आसानी से मरने के लिए बुलाया है?" शंबारा ने ऊपर से चिल्लाकर कहा।

प्रद्युमन ने अपनी मुट्ठी भींच ली।

“जब आप किसी को चोट पहुँचाने की इतनी लंबी योजना बनाते हैं, तो आप इसे जल्दी खत्म नहीं करना चाहते। आप इसका आनंद लेना चाहते हैं, आप हर पल को महसूस करना चाहते हैं।” वह हँसा और जिस चबूतरे पर वह खड़ा था, उस पर उछल पड़ा। “जब आपका सामना हर तरह की वास्तविकताओं के सबसे भयानक राक्षसों से होगा, तब आप हमेशा के लिए गहरी नींद में गिरने के कगार पर रहेंगे, और जानते हैं सबसे बुरी बात क्या है? आपके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं होगी। आप कुछ नहीं कर सकते। आप यहीं फँसे रहेंगे, इस अधर में, इस यातना में।”

प्रद्युमन ने ज़रा भी इंतज़ार नहीं किया और वह शंबरा की ओर दौड़ पड़ा, अपनी जगह से उछलकर उस मोटे आदमी पर हमला करना चाहता था। लेकिन इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, चारों ओर से दर्जनों पहरेदार आ गए और प्रद्युमन को घेर लिया। पहले तो उन्होंने उसे पकड़ा और फिर जंजीरों से जकड़ दिया। एक शिकारी कुत्ता उसे खींच रहा था और वह शंबरा को कुछ भी जवाब नहीं दे सका, जो अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए बनाए गए उस खोखले, बनावटी दर्शकों के साथ ताली बजा रहा था। वह पहरेदारों के बीच आगे बढ़ता रहा और आखिरकार उस अखाड़े में पहुँच गया जहाँ दूसरे कैदियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

ठीक उसकी तरह, उसने दूसरे योद्धाओं को भी देखा, शायद कुछ ययाती थे और कुछ शायद किसी दूसरी जाति के। प्रद्युमन को समझ नहीं आ रहा था कि ये सब उसकी कल्पना थी या वे सब दर्पणों की इस दुनिया में फंसे हुए थे। और दर्पणों की बात करें तो, उनका ज़िक्र तो अक्सर होता था, लेकिन वहाँ कोई दर्पण नहीं था। क्या यह कोई पहेली थी? उसे कुछ समझ नहीं आया।

गलियाँ संकरी होती गईं, लेकिन लोग तितर-बितर नहीं हुए। सभी सुरक्षाकर्मियों ने प्रद्युमन की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा। वे लगातार आगे बढ़ते और इकट्ठा होते रहे, भाले प्रद्युमन की ओर बढ़ाते रहे, ताकि वह लगातार खतरे में रहे।

वह एक सुनसान गली में था जिसके दोनों ओर पिंजरे बने हुए थे। सामने उसे सिर्फ रोशनी दिखाई दे रही थी, और कुछ नहीं। पिंजरों में उसे कई और लोग दिखाई दे रहे थे, और वे सभी कमजोर, भूखे और बीमार लग रहे थे। कुछ अपनी ही उल्टी में सो रहे थे, जबकि कुछ आपस में बातें कर रहे थे। शंबारा द्वारा बनाई गई यह दुनिया अपने आप में विचित्र थी और उसे यहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था।

“यह सब एक सपना है...यह सब एक सपना है...” वह धीमी आवाज़ में बोलता रहा, तभी उसके दाहिनी ओर खड़ा गार्ड हंसने लगा।

“यह तुम्हारा सबसे बुरा सपना है, बच्चे। तुम यहाँ से बच नहीं पाओगे।”

"बाहर निकलने का हमेशा कोई न कोई रास्ता होता है।"

लेकिन पहरेदारों ने इसे हल्के में लिया और उसके लिए एक पिंजरा खोलकर उसे अंदर फेंक दिया, ज़मीन पर पटक दिया और उसकी लोहे की जंजीरें खोल दीं। प्रद्युमन गीली ज़मीन पर पड़ा था और उसे हार का एहसास हो रहा था, मानो वह इससे नीचे नहीं गिर सकता। उसने बाईं ओर मुड़कर देखा तो पिंजरा दिखाई दिया, जहाँ एक आदमी रेलिंग पकड़े खड़ा था और अपनी गंदी दाढ़ी और मैले बालों के साथ उसे घूर रहा था।

“क्या आप प्रद्युमन नहीं हैं?” बूढ़े व्यक्ति ने कांपती हुई आवाज में पूछा।

प्रद्युमन ने कुछ नहीं कहा।

“अगर तुम हो, तो मुझे मत बताना। तुम बहुत बुरे इंसान हो,” उसने कहा।

और फिर वह बूढ़ा आदमी गायब हो गया। प्रद्युमन ने उसे किसी न किसी तरह से चोट पहुँचाई होगी, और उसे इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। हालाँकि वह दूसरे लोगों की प्रतिक्रियाएँ देख सकता था, जो उसे गंदी ज़बान और बुरी नज़रों से देख रहे थे। प्रद्युमन ने आह भरी, कहीं किसी दोस्त का चेहरा देखने की उम्मीद में, और सामने वाली कोठरी में उसे एक चेहरा दिखा भी, जिसे देखकर वह लगभग चौंक गया।

वह कोई और नहीं बल्कि उनकी सौतेली माँ मायावती थीं।

और इस बार, यह असली था।

23

बलराम फिर से यहाँ आ गया था।

वह भयंकर तूफान के बीचोंबीच खड़ा था, ऊँची घास में और उसके सामने एक तूफान उमड़ रहा था। वही दृश्य उसके सामने था, जैसे उसे सामने एक साँप का अँधेरा बनता हुआ दिखाई दे रहा था और उसके नीचे एक आदमी की परछाईं, लेकिन अभी तक साँप ने उसे निगला नहीं था।

“मैं यहाँ नहीं रहना चाहता।” उसने चीखते हुए और खुद को बाहर धकेलते हुए जोर से कहा।

“पर तुम यहाँ हो। और तुम हम हो।” साँप ने उस पर फुफकारा। दस सिर वाला। फिर वह पाँच सिर वाला हो गया, और फिर से दस सिर वाला।

बलराम को अब पसीना आ रहा था और उसे पता नहीं था कि सपने में भी पसीना आ सकता है। लेकिन हमेशा खुद को दूर धकेलने के बजाय, उसने आगे बढ़कर उस आदमी की ओर चलना शुरू किया जो कुछ ही देर में निगल लिया जाएगा।

मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ। तुम कौन हो?

उस आदमी का चेहरा अब भी भावहीन था। उसके चेहरे पर एक लंबी छाया पड़ रही थी। बलराम को उसके घुंघराले बाल दिखाई दे रहे थे।

“मैं तुम ही हूँ,” उस आदमी की आवाज़ गूंजी।

बलराम आगे बढ़ा और अंततः अपने सामने खड़े व्यक्ति तक पहुँच गया। उसने उसकी ओर देखा, जो उसकी ओर सीधा खड़ा था। उस व्यक्ति ने भी पलटकर देखा और फिर उसके चेहरे के भाव स्पष्ट होने लगे और वह मुस्कुरा रहा था। वास्तव में, वह अपने दाँत दिखाते हुए खिलखिला रहा था।

“तुम कौन हो?” बलराम ने पूछा।

“क्या तुम समझते नहीं? मैं तुम ही हूँ।”

“तुम अलग दिखते हो। तुम मेरे जैसे नहीं दिखते।”

"क्योंकि मैं किसी और समय, किसी और युग, किसी और दौर से आया हुआ तुम ही हूं।"

बलराम ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "नहीं...मैं पुनर्जन्म हूं..."

“यह उससे कहीं अधिक जटिल है,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। “यह कहीं अधिक पेचीदा है और साथ ही साथ सरल भी है।”

लेकिन मैं ही क्यों?

क्योंकि हम अपने सगे-संबंधियों के भक्त हैं। हम अपने भाई के भक्त हैं। वह भाई जो विष्णु हैं। हम उनके संसार की रक्षा के लिए जन्म लिए हैं।

“लेकिन मेरे भाई ने मुझे छोड़ दिया...” उसकी आवाज़ भर्रा गई। पुरानी यादें उमड़ने लगीं और उसे वे सारे पल याद आ गए जब कृष्ण के राज्याभिषेक के बाद वह बेहद असहाय और दुखी महसूस कर रहा था और रोने से खुद को रोक रहा था। उसे कुछ समय तक अकेले ही पूरे राज्य की देखभाल करनी पड़ी, फिर प्रद्युमन आया और सब कुछ उलट-पुलट कर दिया।

“हमारे भाई शायद हमारी देखभाल न करें। हम करते हैं। और इसीलिए हम अमर हैं। अनंत।”

उसी क्षण, सांप की एक तेज़ फुफकार सुनाई दी। और काफी देर बाद, बलराम ने देखा कि सांप अब खतरनाक नहीं था, बल्कि उसके प्रति मित्रवत था। वह परिस्थितियों का शिकार था, शिकारी नहीं।

"आप कौन हैं?"

और नाम बताया गया। तुरंत ही सब कुछ स्पष्ट हो गया। सांप आगे बढ़ा और अपना विशाल, नुकीले दांतों वाला मुंह खोला, उन्हें निगलने के लिए तैयार था। जैसे ही उसने ऐसा किया, बलराम को एक पल के लिए संदेह हुआ कि कहीं उसे भी निगल न लिया जाए, लेकिन भय ने उसे जकड़ लिया और उसने खुद को पीछे धकेल दिया, और जैसे ही सांप ने उसके सामने खड़े आदमी को निगल लिया, वह जमीन पर गिर पड़ा।

बलराम हांफते हुए वहीं खड़ा था। उसे जो नाम बताया गया था, उसे याद आ रहा था।

उन्होंने कहा था, “लक्ष्मण, त्रेता युग के राम के भाई।”

*

बलराम एक पिंजरे में जागा। वह एक गंदा पिंजरा था जिसमें गोबर और मरी हुई मक्खियों की बदबू आ रही थी। उसने आह भरी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इन सपनों का क्या मतलब है और क्या ये वाकई सपने थे।

लेकिन उसे वह जगह बिल्कुल पसंद नहीं थी जहाँ वह इस समय था। वास्तव में, यह निराशाजनक था। उसने सामने देखा तो वहाँ अंधे पहरेदार खड़े थे, सभी के हाथों में भाले थे और उनकी त्वचा राख जैसी पीली थी, वे भागने की कोशिश करने पर हमला करने के लिए तैयार बैठे थे।

बलराम ने आह भरी और घंटों वहीं ध्यान में लीन रहे, अपनी लकवाग्रस्त टांग को दबाते रहे, जो उनकी आदत थी। वे गुनगुनाते भी रहे और किसान के दिनों को याद करने की कोशिश करते रहे। उन्हें खेती-बाड़ी बहुत पसंद थी, खासकर हल चलाना, और उन्होंने काफी समय से यह काम नहीं किया था। उन्हें अपनी पत्नी की याद आ रही थी, अपने सेनापति की याद आ रही थी। उन्हें अपने भाई और अपने दुष्ट भतीजे की भी याद आ रही थी।

यह कितनी विडंबनापूर्ण बात है कि समय बीतने के साथ-साथ आपको जीवन के अच्छे और बुरे दोनों पल याद आने लगते हैं। पीछे मुड़कर देखने पर, वे अच्छे और बुरे पल नहीं रह जाते, बल्कि महज़ कुछ हिस्से बन जाते हैं, जिनसे सीखा जा सकता है, जिनसे आगे बढ़ा जा सकता है और जिन्हें संजोकर रखा जा सकता है।

जैसे-जैसे वह सोच-विचार करता रहा, उसने कुछ आकृतियों को आते देखा और वे सैनिक थे।

“तुम्हें बुलाया गया है,” सैनिक ने आदेश दिया।

बलराम ने सिर हिलाया और पिंजरा खोल दिया गया, जबकि उसके हाथ बंधे हुए थे ताकि वह कोई शरारत न कर सके। वह हिल गया। वह अन्य पहरेदारों और उस कालकोठरी जैसे इलाके को देख सकता था जिसमें वह था। वह आगे बढ़ा, जब तक कि उसे सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने के लिए नहीं कहा गया, जहाँ से उसे पहाड़ी की चोटी के नीचे बने एक आम हॉल में ले जाया गया। यह

सब पहाड़ी के अंदर बनाया गया था और वहाँ कई पहरेदार, मंत्री आदि मौजूद थे। सभी की आँखों पर पट्टी बंधी थी। सभी का रंग पीला पड़ गया था। सभी जंगली जैसे दिख रहे थे।

उन्हें रानी देवमेधा के सामने लाया गया, जिनसे वे पहले मिल चुके थे, लेकिन इस बार देवमेधा अलग दिख रही थीं। वे उम्रदराज थीं, उनके बाल सफेद थे, त्वचा पीली पड़ गई थी और चेहरे पर झुर्रियां अधिक थीं। बलराम असमंजस में थे और उनका असमंजस पल भर में दूर हो गया जब उन्होंने देखा कि जिसे वे देवमेधा समझ रहे थे, वह आसन पर बैठी महिला के ठीक बगल में खड़ी थी।

“तुम बेटी थीं,” बलराम ने कहा। “मैं इसे कैसे भूल सकता था?”

“यह एक आम गलतफहमी है। कृपया मेरे चचेरे भाई की हथकड़ियां खोल दें,” असली देवमेधा ने आदेश दिया।

कृतवर्मा कोने में असहज मुद्रा में खड़ी थी, उसकी वफादार सेनापति। और उसके साथ उसकी पत्नी रेवती और अकुरजी भी थे। वे सभी अतिथि सीटों पर बैठे थे और बलराम की आँखें यह सोचकर स्नेह से भर उठीं कि वे उसे कैसे ढूंढ पाए। रेवती उसे गले लगाने के लिए उठ रही थी, लेकिन उसे अनुमति नहीं दी गई। बलराम उससे बात करना चाहता था, जानना चाहता था कि वह यहाँ कैसे आई, लेकिन उसने खुद को रोक लिया।

बलराम की हथकड़ियां खोल दी गईं।

"ओह धन्यवाद।"

“मेरी बेटी तुम्हें पसंद नहीं करती, बाला,” देवमेधा ने कहा। “मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है, लेकिन उसके अपने कारण हैं। उसका नाम सोन्या है, क्योंकि अभी तक तुम्हें उससे औपचारिक परिचय का मौका नहीं मिला है।”

“जी हां,” बलराम ने कहा। “अच्छे मेजबान बनने के लिए धन्यवाद।”

"मुझे खेद है कि जब मुझे आपके आने की सूचना मिली, तो मैंने तुरंत अपने आदमियों को आपको यहां लाने का आदेश दिया।"

बलराम ने कंधे उचका दिए।

"तो इतने सालों बाद आप यहाँ क्यों आए हैं? और यह भी याद रखें कि आपकी तलाश है, इसलिए अगर मुझे आपके कारण उचित नहीं लगे, तो मैं आपको हमेशा हटा सकता हूँ।"

“बड़े ही प्यारे, चचेरे भाई,” बलराम मुस्कुराया। “मेरे पास इसका एक वाजिब कारण है। मेरे पास वृष्णि राज्य में आपकी बागडोर संभालने के लिए एक तैयार सेना है। युधजित का पुत्र सत्यकी अपने पिता पर कब्जा करने की साजिश रच रहा है।”

“दिलचस्प।” वह आगे झुकी। “और ऐसा क्यों?”

"क्योंकि युधजित आखिरकार एक बुरा आदमी है।"

“और आपको अब इसका एहसास हुआ?”

"उनके साथ मेरी दोस्ती ने अक्सर मेरे फैसले को प्रभावित किया है।"

“बहुत खूब। तो आप चाहते हैं कि मैं सत्यकी का समर्थन करूं और अंधकों और वृष्णियों के बीच शांति स्थापित करूं?”

"वास्तव में हाँ।"

"क्या होगा अगर वह अपने पिता की तरह निकला? यानी एक ब्लैकमेल करने वाला हत्यारा।"

मुझे लगता है कि उसे अब कुछ समझ आ गई है। साथ ही, मैं उसका मार्गदर्शन भी करूंगा।

“जैसे तुमने अपने भाई को मार्गदर्शन दिया?” उसने उपहास उड़ाते हुए कहा। “अरे बाला, मुझे इस बात पर यकीन करना मुश्किल हो रहा है।”

एक तरफ खड़ी सोनजा बड़बड़ाई, "मैंने तुमसे कहा था, माँ।"

"चुप रहो, बच्चे। मेरे रूप में खुद को पेश करने की तुम्हारी गुस्ताखी पहले ही स्वीकार्य नहीं थी और अब दो वयस्क बात कर रहे हैं, इसलिए मैं तुम्हारी तरफ से कोई फालतू की बातें नहीं सुनना चाहता।"

बलराम को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह बेटी के साथ इतनी रूखी कैसे थी, लेकिन फिर यह उचित ही था।

सत्यकी के पास कितने हैं?

लगभग सौ हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश में ययाति की शक्ति है। आप इसका उपयोग कर सकते हैं।

उसने अपने जबड़े भींच लिए। "क्या वह मान गया है?"

आपको क्या लगता है कि मुझे यहां किसने भेजा है?

“दिलचस्प। और वह क्यों नहीं आया?”

"क्योंकि तुम उसे ट्रॉफी की तरह ले जाते।"

वह हंस पड़ी। “बिल्कुल, तुम सही हो। बहुत बढ़िया!” उसने ताली बजाई। “मुझे थोड़ा सोचने दो, चचेरी बहन। मैं इस पर गहराई से विचार करना चाहूंगी और स्पष्टता से सोचना चाहूंगी। मैंने वृष्णि वंश के हर सदस्य से नफरत की है, और उनके साथ साझेदारी करना एक ऐसा काम है जिसके लिए मैं अभी तुरंत तैयार नहीं हूं।”

"बिल्कुल, अपना समय लें।"

“जब तक ऐसा नहीं होता, मैं सुझाव दूंगा कि मैं आपको एक अच्छा कमरा दूं और आपके परिवार से मिलवाऊं। वे बिना किसी हिंसक तरीके के हमें ढूंढने में कामयाब रहे, जैसा कि आपने किया।”

लेकिन कैसे? बलराम ने सोचा।

हालांकि वह जानता था कि अब उसे जवाब नहीं मिलेंगे। बैठक स्थगित कर दी गई और फिर उसे उसके कमरे की ओर ले जाया गया।

*

जैसे ही वह अंदर दाखिल हुआ, उसने देखा कि अकुरजी और रेवती अंदर हैं। रेवती ने उसे कसकर गले लगा लिया, जबकि अकुरजी एक कोने में मुस्कुरा रहे थे।

“क्या हुआ था? आप सब कैसे आए?” बलराम ने पूछा। “क्या युधजित को शक नहीं हुआ था?”

अकोरजी ने कहा, “हमें यह संयोगवश तब मिला जब हम बीच रास्ते में एक शेरपा से मिले,

जिसने हमारा अच्छे से मार्गदर्शन किया। युधजीत को शक था कि हम रहस्यमय तरीके से आए और उसी रास्ते से चले गए। उसने अपने शहर की गलियों में हुई एक घटना के बारे में भी सुना था।"

"मैं समझ गया। तो, वह इस बारे में क्या कर रहा है?"

रेवती ने कहा, "उन्होंने हमें यहीं रुकने को कहा था। और जब उनकी तलाशी टीम काम में लगी थी, तब अकोरजी भागने का रास्ता ढूंढ लिया। मुझे यकीन है कि वह हमारी तलाश करेंगे, लेकिन कोई बात नहीं।"

"हम दोनों तरफ से खेल रहे हैं। यह एक समस्या होगी," बलराम ने कहा। हालांकि उनके मन में एक सवाल था। "इस शेरपा से कौन मिला?"

वह अकोरजी और रेवती की ओर देख रहा था, लेकिन रेवती ने सिर हिलाकर कहा, "यह मैंने किया था।"

"मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यहाँ कोई शेरपा भी होगा।"

वह रुक गई। मानो अनिश्चित हो। "नहीं, नहीं, ऐसा था।"

"मुझे तब वही रास्ता अपनाना चाहिए था," उसने मन ही मन सोचा, अभी भी असमंजस में था। "लेकिन मुझे खुशी है कि तुम दोनों यहाँ हो।"

"तो क्या योजना है?"

बलराम ने कहा, "हम देखेंगे कि इसका क्या नतीजा निकलता है। हम कुछ दिन इंतजार करेंगे और अगर बात नहीं बनी तो हम पहल करेंगे और कार्रवाई शुरू करेंगे।"

दोनों ने सिर हिलाया। जब भी बलराम उन्हें देखता, तो उन्हें देखकर खुशी होती कि वे यहाँ हैं, लेकिन साथ ही साथ इस बात से भी परेशान हो जाता कि उनमें से कोई एक बहीखाता लेखक हो सकता है। और उसके पीछे एक वितीहोत्र भी पड़ा हुआ था। उसे नहीं पता था कि वह कहाँ है, और अब क्या साजिश रच रहा है।

उनकी बातचीत जारी रहने के दौरान, दरवाजे पर दस्तक हुई। बलराम दरवाजा खोलने गया और उसने देखा कि सोन्या सख्ती से खड़ी थी। बलराम ने दरवाजा बंद कर लिया और अपने कंधे सीधे किए। वह अकेली आई थी और गुस्से में लग रही थी, उसकी मुट्ठियाँ भींची हुई थीं और चेहरा भावहीन था, फिर भी उसने मीठी आवाज़ में कहा:

बलराम ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि आप माफी मांगने आए हैं।"

"बिल्कुल नहीं।" उसने दांत पीसते हुए कहा, "मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहती हूँ। मेरी माँ का मन बदलने की कोशिश मत करना। हम किसी भी वृष्णि के साथ काम नहीं करेंगे, वरना तुम्हें मेरे गुस्से का सामना करना पड़ेगा।"

"और ऐसा क्यों? क्या सिर्फ एक झगड़े की वजह से? सत्यकी एक अच्छा आदमी है। मुझे यकीन है कि वह अंधकों और वृष्णियों के बीच के मुद्दे को सुलझाने के लिए कूटनीतिक तरीकों का इस्तेमाल करेगा।"

"लेकिन मेरे भाई को वृष्णि संप्रदाय ने मार डाला," उसने कहा। "और मैं उस दर्द को दोबारा नहीं झेलना चाहती। वह जवान था। मरने की उम्र तो अभी बहुत कम थी।" उसकी आवाज़ भर्रा

गई।

“इस बात का कोई सबूत नहीं था कि यह काम किसी वृष्णि ने किया था। आप सभी को शक था कि यह काम उन्होंने किया है क्योंकि आप उनसे नफरत करते थे, क्योंकि वे आपके कबीले को नीचा दिखाते थे।”

बलराम चुप रहे। यह सच था। वृष्णि वंश थोड़ा अभिमानी और घमंडी था। यही उनकी कमजोरी थी। उन्हें दिखावा करना बहुत पसंद था।

"नहीं, अगर मैं कहूँ कि सबूत मौजूद थे तो क्या होगा?"

"किस?"

“हत्या के बारे में। एक चश्मदीद गवाह था। मैंने उसे सुना था, उसकी स्वाभाविक मृत्यु से पहले, धिक्कार है मुझे।”

"तुम्हारा यह बेतुका सबूत क्या था?"

"प्रत्यक्षदर्शी ने हत्या देखी थी।"

“क्या यह युधाजित द्वारा रचित है?”

उसने सिर हिलाया। "नहीं। सत्यकी द्वारा।"

24

कृष्ण को अपने भीतर एक अजीब सी हलचल महसूस हुई और फिर उन्होंने एक ऐसे अनिश्चित लोक में प्रवेश किया। उन्हें लगा जैसे उनके भीतर सब कुछ उलट-पुलट हो रहा हो, और उन्होंने सामने देखा, नई दुनिया में प्रवेश करते ही उनकी आँखें सफेद चमक उठीं। उन्होंने ज़मीन पर मुक्का मारा और एक गहरी साँस ली, उसे बाहर निकलने दिया।

“तुम बूढ़े हो गए हो।” बगल से एक आवाज आई।

"काश, इस यात्रा के दौरान हर बार जब कोई मुझसे यह कहता, तो मुझे एक सिक्का मिलता," वह गुर्राते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो गया, "दूरस्थानीकरण एक भयानक प्रक्रिया है, लड़के।"

समवा ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे तो नहीं। मुझे बस अजीब सा लग रहा है।"

“क्योंकि आपके शरीर के परमाणु पल भर में ही किसी दूसरी जगह, किसी दूसरे देश में चले जाते हैं,” कृष्णा ने समझाया। “मुझे पता है। मैं इसका अक्सर इस्तेमाल करता था।”

“वाह!” समवा ने उसकी बात अनसुनी कर दी, क्योंकि वह अपने आसपास के वातावरण को देख रहा था।

कृष्ण ने देखा कि वे क्या देख रहे हैं और वह द्वारका में मौजूद गरजती त्वचा से बिलकुल अलग, साफ़, नीली त्वचा थी। वे एक लंबे लोहे के पुल पर खड़े थे। सामने झोपड़ियाँ थीं, और उसके पीछे कई मीनारें थीं और उन मीनारों के बीच से लंबी-लंबी खाइयाँ बह रही थीं। आकाश में कौवे उड़ रहे थे।

“यह जगह द्वारका से बेहतर क्यों है?” उसने पूछा। “यह नागलोक है, है ना?”

“इसका एक हिस्सा, हाँ। नागलोक काफी विशाल है, और हम उस हिस्से में हैं जिस पर कालिया का शासन है।”

“क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जिसे तुमने नागलोक में कैद किया था?” समवा ने पूछा।

कृष्ण को इस कथन में विडंबना दिखाई दी। द्वारका स्वयं कृष्ण की कैदखाना बन गई थी, जबकि कालिया ने उनकी कैदखाने को सौंदर्य की भूमि में बदल दिया।

वह इस बात को लेकर शांत और संयमित था और वे दोनों साथ-साथ महलों की ओर चल पड़े।

कृष्णा ने कहा, "हमें छिपना होगा, नहीं तो लोग हमें पहचान लेंगे।"

मुझे पूरा यकीन है कि इस जेल में मानवों को आने की इजाजत है।

कृष्ण ने आंखें घुमाईं। "दुर्भाग्यवश, मानवों का पालन करना वर्जित है।"

तो आप क्या करने की योजना बना रहे हैं?

“जितनी जल्दी हो सके मुख्य द्वार से अंदर घुसने की कोशिश करो और कालिया का ध्यान अपनी ओर खींचो,” उसने कहा, हालाँकि यह विचार उतना कारगर नहीं लग रहा था। वह तेज़ी से आगे बढ़ रहा था और उसे इस बात की खुशी थी कि आस-पास कोई नहीं था जो उन्हें देख सके।

वे चलते रहे, उनकी चप्पलों से थपथपाहट की आवाज़ आ रही थी, और पृष्ठभूमि में जंगल और पथरीले रास्ते थे जिन पर तरह-तरह के साँप मंडरा रहे थे। नागलोक साँपों के निवास स्थान के रूप में प्रसिद्ध था।

और जैसे ही वे आलीशान महलों के करीब पहुंचे, उन्होंने पाया कि वहां लोग थे, लेकिन तब तक वे उन झोपड़ियों से कपड़े चुरा चुके थे जहां उन्हें सुखाया जा रहा था और उन्होंने अपने चेहरे हुड के नीचे छिपा रखे थे।

वे बाजार से आगे बढ़ गए, तभी समवा ने कहा, "तो क्या ये सभी लोग कालिया का अनुसरण करते हैं?"

“हाँ। उसका क्षेत्र।”

उन्हें नाग दिखाई दिए और वे मानवों से काफी अलग और सौहार्दपूर्ण प्रतीत हुए। उनकी नाक सरीसृप जैसी अजीब थी, आँखें हरी थीं, सिर गंजा था और उनमें से कुछ के सिर काले थे। वे लंबे और बेहद पतले थे। पता नहीं क्यों, उनमें से कोई भी अत्यधिक विशालकाय नहीं था।

कृष्ण सावधानी से चल रहे थे।

"क्या आपको लगता है कि कालिया आपका अच्छे से स्वागत करेगी?"

मुझे ऐसा नहीं लगता। आखिरकार, मैं ही तो उसे यहाँ लाया था। लेकिन फिर भी, मैंने उसे माफ कर दिया था। मैं उसे आसानी से मार सकता था।

"विडंबना यह है कि अब आप उसकी मदद के लिए यहां आए हैं।"

"मुझे पता है।"

क्या आपको अपने किए पर पछतावा है?

“मैं सही काम कर रहा था। वह यमुना नदी को प्रदूषित कर रहा था। वह राक्षस था, बालक।” कृष्ण गुर्राए। उनका मिजाज बहुत खराब था क्योंकि उन्हें अंतर्द्वीप जाना था, वह स्थान जहाँ वे कभी जाना नहीं चाहते थे, लेकिन अब उनके पास कोई विकल्प नहीं था।

लेकिन सभी राक्षस बुरे नहीं होते। कुछ को शायद गलत समझा गया हो। क्या उसने कभी आपको बताया कि उसने ऐसा क्यों किया?

कृष्ण ने अपना सिर हिलाया। उन्होंने कभी पूछा भी नहीं। उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह इतना महत्वपूर्ण होगा। “मुझे नागों से नफरत है। वे धूर्त, कायर लोग हैं जिन्हें मौत के घाट उतार देना चाहिए।”

"यह तो सरासर पूर्वाग्रह है।"

लेकिन तब तक वे एक युवा नागा लड़के के सामने पहुँच चुके थे, जिसका चेहरा सरीसृप जैसा था लेकिन वह कद में छोटा था। कृष्णा ने देखा कि वह एक भिखारी था और उसके पास एक थैली थी, जिससे वह कुछ पैसे माँग रहा था।

"कहानी के बदले भेंट लेना पसंद करोगे?"

कृष्णा ने कहा, "मेरे पास कुछ नहीं है।"

लेकिन समवा ने नहीं सुना। वह आगे बढ़ा और उसे लड़के को सौंप दिया। कृष्ण कराह उठे। छोटा लड़का मुस्कुराया और तुरंत बोलने लगा:

“यह कहानी कालिया की है, जो एक नेक और गौरवशाली राजा थे। उन्होंने अपनी प्रजा के लिए सब कुछ सही किया और हर सुख-दुख में उनके साथ खड़े रहे। एक समय था जब वे नागलोक से मनुष्यलोक में आए और उन्हें वहाँ के माहौल में ढलना पड़ा। लेकिन समस्या यह थी कि हर जगह बुराई फैली हुई थी। इससे भी बुरी बात यह थी कि वे जो पानी पीते थे वह ठीक नहीं था। उन्हें जहर दिया जा रहा था, इसलिए उन्होंने यमुना के पानी को अपने प्रयोग के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। इससे पीने की समस्या तो कुछ हद तक ठीक हो गई, लेकिन मनुष्यों के लिए वह पानी जहर बन गया। फिर आए दुष्ट विष्णु के पुत्र केशव, जो नागों का संहारक थे। उन्होंने हमारी आजीविका, हमारे घर नष्ट कर दिए, लेकिन कालिया ने पलटवार करने के बजाय कूटनीतिक रास्ता निकाला और दुष्ट केशव को उनके लिए घर ढूंढना पड़ा, जो उन्होंने उन्हें दिया।”

क्रोध उन पर हावी हो गया। कृष्ण देख सकते थे कि कहानियों में उनका चित्रण किस प्रकार किया गया था और उन्होंने बस अपनी आँखें घुमा लीं। वे उस लड़के की बात से आगे बढ़े, और सामवा ने पूछा:

"क्या तुमने अभी-अभी ऐसा किया?"

“यह इससे कहीं अधिक जटिल है। आप जानते हैं कि प्रत्येक संस्कृति एक ही घटना की अलग-अलग व्याख्या करती है। इतिहास हमेशा से इसी तरह चलता आया है,” उन्होंने कहा। “इसलिए, इसे गंभीरता से न लें...”

“ये मानव यहाँ क्या कर रहे हैं?” एक तेज़ आवाज़ आई।

वे दोनों मुड़े और उन्होंने देखा कि एक कसाई अपने तेज धार वाले चाकू और एप्रन को लिए उनकी ओर देख रहा है। बाजार के सभी लोग इकट्ठा हो गए और उनकी निगाहें मिलीं।

“आप गलत समझ रहे हैं। हम यात्री हैं,” कृष्णा ने रूखेपन से कहा।

“यहाँ मानव मांस की अनुमति नहीं है,” कसाई ने कहा। “क्योंकि हम उन्हें खाते हैं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।

उनके साथ कुछ सैनिक भी शामिल हो गए और उपद्रव को सुलझाने के बजाय, वे आगे की ओर बढ़ गए।

कृष्ण और समवा ने एक-दूसरे को सिर हिलाकर सहमति दी और दोनों अलग-अलग दुश्मनों से भिड़ गए। कृष्ण के पास उनका गदा था और उन्होंने तुरंत ही उस कसाई का सिर फोड़ दिया जो छुरी लेकर उनकी ओर आ रहा था। नाग के दांत टूटकर बाहर निकल आए और वह जमीन पर गिर पड़ा। तभी एक और सैनिक पीछे से आया और उसे पकड़ लिया, जिससे गदा पर उसकी मुट्ठी ढीली पड़ गई और हथियार गिर गया। कृष्ण ने अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए खुद को पीछे की ओर धकेला और उनके पीछे खड़ा व्यक्ति उनके नीचे कुचल गया। कृष्ण खड़े हुए, गदा को उठाया और उसके चेहरे पर तब तक प्रहार करते रहे जब तक कि वह चूर-चूर न हो गया।

“वाह, ये तो बहुत खूबसूरत है ना?” कृष्णा मुस्कुराया।

उसने मुड़कर देखा तो सामवा ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था और चिल्ला रहा था, “मुझे मदद चाहिए, यार!” उसे दोनों तरफ से दो आदमियों ने पकड़ रखा था। जैसे ही कृष्ण उनके पास आए,

उन्होंने एक पर गदा चलाई और दूसरे पर अपना चक्र चलाया। चक्र दोनों की खोपड़ी तोड़कर उन्हें छुड़ाने में कामयाब हो गया। “क्या हमें भाग जाना चाहिए?” सामवा ने दबे स्वर में पूछा। “मुझे लगता है हमें भाग जाना चाहिए।”

हमें जरूर चुनाव लड़ना चाहिए।

और वे विपरीत दिशा में बढ़ने लगे, तभी उन्होंने देखा कि और भी सैनिक, घुड़सवार और तीरंदाज वहीं पर हमला करने के लिए इंतजार कर रहे हैं।

कृष्णा ने कहा, "हमें यहीं रुकना चाहिए।"

हमें यहाँ अवश्य रुकना चाहिए।

*

कृष्ण और समवा को हथकड़ियों में जकड़कर खाने की मेज पर लाया गया। कृष्ण को उन हथकड़ियों की आदत पड़ रही थी जो उन्हें पहनाई जा रही थीं। दरअसल, वे जल्द ही एक पिंजरे की उम्मीद करने लगे थे, क्योंकि यह बेमानी हो रही थी। हर जगह पकड़े जा रहे थे, क्योंकि कोई योजना नहीं बन पा रही थी।

कृष्ण ने अपने सामने भोजन की मेज देखी, और उस पर तरह-तरह के पकवान बड़ी शान से सजाए जा रहे थे। सेब से लेकर जंगली सूअर तक, और यहाँ तक कि मानव मांस जैसा दिखने वाला मांस भी था। कृष्ण जानते थे कि वे यह सब नहीं खाएँगे। हॉल के चारों कोनों पर पहरेदार तैनात थे। और मुख्य मेज अभी खाली थी। लेकिन वे जानते थे कि कौन उनके साथ शामिल होगा।

उन्हें बैठने के लिए कहा गया।

"वाह, उन्होंने हमारे लिए बहुत अच्छी व्यवस्था की है," समवा ने कहा।

"हां, इसका मतलब है कि उसके मन में कुछ चल रहा है।"

और इससे पहले कि वे आगे चर्चा कर पाते, एक आवाज़ गूंजी और गूंज उठी: "केशव, तुम हमेशा मेरी मंशा पर शक क्यों करते हो?"

कृष्णा ने मुड़कर देखा तो एक आदमी अपने हाथ पीछे बांधे, गंजे सिर और बिना भौंहों वाली आंखों के साथ मुख्य कुर्सी की ओर चलने लगा और फिर उस पर बैठ गया।

आप कैसे हैं? आपको यहां देखकर बहुत आश्चर्य हुआ।

कृष्ण को वह चीज़ दिख गई जिसके लिए वे यहाँ आए थे। और वह थी कालिया के माथे पर बनी नीली चमकीली मणि। वह उन्हें घूर रही थी और तेज़ी से चमक रही थी।

“हां, हमने सोचा कि काफी समय हो गया है तो आपसे मिलकर आपका अभिवादन कर लें,” कृष्णा ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

“वह कौन है?” कालिया ने उसकी बात अनसुनी कर दी और समवा के बारे में बात करने लगी।

“मेरा बेटा।”

"ओह दिलचस्प।"

“अगर आपको बुरा न लगे तो मैं पूछना चाहता हूँ,” समवा ने कहा, “क्या आप किसी ऐसे

व्यक्ति की तरह नहीं दिखते जिसके दस सिर हों या कुछ ऐसा ही, जैसे कोई बड़ा साँप?"

"यह मेरा दूसरा रूप है, मेरा क्रोधित रूप। मैं इसे यहाँ दिखाना नहीं चाहता।" वह मुस्कुराया। "कृपया आपके लिए तैयार किया गया भोजन ग्रहण करें।"

कृष्णा ने सख्ती से कहा, "हमें भूख नहीं है।"

"मज़े किरकिरा मत करो, चलो!" उसने ताली बजाई। "खाना खाओ।"

मुझे कैसे पता चलेगा कि इसमें जहर नहीं है?

कालिया ने आह भरी और फिर सूअर का एक टुकड़ा उठाकर खुद खा लिया। "देखो, सब ठीक है। खा लो।"

"क्या होगा अगर यह जहर तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए मिलाया गया हो?" कृष्ण ने पूछा।

समवा ने आगे कहा, "मुझे आप पर भरोसा है, मैं इसे खा लूँगा।" और उसने सूअर का टुकड़ा उठाया और खा लिया। कृष्ण पहले तो हिचकिचाए, लेकिन कालिया को देखकर उन्होंने भी वही किया।

कालिया ने आह भरी। "तो मुझे बताओ कि तुम यहाँ किसलिए आए हो, वरना मैं तुम्हें सीधे यातना कक्षों में भेज दूँगी? मैंने तो सोचा था कि तुम्हें अच्छा खाना खिलाकर भेज दूँगी।"

कृष्ण जानते थे कि कालिया के इरादे बुरे हैं। वह इस समय शैतान के जाल में फँस चुके थे, लेकिन कृष्ण ने अपने जीवन में इतने शैतानों का सामना किया था कि उन्हें अब किसी चीज से डर नहीं लगता था। उन्हें पता था कि उन्हें कालिया से सीधे-सीधे बात करनी होगी, इसलिए नीली मैनीक्योर को देखकर उन्होंने कहा, "मुझे यह मैनीक्योर चाहिए।"

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, फिर ज़ोर से हँसी आई और उसने कहा: "यह पुरानी चीज़?" उसने अपने सिर से मैनीक्योर हटाया और उसे देखा। "अब आपको इसकी ज़रूरत क्यों पड़ेगी?"

"क्योंकि इसमें जादू है और मुझे इस समय जादू की जरूरत है।"

"क्या हम सब ऐसा नहीं चाहते?" वह हँस पड़ा। "तुम्हें पता है, मैं तुम्हें यह दे सकता हूँ, तुम्हें पता है मैं दे सकता हूँ।" वह सोच रहा था। "तुम्हें चाहिए?" उसने वह चीज़ कृष्णा को सौंप दी।

वह रुका। उसे पता था कि इसमें कोई न कोई चाल ज़रूर है। "बदले में तुम्हें क्या चाहिए?"

"अरे, सच कहूँ तो बस एक छोटी सी मदद चाहिए। लेकिन अच्छा हुआ कि आपको पता था कि मैं आपसे कुछ माँगूँगा।" वह मुस्कुराया। "मुझे एक सच्ची और दिल से माफी चाहिए।"

"किस लिए?"

मुझे यहाँ भेजने के लिए धन्यवाद।

लेकिन मैं गलत नहीं था।

"नहीं, लेकिन तुम थे। मैं एक अच्छा आदमी था और तुमने मुझे यहाँ, एक जेल में भेजने का फैसला किया। मैं यहाँ फंसा हुआ हूँ।"

"लगता है आप खूब आनंद ले रहे हैं," कृष्णा ने अपने सामने रखे हुए बीयर और शराब के जारों को देखते हुए कहा।

उसने सिर हिलाया। "मुझे माफी चाहिए, केशव।"

लेकिन आप ऐसा नहीं होने दे सकते। मुझे इसके लिए कोई खेद नहीं है।

“तुम्हारा अहंकार इस रिश्ते में एक बड़ी बाधा है।” वह खड़ा हुआ और उसने अपने हाथ जोड़ लिए। “कैसा लगा? मेरे मन में कुछ विचार है।”

"क्या?"

वह मुस्कुराया और उसकी तेज, सांप जैसी पन्ना रंग की आंखें चमक उठीं। "तुम देखोगे। मज़ा आएगा।"

पहरेदार समवा और कृष्ण के करीब आए और अपने भाले उनकी ओर करके खड़े हो गए।

कृष्ण को पता था कि यहाँ आना वाकई एक बहुत बड़ी गलती थी।

25

दुर्गाज्योति जमीन पर घुटनों के बल बैठी थी। उसके सीधे बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे। उसका मुंह चोट के निशानों से भरा था और उसे अपने ही कड़वे खून का नमकीन स्वाद महसूस हो रहा था। वह कमरे के सन्नाटे में टकटकी लगाए देख रही थी, अंधेरा छाया हुआ था और खिड़की से कौवे की तीखी कांव-कांव की आवाज आ रही थी। दुर्गाज्योति के सामने कुछ था। वह लाल रंग का था। मांसल था और कमरे की तरह काला था, लेकिन अंधेरे में भी चमक रहा था।

जब शरीर पर खून बह रहा था और रिस रहा था, तब दुर्गाज्योति ने कहा: “मैं आपको अपना शरीर अर्पित करती हूँ। इसे मेरी भेंट के रूप में स्वीकार करें।”

“क्या आप वाकई ऐसा करना चाहते हैं?” अंधेरे से एक आवाज आई।

"हाँ।"

“तुम सब कुछ दांव पर लगा दोगे। मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ सकती और न ही छोड़ना चाहूंगी।”

“मुझे परवाह नहीं।” दुर्गाज्योति ने सिर हिलाया। “मैं चाहती हूँ कि यह दुर्व्यवहार बंद हो जाए।”

और ऐसा होगा, क्योंकि तब तुम एक साधारण महिला नहीं रहोगी।

दुर्गाज्योति को अंदर ही अंदर खुशी का एक तेज एहसास हुआ, लेकिन उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। “मैं कुछ बनना नहीं चाहती। मैं महानता के लिए प्रयास करना चाहती हूँ।”

"अच्छा।"

और अँधेरे से मांस का एक बड़ा, गहरा पंजा निकला और दरवाजे से मांस छीन लिया। उसे अपनी जांघ में दर्द महसूस हो रहा था, जहाँ उसने यह भेंट चढ़ाने के लिए खुद को काटा था। वह इंतज़ार करती रही, क्योंकि उसे बागुल नामक प्राणी के चबाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

“यह बहुत स्वादिष्ट है। मैं तुम्हें महसूस कर सकती हूँ,” उसने फुफकारा। “अब मैं तुम्हारी हो जाऊँगी और तुम मेरे।” आखिरी शब्द इतना द्वेषपूर्ण और भयावह था कि दुर्गाज्योति को अपने पेट में, अपनी रीढ़ की हड्डी में कुछ हलचल महसूस हुई और फिर ऊर्जा की एक किरण उसके अंदर से निकली, उसके मुँह और नाक से धुएँ का एक झोंका निकला। उसे महसूस हुआ कि वह इसके लिए तैयार है।

वह दुर्जय को हराने के लिए तैयार थी।

*

दुर्गाज्योति अपने घोड़े पर सवार थीं, सिर पर फन डाले हुए, युयुधन के साथ द्वारकीपुर के बाहरी इलाके की ओर जा रही थीं, जहाँ घाटियाँ मिलती थीं, जहाँ आसमान शांत था और कोई ऊँची मीनारें या इमारतें नहीं थीं, बस हरियाली और घने पेड़ों की छाँव थी। वह चुपचाप आगे बढ़ रही थीं, मानो वह उस राज्य में एक अजनबी हों जिसे उन्होंने प्रद्युमन के साथ मिलकर बनाया था।

“क्या कोई आपकी अनुपस्थिति पर सवाल उठाएगा?” युयुधन ने पूछा।

“मैंने अपनी दासियों को सबको यह बताने को कहा है कि मैं बीमार हूँ, लेकिन मेरी सहायता

राक्षसों के साथ है। यदि वे आक्रमण करते हैं और शांतिपूर्ण समाधान नहीं सुनते, तो मेरे वितीहोत्र उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। बाकी सभी को बलराम और अन्य स्थानों पर भेज दिया गया है।" उसने धीरे से कहा, यह जताने की कोशिश करते हुए कि कृष्ण मिल गए हैं, क्योंकि इससे युयुधन के लिए पूरी स्थिति ही बदल जाती। द्वारका के सभी लोग अभी भी अपने पूर्व राजा कृष्ण के कट्टर अनुयायी थे, और प्रद्युमन के सम्मान का एक कारण उनके पिता भी थे।

और दुर्भाग्यवश, वितीहोत्रों की संख्या कम थी, इसलिए वह उनका उपयोग नहीं कर सकी। उसे कुछ वितीहोत्र पीछे छोड़ने पड़े क्योंकि पकड़े जाने पर वे स्थिति को संभाल सकते थे।

उसका हाथ हमेशा की तरह कांप रहा था, लेकिन उसने इस बारे में सोचना बंद कर दिया। उसे महसूस हो रहा था कि वह अंदर से बुरी तरह टूट रही है।

"अच्छा, आप तैयारी करके आए हैं।"

मैं तैयार हूँ। मैं हमेशा तैयार रहता हूँ। तुम्हारी टीम कहाँ है?

"यह छोटा है लेकिन प्रभावी है। हालांकि, हम वितीहोत्र का उपयोग कर सकते थे।"

"मैं उन्हें इतने महत्वपूर्ण मिशनों पर साथ ले जाना पसंद नहीं करती, क्योंकि वे बेकाबू हो सकते हैं।" उसने गुनगुनाया। जब उसने दुर्जय के साथ वितीहोत्रों की रचना की थी, तब उससे जुड़ी कई पेचीदगियाँ थीं। शुरुआत में उन्हें वश में नहीं किया जा सकता था। वे केवल उन्हीं आदेशों का पालन करते थे जो उन्हें समझ में आते थे। लेकिन उसने अपने आकर्षण से उन्हें बांध लिया और जादू का प्रयोग करके उन्हें नियंत्रित कर लिया। जिस यात्रा पर वह थी, उसमें वह वितीहोत्रों की वजह से मुसीबत में पड़ने का जोखिम नहीं उठा सकती थी, क्योंकि अगर वे खुद को मुक्त कर लेते, तो उसका दम घुट जाता और उसकी आत्मा उसके मुँह से खींच ली जाती।

"ठीक है।"

वे गांवों और कस्बों से दूर, एक सुनसान इलाके में, एक पीपल के पेड़ के पास चले गए, जहाँ लगभग दस लोग बैठे थे। कुछ लोग सेब चबा रहे थे, जबकि कुछ बातें कर रहे थे और अपनी तलवारें तेज कर रहे थे। वे सभी खुरदुरे और बेढंगे दिख रहे थे। बिल्कुल भी सैनिक जैसे नहीं, बल्कि ऐसे लग रहे थे जैसे तलवारबाजी में ही पले-बढ़े हों।

"तो तुमने मुझे डाकू पकड़वा दिए?"

"किराए के सैनिक कहना ज़्यादा सही रहेगा। और अगर पोर्टल खोलना पड़े तो विद्याधरा भी मौजूद है।" उसने बैंगनी गाउन और गहरे रंग की लिपस्टिक लगाए लड़की की ओर इशारा किया।

"महान।"

"वे प्रद्युमन के सच्चे वफादार हैं। वह उन्हें साम्राज्य के गंदे काम सौंपा करता था," युयुधन ने समझाया। "वे कभी भी उसे धोखा नहीं देंगे और इसका मतलब है कि वे हमें भी धोखा नहीं देंगे।"

दुर्गाज्योति ने सिर हिलाया, हालाँकि वह इतनी आसानी से सहमत नहीं हुई थी। "क्या हम शुरू करें?"

"ज़रूर। आगे बढ़ो।"

दुर्गाज्योति अपने घोड़े से उतरी और उन लोगों की ओर बढ़ीं, जिनमें से अधिकांश ने उन्हें

देखकर सीधे खड़े हो गए, जबकि कुछ नहीं हुए। कुछ लोग वैसे ही बैठे रहे। "सभी को नमस्कार। इतनी कम सूचना पर आने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

किसी ने जवाब नहीं दिया।

“हम आज यहाँ आपके राजा, हमारे राजा प्रद्युमन के साथ न्याय करने के लिए एकत्रित हुए हैं,” उसने कहा। “काश मैं अपनी सेना ला पाती और हम रसातल के रक्तरंजित द्वारों में घुसपैठ कर पाते, लेकिन हमारी रानी ने शांति समझौता कर लिया है, इसलिए मेरे सैनिकों को देखा नहीं जा सकता। राक्षसों को पता नहीं चलना चाहिए कि हम कैसे प्रवेश कर रहे हैं और कब वापस आ रहे हैं। हम इतनी आसानी से प्रवेश करते हैं और अपना हक ले लेते हैं। समझ में आया?”

उन सभी ने एकमत होकर सिर हिलाया।

“अच्छा। तो फिर सबसे पहला काम मायासुर को पकड़ना है,” उसने कहा।

“और वह कहाँ होगा?” विद्याधर ने पूछा।

दुर्गाज्योति के पास इसका कोई जवाब नहीं था। दरबार में प्रद्युमन के साथ आम सभा कक्ष में हुई उनकी आखिरी मुलाकात के बाद, उन्हें यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि उनके राजा ने उन्हें कहाँ भेज दिया है।

“मुझे पता है,” युयुधन आगे आया। “प्रद्युमन ने उसे एक गेस्ट हाउस में ठहराया था और उसे सर्वोत्तम सुरक्षा प्रदान की थी।”

“तो हमें वहीं चलना चाहिए,” दुर्गाज्योति ने जोर देकर कहा।

“लेकिन अगर हम इस पर हमला करेंगे, तो उन्हें पता चल जाएगा,” युयुधन ने विरोध करते हुए कहा। “रुक्मिणी को तो अंदाजा हो ही जाता।”

“नहीं, वे ऐसा नहीं करेंगे,” उसने आगे कहा। “किराए के सैनिक तो भीड़ में घुलमिल जाएंगे। इसे अपहरण जैसा दिखना चाहिए।”

युयुधन आश्वस्त नहीं था, लेकिन वह यह भी जानता था कि बहस करने का कोई फायदा नहीं है। इसके पीछे दुर्गाज्योति का हाथ था। उसने ही यह कहा था, इसलिए उन्हें उसका पालन करना ही था।

“तो चलिए!” दुर्गाज्योति ने घोषणा की।

*

मायासुर का एक महल था।

दुर्गाज्योति को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसे यह दिया गया है, लेकिन प्रद्युमन वास्तव में ऐसा व्यक्ति था जो एहसान चुकाने के लिए इस तरह की चीजें दे देता था। उसने अपने भाड़े के सैनिकों को उचित समय का इंतजार करने का आदेश दिया और फिर उन्हें हमला करने का आदेश दिया। जब वे हमला कर रहे थे, वह दूर हरे-भरे चरागाहों में खड़ी होकर अपने घोड़े पर सवार युयुधन के साथ अपने सामने के अंधेरे को देख रही थी। भाड़े के सैनिकों के हमले के दौरान बहुत चीख-पुकार मची हुई थी, सैनिकों की रीढ़ की हड्डियाँ चकनाचूर हो रही थीं और उनकी आँखें निकाल ली जा रही थीं। दुर्गाज्योति इसका इंतजार कर रही थी।

“क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?” उसने पूछा।

“हां, मैं हूं,” उसने कहा। “और पूछने का क्या फायदा?” उसने चिढ़ाते हुए कहा।

दुर्गाज्योति प्रतीक्षा करती रही और जैसे ही तुरही की तेज़ आवाज़ सुनाई दी, वह घोड़े पर सवार होकर महल में दाखिल हुई। उसका चेहरा एक नकाब से ढका हुआ था। स्थिर शरीरों को देखकर उसका चेहरा लाल हो गया। उनके चेहरे काले थे। उनकी आँखों पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं।

म्यान सहित उसका खंजर उसके पास था। वह जानती थी कि अगर कोई उस पर हमला करता है, तो वह बस वार करके उसकी मांस-हड्डियाँ चीर देगी।

“कितना भयानक नरसंहार! अच्छा विचार था, उन्हें आंखों पर पट्टी बांध दी।”

भाड़े के सैनिक शक्तिशाली हैं।

“बेशक, सबसे अच्छे। इसीलिए तो उन्हें गंदे काम करने के लिए नियुक्त किया गया था।”

वह प्रभावित हुई। घोड़े से उतरकर महल में प्रवेश करते ही उसने देखा कि सबसे आगे कौन खड़ा है, हथकड़ी पहने और चेहरा बोरी से ढका हुआ। दुर्गाज्योति ने यह भी देखा कि वहाँ और भी लोग थे, विशेषकर वे स्त्रियाँ जो उसने अपने लिए रखी थीं। सभी नग्न और आकर्षक लग रही थीं। वह अपने जीवन का भरपूर आनंद ले रहा था।

दुर्गाज्योति, मायासुर के बगल में बैठी थी, जो कराह रहा था और थोड़ा नशे में था।

“इसका क्या मतलब है? ऐसा क्यों किया गया है? आखिर चल क्या रहा है?” वह जोर-जोर से चिल्ला रहा था। “मैं राजा की रक्षा में हूँ। तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो। क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा?”

“हमें मायासभा के बारे में जानने की जरूरत है,” दुर्गाज्योति ने पूछा।

"दोबारा?

“नहीं। हम यह जानना चाहते हैं कि यह रसातला में कहाँ है।”

मैं कुछ नहीं बताऊँगा!

दुर्गाज्योति ने आह भरी। उसने अपना खंजर निकाला और तुरंत मयसुर पर वार किया, उसकी कलाई काट दी जिससे सारा खून फर्श पर फैल गया और वह बंधे होने के कारण कुछ कर भी नहीं सका।

“अभी बताओ वरना अगले कुछ मिनटों में तुम्हारी मौत हो जाएगी। तुम्हारे पास ज्यादा समय नहीं है।”

“कृपया मेरे साथ ऐसा मत करो!” वह जोर से चिल्लाया।

“हमें बताओ,” उसने ठंडे स्वर में कर्कश आवाज में कहा।

“मेरा परिवार है,” वह रोते हुए बोला।

“नहीं, आपको इसकी जरूरत नहीं है,” दुर्गाज्योति ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

“ठीक है, मैं नहीं,” उसने कहा। “लेकिन फिर भी, जीवन में इससे कहीं बढ़कर भी बहुत कुछ है। मायासभा में जीना व्यर्थ है... ठीक है, मैं बहुत ज्यादा खून बहा रहा हूँ।”

“रसातला में यह कहाँ है?” उसने ठंडे स्वर में फिर पूछा। “यह कहाँ है?”

मायासुर थोड़ी देर रुका और फिर बोला, "वह वहाँ नहीं है।"

"आपका क्या मतलब है?'

उन्होंने समझाया, “यह रसातला में नहीं है। यह कभी रसातला में नहीं था।”

एक पल के लिए वह असमंजस में पड़ गई। जादू का स्रोत उस जगह पर क्यों नहीं हो सकता जहाँ जादू का प्रयोग हो रहा है? लेकिन फिर मायासुर ने उसकी उलझन दूर करते हुए कहा, "यह एक वैकल्पिक लोक में है जहाँ केवल मैं ही पहुँच सकता हूँ। लेकिन इसके लिए आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि मुझे ज़्यादा खून न बहे, तो क्या आप कृपया मेरा इलाज कर सकती हैं?"

दुर्गाज्योति ने कराहते हुए अपने एक आदमी को ऐसा करने का आदेश दिया और तुरंत घाव को बांध दिया।

“धन्यवाद,” उसने आह भरी। “एक अलग आयाम है। एक अलग तल है जो मैंने इसके लिए बनाया है। इसमें कोई लोकपाल नहीं है, लेकिन यह केवल भ्रमों की दुनिया है और यदि आप भ्रमों को पार कर सकते हैं, तो आप माया तक पहुँच सकते हैं। समझे? यह सबसे खतरनाक जगह है जहाँ आप हो सकते हैं और फिर भी आप वहाँ रहना चाहते हैं?”

"हाँ।"

वह गुर्राया। "ठीक है। लेकिन इस तक केवल एक ही व्यक्ति की पहुंच होनी चाहिए।"

दुर्गाज्योति ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "तुम्हारा क्या मतलब है?"

“यह... ऐसा है जैसे आपकी चेतना उस स्तर तक यात्रा करेगी और मैं आपमें से केवल एक की ही मदद कर सकता हूँ। इसमें बहुत ऊर्जा लगती है, लेकिन अंत में आपको पता चल जाएगा कि माया क्या है, इसका रहस्य क्या है और इसे कैसे वश में किया जाए।”

दुर्गाज्योति को लालच तो हुआ, लेकिन साथ ही वह यह भी सोच रही थी कि कहीं वह झूठ तो नहीं बोल रहा। कुछ पल के लिए वह शांत रही, यह सोचने की कोशिश करती रही कि शायद यह करना सही नहीं है। अकेले जाना, माया के संसार में, दर्पणों की दुनिया में, एक बुरा विचार था। "ठीक है। मैं जाना चाहती हूँ।"

"तो तुम मूर्ख हो।"

लेकिन मुझे एक बात समझ नहीं आती, अगर आपको माया का रहस्य पता है, तो आप हमें क्यों नहीं बता सकते?

“मैं नहीं कर सकता, क्योंकि मैं इसे भूल गया हूँ। क्या तुम समझते नहीं? मैं सृष्टिकर्ता हूँ और मुझे उस स्थान में प्रवेश करने से डर लगता है। वह स्थान मेरे भीतर की सबसे बुरी भावनाओं को बाहर लाता है और तुम्हारे भीतर भी सबसे बुरी भावनाओं को बाहर लाएगा। तो, क्या तुम निश्चित हो?”

दुर्गाज्योति ने अपने जबड़े भींच लिए। वह युयुधन की गंभीर आँखों को देख सकती थी, जिसे वह निराश नहीं करना चाहती थी, लेकिन सबसे बढ़कर, वह प्रद्युमन को निराश नहीं करना चाहती थी। वह उसका प्रेमी था। वही था जिसके साथ वह रहना चाहती थी...

“ठीक है,” उसने कहा। “तो चलिए मायासभा चलते हैं, ठीक है?”

26

बलराम जानता था कि उसे सच बोलना ही होगा।

यही सही समय था, यही उचित क्षण था। लेकिन उसे चुनना था—किसे बताए? वफादार नौकर को या अपनी पत्नी को? असल में उसे इस बात का बहुत दुख था कि खाता-बहीखाना कौन है। लेकिन उसे किसी पर तो भरोसा करना ही था। इससे भी बुरी बात यह थी कि वह कुछ समय से अंधकों के साथ था और वह देवमेधा के जवाब का इंतजार कर रहा था कि क्या वह मुलाकात के लिए राजी हुई है या नहीं। सत्यकी तो अब और भी बेचैन हो रहा होगा।

लेकिन इससे भी बुरी बात यह थी कि एक नई समस्या खड़ी हो गई थी। देवमेधा की बेटी, सोनजा। उसे सोनजा को शांत करना था।

बलराम अपने कमरे में बैठा था और खिड़की से बाहर देखते-देखते ऊब रहा था। आसमान के नज़ारे के बजाय, उसे पहाड़ी के भीतरी हिस्से दिखाई दिए जहाँ एक बड़ा बाज़ार बना हुआ था, एक के ऊपर एक लंबे पुल थे, और पहाड़ के भीतर ही अलग-अलग स्तर थे जिनमें विभिन्न प्रकार के लोग रहते थे। वे सभी झोपड़ियों और छोटे घरों में रहते थे और सबसे खूबसूरत इमारत देवमेध का महल था जो उसे सबसे ऊपरी स्तर पर दिखाई दे रहा था।

“देवमेधा ने अभी तक कोई जवाब नहीं दिया है। मुझे कृतवर्मा को शामिल करना चाहिए था। वह मुझे अच्छी तरह जानता है।”

“लेकिन वह यथासंभव लंबे समय तक उनके साथ रहे। वृष्णि वंश में जन्मे उन्होंने अंधक मार्ग चुना और देवमेध का समर्थन करने के लिए आंखों पर पट्टी बांधी,” रेवती ने कहा। “लेकिन एक और बात है जो आपको परेशान करती है।”

“मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ, पर मुझे पक्का नहीं पता कि मुझे इस पर विश्वास करना चाहिए या नहीं।” उसने मुड़कर देखा तो पाया कि वह बिस्तर पर लेटी हुई है। शेरपा के खुलासे और उसकी पत्नी को इसकी जानकारी होने की बात उसके मन में खटक रही थी। बहीखाते में अंधका परिवार के ठिकाने की जानकारी थी, और शेरपा का दावा या तो झूठ हो सकता था या उसकी पत्नी की सच्चाई। वह दुविधा में था, लेकिन जब उसने उसकी नम आँखों में देखा, तो उसे लगा कि वह उससे अपने मन की बात कह सकता है।

“यह क्या है?” उसने पूछा।

उन्होंने कहा, "यह लेजर के बारे में है।"

"क्या?"

वह रुका। "अकोरजी कहाँ है?" अचानक उसे अपने भरोसेमंद कमांडर की याद आ गई।

“मैंने उसे एक काम से भेजा है,” रेवती ने मुस्कुराते हुए कहा। “उम्मीद है आपको कोई आपत्ति नहीं होगी।”

“क्या काम है?”

*

अकोरजी लगातार तीसरे दिन सोनजा का पीछा करते हुए बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। एक समय था जब वह ऐसा ही करता था—लोगों का पीछा करता और फिर अपने नेता को उनकी सूचना देता। अकोरजी एक जासूस था। वह भीड़ में घुलमिल जाता था। लेकिन आंखों पर पट्टी बांधे लोगों के बीच वह कैसे घुलमिल सकता था? उसे कुछ पता नहीं था। इसलिए, उसे चुप रहना पड़ा।

अकोरजी ने सोन्या की एक आदत पर ध्यान दिया था। वह कई बार बाहर जाती, भोजन की तलाश करती, अपने सैनिकों से बात करती और फिर रात भर के लिए गायब हो जाती।

आज को छोड़कर। आज वह निचले तल पर चल रही थी और उसके साथ उसके सैनिक नहीं थे, लेकिन उसने वह कंगन नहीं पहना था जो बजता और लोगों को बताता कि कोई शाही व्यक्ति अभी-अभी गुजरा है। देवमेधा के सभी उच्च कुलीन लोग इसे पहनते थे, ताकि अन्य वर्ग के लोग जान सकें कि यह वे हैं।

उसे उस लड़की के बारे में कुछ गलत जानकारी जुटाने के लिए कहा गया था, लेकिन वह बेदाग थी।

वह गुफाओं से बाहर उसके पीछे-पीछे गया, निकास द्वार से वे पहाड़ी से निकलकर बर्फीली घाटियों में पहुँच गए जहाँ भीड़ कम थी। उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा, लेकिन वह तुरंत एक दीवार के पीछे छिप गया और ऊपर की एक संरचना पर चढ़ गया ताकि वह ऊपर से नज़ारा देख सके। वह फुर्ती से उसके पीछे चलता रहा, उसके कदमों की आहट बिल्कुल शांत थी।

फिर उसने देखा कि वह सुनसान इलाके में किससे मिल रही थी। वह एक पथरीली इमारत थी, बर्फ घनी थी, लेकिन अकोरजी सामने खड़े व्यक्ति को देख सकता था, जिससे वह मिल रही थी।

कृतवर्मा, अंधकों का सेनापति।

और इससे पहले कि वह कोई अनुमान लगा पाता, दोनों ने एक-दूसरे को चूम लिया।

*

“क्या तुम्हें लगता है कि तुम उस पर भरोसा कर सकती हो?” उसने उससे पूछा। “गंदगी वाली बात को लेकर।”

"उसे ऐसा करना ही चाहिए। वह इसमें माहिर है।"

“मुझे लगता है कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए,” बलराम दुविधा में था। वह निराश था।

“क्या बात है?” वह अपने बिस्तर से उठी, पीछे से उसे गले लगाया और फिर से पूछा, “बताओ मेरे प्यार, वरना तुम्हारे सिर पर चप्पल पड़ेगी।”

हालांकि हालात बेहद गंभीर थे, फिर भी वह मुस्कुराया। "बात ये है... मुझे तुम दोनों के बीच किसी ने बताया है कि एक लेजर है जो दुर्गाज्योति और प्रद्युमन के लिए काम करता है और यहाँ तुम दोनों के बीच समस्या पैदा करने और मेरी योजनाओं को बिगाड़ने आया है।"

उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "और आपको लगता है कि यह अकोरजी है?"

“यह तुम नहीं हो सकतीं। तुम मेरे बच्चों की माँ हो।”

वह मुस्कुराई। “क्या पता वो व्यक्ति तुम्हारे दिमाग से खेल रहा हो? बाला, किसी पर भरोसा

मत करो।"

बलराम ने सिर हिलाया। वह सही थी। भला वह अपने उस भरोसेमंद कमांडर पर अविश्वास करने की हिम्मत कैसे कर सकता था जिसने उसके लिए अपनी जान कुर्बान कर दी थी। वह आगे बढ़ा और उसे सामने से कसकर गले लगा लिया, उसके गाल पर चुंबन किया, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। वे उसी मुद्रा में रहे जब तक बलराम ने सिपाही को अंदर आने का आदेश नहीं दिया।

"यह क्या है?" उसने पूछा।

"महाराज, यह महारानी हैं।" सिपाही ने झुककर अभिवादन किया। "वह आपसे मिलना चाहती हैं।"

"क्यों?"

"उसने वृष्णि परिवार के साथ साझेदारी करने का फैसला कर लिया है।" उसका लहजा व्यंग्यपूर्ण था, लेकिन उसने यह बात ऐसे कही मानो इस मामले में उसके पास कोई विकल्प ही न हो। "और वह चाहती है कि आप भी यह बात सुनें।"

*

अकोरजी यह सुनकर चौंक गए और एक पल के लिए स्थिर रहे। कृतवर्मा और सोन्या एक-दूसरे से प्यार करते हैं। वे आपस में बातें कर रहे थे, लेकिन ऊपर से उन्हें सुनाई नहीं दे रहा था। अकोरजी आगे की ओर झुके, मानो किनारे से गिरने ही वाले थे, तभी उन्होंने सुना:

"हमें वृष्णि परिवार पर छापा मारना होगा," सोन्या ने कहा। "मां के फैसले का इंतजार मत करो। वह निष्क्रिय हैं।"

"लेकिन मैं उसके खिलाफ नहीं जा सकता," जनरल ने कहा। "मैंने अपनी वफादारी उसके प्रति समर्पित कर दी है।"

और मेरे लिए भी। मैं रानी हूँ, अगली रानी हूँ।

"लेकिन अभी नहीं। फिलहाल तो वही मेरी जीवनसाथी है," उसने कहा। "मुझे माफ करना, मेरी प्रिय, लेकिन यह संभव नहीं है।"

एक पल के लिए, सोन्या गुस्से में आ गई और उसने उसे दूर धकेलने की कोशिश भी की, लेकिन उसकी आवाज में संयम था, मानो वह उसके सामने कमजोर महसूस कर रही हो।

"तो मैं इसे खुद ही कर लूंगा। आप जानते हैं कि मेरे बहुत सारे वफादार समर्थक हैं। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि मैं इसे कर दूं।"

"तुम मूर्ख बनोगे, क्योंकि तब मुझे तुम्हारी माँ का पक्ष लेना पड़ेगा और इससे हमारे बीच लड़ाई हो जाएगी। ऐसा मत करो। धैर्य रखो।"

"मेरे पास प्रत्यक्षदर्शी गवाह था, कृतवर्मा! क्या तुम समझते नहीं? उसने मुझे बताया था कि सत्यकी ने मेरे भाई की हत्या की थी और अब तुम चाहते हो कि मैं जाकर उनसे दोस्ती कर लूँ।"

"तुम्हारी मां वृष्णि का पक्ष नहीं लेगी।"

"वह तो चश्मदीद गवाह वाली बात पर भी यकीन नहीं करती। वह मानना ही नहीं चाहती। उसे लगता है कि मैं ये सब मनगढ़ंत कहानी बना रही हूँ ताकि मुझे उनसे लड़ने का बहाना मिल जाए।"

“लेकिन वह तुम्हारी बात पर यकीन करने को तैयार होगी,” उसने कहा। “लेकिन बात सिर्फ कहने की नहीं है। बात वृष्णि वंश से लड़ने की क्षमता की है। हम अभी अपने संसाधन, अपना घर नहीं खो सकते।”

अकोरजी ध्यान से सुन रहा था, तभी किसी ने उसे पीछे से कॉलर पकड़कर धक्का दिया।

“तुम कौन हो? हमारी राजकुमारी की जासूसी क्यों कर रहे हो?” वह एक अंधका सैनिक था, और शायद सोन्या ने उसे इसलिए रखा था ताकि कोई उसका पीछा न कर सके।

अकोरजी को अपनी ओर एक धारदार हथियार आता हुआ दिखाई दिया और वह तुरंत लुढ़क गया, उसने अपना मुड़ा हुआ खंजर निकाला और सिपाही की जांघ में घोंप दिया। सिपाही के शरीर से बहुत खून बहने लगा और वह चीख उठा। वह जमीन पर गिर पड़ा, जिससे सोन्या और कृतवर्मा घबरा गईं।

“नहीं, नहीं...” अकोरजी ने पीछे हटते हुए और खुद को छिपाने के लिए विपरीत दिशा में चढ़ते हुए शाप दिया।

*

बलराम ने महल में प्रवेश करते ही कुछ देखा। वह एक खाली कमरा था, जिसमें एक पुल था जिस पर कोई किनारा नहीं था, और चारों ओर अनंत अंधकार छाया हुआ था। वहाँ एक गंजे आदमी की मूर्ति थी, जिसने काला वस्त्र पहना हुआ था। बलराम समझ गए कि यह वही राक्षस अंधका था जिसकी वे सब नरसिम्हा के समय में पूजा करते थे।

देवमेधा अपने सिंहासन पर बैठी थी, उसके दोनों हाथ कुर्सी की भुजाओं पर थे, झुर्रियों से उसका चेहरा और भी गहरा हो गया था, और उसके सैनिक उसके चारों ओर थे।

“मैं रानी की मदद कैसे कर सकता हूँ?” बलराम ने शरारती लहजे में पूछा।

"मैं सोच रहा था।"

“जी हां, आपने देखा है,” बलराम मुस्कुराया। “और कोई अच्छी खबर है?”

मैं सत्याकी की बात सुनूंगा। अगर हम एकमत हैं, तो मैं उनकी बात मानने के लिए तैयार हूं, बशर्ते वह एक बात पर सहमत हों।

"और वह यह है कि?"

“उसके पिता के साथ एक घंटा,” उसने सख्ती से जवाब दिया। “मैं सच जानना चाहती हूँ।”

बलराम एकदम जम गया। वह जानता था कि अगर उसने अपने बेटे पर आरोप लगाया तो उस आदमी को एक घंटे के लिए कमरे में लाने से हंगामा मच जाएगा, जिससे देवमेध सत्यकी से अपने संबंध खराब कर लेगा। और कूटनीतिक संबंध बनाने का उसका प्रयास भी विफल हो जाएगा।

और बदले में,” उसने कहा, “मैं चाहूंगा कि तुम प्रद्युमन के खिलाफ मेरी तरफ से शपथ लो।”

उसने सिर हिलाया। "जैसा आप कहें। हम दोनों कबीले आपके साथ रहेंगे।"

ये शब्द उसे अच्छे लगे, लेकिन वह जानता था कि इनमें कई परेशानियाँ छिपी हैं। वह चिंतित था। वह तनाव में था। बलराम ने अपने जबड़े कसे और फिर उस क्षण को जाने दिया, क्योंकि उसने अकुरजी की खोज में निकलने का फैसला किया।

उसे उम्मीद थी कि उसे कुछ मिल गया होगा।

*

सोनजा अपना सामान पैक कर रही थी। वह बहुत परेशान थी, खासकर अपनी माँ और बलराम के साथ हुए पूरे विवाद के बाद से। उसने हाँ कर दी थी! भला कैसे? वह कैसे भूल सकती थी कि वृष्णि परिवार दुष्ट और नीच था? वे वाकई भयानक थे। उसने इस बारे में सोचा था। वह जानती थी कि वह सही काम कर रही है और वह था सत्यकी का अपहरण करना और यह सुनिश्चित करना कि यह मुलाकात न हो।

आप कहाँ जा रहे हैं?

उसके पीछे से एक आवाज आई।

सोनजा घबराकर मुड़ी और सामने खड़े उस गंजे सिर वाले धोखेबाज को देखा। वह अपने सलीके से कटे नाखूनों को फूंक रहा था और वहाँ मौजूद हर किसी से बड़ा दिख रहा था। आखिर वह एक शक्तिशाली व्यक्ति था, कृष्ण का भाई था और उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

“आपने प्रवेश कैसे किया?”

“यहां हर कोई मुझे जानता है। वे तुम्हारी मां से भी ज्यादा मेरा सम्मान करते हैं,” उन्होंने कहा।

सोनजा ने सिर हिलाया। "मैं कहाँ जा रही हूँ, इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है।"

“हाँ, ऐसा है, लेकिन।”

उसने कुछ नहीं कहा। वह तैयार थी। उसने अपना सारा सामान पैक कर लिया था और जाने ही वाली थी कि उसने देखा कि बलराम ने अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया है।

“अगर तुम्हें लगता है कि तुम अपने इस बेमेल गिरोह के साथ कुछ बेवकूफी भरा काम करने के लिए भाग जाओगे, तो मेरी बात सुनो,” बलराम ने नरम स्वर में कहा। “अगर सत्यकी वाकई दोषी है, तो मैं उसे सजा दिलवा दूंगा। लेकिन इस बैठक को बेवजह खराब मत करो। समझे?”

उन्होंने कहा, "आप अपने इरादों पर ध्यान दे रहे हैं और यही समस्या है।"

“क्या हम सब नहीं हैं? लेकिन आप जो कर रहे हैं, वह जल्दबाजी है। देवमेध और सत्यकी का मिलन द्वारका के इस तरफ सभी के जीवन में एक ऐतिहासिक क्षण है। कृपया इसे होने दीजिए।”

उसने सिर हिलाया। "तुम्हारी लाश पर से होकर।"

"तब मेरे पास तुम्हारे और कृतवर्मा के बारे में तुम्हारी माँ को बताने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा।"

एक पल के लिए वह थम गई, डर से जम गई। उसे कैसे पता चला? उसने खुद से पूछा। और फिर उसे एक भयानक सच्चाई का एहसास हुआ। वही वह व्यक्ति था जिसने उस पर जासूसी करने वाले उस आदमी को भेजा था जब उसके एक सैनिक ने उस पर हमला किया था। "मुझे नहीं लगता कि उसे बुरा लगेगा।"

“ओह, वो ऐसा करेगी ही, क्योंकि अंधका के राजपरिवार को ब्रह्मचर्य का जीवन जीना होता है। पता नहीं उस समय उसका क्या हाल होगा जब सब कुछ गड़बड़ हो जाएगा।”

बलराम ब्लैकमेल नहीं करना चाहता था, लेकिन उसके पास कोई विकल्प नहीं था। उसे बुरा लग रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी के जीवन में खलनायक बन गया हो, लेकिन उसे यह करना ही पड़ा।

“और आपको लगता है कि इससे मैं रुक जाऊंगा? अपनी माँ को निराश करने से?”

“हां,” उसने भावहीनता से कहा।

वह लगभग हार मान चुकी थी, उसे इसका एहसास हो रहा था। लेकिन एक दृढ़ संकल्प जागा, हार न मानने की भावना जागृत हुई। "आप सही कह रहे हैं," उसने आगे कहा। "लेकिन देखिए, आप मुझे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं..." वह दरवाजे की ओर बढ़ी और उसे खोला, "...एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो डरी हुई है, लेकिन आप गलत हैं। मैं डरी हुई नहीं हूँ!"

और फिर उसने पीछे से दरवाजा जोर से बंद कर दिया, उसे अंदर ही रोक लिया, क्योंकि उसे सामने रोशनी दिखाई दे रही थी और जीत उसकी मुट्ठी में बेहद करीब थी।

कृष्ण जाग गए।

उसे याद नहीं था कि उसके साथ क्या हुआ। उसे यह भी याद नहीं था कि पहले वहाँ क्या था। उसे बस इतना याद था कि वह दावत में था, खाने की मेज पर बैठा था और खाना खा रहा था, तभी पहरेदार आ गए। उसके बाद सब कुछ अंधेरा हो गया। अब उसने अपने आसपास देखा और उसे ज़मीन पर साँप दिखाई दिए, और वह एक पिंजरे जैसी संरचना में था, जबकि सामने उसने कालिया को एक ऊँची जगह पर देखा। वह उस पर मुस्कुरा रहा था। दूसरी तरफ, उसके ठीक सामने, सामवा था, जो एक ढीली रस्सी से उल्टा लटका हुआ था, जिसे दो नाग एक बड़ी सीढ़ी पर पकड़े हुए थे।

कृष्ण उस जगह को देखकर भयभीत हो गए जहाँ उन्हें उल्टा लटकाया गया था। वहाँ हरे रंग के विषैले एसिड से भरा एक बर्तन था। कृष्ण को एसिड के तल में खोपड़ियाँ और हड्डियाँ दिखाई दे रही थीं और वे जानते थे कि यदि सामवा उसमें गिर गया, तो वह क्षत-विक्षत हो जाएगा, उसका मांस और त्वचा फटकर अलग हो जाएगी।

“मेरे प्रिय मित्र, शक्तिहीन स्थिति में होना कैसा लगता है?” कालिया ने जोर से हाथ पटकते हुए पूछा।

“सच कहूँ तो, बहुत अच्छा लग रहा है,” कृष्णा ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, हालाँकि वह बुरी तरह डरा हुआ था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, और वह अक्सर अपने डर को छिपाने के लिए हास्य का सहारा लेता था। “तो बताओ, हम यहाँ क्यों हैं?”

"असल में, अब जब मेरे पास आपको आंकने की क्षमता है, तो हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हम ऐसा कर सकें। आपने अपना पूरा जीवन लोगों को आंकने के अलावा कुछ नहीं किया है।"

“मुझे लगता है कि आपने गलत व्यक्ति को चुना है,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “मैंने कभी किसी का न्याय नहीं किया।”

“आपने उन्हें धर्म के पैमाने पर परखा है। कौन धर्मनिष्ठ है और कौन नहीं? लेकिन क्या आपने कभी अपने बारे में सोचा है? क्या आप धर्मनिष्ठ हैं?”

उन्होंने सख्ती से कहा, “मेरी मंशा हमेशा धर्म के प्रति ही रही है। इसमें आपको सामवा को शामिल करने की जरूरत नहीं है। उसकी इसमें कोई भूमिका नहीं है।”

लेकिन उसने ऐसा किया है, आप देख सकते हैं।

कालिया ने चुटकी बजाई और उसके आदमियों ने रस्सियाँ ढीली कर दीं, जिससे समवा तेजाब के कुंड के करीब आ गया। कृष्ण की धड़कन तेज़ हो गई, क्योंकि उसे अपने शरीर में एड्रेनालाईन का प्रवाह तेज़ी से महसूस हो रहा था। लेकिन वह इसे दिखा नहीं सकता था, क्योंकि कालिया फिर से ऐसा करने की कोशिश करेगा।

“ओह, मेरे जासूस हर जगह हैं। आप जानते हैं, सांपों में बहुत कुछ सुनने और जमीन के नीचे

रहने की प्रवृत्ति होती है। और मुझे पता चला कि आपको अपने बेटे की परवाह नहीं थी। उसके शरीर पर जो निशान हैं, खैर, वे उसी चीज के हैं जो आपने उसे दी थी।"

कृष्णा के सीने में जकड़न सी महसूस हुई। वह उस घटना को दोबारा याद नहीं करना चाहता था। "मुझे इसके लिए खेद है।"

"माफी मांगने से अतीत मिट नहीं जाएगा, है ना?" उसने पूछा। "अब बताइए, क्या हम शुरू करें?"

"क्या शुरू करें?"

"हम यहाँ क्यों हैं?" वह मुस्कुराया। "हम यहाँ आपकी परीक्षा की याद में आए हैं। कृष्ण की परीक्षा। और कोई भी गलत उत्तर, कोई भी ऐसी बात जिससे मुझे लगे कि यह वास्तविक नहीं है, तो मैं संव को जलाए जाने के और करीब ले जाऊँगा। और यदि आप अच्छा उत्तर देते हैं, और आप सच्चे और गंभीर हैं, दिखावा करने के बजाय, तो आपको वह मिल सकता है जिसके लिए आप आए हैं—मणि।"

कृष्ण को लालच तो आया, लेकिन उन्हें यह खेल खेलना बिल्कुल पसंद नहीं था। वे हमेशा दूसरों के साथ खेलना पसंद करते थे। वे निराश हुए, लेकिन फिर उन्हें हार माननी पड़ी। "ठीक है। जारी रखो।"

"ठीक है, तो पहला मामला आपकी प्रेमिका के बारे में है। कोई ऐसी जिससे आप बेहद प्यार करते थे, लेकिन फिर बात नहीं बनी। चाहे जो भी कारण हो। अब, मेरे कुछ दोस्तों और जासूसों ने मुझे बताया कि क्या हुआ था। क्या आप जानना चाहेंगे कि हम किसके बारे में बात कर रहे हैं?"

कृष्णा असमंजस में पड़ गया और उसने अपने जबड़े भींच लिए। "कौन है?"

"खैर, यह तो राधा ही थी," वह थोड़ा आगे झुका। "क्या तुम्हें वह याद है?"

वृंदावन के दिन अचानक उसके सामने लौट आए। उसे वे सारे दिन याद आने लगे जो उसने उसके साथ बिताए थे। वह उसका पहला प्यार थी, बल्कि उसका इकलौता प्यार थी। लेकिन बात नहीं बनी। निराशा छा गई। वह अब और कुछ याद नहीं करना चाहता था, लेकिन वह एक बात जानता था - आपको उस प्यार को याद रखना चाहिए जो आपने साझा किया था, न कि समय बीतने के साथ आने वाली बाधाओं को।

"हाँ," उसने धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

अच्छा, और इससे आपको कैसा महसूस होता है? उसकी यादें।

"मुझे नहीं पता," कृष्णा ने सिर हिलाते हुए कहा। "लेकिन मैंने उसके साथ ऐसा क्या गलत किया कि आप मुझे उसके लिए मुकदमे में खड़ा कर रहे हैं?"

"कैसी रक्षा प्रणाली! क्या तुम्हें याद नहीं है या मुझे तुम्हें याद दिलाना पड़ेगा?"

"क्या?" उसने थूकते हुए कहा।

"तुम उसे वृंदावन में छोड़कर मथुरा के लिए रवाना हो गए।"

उन्होंने कहा, "मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मुझे महत्वपूर्ण मामलों को निपटाना था। मथुरा को मेरी जरूरत थी।"

“हां, आपने उसके प्रति अपने प्यार से ज़्यादा अपने कर्तव्यों को चुना। इसी वजह से वह आपसे नफरत करती थी।”

“हम जवान थे। हम एक-दूसरे के प्रति आसक्त थे,” वह झूठ बोल रहा था।

उसने अपना सिर हिलाया और उंगलियां चटकाईं। उसके आदमियों ने तुरंत सामवा को छोड़ दिया और उसे तेजाब के कुंड में गिरने से ठीक पहले पकड़ लिया। एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी और कृष्ण चिल्लाए, लेकिन जैसे ही उन्होंने परीक्षा के बक्से से कूदने का फैसला किया, कालिया ने उन्हें रोक दिया।

“उसे बचाने के बारे में सोचना भी मत। जब तक तुम वहाँ पहुँचोगे, तब तक वह तेजाब के अंदर होगा।”

कृष्ण वहीं खड़े रहे, गहरी साँसें लेते हुए। “ठीक है, ठीक है। हाँ, मुझे पता है मैंने उसे छोड़ दिया और मुझे खेद है। मुझे सचमुच खेद है। अपने मामा को मारने के बाद मैं वृंदावन वापस चला गया।” बोलते-बोलते उन्हें उसके साथ किया गया आखिरी नृत्य याद आने लगा। वह कितना अच्छा था, पेड़ के नीचे, तूफानी आसमान के नीचे। और फिर उन्होंने उसकी आँखों में देखा, उसने भी उनकी आँखों में देखा और दोनों मुस्कुराए।

“प्यार के बारे में जो कहते हैं वो सच है,” कृष्णा ने मन ही मन सोचा। “आप जिनसे प्यार करते हैं उन्हें चुन नहीं सकते। चाहे आप कुछ भी चाहें। इसमें मेरी कोई गलती नहीं है कि मैं छोड़कर चला गया।”

लेकिन क्या आपको लगता है कि अगर आप उसके साथ चले जाते तो आपकी जिंदगी अलग होती? उसके बाद आपने जो कुछ भी किया, क्या आपको नहीं लगता कि आप स्वार्थी थे?

"शायद।"

और वह झूठा भी है।

"मैं झूठा नहीं हूं," उसने दांत पीसते हुए कहा।

"तुमने कहा था कि तुम उसके पास दोबारा गए थे, लेकिन तुम नहीं गए थे, है ना?"

उसकी आवाज़ में कड़वाहट झलक रही थी। "उह...मैं...मैं यहाँ धर्म को पुनर्स्थापित करने, उसके पक्ष में रहने के लिए पैदा हुआ था, लेकिन राधा के साथ रहने से मैं अपने उद्देश्य से भटक गया।"

"तो क्या आप इस बात से सहमत हैं कि आपने उसे अपने लिए छोड़ दिया? क्योंकि आप अपने गुप्त लक्ष्य से भटक गए थे?"

कृष्णा ने उदास होकर सिर हिलाया।

कालिया ने सिर हिलाकर सहमति दी और फिर उंगलियां चटकाईं। एक पल के लिए कृष्ण को लगा कि समवा दूर जा गिरेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह पीछे की ओर खिंच गया।

कालिया ने कहा, "ईमानदारी का क्षण हमेशा सराहनीय होता है।"

“धन्यवाद,” कृष्णा ने आह भरी। “क्या हमारा काम यहाँ समाप्त हो गया?”

“बिल्कुल नहीं,” कालिया मुस्कुराई। “उस समय के बारे में क्या जब आप द्वारका की खोज में गए थे और आपने स्थानीय लोगों को इसलिए मार डाला ताकि ययाती वहां बस सकें?”

कृष्ण को पता था कि ऐसा होने वाला है। वह इससे बिल्कुल भी खुश नहीं थे। यह उनके अपराधबोध का क्षण था, उन्होंने जो किया था वह गलत था। "मुझे अपने लोगों के अस्तित्व के बारे में सोचना ही था।"

“और फिर भी, क्या आपको लगता है कि अपने लोगों के लिए दूसरों को धोखा देना जायज़ है? क्या आपके लोगों का उद्देश्य बाकियों से बड़ा है? क्या वे ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं? क्या महान भगवान कृष्ण सबसे अधिक मेहमाननवाज नहीं हैं?”

मैं बस एक इंसान हूँ।

“नहीं, मेरे स्वामी, आप गलत हैं। आप एक देवता हैं।”

कृष्ण ने आह भरी।

“और फिर,” कालिया ने आगे कहा, “आपने उन्हें कुरुक्षेत्र युद्ध में लड़ने तक नहीं दिया। बल्कि, आपने उन्हें द्वारका में ही रोक रखा था। जब सभी जनजातियाँ वहाँ थीं, तब उनकी कोई भागीदारी नहीं थी। ऐसा क्यों? क्या आप स्वार्थी थे, या आपको उनकी आजीविका की चिंता थी?”

कृष्ण जानते थे कि उन्होंने उन्हें इसकी अनुमति नहीं दी थी। वे नहीं चाहते थे कि वे इसमें भाग लें। “यह अस्तित्व का सवाल है। मैंने अपने लोगों के बारे में सोचा।” और उन्हें उम्मीद थी कि सामवा फिर से गिर जाएगा, लेकिन कालिया ने अपनी उंगलियां नहीं चटकाईं। वे शांत रहे और उनके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान आ गई।

“मुझे वास्तव में खुशी है कि आप ईमानदार थे। मुझे आपसे इतनी ईमानदारी की उम्मीद नहीं थी।”

कृष्णा ने कंधे उचकाते हुए कहा, "क्या तुम मुझे झूठ बोलने का मौका नहीं दे रहे हो?"

“ऐसा झूठ जो दूसरों को तबाह कर दे, वह झूठ नहीं है। वह तो विनाश की ओर ले जाने वाला एक प्रलय है।”

कृष्ण मान गए। उन्होंने अतीत में बहुत कुछ किया था, लेकिन यह उनमें से एक था जिसे जीतने से उन्हें डर लगता था, और एक और बात थी, जिसके बारे में वे जानते थे कि कालिया जल्द ही उठाएगा। क्योंकि इसका सीधा असर उनके भीतर के व्यक्ति पर पड़ता था।

“जब पांडवों ने,” उसने कहना शुरू किया और कृष्ण ने अपना सिर नीचे कर लिया, “इंद्रप्रस्थ बनाना चाहा, तो आपने क्या किया? आपने क्या सुझाव दिया?”

"इसे जंगल में बनाना।"

“और जंगल में कौन रहता था?”

“तक्षक।”

“मेरे सगे-संबंधियों, मेरे भाई। और तुमने पांडवों को क्या करने को कहा था?”

“उनसे छुटकारा पाओ,” कृष्ण ने अपराधबोध से ग्रस्त होकर उत्तर दिया। “यह एक नरसंहार था, क्योंकि पांडवों ने नागों की बेरहमी से हत्या कर दी थी। मुझे पता है।”

“क्या आपको उस बात का भी अफसोस है? या आपका अफसोस सिर्फ इंसानों तक ही सीमित है? क्या हम नाग महत्वपूर्ण नहीं हैं? क्या हम नाग न्यायप्रिय और पवित्र नहीं हैं? क्या

हमारे पास भी आपकी तरह दिल और आत्मा नहीं है? तो फिर इतना भेदभाव क्यों?"

कृष्ण ने अपने होंठ सिकोड़ लिए और चुप रहे। उन्हें लगा कि अब और बोलने का कोई फायदा नहीं है, क्योंकि बस यही था—सब खत्म हो गया था। उन्होंने इतने सारे गलत काम किए थे कि अब उनका सामना करना उनके लिए मुमकिन नहीं था। और कालिया सचमुच उनसे ये सब करवा रही थी।

"मुझे पता है मैंने गलती की है। मुझे पता है मैं परिपूर्ण नहीं हूँ," उसने गले से धीमी गड़गड़ाहट के साथ कहना शुरू किया। "मुझे पता है मैंने सैकड़ों-हजारों जिंदगियां तबाह कर दी होंगी। और इसका कोई औचित्य नहीं है..."

"और फिर भी ऐसा लग रहा है कि आप मुझे एक देने वाले हैं?"

"नहीं, बस बहुत हो गया," कृष्ण ने सिर हिलाते हुए कहा। "मैं एक सम्मानित व्यक्ति हूँ, लेकिन मैंने अपमानजनक कार्य किए हैं। मैं एक घिनौना इंसान हूँ। मैं एक दुष्ट और अंधकारमय व्यक्ति हूँ। मैं भगवान नहीं हूँ। मैं तो माया का आदमी हूँ!"

"अच्छा। तुम जैसे हो वैसे ही खुद को स्वीकार करो।"

उनकी आवाज़ और उंगलियों में कुछ अजीब सा भाव था, और उनके आसपास की धरती कांपने लगी। कमरे में मौजूद सभी लोगों को इसका एहसास होने लगा और उनकी आंखों में डर साफ दिखाई देने लगा। कृष्ण ने ऊपर देखा, उनकी आंखें गुस्से से लाल हो उठीं। कालिया, कृष्ण द्वारा मारे जाने से पहले ही सामवा को फेंकने का आदेश देने ही वाला था, लेकिन कृष्ण ने खुद को शांत किया और धरती कांपना बंद हो गई और सब कुछ ठीक हो गया।

"मुझे खेद है," कृष्णा ने कहा। "मैं भावनाओं में बह गया था।"

"और मुझे लगा था कि तुम्हारे पास कोई शक्तियां नहीं हैं," उसने अविश्वास से कहा।

मैं भी।

वह कुछ देर तक असमंजस में रहा। लेकिन फिर उसने कालिया को अपने ऊंचे चबूतरे से नीचे आते देखा, और फिर वह उसके बगल में जमीन पर बैठ गया।

"तुमने शानदार तरीके से परीक्षा पास कर ली है," कालिया ने कहा। "और भले ही मैं अपनी बात से मुकर सकती हूँ, मैं तुम्हारे जैसी नहीं हूँ और यही फर्क मैं तुम्हें समझाना चाहती थी। तुमने गलत आदमी को जेल भेजा है।"

कृष्ण वहीं भावहीन खड़े रहे, जब उन्होंने देखा कि कालिया अपने माथे से पत्थर निकाल कर उन्हें दे रहा है। कृष्ण ने उसे अपने हाथों में लिया और थाम लिया। "धन्यवाद, और मुझे खेद है। मुझे लगता है कि इस यात्रा ने मुझे यह एहसास दिलाया है कि मैंने क्या गलत किया है और उसके क्या परिणाम होंगे।"

"अच्छा। आपको ऐसा करना चाहिए।"

कृष्ण ने अपने पुराने शत्रु को देखा और उन्हें वही एहसास हुआ जो अक्सर होता था: समय में पीछे जाकर सब कुछ बदलने का मौका। लेकिन शायद, हर चीज़ किसी कारण से होती है और सब कुछ पहले से तय था। उन्होंने यह भी देखा कि सामवा को ऊपर खींचकर ज़मीन पर लाया जा रहा है; वह हांफ रहा था और राहत की सांस ले रहा था।

कृष्णा ने धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे लगता है कि अब हमें चलना चाहिए।"

और पहली बार, उसे सुन्नपन के अलावा कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

जब समवा को तालाब से बाहर निकाला जा रहा था, तब कृष्ण कुछ क्षण वहीं रुके रहे, तभी कुछ हुआ। उनके चारों ओर धुंध छाने लगी, जिससे कालिया इतना घबरा गया कि उसने संदेह भरी निगाहों से कृष्ण को देखा, उसके चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए। धुंध ने समवा को पकड़े हुए दोनों नागों को भी अपनी चपेट में ले लिया और कृष्ण समझ गए कि यह क्या है।

दुर्जय।

वह सोच रहा था कि अब तक वह क्यों नहीं आया, लेकिन वह सही समय का इंतजार कर रहा था। और जैसे ही नागों के चारों ओर कोहरा छाने लगा, उसने उन्हें अपनी ओर खींच लिया और उनके चेहरे और गर्दन चीर दिए, जिससे वे उस रस्सी को छोड़ बैठे जिससे सामवा बंधा था और वह गिर पड़ा...

टैंक के काफी अंदर।

इसके बाद जो चीख सुनाई दी, वह किसी व्यक्ति की अब तक की सबसे क्रूर और दर्दनाक चीखों में से एक थी।

28

प्रद्युमन को मायावती से क्या कहना है, यह समझ नहीं आ रहा था। वह अब भी असमंजस में था कि उससे कुछ कहना भी चाहिए या नहीं। उसने मायावती को काफी समय से नहीं देखा था और यह बात उसे सता रही थी। वह एक कोने में बैठा रहा और अपने नाखून चबाता रहा। मायावती ने उसकी ओर देखा, और वे दोनों आमने-सामने की कोठरियों में थे, जबकि प्रद्युमन को अपने साथी कैदियों की तरह-तरह की गालियां सुनाई दे रही थीं।

"वे मुझसे बहुत नफरत करते हैं," प्रद्युमन ने अपनी सौतेली माँ से बातचीत शुरू करने की कोशिश करते हुए हँसते हुए कहा।

"तुमने उन्हें बाकी सब लोगों से ज़्यादा नाराज़ कर दिया है।"

“मुझे पता नहीं था कि मेरे इतने सारे दुश्मन यहाँ हैं,” प्रद्युमन ने कंधे उचकाते हुए कहा। “कैसी हो माँ?” उसकी आवाज़ कोमल और सौम्य थी।

मायावती मुस्कुराईं, उनके काले होंठ उनके नुकीले दांतों से छेदे हुए थे। "और बेहतर हो सकता है।"

आप यहां कैसे पहुंचे?

“जब शंबारा उठे, तो उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि मेरे लिए भी एक जगह मिल जाए। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि यही मेरी जगह होगी।”

प्रद्युमन को आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि मायावती ने ही शंबरा के खिलाफ साजिश रची थी और प्रद्युमन ने ही उसका सिर काट दिया था।

"अगर मैं पूछूं तो, वह कैसे ऊपर उठा?"

वह एक पल के लिए स्तब्ध रह गई और कुछ बोलना नहीं चाहती थी। उसने जवाब दिया, "आप ठीक लग रही हैं।"

प्रद्युमन समझ गया कि वह शंबरा के बारे में कुछ छिपा रही है। "आखिर यह जगह क्या है?"

“यह माया द्वारा बनाई गई एक जेल है। वह इस समय बहुत शक्तिशाली है क्योंकि हम उसकी स्वप्नलोक में हैं। और वह बहुत से अन्य लोगों की चेतना को यहाँ ले आया है।”

"वास्तव में।"

“मैंने तुम्हें इतने सारे उपहार भेजे,” प्रद्युमन ने कहा, “तुमने कभी जवाब क्यों नहीं दिया?”

वह फिर रुक गई। नीचे देखते हुए। उसे आमने-सामने की बातचीत पसंद नहीं थी। कोठरी के दरवाजों से पानी टपकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह चुप रही। “मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। तुम्हें हमसे आगे बढ़ना ही था। हम दोनों का साथ नहीं हो सकता। मुझे रसातला को थामे रखना था और तुम्हें अपने पिता के राज्य की देखभाल करनी थी।”

प्रद्युमन ने सिर हिलाया। वह जानता था कि यह सच है, लेकिन वह चाहता था कि उसकी माँ उसके साथ हो। वह कुछ और कहने ही वाला था कि तभी उसके एक साथी कैदी ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा:

"अगर मैं कभी यहां से बाहर निकल पाया, तो सबसे पहले मैं तुम्हारा ही पेट फाड़ूंगा।"

प्रद्युमन ने अपनी आँखें घुमाईं। उसने कोने में बैठे भूरी दाढ़ी वाले, तेज़ नज़र वाले आदमी को देखा, जो चट्टान की तरह हट्टा-कट्टा और विशालकाय था और कुछ चबाने का शौकीन था। किसी कारणवश, प्रद्युमन को वह कहीं दिखाई दिया। उसने उस आदमी के साथ कुछ किया था, हालाँकि उसे ठीक से याद नहीं था कि क्या।

लेकिन उसने उसकी बात अनसुनी कर दी, क्योंकि दो सैनिक कोठरी की संकरी गलियों से होते हुए प्रद्युमन की कोठरी तक पहुंचे और उसे तोड़कर बाहर निकाल दिया, जिससे वे सैनिक बाहर निकल गए।

"आपकी बारी।"

प्रद्युमन जानता था कि वह सोया नहीं था, और भला कैसे सो सकता था? असल में तो वह सो ही रहा था। उसने खुद को संभाला, उसका शरीर कमजोर था, फिर भी वह मुड़ा तो देखा कि मायावती उसे टकटकी लगाए देख रही थी। प्रद्युमन ने अपना सिर घुमाया और फिर उसी अखाड़े की ओर बढ़ा जहाँ से वह कुछ घंटे पहले आया था, और उसने पाया कि उसमें कोई बदलाव नहीं हुआ था। सब कुछ वैसा ही था, जहाँ बेतरतीब लोग ताली बजा रहे थे, उनके चेहरे भावहीन थे, उनकी आँखें और उनके कपड़े सब धुंधले से दिख रहे थे।

प्रद्युम्न को एक हथियार दिया गया, और वह हथियार उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। वह एक छोटा सा खंजर था। हालात और भी बदतर हो गए। उसने लाल मिट्टी पर चलते हुए अपना पसीना पोंछा, शंबरा का सामना करने के लिए तैयार था, और सोच रहा था कि शंबरा उसके लिए क्या लेकर आएगा।

“कैसा रहा, मेरे प्यारे दोस्त?” आवाज उस तक पहुंची, हालांकि शरीर आसपास कहीं मौजूद नहीं था। “आशा है तुमने अच्छी नींद ली होगी!” और फिर ठहाकों की गूंज सुनाई दी।

“तुम कहाँ हो?” उसने गंभीरता से पूछा।

"तो क्या तुम मुझ पर फिर से हमला करोगे? ओह नहीं, कृपया मुझे फिर से उस जाल में मत फँसाना, ठीक है?"

प्रद्युम्न ने मुँह बनाया। इस बार उसने कोई जवाब नहीं दिया, जिससे यह ज़ाहिर हो गया कि उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन तभी शंबरा प्रकट हो गया। वह ठीक उसी ऊँचे चबूतरे पर खड़ा था जहाँ राजा को आदर्श रूप से बैठना चाहिए था और वह ज़ोर-ज़ोर से अपने लिए ताली बजा रहा था, मुस्कुराते हुए कह रहा था—

"तो मैं यहाँ हूँ।"

“और मैं भी। आप मुझसे क्या चाहते हैं? क्या मैं अभी आपके लिए नाचूँ?”

"शायद यह मेरी थकी हुई आँखों के लिए एक सुखद दृश्य होगा।" और फिर उसने अपनी उंगलियां चटकाईं।

प्रद्युम्न ने देखा कि जिस धरती पर वह चल रहा था, वह पूरी तरह से जलते हुए अंगारों के ढेर में बदल गई थी; जैसे जलते हुए अंगारे। प्रद्युम्न तुरंत उछलने-कूदने लगा और इस एहसास को काबू में करने की कोशिश करने लगा, लेकिन यह एहसास उस पर हावी हो रहा था, जिससे उसे

असहनीय पीड़ा हो रही थी, उसके पैर काले पड़ रहे थे और उसका गला दर्द से कराहते हुए कराह रहा था।

अगले ही पल ज़मीन समतल हो गई और वह उस पर गिर पड़ा। उसे जो कुछ भी झेलना पड़ा था, वह उसे पसंद नहीं आया और यह बात उसे परेशान कर रही थी। वह एक कठपुतली जैसा महसूस कर रहा था और उसे इसका एहसास हो रहा था। वह शर्मिंदा, आहत और सबसे बढ़कर एक छोटे, मोटे आदमी के हाथों अपमानित महसूस कर रहा था, जिसे खुद में ही असुरक्षा की भावना थी।

“तुम एक दुष्ट व्यक्ति हो,” प्रद्युमन ने उस पर व्यंग्य किया।

“मैंने तुम्हें नचाया, जो तुमने पहले कभी नहीं किया। तुम्हें शुक्रगुजार होना चाहिए, मैं तुमसे वो सब करवा रही हूँ जिसका तुम्हें पहले कभी अनुभव नहीं हुआ,” शंबारा ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा। “अब बताओ, क्या तुम अपने प्रतिद्वंदी से अपनी जान बचाने के लिए लड़ने को तैयार हो?”

प्रद्युमन को आभास हो गया था कि वह जानता है कि उसका सामना किससे होने वाला है। उसने अपनी कटार तैयार कर ली और प्रतीक्षा करने लगा। वह वही दाढ़ी वाला आदमी था जो जेल में उसके साथ था और उससे घृणा करता था। उसने प्रतीक्षा की, और फिर उसने सामने से आती हुई परछाइयों को देखा और उसका दुश्मन, जो प्रद्युमन की अपेक्षा से छोटा था, उससे भी अधिक सुंदर था और...

परिचित।

वह लड़का जाना-पहचाना था।

उसके घने घुंघराले बालों में एक पट्टी बंधी थी और उसकी आँखों में काजल लगा हुआ था। उसका चेहरा भावहीन था, और उसने एक हाथ में रथ का पहिया हथियार के रूप में पकड़ रखा था, दूसरे हाथ में एक खून से सनी तलवार थी, और वह एक ऐसा लड़का था जो अपने माता-पिता का प्यार चाहता था। यह उसे बचपन के प्रद्युमन की याद दिलाता था।

और बेशक, वह जानता था कि वह लड़का कौन था...

“अभिमन्यु,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।

अर्जुन का पुत्र, उनका शिष्य, जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्र युद्ध से पहले प्रशिक्षित किया था। अभिमन्यु उनके सामने यथासंभव जीवंत दिख रहा था, लेकिन यह कैसे संभव है?

वह मर चुका था। कुरुक्षेत्र में उसकी हत्या कर दी गई थी।

लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकते... तुम जीवित हो...”

प्रद्युमन ने अपना खंजर फेंक दिया और नम आँखों से, भक्ति भाव से परिपूर्ण होकर, अपने शिष्य को गले लगाने के लिए दौड़ पड़े, तभी अभिमन्यु ने उनके पेट में खंजर घोंप दिया और वे भयानक सदमे से पीठ के बल गिर पड़े। प्रद्युमन जमीन पर छटपटा रहे थे, तभी अभिमन्यु उनके ऊपर झुके और अपनी तलवार निकालकर उनके हृदय पर तानते हुए बोले: “तुमने मुझे अकेला छोड़ दिया। तुम मेरे साथ युद्ध में नहीं आए। तुम मेरी रक्षा करते।”

"मुझे...मेरे पिता ने मुझे ऐसा करने से मना किया था," प्रद्युमन ने कमजोर बचाव करते हुए कहा।

और उनका वह क्षण तब टूट गया, जब उसने अपने हथियार से प्रद्युमन के दिल पर तेजी से वार किया, यह जानते हुए कि इससे वह कोमा में चला जाएगा, तभी वह लुढ़क गया और अपनी कटार की ओर झपटा।

"अरे वाह, गुरु और शिष्य आपस में लड़ रहे हैं, कितना प्यारा नज़ारा है!" शंबारा ने ऊपर से चिल्लाते हुए कहा। "आपने इसकी उम्मीद नहीं की थी, है ना? अतीत की यादें ताजा हो गईं। कोई ऐसा जिस पर आपने भरोसा करना छोड़ दिया था, कोई ऐसा जिसने आप पर विश्वास किया था और आपने उस विश्वास को तोड़ा था, अब समय आ गया है कि इन सब का सामना किया जाए।"

प्रद्युम्न अभिमन्यु को देखे बिना नहीं रह सका, जो भावहीन चेहरे के साथ उसकी ओर बढ़ रहा था। उसके पिता के प्रति उसकी नापसंदगी के कई कारणों में से एक यह भी था कि उसके पिता ने उसे युद्ध में भाग न लेने के लिए कहा था। कारण चाहे जो भी हो, उसे अनुमति नहीं थी। इसलिए, वह अपने मामा बलराम के साथ एक आश्रम में तीर्थयात्रा के लिए गया, उसे यह जरा भी पता नहीं था कि उसका शिष्य अभिमन्यु भी वहीं है। जब उसे अपने शिष्य के भाग्य का पता चला, तो वह एक शिशु की तरह रोया और सोचने लगा कि अगर वह उसके साथ होता, तो शायद हालात कुछ और होते।

और उसने इस बात के लिए अपने पिता को कभी माफ नहीं किया था। शायद उस अनुभव ने उसे यह एहसास दिलाया कि दयालु और स्नेही होने की बजाय क्रूर और निर्दयी होना बेहतर है।

अभिमन्यु ने अपनी तलवार उठाई और प्रद्युमन पर प्रहार किया, जिसे प्रद्युमन ने बड़ी मुश्किल से अपनी कटार से रोक दिया। कद में छोटा होने के कारण अभिमन्यु ने उसकी छाती पर लात मारी, लेकिन अभिमन्यु ने इसे हल्के में नहीं लिया। युवक ने उस पर झपट्टा मारा और अपने टूटे हुए रथ के पहिये से प्रद्युमन की नाक पर वार किया, जिससे प्रद्युमन कोने में जा गिरा।

"तुम मुझे छोड़कर चले गए," अभिमन्यु ने कहा।

"और तुम असली नहीं हो।" यह जानते हुए भी, उसे उस लड़के से लड़ना मुश्किल लग रहा था क्योंकि वह उसका सामना नहीं कर पा रहा था। उसका चेहरा और शरीर, दोनों इतने असली और अटपटे थे कि उसे दर्द हो रहा था। "तुम असली नहीं हो सकते। तुम मर चुके हो।"

"तुम्हारे कारण!" उसने कर्कश स्वर में कहा और तलवार प्रद्युमन की ओर बढ़ी और उसकी छाती पर वार किया। प्रद्युमन दर्द से कराह उठा और चीखने लगा, "तुमने मुझे कष्ट दिया। तुम ही कारण हो..." और फिर अभिमन्यु का क्रोध और गहरा गया।

प्रद्युम्न ने गुस्से में उससे कहा, "तुम्हारे युद्ध में बच जाने का कारण मैं ही हूँ। मैंने ही तुम्हें प्रशिक्षित किया था और तुम्हारी रक्षा की थी। मैं अपने पिता की वजह से वहाँ नहीं रह सका और मुझे नहीं पता, हालात कुछ और होते, तुम इसके लायक नहीं थे और पहले से कहीं ज़्यादा, मुझे अफ़सोस है। मुझे आज जितना अफ़सोस है, उतना पहले कभी नहीं हुआ।"

अभिमन्यु नहीं रुका।

"और मुझे इसके लिए भी खेद है..." प्रद्युमन ने अपनी छाती से तलवार निकालते हुए कहा, और गुस्से से चिल्लाते हुए लड़के का हाथ मरोड़कर उसकी तलवार छीन ली और उसे उसकी

छाती में गहराई तक घोंप दिया। एक पल का तेज दर्द हुआ और फिर अभिमन्यु उसके शरीर पर गिर पड़ा।

और वे दोनों खून से लथपथ थे, वे दोनों खून से सने हुए थे और प्रद्युमन ने अपने शिष्य के शव को गले लगाया, जैसे ही उसने उस आकृति को गायब होते और धुएं में बदलते देखा।

“ओह, ये तो बहुत उबाऊ था!” शंबारा ने ज़ोर से ताली बजाई और अचानक सारे दर्शक चुप हो गए। “मुझे लगा था ये ज़्यादा देर चलेगा।”

“मुझे पता था कि उसका बायां हाथ कमजोर है,” प्रद्युमन ने आह भरी। कमजोरी का पता चल जाए तो फिर आसान हो जाता है। वह धुएं के गुबार में सिमट चुका था। उसका शिष्य अब हमेशा के लिए मर चुका था।

"यह कैसी लगता है?"

“क्या मैं जा सकता हूँ?” प्रद्युमन को हार का एहसास हुआ।

शंबरा को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि प्रद्युमन की आँखों से आँसू बह रहे थे। सैनिकों ने उसे घसीटा, उससे कटार छीन ली और उसे अखाड़े में धकेल दिया, तभी किसी चीज़ ने उसे मारा।

जिस प्रकार अभिमन्यु की एक कमजोरी थी, शंबरा की भी शायद कोई कमजोरी हो। पिछली बार मायावती को राक्षस को जहर देना पड़ा था ताकि वह सो जाए और प्रद्युमन उसका सिर काट दे। शंबरा को अपनी कमजोरी का ठीक-ठीक पता तो नहीं चला, लेकिन वह जानता था कि कौन उसे बता सकता है, क्योंकि जो उसके साथ लंबे समय से रहा हो, वह ऐसी बात जरूर जानता होगा।

मायावती।

29

उसे फिर वही सपना आया। और उस दिन उसने इस बारे में किसी से बात भी की थी।

उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि वे जिनसे बात कर रहे थे, वे स्वयं देवमेधा थीं।

बलराम अपने सेनापति और पत्नी को पीछे छोड़कर, उसके साथ काफिले में यात्रा कर रहा था। उसे अब यकीन होने लगा था कि लेजर का षड्यंत्र वैसा ही था जैसा उसने सोचा था—एक षड्यंत्र। बलराम रास्ते भर चुप रहा, लेकिन उसकी साँसें अनियमित थीं। वह निश्चित रूप से तनाव में था। उसके होंठ काँप रहे थे।

“क्या आपको सोन्या की चिंता है? वह बहुत जल्दबाज़ लड़की है,” देवमेधा ने कहा। “उसे थोड़ा समय दीजिए। वह ठीक हो जाएगी।”

बलराम ने सिर हिलाया और जैसे ही उसने देखा, उसके पीछे सैकड़ों सैनिक काफिले के साथ-साथ बर्फीली ज़मीन पर चींटियों की तरह झुंड बनाकर चल रहे थे। वे सभी एक संधि, एक बैठक के लिए चुने गए स्थान की ओर बढ़ रहे थे। यह बैठक वृष्णि और अंधक वंशों को विभाजित करने वाली घाटी के निकट होनी थी।

"शायद यह उससे कहीं अधिक है," बलराम ने धीमी आवाज़ में कहा।

“क्या?” देवमेधा आगे झुकी, उसकी आंखों पर बंधा हुआ साफ लाल बंदना चमक रहा था।

उसके बाद पहियों की आवाज और घोड़ों के खुरों की धमक सुनाई दी।

मुझे सपने आते हैं।

हम सब ऐसा करते हैं।

“ऐसा नहीं है। शायद ये सपने मुझसे कुछ संवाद करते हैं,” बलराम ने जवाब दिया।

आप उनमें क्या देखते हैं?

“निराशा और उदासी, फिर भी कहीं न कहीं मुझे खुद की झलक दिखती है।” उन्होंने रुककर समझाया और महसूस किया कि वे कुछ ज़्यादा ही रहस्यमयी बातें कर रहे हैं। “यह एक साँप के बारे में है। सात सिर वाला या शायद दस सिर वाला, यह इतना असंगत है और यह मुझसे बात करता है, मुझे स्वीकार करने के लिए कहता है।”

देवमेधा ने सिर हिलाया। "मैंने इस सांप के बारे में जीवन भर सुना है।"

“सच में?” उसकी आवाज़ में आशा की किरण झलक रही थी। “कौन है?”

“शेषनाग, भगवान विष्णु का सर्प। यह क्या कहता है?”

मुझे उसकी रक्षा करनी होगी...

और फिर उसे अहसास हुआ। उसका भाई भगवान विष्णु का अवतार था, और वह उनका सर्प था... इसीलिए। बात स्पष्ट थी। उसे उसके साथ रहना ही था। सर्प बुरा नहीं था। वह अच्छा था... या शायद वह उसे नष्ट करना चाहता था।

अगली बार जब मैं इसके बारे में सपना देखूं तो मुझे इसका सामना करना होगा।

"क्या आप अपने बेटे की मौत के संबंध में प्रत्यक्षदर्शी के बयान पर विश्वास करते हैं?"

“मुझे नहीं पता,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।

"क्यों?"

“बहुत समय पहले, जब मेरे बेटे की मृत्यु के बाद मेरे अंदर गुस्सा भरा हुआ था, तो मैंने अपने आस-पास के कई लोगों को प्रेरित करने की कोशिश की, लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। इसलिए मैंने कुछ धोखेबाजों से झूठ बुलवाकर उन्हें प्रेरित करने की कोशिश की। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वही झूठ मेरी बेटियों के साथ बुरा बर्ताव करेगा।”

उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "क्या वह झूठ था?" बिलकुल! वह जानता था कि सत्यकी ऐसा करने में सक्षम नहीं था।

“हां। मुझे लगा था कि इससे जनता में आक्रोश पैदा होगा और जब मैंने देखा कि मेरी बेटी मेरे कार्यों का शिकार बन रही है, तो मैंने तुरंत इसे होने से रोक दिया। झूठ का इस्तेमाल व्यापक हित के लिए किया जाता है, और कभी-कभी इसका इस्तेमाल घोर ईशनिंदा वाले कृत्यों के लिए भी किया जाता है।”

उसकी आवाज में बहुत अफसोस झलक रहा था।

“मुझे माफ़ करना। मुझे पता है मेरी बातें बुरी लग रही हैं।” उसने सिर हिलाया। “और अब वह अपना अभियान चला रही है। लेकिन चिंता मत करो, मैं इसे आज होने वाली हमारी बैठक को खराब नहीं करने दूंगी।”

उसकी आवाज़ में आत्मविश्वास झलक रहा था। और वह भी। वह कुछ देर चुप रहा, सामने सड़क को देखता रहा और सोचता रहा कि अगर कोई पछतावा न होता तो जीवन कैसा होता।

*

घाटी समृद्ध थी। युद्धविराम समझौतों के अनुसार, दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी ओर से सदस्य भेजे। दोनों पक्षों के पास दस-दस सैनिक थे और उन्होंने वादा किया कि वे अपने साथ कोई हथियार नहीं लाएंगे।

घाटी में पानी की मधुर ध्वनि सुनकर बलराम काफिले से बाहर निकले। देवमेध भी अपने घोड़े से उतरकर बाहर आए। द्वारकीपुर के प्रधानमंत्री ने दूर से सत्यकी को देखा और सिर हिलाकर अभिवादन किया। वे प्रसन्न प्रतीत हुए। दोनों पक्षों ने एक बड़ा बैठक क्षेत्र बनाया था जहाँ वे इस मामले पर चर्चा करेंगे।

बलराम अपने डंडे के सहारे एक कुर्सी पर बैठ गया और आराम से बैठ गया। उसकी निगाहें चारों ओर घूम रही थीं, मानो उसे कुछ गड़बड़ लग रही हो। उसे डर था कि कहीं वह उन पर हमला न कर दे; कहीं सोन्या न आ जाए। वह बहुत कोशिश कर रहा था कि कुछ सोचे नहीं। वह चुप रहा।

देवमेधा उसके बगल में बैठा था और सत्यकी भी उसके विपरीत छोर पर बैठा था।

सत्यकी ने विनम्रता से कहा, “आंटी देवमेधा, आपसे बहुत दिनों बाद मिलकर अच्छा लगा। उसके लंबे बाल थे, जो करीने से पोनीटेल में बंधे हुए थे। “मुझे खुशी है कि हम यहाँ हैं। और मुझे खुशी है कि आपने मेरी बात सुनी।”

"अगर मध्यस्थ न होता तो मैं यहां नहीं होती," देवमेधा ने कहा।

बलराम देखता रहा; उसे एक छोर पर कृतवर्मा गंभीर मुद्रा में, आज्ञाकारी और सीधा खड़ा दिखाई दिया। कृतवर्मा कई बातों पर विचार कर रहा होगा और बलराम को इस बात की खुशी थी कि उसने सोनजा के इस फैसले के आसपास न रहने का विकल्प चुना।

सत्याकी ने आगे कहा, "मैं समझता हूं कि अंकल बाला के अपने इरादे हैं।"

“बिल्कुल,” बाला ने गंभीरता से जवाब दिया। “मैं चाहता हूँ कि आप दोनों हाथ मिलाएँ और एक-दूसरे के साथ सही व्यवहार करें।”

सत्याकी ने अपनी भौंहें उठाईं। "और मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है। क्या आपको भी कोई आपत्ति है, महाराज?"

देवमेधा हिचकिचाई। "मेरे कुछ सवाल हैं।"

"आप बेझिझक गोली चला सकते हैं।"

"तुम अपने पिता की पीठ पर चाकू क्यों घोंपना चाहोगे?"

सत्याकी ने कहना शुरू किया, "क्योंकि वह एक क्रूर व्यक्ति है।"

"नहीं, क्यों? इससे आपको व्यक्तिगत रूप से क्या परेशानी है?"

क्योंकि वह बहुत से नागरिकों को परेशान करता है, उन्हें अपने बारे में बुरा महसूस कराता है, उनमें घृणित प्रकार के व्यवहार पैदा करता है...”

देवमेधा ने उंगलियां उठाईं। “क्यों?” उसने घातक स्वर में फिर पूछा। “तुम मुझे इतने आदर्शवादी विचार और तर्क देते हो, फिर भी मैं आश्वस्त नहीं हो पाती। आंखों पर कपड़ा बांधने का एक ही फायदा है कि इससे मेरी अन्य इंद्रियां अधिक संवेदनशील हो गई हैं और मैं तुम्हारी धड़कन, तुम्हारी आवाज महसूस कर सकती हूं, और मुझे यकीन है कि तुम कुछ छुपा रहे हो।”

सत्याकी ने बलराम के साथ एक नजर साझा की, जिसने उसे सच बोलने के लिए फटकारा, क्योंकि उसे डर था कि सच मिट सकता है या कोई नया साथी मिल सकता है।

"कुछ भी नहीं है..."

"झूठ मत बोलो। अगर तुम यह साझेदारी शुरू करना चाहते हो, तो तुम्हें मुझे तुम पर भरोसा दिलाना होगा।"

सत्याकी ने अपनी नाक फुला ली। “आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। मैं यह खुद कर सकता हूँ। मुझे लगता है कि यह सही कदम नहीं था, अंकल बाला।”

"अभी इंतजार करो..."

सत्याकी गुस्से में कुर्सी को पीछे की ओर फेंकते हुए खड़ा हो गया। "मुझे इस तरह से पूछताछ पसंद नहीं है।"

“मैंने तो बस एक सीधा-सा सवाल पूछा था,” देवमेधा मुस्कुराई और कंधे उचका दिए।

“कोई बात नहीं, शांत हो जाओ,” बाला ने बीच में दखल देते हुए सत्याकी को समझाने की कोशिश की ताकि वह जल्दबाजी में कोई बात न कह दे। “मेरी बात मानो, हम सही रास्ते पर हैं। ठीक है? बस उससे सच बोलो। मुझे बता दो। मुझे यकीन है कि तुम्हारे पास कोई वाजिब वजह होगी।”

उसने देखा कि उस युवक के चेहरे का रंग लाल हो गया और उसकी आँखों से घृणा और

उदासी का मिलाजुला भाव उमड़ रहा था।

सत्याकी ने उदास स्वर में उत्तर दिया, “मुझे उससे प्यार हो गया था। वह निम्न वर्ग की थी, उसके आदर्शों के अनुरूप नहीं थी, और जब मुझे पता चला कि उसने उसे विदेशियों के हाथों प्रताड़ित होने के लिए भेज दिया है, तो मुझे गहरा दुख हुआ। मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा और तब से मेरे मन में उसके प्रति घृणा बसी हुई है। आशा है आपको अपना उत्तर मिल गया होगा।”

“प्यार इंसान से पागलपन भरी हरकतें करवा देता है,” देवमेधा ने आह भरी। “मैं समझ गई। और अब तुम्हारी धड़कन तो कमाल की सटीक है। ऐसी बातें क्यों छुपानी?”

क्योंकि मैं अपनी सफलता का दोष प्रेम जैसी किसी तुच्छ बात पर नहीं डालना चाहता।

“प्रेम कोई तुच्छ चीज नहीं है। यह अब तक मौजूद भावनाओं का दूसरा सबसे महान रूप है,” देवमेधा ने कहा।

सत्यकी ने पूछा, “पहला क्या है?”

“दर्द।” उसने सिर हिलाया। “यह गहरे दुख का दर्द है और मुझे अभी भी याद है, मेरे बेटे की हत्या यहीं हुई थी। भेड़ियों के झुंड ने। वृष्णि के झुंड ने।”

सत्याकी ने धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे माफ़ करना।"

“मैं तुम्हें थामने और तुम्हारे आदमियों की मदद करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन बदले में,” देवमेधा ने कहा, “मुझे तुम्हारे पिता के साथ अकेले समय बिताने की ज़रूरत है। मैं उन्हें यातना देना चाहती हूँ। मैं उन्हें तब तक चोट पहुँचाना चाहती हूँ जब तक वे मुझे यह न बता दें कि मेरे बेटे का हत्यारा कौन है।”

सत्यकी का चेहरा जम गया, मानो उसका दुश्मन उसे अपने पिता को चोट पहुँचाने के लिए कह रहा हो। उसने इतनी सहजता से सिर हिलाया कि बलराम को तसल्ली मिली, भले ही वे उसके पुराने मित्र युधजित के बारे में बात कर रहे थे। यह सब देखते हुए, बलराम के लिए यह तय करना ज़रूरी था कि उसकी प्राथमिकता क्या है और उसे लगने लगा था कि इसी वजह से वह खुद को खो देगा, लेकिन उसे अपने भाई का साथ देना ही था, उसे उसका सहारा बनना ही था।

बलराम ने एक बार फिर चारों ओर देखा, सोन्या के आने की उम्मीद में, लेकिन कुछ नहीं हुआ। तभी उसने राहत की सांस लेते हुए सत्यकी और देवमेध को हाथ मिलाते और फिर गले मिलते देखा, और बलराम मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। वह ठीक उसी जगह था जहाँ वह होना चाहता था और उसकी योजनाएँ साकार हो रही थीं।

*

अंत में शिविर एक उत्सव भोज में तब्दील हो गया था, जहाँ लोग सांत्वना पाने के लिए एकत्रित हुए थे। वे नाचने-गाने, जयकारे लगाने और रणनीतियों पर चर्चा करने लगे थे। आग जलाई गई और दोनों पक्षों के लोग शिविर की रक्षा के लिए उसके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए।

काफी समय बाद, बलराम अपनी मीठी शराब पी रहा था और आनंद ले रहा था, जबकि उसका मन वितीहोत्रों की नीरस रातों में खोया हुआ था, खासकर उस प्राणी के बारे में जिसने उस पर हमला किया था। हैरानी की बात यह थी कि उसने उस प्राणी को काफी समय से नहीं देखा था और यह बात उसे परेशान कर रही थी। क्यों नहीं? यहाँ तक कि सोन्या भी यहाँ नहीं थी। क्यों

नहीं?

सवाल लगातार उठते रहे और वह अपने डंडे का सहारा लेने के बारे में सोच सकता था, लेकिन इसके बजाय उसने आराम किया और किसी बात की परवाह नहीं की। शराब का नशा उसके सिर पर चढ़ रहा था और वह उस माहौल का आनंद ले रहा था, उस जीत का जो करीब आ रही थी। वह जानता था कि सत्यकी और देवमेध, दो अच्छे लोगों का साथ देकर वह सही काम कर रहा है।

और जब वह लोरी का आनंद ले रहा था, वह शिविर से दूर था और तारों को देख रहा था तभी एक परिचित आवाज ने उसे पुकारा:

“तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।” आवाज ने कहा।

बलराम ने दाढ़ीधारी कृतवर्मा की ओर मुड़कर देखा और वे हमेशा की तरह गंभीर और उदास दिख रहे थे, उनका सिर झुका हुआ था। उन्होंने कुछ नहीं पिया था और ऐसा लग रहा था कि वे जा रहे हैं, शायद अपने घोड़े के पास।

और क्यों नहीं?

मैं बस इतना ही वादा कर सकता हूं कि किसी बड़ी चीज को पाने की प्रक्रिया में अपनी मानवता को मत खो देना।

मैं अपनी मानवता को कैसे खोने की योजना बना रहा हूँ?

“अंधक और वृष्णि वंश के बीच कुछ समय तक चले शत्रुता के पीछे एक कारण था। क्योंकि दोनों वंश एक-दूसरे के साथ सहजता से नहीं रह सकते, क्योंकि दोनों ने एक-दूसरे के साथ कुछ बेहद भयानक काम किए हैं।”

बलराम इस बारे में सोचने लगा। अक्सर वह सोचता कि क्या वह इस काम में खुद को खो रहा है। अपने भाई की सेवा करते-करते, उसके मन में एक तीव्र इच्छा जाग उठी कि क्या सपने में दिखने वाले नाग से मार्गदर्शन मांग ले, शायद इससे उसे मदद मिल जाए। लेकिन क्यों नहीं? उसने फिर पूछा। कृतवर्मा जा चुका था और उसने देखा कि एक और आकृति बलराम के पास खड़ी है, और वह सत्यकी थी, जो हमेशा की तरह विजयी और आकर्षक लग रही थी।

“वाह, बहुत बढ़िया,” वह मुस्कुराया, “कितना प्यारा समय था। धन्यवाद, अंकल।”

“आपको अभी करना होगा। हम एक विद्रोह की योजना बना रहे हैं, और हमें इसकी अच्छी तरह से योजना बनानी होगी।”

"हम करेंगे।"

दोनों ने अपने-अपने गिलासों से जयकार की।

बलराम ने कहा, “मुझे लगा था कि सोन्या आएगी, लेकिन वह नहीं आई। अब मुझे समझ नहीं आ रहा कि वह कहां है। इसलिए सतर्क रहें और उम्मीद करें कि वह आपको चौंका न दे।”

“अरे, चिंता मत करो, वो ऐसा नहीं करेगी।” उसने आत्मविश्वास से कंधे उचकाते हुए कहा।

फिर वह बलराम से दूर हट गया, तभी बलराम ने पुकारा, “क्या हुआ? तुम्हारा मतलब क्या था?”

वह मुस्कुराया। “वह आई और उसने हमला किया और हमने उसे हरा दिया। फिर मैंने उसे

बर्फीले ठंडे पानी में गिरा दिया और उसे जमाकर मार डाला या जो भी मौत से बदतर हो सकता है, वह किया।"

"लेकिन..." बलराम की आँखें चौड़ी हो गईं और उसका खून जम गया। "तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?"

"वह हमारे लिए एक मुसीबत थी, चाचा जी। और मुसीबतों को जड़ से उखाड़ फेंकना ज़रूरी है, यह हमेशा याद रखना। ठीक वैसे ही जैसे देवमेध का बेटा था और मेरे पिता को उसे खत्म करना पड़ा क्योंकि उसे मेरे पिता की अंधकों को बर्बाद करने की योजना का पता चल गया था।"

यह युधजित ही था। उसने ही लड़के की हत्या की थी।

लेकिन सत्यकी मुस्कुराया।

"क्या तुम भी वही करोगे?" बलराम ने पूछा, हालाँकि उसे महसूस हो रहा था कि वह कितना गलत था और सत्यकी पर विश्वास करके उसने कितनी बड़ी मूर्खता की थी। वह लड़का एक राक्षस था और उसने गलत व्यक्ति का साथ दिया था। "देवमेधा के साथ। काम पूरा होने के बाद उसे रास्ते से हटा दो और तुम ताज पहन लो?"

उसकी आँखों में एक चमक थी, एक ऐसी बेचैन शीतलता की झलक थी जो बलराम ने उसे अपने जानने के इतने सालों में कभी नहीं देखी थी। "मुझे नहीं पता। मैं काफी सहज स्वभाव का व्यक्ति हूँ। तो..."

उसने छोड़ दिया।

और बलराम को अपने पहले से ही लंबी सूची में एक और अफसोस जुड़ गया।

जब तक कृष्ण सामवा को तालाब से बाहर लाए, तब तक उन्होंने देखा कि सामवा विष पी चुका था। सौभाग्य से उसकी त्वचा नष्ट नहीं हुई, लेकिन वह बेहोश था और धुंध छंट चुकी थी। वह कालिया और दुर्जय पर चिल्लाना चाहते थे, लेकिन वे बस अपने बेटे को गोद में लिए उसे सहला रहे थे।

“अभी क्या हुआ?” कालिया ने पूछा।

“जो तुमने उकसाया। तुम्हें यह सारा नाटक कभी नहीं करना चाहिए था।”

कालिया ने गुस्से से कहा, "मैंने यह एक मकसद से किया था और वह मकसद पूरा हो गया है।"

“एक दुष्ट शक्ति हमारा पीछा कर रही थी और अब...” उसका दिल दर्द से तड़प रहा था। “यह ज़हर कितना खतरनाक है?”

“यह आपके अंगों को एक-एक करके नष्ट कर देता है, और इस प्रक्रिया में आपकी त्वचा को जला देता है। सच कहूं तो आपके पास मुश्किल से ही समय बचता है।”

बहुत खूब! कृष्ण ने धीमी आवाज़ में गुर्राया। उन्हें नहीं पता था कि उनके पास क्या विकल्प हैं, लेकिन उन्हें यकीन था कि कालिया के पास कुछ न कुछ तो ज़रूर होगा। पलक झपकते ही उन्होंने नागराज पर झपट्टा मारा और उसे ज़मीन पर पटक दिया, जिससे उसका सिर ज़मीन से टकराया। “बताओ, मैं अपने बेटे के लिए क्या कर सकता हूँ? बताओ! हिम्मत है तो करके दिखाओ!”

कालिया की आँखों में भय झलक रहा था और एक पल के लिए वह स्तब्ध रह गया, फिर उसने कहा: "एक रास्ता है। ठीक है? शांत हो जाओ।"

"क्या?"

कृष्ण की भुजाएँ कालिया के गले के चारों ओर लिपटी होने के कारण उसका दम घुटने लगा; कृष्ण ने धीरे-धीरे अपनी पकड़ ढीली की, लेकिन फिर भी वह उसके ऊपर हावी रहा, ताकि खतरे का आभास बना रहे।

“नरका।”

कृष्णा ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। "नहीं। ऐसा नहीं हो सकता।"

"सोमास के अंतिम अवशेष भी तुम्हारे शत्रु ने ले लिए हैं।"

“नरकासुर,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “मुझे उस राक्षस से नफरत है। मुझे इस बात का कोई अफसोस नहीं है।”

“मुझे पूरी कहानी तो नहीं पता, लेकिन जब से मैं यहाँ आया हूँ, हम बातें करते हैं, गपशप होती है। और नरक को एक ऐसे लोक में बसाया गया है जहाँ उसकी परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने पर नरकासुर से मुलाकात हो सकती है। उसके पास अमृत है, लेकिन उसके बदले में वह आपसे कुछ काम करने को कहेगा। पता नहीं क्या। कोई भी वहाँ जाने की हिम्मत नहीं करता।”

कृष्ण जानते थे कि प्रत्येक लोक, अस्तित्व का एक तल, एक अलग दुनिया रखता है और नरक, पृथ्वी की तरह, किसी न किसी के शासन वाले अस्तित्व का हिस्सा था। हालांकि नरक कहीं अधिक विक्षिप्त था, क्योंकि संक्षेप में कहें तो वह रक्त, अग्नि और क्रोध से भरा एक यातना कक्ष था। दूसरी ओर, नरकासुर एक दुष्ट राजा था जिसे कृष्ण ने अपनी पत्नी सत्यभामा के साथ बहुत समय पहले पराजित किया था, जब उसने कई महिलाओं का अपहरण कर उन्हें बंदी बना रखा था।

“नरक के लोकपाल राजा के अच्छे मित्र हैं। जब तक आप उनकी परीक्षाएँ स्वीकार नहीं कर लेते, वह किसी को भी प्रवेश नहीं देते और वह निश्चित रूप से आपको स्वीकार नहीं करेंगे। आप उनके शत्रु हैं।”

“लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि वह मुझे अमृत देगा?” कृष्ण ने पूछा और तब तक उन्हें जवाब पहले से ही पता था।

वह ऐसा क्यों करेगा? जब तक कि वह खेल न खेले।

कृष्ण दुर्जय को मारकर इस मामले को खत्म करना चाहते थे, लेकिन वितीहोत्र तो अमर हैं। जो पहले से ही मर चुके हैं, उन्हें मारा नहीं जा सकता। लेकिन उन्हें दुर्जय से छुटकारा पाना ही था। कैसे? अपने बेटे को बचाने के बाद ही उन्हें इसका हल मिलेगा।

“तो मुझे तुम्हारी मदद चाहिए,” उसने कालिया से कहा, अभी भी उसे दी गई मणि को पकड़े हुए। “मुझे पोर्टल खोलने के लिए कुछ सामग्री चाहिए।”

*

जब कृष्ण पोर्टल खोलने की योजना बना रहे थे, तब तक उन्होंने पूरी सावधानी बरतते हुए खुद को हथियारों से लैस कर लिया था। आखिरकार, यह एक लंबी प्रक्रिया थी और कालिया ने उनकी आश्चर्यजनक रूप से मदद की थी। उन्होंने सोचा था कि नागराज यह कहकर उन्हें रास्ते से हटा देगा कि यह उसका काम नहीं है, लेकिन शायद कालिया को कृष्ण पर दया आ गई थी।

अंत में, जब पोर्टल खुलने लगा, तो उसने कालिया की ओर देखा और कहा:

“धन्यवाद।” वह रुका। “मैं आपके बारे में गलत था और मुझे लगता है कि जब हम पहली बार मिले थे, उस दिन मुझे आपकी बात सुननी चाहिए थी। मैं जवान, नासमझ और जल्दबाज़ था।”

अब तुम क्या हो?

"बिल्कुल वैसा ही, बस युवा भाग को छोड़कर।"

दोनों ने हल्की सी हंसी साझा की।

मुझे उम्मीद है कि मेरे लौटने तक आप मेरे बेटे का ख्याल रखेंगे।

"चिंता मत करो।"

कृष्ण ने एक बार फिर समवा से एक नज़र मिलाई और फिर सामने देखा, क्योंकि द्वार खुल चुका था और बैंगनी-नीले रंग आपस में घुलमिल रहे थे। कृष्ण ने देखा कि हमेशा की तरह कोई उस द्वार से बाहर निकल रहा था और वह कोई और नहीं बल्कि एक तपस्वी जैसे दिखने वाला व्यक्ति था, जटाधारी लोकपाल, जिसके हाथ में गठ्ठे थे और हाथ में एक गदा थी, बिलकुल नाग

राज्य के लोकपाल की तरह।

“अहा, दिलचस्प जगह है, मुझे बुलाया गया है...” और उसकी निगाहें कृष्णा पर टिक गईं, “और दिलचस्प लोग मुझे बुला रहे हैं।”

कालिया अपने आदमियों के साथ पीछे था और समवा जमीन पर एक पलंग के ऊपर पड़ा हुआ था, जिसे उसके ऊपर बिछा दिया गया था।

“मैं नरकासुर से मिलना चाहता हूँ। मेरी उनसे एक महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक बैठक है।”

इन असुरों को मारने का एक दुष्परिणाम भी है। यद्यपि कृष्ण को असुर का सिर काटने की घटना स्पष्ट रूप से याद थी, फिर भी वे जीवित बच गए और मृत्युलोक तथा पाताल लोक में चले गए। यहाँ कोई नहीं मरता। सभी को यातनाएँ सहनी पड़ती हैं।

“क्या हम सब ऐसा नहीं चाहते?” साधु ने कहा। “लेकिन वह आपसे क्यों मिलना चाहेगा, यह एक बड़ा सवाल है?”

"ऐसा इसलिए है क्योंकि वह मुझे जानता है।"

“नरकासुर को तो सब जानते हैं। हमने इसी भूमि की नींव रखी थी।” साधु ने हंसते हुए कहा।

कृष्ण में धैर्य नहीं था। उन्होंने कहा, “यदि मेरे इरादे शुद्ध और शांतिपूर्ण हैं, तो आप मुझे प्रवेश से नहीं रोक सकते, और मेरे इरादे शुद्ध और शांतिपूर्ण हैं। आप इसे महसूस कर सकते हैं।”

“हां, मुझे ऐसा लगता है, लेकिन मुझे बहुत बेचैनी भी महसूस हो रही है और मुझे चिंता है कि इससे कुछ बुरा हो सकता है...”

नहीं, ऐसा नहीं होगा।

“तुम मेरी बात साबित करते हो।”

कृष्ण ने दांत पीसकर खुद को शांत किया। वह वहीं अडिग खड़ा रहा और और भी विरोध करने ही वाला था कि लोकपाल एक तरफ हट गया, जिससे सभी लोग, यहां तक कि कालिया भी चौंक गया।

“आप जा सकते हैं। मुझे लगता है, यह एक दिलचस्प मुलाकात होगी, हालांकि हमारे राजा और हमारे देश के शासक नरकासुर से मिलना इतना आसान नहीं है। इसके लिए आपको एक परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी और उस परीक्षा में आपको कुछ कार्य करने होंगे। आप अंदर आकर जान सकते हैं कि वह क्या है।”

कृष्ण ने अपनी भौंहें उठाईं, लेकिन मणि, गदा और अपने चक्रों को थामे हुए वे लहराते हुए बैंगनी दरवाजे से अंदर दाखिल हुए, अंततः अपना रास्ता बनाते हुए वे खुद को टूटे-फूटे राज्यों की एक उजाड़ भूमि में पाए। आकाश लाल था और धरती भी, और उनके चारों ओर बहुत सी जर्जर इमारतें थीं, जबकि उनके सामने धुएं से बना एक पुल दिखाई दे रहा था।

कृष्ण बादल के आकार के पुल पर चलने लगे, और जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, उन्हें उस स्थान की शून्यता और एकांत के बीच एक आवाज सुनाई दी।

“मेरे लोक में आपका स्वागत है, भगवान कृष्ण। बहुत वर्षों बाद मैंने आपको देखा है।”

कृष्णा को पता नहीं था कि यह विचार कहाँ से आया, लेकिन वह चलता रहा। "हाँ, वैसे, यह कोई सामाजिक मुलाकात तो नहीं है।"

“जी हां, मुझे लगता है कि आप यहां किसी खास वजह से आए हैं।” आवाज गूंजी।

कृष्ण को आकाश से गिरते शव और शरीर दिखाई दे रहे थे, और पृष्ठभूमि में ज्वालामुखी फट रहे थे। चारों ओर नमी और अंधेरा छाया हुआ था। वह शांत और मौन रहे। उन्होंने ईमानदारी से कहा, "मैं अमृत के लिए यहाँ आया हूँ। मेरा बेटा खतरे में है और मुझे लगता है कि हम दोनों थोड़ी समझदारी दिखा सकते हैं और आप मुझे अमृत दे सकते हैं, बजाय इसके कि मैं इसके लिए आपके पीछे भागूँ।"

आपको किसी चीज के पीछे भागने की जरूरत नहीं है।

उसके सामने धुआँ उठा और उसमें से एक सफेद आकृति प्रकट हुई। वह नरकासुर ही था, अपने सुंदर, तराशे हुए चेहरे, गालों पर हल्की दाढ़ी और सफेद बालों के साथ, जो माथे और सिर के किनारों से बिखरे हुए थे। भूत होने के अलावा वह वाकई आकर्षक था।

“अगर तुम इसे चाहते हो, तो यह यहीं है,” नरकासुर ने मुस्कुराते हुए उसके सामने शीशी पेश की, जो उस पर एकमात्र वास्तविक दिखने वाली चीज थी। “इसमें आखिरी बचा हुआ अमृत है और तुम इसे ले सकते हो।”

कृष्ण को पता था कि इसमें कोई न कोई चाल जरूर है। "क्या तुम्हें गुस्सा नहीं आता कि मैंने तुम्हें मार डाला?"

“मैं एक क्रूर इंसान था, मैं क्या कहूँ? मैं यहाँ आया और अपने पापों का प्रायश्चित किया, पश्चाताप किया और अब मैं बदल गया हूँ। मैं किसी को चोट नहीं पहुँचाना चाहता, बस...”

“नारक में और अधिक लोग क्यों नहीं हैं? वे लोग जो आपका अनुसरण करते हैं, वे लोग जो यहां आपकी पूजा करते हैं।”

"क्योंकि आप आ रहे थे और मैं कोई व्यवधान नहीं चाहता था।"

कृष्ण अपने शत्रु को समझने की कोशिश कर रहे थे और उन्हें एहसास हो रहा था कि उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि उन्हें अलग-अलग द्वारों पर यात्रा करनी पड़ेगी और पुराने शत्रुओं से लड़ना पड़ेगा। वे हमेशा अपने घर पर रहना चाहते थे, लेकिन वे यहाँ थे और उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था। वे तेज़ी से आगे बढ़े और शीशी लेने के लिए बढ़े, तभी वह आकृति उनके सामने से गायब हो गई और उनके पीछे प्रकट हो गई।

"अरे, इतनी जल्दी नहीं। तुम्हें मेरे लिए कुछ करना होगा।"

“क्या?” यही तो असली चुनौती थी।

वह व्यक्ति देखने में सुरुचिपूर्ण था, कालिया की तरह घिनौना नहीं। वह लंबा और राजसी था।

“मुझे सत्यभामा के बारे में बताओ। वह कहाँ है? वह आमतौर पर तुम्हारे साथ ही रहती है, है ना?”

कृष्णा ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। “वह मुझे छोड़कर जंगल में उन बाकी लड़कियों के साथ बस गई है जिन्हें हमने तुमसे बचाया था। वह मुझसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहती।”

"और ऐसा क्यों है, हम्म?"

“मैं...उम्म...” वह याद नहीं करना चाहता था, लेकिन वह जानता था कि शीशी इसी जानकारी पर निर्भर थी। “वह जानती थी कि मैं अपनी पहली पत्नी रुक्मिणी से प्यार करता था।

वह जानती थी कि चाहे वह कुछ भी कर ले, वह कभी भी उसकी बराबरी नहीं कर पाएगी, इसलिए उसने हार मान ली और मुझे छोड़कर चली गई।"

क्या तुम्हें उसकी याद आती है?

"बिल्कुल।"

"तुम दोनों एक बेहतरीन जोड़ी थे।" वह आकृति कृष्ण के चारों ओर चक्कर लगाने लगी। "क्या ही शानदार जोड़ी थी! तुम दोनों बेहद शक्तिशाली थे और तुमने मेरे सारे किले तोड़ दिए और मुझे मार डाला। वह वाकई एक अद्भुत लड़की थी।"

मुझे पता है। वह बहुत प्रतिभाशाली थी।

क्या आपने कभी किसी महिला से उतना ही पवित्र प्रेम किया है जितना आपने स्वयं से किया है?

मुझे नहीं लगता कि मैं खुद से प्यार करती हूँ।

"एक आत्ममुग्ध व्यक्ति ही ऐसा कहेगा, पक्का।" उस प्रेत ने सामान्य भाव से आह भरी। "शायद, तुम्हारे लिए अभी भी उम्मीद बाकी है। पिछली बार जब मैं तुमसे मिला था, तुम काफी गुस्सैल और घमंडी इंसान थे और अब तुम हारे हुए और घर जाना चाहने वाले इंसान हो। क्या बदल गया?"

"मेरा अतीत। मेरे कर्म।" उन्होंने ईमानदारी से जवाब दिया मानो यह कोई साक्षात्कार हो।

"अच्छा।" और उसके सामने मौजूद आकृति रुक गई, और उसे शीशी थमा दी। "तुम जा सकते हो..."

और जैसे ही उसने उसे पकड़ा, नरकासुर ने अपना दूसरा हाथ आगे बढ़ाया, जिसमें एक और शीशी थी। उसका रंग अलग था—हरा और लाल रंग का मिश्रण लग रहा था।

"यह क्या है? कोई चाल है क्या?"

जी हाँ, बिलकुल। मेरी बाईं हथेली में हल्हला है, जो भगवान शिव के गले से निकला एक शक्तिशाली विष है। दूसरी हथेली में अमृत है, जो देवताओं का दिव्य पेय है। इन दोनों को पाने के लिए, आपको दोनों को धारण करना होगा और फिर एक का सेवन करना होगा।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" कृष्ण ने अपनी भौंहें उठाईं। "मैं हलहला नहीं ग्रहण कर सकता क्योंकि इससे मेरी मृत्यु हो जाएगी, लेकिन अगर मैं अमृत ग्रहण कर लूँ तो मेरे बेटे को देने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।"

"खैर, तकनीकी बारीकियां कभी भी मेरी खासियत नहीं रही हैं।"

"तुम तो हमेशा से ही छल-कपट करने वाले रहे हो।" कृष्ण नरकासुर का गला घोंटकर उसे जान से मार देना चाहते थे, लेकिन वह तो एक भूत था, एक प्रेत था। "तुम चाहते हो कि मैं आत्महत्या कर लूँ।"

नरकासुर ने कंधे उचकाते हुए कहा, "यह तुम्हारी मर्ज़ी है कि तुम अपने लिए क्या फैसला लेना चाहते हो। अगर तुम हलाहल ग्रहण करोगे, तो अमृत संवा को मिल जाएगा क्योंकि तुम्हारे पास लौटने का समय होगा, लेकिन हलाहल बढ़ता जाएगा और धीरे-धीरे तुम्हें मार डालेगा।"

कृष्ण जानते थे कि उन्हें अपने पुत्र को बचाना ही है, चाहे इसमें उनकी जान को ही क्यों न

खतरा हो। उनकी मृत्यु तो बहुत पहले ही हो चुकी थी। बिना सोचे समझे उन्होंने हल्हला विष लिया और पी लिया। वे जानते थे कि ऐसा करने से उनकी जीवन अवधि सीमित हो गई है, लेकिन इतना उनके लिए अपने पुत्र और द्वारका को बचाने के लिए काफी था, और उम्मीद थी कि वे समय रहते सब कुछ कर पाएंगे। हल्हला विष पीते ही वे उसके पूरे प्रभाव में खो गए और कमजोरी महसूस करने लगे, उनका पेट दर्द और जलन से भरा हुआ था।

कृष्ण ने अमृत से भरी दूसरी मदिरा को थाम लिया और उसे लेकर मुड़ गए; द्वार का काम पूरा हो चुका था। उन्होंने नरकासुर की ओर देखा और पूछा, "मेरे पास कितना समय है?"

“यह आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता और इच्छाशक्ति पर निर्भर करता है। हो सकता है आप अभी मर जाएं, या एक दिन बाद, या एक महीने बाद, लेकिन आप मरेंगे जरूर। और यह अनिश्चित होगा। आखिरकार, आपने मौत के साथ एक समझौता कर लिया है।”

कृष्ण ने सिर हिलाया। और फिर, वह उस द्वार में प्रवेश कर गए, यह भली-भांति जानते हुए कि इस संसार में उनका समय सीमित है।

*

जब तक वह वहाँ पहुँचा, उसने देखा कि उसके बेटे का शरीर धीरे-धीरे बैंगनी पड़ रहा था और उसके मुँह से झाग निकल रहा था। कालिया अभी भी वहीं बैठा था, चिंतित और उसके सैनिक भी पहले की तरह वहीं थे। उनके पीछे द्वार बंद हो गया, और कृष्ण अपने बेटे के पास दौड़े, उसके बगल में घुटने टेककर उसे अमृत पिलाने लगे, कालिया के निवेदन पर उसके मुँह में धीरे-धीरे अमृत डालते रहे:

“उसने आपसे क्या करने को कहा?”

“कुछ नहीं। बिल्कुल कुछ नहीं।”

“तुमने क्या किया? मुझे लगता है कि तुमने अपने बेटे को बचाने के लिए कुछ गलत किया है।”

कृष्ण ने जवाब देना ज़रूरी नहीं समझा। अगर कालिया न होता, तो वो इस हालत में होते ही नहीं। उनके बेटे को खांसी आई और वो होश में आ गए, उनकी त्वचा का रंग सुधरने लगा और मुंह से झाग आना भी बंद हो गया। कृष्ण ने उन्हें कसकर गले लगा लिया, उन्हें अच्छी तरह पता था कि वो कुष्ठ रोग से पीड़ित हैं, लेकिन उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। उन्होंने इतने लंबे समय बाद कुछ सही किया था और इससे उन्हें फिर से जीने का एहसास हुआ था।

हाँ। जीवित। यही शब्द उन्हें वर्णित करने के लिए सही होगा।

“क्या हुआ?” उसने खांसते हुए अपने बेटे से पूछा।

“कुछ नहीं। सब ठीक हो जाएगा।”

लेकिन ऐसा नहीं था।

अब उसे जल्द से जल्द अंतर्द्वीप पहुँचकर दुर्वासा को ढूँढ़ना था और एराकों के बारे में जानकारी प्राप्त करनी थी। लेकिन अंतर्द्वीप का अतीत बहुत ही रहस्यमय और अंधकारमय था।

क्या वह इसका सामना करने के लिए तैयार था?

शायद।

31

दुर्गाज्योति उस जीर्ण-शीर्ण महल के बीचोंबीच लेटी हुई थी, जिसे उसने और उसके भाड़े के सैनिकों ने मिलकर नष्ट कर दिया था। वह एक चट्टान पर लेटी हुई थी, जबकि बोरी से ढके सिर वाला मायासुर उसके चारों ओर विशालकाय आकृति में खड़ा था, हालांकि वह स्वयं कद में छोटा और दुर्बल था।

युयुधन ने उसका हाथ पकड़ रखा था, और अजीब बात यह थी कि उसे उसमें गर्माहट महसूस हो रही थी।

“क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?” उसने धीरे से पूछा।

“हां, बिलकुल सही।” उसने सख्ती से कहा। “अगर माया को पाने का यही एकमात्र तरीका है, तो मैं यही क्यों न कर लूँ।”

युयुधन ने सिर हिलाया।

“अगर बातचीत खत्म हो गई है, तो क्या हम शुरू करें?” मायासुर गुर्राया। “मैं हमेशा के लिए अंधा नहीं रहना चाहता, तुम्हें पता है।”

दुर्गाज्योति मुस्कुराई और इसे शुरू करने की अनुमति दी। उसके सभी लोग एक घेरे में खड़े थे, और युयुधन अपनी जगह से उठ गई। मायासुर ने मंत्रोच्चार शुरू किया और अपनी हथेलियों को अपने माथे के पास टिकाए रखा, क्योंकि नीली, झिलमिलाती ऊर्जा से विद्युत धाराएं प्रवाहित होने लगीं।

उन्होंने कहा, "मैं आपको पहले से सूचित करना चाहता हूं।"

“क्या?” उसने गुस्से से कहा।

“कई लोगों ने माया सभ्यता को एक स्रोत के रूप में प्राप्त करने का प्रयास किया है, लेकिन कोई भी इसमें सफल नहीं हुआ है। यह कोई चोरी नहीं है जिसे अंजाम दिया जा सके, और न ही कोई खजाना है। माया एक शब्द है, एक वस्तु है और एक चीज़ है।”

आपकी बात समझ में नहीं आती।

“और माया बिलकुल वैसी ही है।” उसने दांत पीसते हुए कहा। “अब मैं तुम्हें नहीं जानता, लड़की, लेकिन एक बात ज़रूर जानता हूँ। आम तौर पर औरतें बुरी तरह नाकाम रही हैं, मर्दों की तो बात ही छोड़ो। या तो वे पागल होकर उठी हैं या फिर बिल्कुल भी नहीं उठी हैं। उनके दिमाग़ पूरी तरह से खराब हो चुके हैं।”

मुझे डराने के लिए धन्यवाद। क्या आप मुझे कोई उपयोगी सलाह दे सकते हैं?

“सलाह यह है कि मायासभा में प्रवेश न करें,” उन्होंने आह भरी। “लेकिन मुझे लगता है कि हम उस दौर से आगे निकल चुके हैं। याद रखना, फिर तो स्पष्ट रूप से।”

"क्या?"

“किसी पर भरोसा मत करो। और अपने डर से मत डरो। मायासभा में आपके सबसे बड़े भय को दूर करने की शक्ति है।” वह रुका। “और माया आपको तब प्राप्त होगी, जब आप यह जान

लेंगे कि वह आपको क्या दिखाना चाहती है।”

दुर्गाज्योति का चेहरा बिगड़ गया। उसे अच्छा नहीं लग रहा था। उसे बहुत सी बातों का डर था। बहुत सी बातों से उसे नफ़रत भी थी। लेकिन तभी उसका मन उस समय की यादों में खो गया, जिसने उसे याद दिलाया कि उसने यह काम क्यों शुरू किया था। वह कोमा में पड़े प्रद्युमन के शरीर की यादों में खोई हुई थी और सोच रही थी कि अगर वह जागकर देखे कि उसने उसके लिए क्या किया है, तो वह कितना खुश होगा। उसने उसके लिए क्या किया था। यह खुशी का उपहार था, अमर जीवन का उपहार था। दुर्गाज्योति यह सब प्रद्युमन के लिए करना चाहती थी और उसके लिए उसका प्यार असीम था। वह एक आदर्श जीवन जीना चाहती थी, एक ऐसा जीवन जहाँ वह खुश रह सके। वह यह जीवन उसके साथ साझा करना चाहती थी क्योंकि उसके लिए वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो उसे खुशी दे सकता था, जो उसे संतुष्ट कर सकता था। जो उसे हर दिन उठने की शक्ति और प्रेरणा देता था, वरना वह अपने लालची और क्रूर पति दुर्जय की भयानक बाहों में खो जाती।

लेकिन उसके जीवन में अंधकार भी था।

और वह इसका सामना करने ही वाली थी।

ऊर्जा उसके अंदर कौंध गई, उसका माथा अरबों रंगों और खरबों तरह की आवाज़ों से भर गया और वह ज़ोर से चिल्लाई...

*

उसकी वास्तविकता बदल गई और जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो उसे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ। वास्तव में, उसे एक ऐसी शांति और संतोष का अनुभव हुआ जो पहले कभी नहीं हुआ था, एक ऐसी गर्माहट जिसकी उसे जीवन भर चाहत हो सकती थी। तभी उसे एहसास हुआ कि वह एक जंगल में जाग उठी है। चारों ओर हरियाली थी और सूरज की किरणें उसकी आँखों पर पड़ रही थीं, उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

मैं कहाँ हूँ? यह उसका पहला सवाल था।

उसने आह भरी और खड़ी हो गई, अपने आस-पास का जायजा लेने और यह समझने की कोशिश करने लगी कि वह कहाँ है—और यह एक घना जंगल था, किसी परीकथा जैसी जगह। इसमें कुछ भी डरावना या असाधारण नहीं था।

वह चलने लगी और उसे आकाश में उड़ते कौवों की कांव-कांव, पेड़ों पर बैठे अंगूठा चूसते बबूनों की आवाज़, और उसके सैंडल से कुचले हुए पत्तों की सरसराहट सुनाई दी। खुले मैदान को पार करने के बाद वह एक झील के पास पहुँची और उसने देखा कि इस इलाके में कितना सुंदर जलाशय हो सकता है।

“मुझे लगता है कि मुझे यह पसंद आने लगा है।” वह मन ही मन मुस्कुराई। “बागुल, तुम्हारा क्या ख्याल है?”

“मुझे लगता है कि मैं किसी पर भरोसा नहीं कर सकती।” उसके भीतर की आवाज़ ने फुफकारते हुए जवाब दिया। “लेकिन मैं यह देखने के लिए बहुत उत्साहित हूँ कि इस माया के पास क्या है।”

और तभी उसने वह आवाज़ सुनी। तेज़ कदमों की आहट। पूरब से आ रही थी। उसके कान बजने लगे और उसने झाड़ियों और लताओं के बीच, शाखाओं के बीच, फटे-पुराने कपड़ों और धोती में लिपटी एक युवती को अपनी ओर दौड़ते हुए देखा। उसकी आँखें दुर्गाज्योति की तरह नीले रंग की थीं, लेकिन उसके बाल दुर्गाज्योति की तरह छोटे नहीं थे। उसका चेहरा अंडाकार था और वह जल्दी में थी, जितनी तेज़ी से दौड़ सकती थी, दौड़ रही थी, जब तक कि वह दुर्गाज्योति के चारों ओर नहीं घूम गई।

वह लड़की दुर्गाज्योति के पीछे आई और छिपने की कोशिश करने लगी।

तुम किससे भाग रहे हो? क्या हुआ? क्या सब ठीक है?

लेकिन लड़की चुप रही। खुले मैदान से कुछ और लोग प्रकट हुए, जिनके हाथों में तलवारें और भाले थे। बीच में खड़ा आदमी वास्तव में बाकी लोगों से लंबा था और उसके बाल घुंघराले थे। उसने एक बड़ा हेलमेट पहन रखा था जिससे उसका चेहरा भी ढका हुआ था।

“वे तुम्हारे पीछे क्यों पड़े हैं?” दुर्गाज्योति ने लड़की से पूछा।

“किसी भी बात पर भरोसा मत करो,” उसके भीतर की आवाज़ ने कहा। और फिर उसे तुरंत एहसास हुआ कि यह सब एक भ्रम है। इनमें से कुछ भी वास्तविक नहीं है।

लेकिन दुर्गाज्योति उस छोटी बच्ची के डर को महसूस कर सकती थी, उसकी आँखों में पानी आ रहा था और उसका चेहरा पीला पड़कर भयभीत हो रहा था। चाहे दुर्गाज्योति खुद को कितना भी समझाने की कोशिश करे कि यह सब सच नहीं है, उसे सब कुछ वास्तविक ही लग रहा था।

“इसे हमें दे दो, स्त्री।” सिपाही ने कर्कश स्वर में कहा। वे अजीब से कवच में थे और उनके पास ढाल के साथ लंबी तलवारें थीं। “यह हमारे साथ ही रहेगी। यह हमारे स्वामी की प्रिय है।”

दुर्गाज्योति ने बीच में खड़े उस व्यक्ति की ओर देखा, जिसे वे गुरु कह रहे थे। “मुझे ऐसा नहीं लगता,” उसने अंततः कहा, शायद इसलिए कि वह स्वयं भी कभी ऐसी ही स्थिति में थी, और उसे अपने प्रति सुरक्षात्मक भाव आ गया। “दफा हो जाओ।”

“तुमने गलत लोगों से पंगा लिया है,” सैनिक ने उसे फटकारा और उस पर भड़क उठा।

उसकी उंगलियों से एक अजीब सी ऊर्जा निकलने लगी, और सफेद व हल्के रंग की उस ऊर्जा से उसने पूरे इलाके में बिजली के झटके छोड़े, जो पुरुषों की छाती और चेहरे पर लगे, जिससे वे जलकर मर गए। उसे एक अलग ही एहसास हुआ, क्योंकि आखिरकार उसने किसी को मार डाला था, क्योंकि ज्यादातर यायाती लोग मृत्यु से अप्रभावित रहते थे।

क्या वह अब भी किसी अस्थायी, मायावी द्वारका पर नहीं थी? ऐसा ही लग रहा था।

मुख्य स्वामी शांत भाव से अपना हथौड़ा लेकर धीरे-धीरे दुर्गाज्योति की ओर बढ़े। दुर्गाज्योति बागुल की शक्ति को समेटने लगीं, उनकी आंखें बिल्ली जैसी हो गईं और उनका चेहरा अनेक रंगों से जगमगा उठा...

और उसने अपनी उस ऊर्जा को अपनी ओर आ रहे व्यक्ति की ओर फेंका, लेकिन उसने उसे अपने हथौड़े से मोड़ दिया।

"ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।" भीतर से आती हुई आवाज फुसफुसाई।

वह हथौड़ा लेकर आगे बढ़ा, और जैसे ही उसने हमला किया, दुर्गाज्योति ने लड़की को एक

तरफ धकेल दिया और अपने हाथ आगे बढ़ाकर एक विशेष ऊर्जा उत्पन्न की जिससे हमला विक्षेपित हो गया। उसने अपने लिए एक ढाल बना ली थी।

“तुम कौन हो?” वह चिल्लाई। और चिल्लाते हुए उसने उसे पीछे से धक्का दिया।

वह आदमी पीछे हट गया और दुर्गाज्योति ने लड़की से भागने को कहा। लड़की ने वैसा ही किया और वे दोनों उसके पीछे भागने लगे, जबकि हथौड़ा लिए वह आदमी वहीं खड़ा रहा।

*

बारिश तेज होने लगी थी और उन्होंने अपने लिए एक गुफा ढूंढ ली थी। दुर्गाज्योति लकड़ियाँ लाकर लाई और अपनी उंगलियों से चूल्हे को गर्म किया। वह बैठी, उस छोटी लड़की को गर्मी दे रही थी और उससे पूछा:

"तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़की ने उसकी तरफ देखा और मुस्कुराई। वह मैली-कुचली थी और देखकर लग रहा था कि उसने बहुत कुछ सहा है।

“चुप रहो,” उसने जवाब दिया।

“खामोशी? तुम्हें यह नाम किसने दिया?”

उसने खुद की ओर इशारा किया।

"और ऐसा क्यों है?"

क्योंकि मुझे चुप रहना पसंद है।

दुर्गाज्योति उदास हो गई। उसे उसमें अपनी झलक दिखाई दी। “उस स्वामी को तुमसे क्या चाहिए था? वह तुम्हारे पीछे क्यों पड़ा था?”

वह मुझे खा जाना चाहता है।

"उपभोग करना?"

“हां।” वह कांप रही थी और डरी हुई थी। “वह मुझे चोट पहुंचाना चाहता है।”

उसके भीतर से एक आवाज आई, “यह सब सच नहीं है, दुर्गाज्योति। भ्रम की शक्ति से विचलित मत हो। यह सब नकली है।”

लेकिन ऐसा लगता नहीं है। क्या होगा अगर भ्रम इस तथ्य में निहित हो कि यह भ्रम जैसा दिखना चाहिए, लेकिन वास्तव में भ्रम नहीं है?

यह एक संभावना हो सकती है।

"चिंता मत करो, तुम मेरे साथ सुरक्षित हो।"

मैं अपनी रक्षा करना चाहता हूँ।

और तुम ऐसा करोगे।

"कैसे?"

“तुम मेरे साथ हो। चिंता मत करो।”

छोटी बच्ची ने पलकें झपकाईं। आँखों का रंग, चेहरा, होंठ - दुर्गाज्योति को लगा कि इसमें कुछ बहुत ही अजीब है। उसने जंगल में चारों ओर देखा, फिर चूल्हे की ओर, और फिर उसे अचानक समझ आने लगा। वह पहले भी यहाँ आ चुकी थी। लेकिन तब वह वह नहीं थी जो अब

थी। वह वही छोटी बच्ची थी। वह...

“तुम मैं ही हो,” उसने लड़की के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

मायासभा मुझे कुछ दिखाना चाहती है। लेकिन क्या?

यादें उमड़ पड़ीं और उसे वो समय याद आ गया, जब वह छोटी थी और तालजान के लोगों से भाग रही थी जो उसे वापस ले जाना चाहते थे। वे उसे यौन दासी बनाकर ले जाना चाहते थे और उसे चोट पहुँचाना चाहते थे। क्योंकि उसकी आँखें सबको पसंद थीं। उसकी आँखें ही थीं जो सबको आकर्षित करती थीं।

"यह तुम्हें कुछ दिखाने की कोशिश कर रहा है।" भीतर से एक फुसफुसाती हुई आवाज आई।

“हां, लेकिन क्या?” दुर्गाज्योति ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

“हम्म?” बगल में बैठी लड़की ने पूछा। “सब ठीक है?”

"हां, हां।"

दुर्गाज्योति को जो कुछ दिखाया जा रहा था, उसके पीछे छिपे सबक को समझना था। या फिर यह महज़ उन दुखों में से एक हो सकता था, जिन्हें उसके सामने चित्रित किया जा रहा था। खुद को इस हालत में देखना, खुद को इस रूप में देखना, उसके लिए विचित्र और डरावना था।

“मुझे एक बात बताओ। गुरुजी कैसे दिखते थे?” दुर्गाज्योति ने पूछा, मानो उसकी यादों को सुधारा जा रहा हो।

और इससे पहले कि वह कुछ जवाब दे पाती, उनके सामने उसे एक आकृति दिखाई दी। वह व्यक्ति आ चुका था। और वह विशालकाय था, बारिश के बीच खड़ा था और उसके हाथों में एक बहुत बड़ा हथौड़ा था।

“वह कभी हार नहीं मानता, है ना?” दुर्गाज्योति ने दांत पीसते हुए कहा।

"कृपया मुझे बचाओ," लड़की रोते हुए बोली और उसे गले लगा लिया।

"चिंता मत करो।"

दुर्गाज्योति बारिश में प्रवेश कर गईं, उनकी उंगलियां ऊर्जा से भरी हुई थीं, उनकी आंखों से धुएं की लपटें निकल रही थीं क्योंकि वह बागुल का आह्वान करती रहीं।

“तुम जो भी हो, हमें अकेला छोड़ दो,” उसने कहा, हालाँकि उसे उसकी पहचान जानने में कठिनाई हो रही थी, फिर भी वह समझ सकती थी कि वह कौन है। ज़ाहिर है, दुर्जय, वही आदमी जिसने उसे सताया था।

हथौड़ा आगे बढ़ा और उसने अपनी शक्तियों से उसे मोड़ दिया, जिससे हथौड़ा उस आदमी से दूर जा लगा। लेकिन वह आदमी रुका नहीं और सीधे उसकी ओर मुक्का मारने के लिए बढ़ा। उसे गालों पर मुक्का लगा और उसके मुंह में खून आ गया।

दुर्गाज्योति ने अपने शक्तिशाली ऊर्जावान हाथों से स्वामी की छाती पर प्रहार किया और वह जमीन पर गिर पड़ा। फिर उसने नियंत्रण अपने हाथ में लिया और आसपास की चट्टानों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया। उसने अपनी टेलीपैथिक शक्तियों का उपयोग करते हुए चट्टानों को स्वामी के चेहरे पर बार-बार प्रहार किया। इससे स्वामी को भीषण पीड़ा हुई और वह बुरी तरह घायल हो गया। इसके बाद दुर्गाज्योति ने स्वामी का गला घोंटने का निर्णय लिया।

“तुम बचपन से ही मुझे परेशान करते आ रहे हो और मेरी जिंदगी बर्बाद कर रहे हो। जब मैं छोटी बच्ची थी तभी तुमने मुझमें दिलचस्पी दिखाई थी और यह बात मुझे बहुत दुख देती है कि तुम अब भी मुझे सताते रहते हो। अब मैं तुम्हारे जैसे लोगों के दबाव में नहीं आऊंगी।”

बागुल की ऊर्जा से घुटन हो रही थी जिससे एक कर्कश, असहाय आवाज निकल रही थी और उस आदमी की आखिरी सांसें सुनाई दे रही थीं।

दुर्गाज्योति मुस्कुराई और अपने चेहरे से गीले बाल पोंछते हुए उसने मुखौटा हटा दिया। चेहरा देखते ही वह डर और सदमे से पीछे हट गई। उसने गुफा वाली लड़की की तरफ देखा, लेकिन वह अब तक गायब हो चुकी थी। दरअसल, जिस आदमी को उसने अभी-अभी मारा था, वह भी गायब हो गया था और उसके आसपास की वास्तविकता बिखर रही थी।

क्योंकि वह जानती थी कि जिस व्यक्ति को उसने आज देखा था और निर्दयता से मार डाला था, वह कोई और नहीं बल्कि प्रद्युमन ही था।

उन्हें बताया गया था कि वह यहाँ है।

आसमान बिल्कुल साफ था, हालांकि पृष्ठभूमि में पहाड़ थोड़े गहरे रंग के दिख रहे थे।

अन्य सैनिकों की तरह ही वह सिपाही बर्फ से ढकी ज़मीन की ओर बढ़ने लगा। हवा तेज़ थी, इसलिए उसने अपने ऊपर एक बड़ा कोट ओढ़ रखा था। उसने अपने ऊपर फर का आवरण ओढ़ रखा था ताकि उसे ठंड से बचाया जा सके। आसमान से बर्फ के टुकड़े गिर रहे थे और उसके चारों ओर जमी बर्फ और नीलेपन में घुल रहे थे। उसके कदमों की आहट सुनाई दे रही थी और उसके पास मौजूद गहने की आवाज़ भी।

उस व्यक्ति ने उसे स्पष्ट निर्देश दिए थे कि उसे यह यहीं मिलेगा। और उसे अपनी आंखों से रुमाल हटाकर इसे देखना था। उसने ऐसा पहले कभी नहीं किया था। उसे बताया गया था कि सांस्कृतिक रूप से रुमाल हमेशा पहनना चाहिए। ऐसा करना एक चुनौती थी, और वह इसे उतारता भी था, लेकिन यह एक धार्मिक प्रथा थी जिसका वे पालन करते थे।

लेकिन यहां उन्हें ऐसा करने की स्वतंत्रता दी गई थी।

वह बर्फ में से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा और फिर बर्फ से बाहर निकला, जब तक कि उसे पता नहीं चला कि वह एक कांच जैसी चिकनी सतह पर चल रहा है, जो इतनी नाजुक और चलने में डरावनी थी। उसका ध्यान भटकने लगा और वह खुद को वहीं रोके रखने की कोशिश करने लगा। उसे ठंडे पानी में गिरने का डर था। वह पतली बर्फ पर खड़ा था और उसे इसका एहसास हो रहा था। इसी क्षण उसने अपने रुमाल को खींचा और अपने चारों ओर जीवन देखा, जिसमें ढेर सारे रंग और हलचल थी। दूर किनारे पर, उसे बारहसिंगे दिखाई दिए जो उसे देख रहे थे, शायद सोच रहे थे कि वह कितना मूर्ख है जो इस बर्फ पर चल रहा है। वह कुछ कदम आगे बढ़ा और जैसे ही वह करीब पहुंचा, उसे वह मिल गया जिसके लिए वह आया था।

वह व्यक्ति जिसे बहीखाते में दर्ज जानकारी के अनुसार वह देखने वाला था।

आखिरकार, यह उसकी रानी देवमेधा की पुत्री, राजकुमारी और अंधक वंश की वंशज का जमा हुआ शव था। सिपाही के होंठ कांपने लगे और उसकी आँखें भयानक रूप से भयभीत हो गईं। उसने पानी के नीचे उस स्त्री की निर्जीव आँखें देखीं, जो संभवतः डूब गई थी और हाइपोथर्मिया से पीड़ित थी। वह जीवित हो सकती थी, लेकिन उसने बहुत कष्ट सहा था। वह वापस दौड़कर सबको बताना चाहता था, लेकिन उसे पहले उसे बचाना था।

अगर इसका कोई मतलब था तो उसे उसे बचाना चाहिए था।

*

सत्यकी और देवमेध के सत्ता में आने के बाद से बलराम ने हालात बदलते देखे थे। दोनों गुट आपस में मिल गए थे, और शुरुआत में जो गुट बना था, वह रेवती और उसके सेनापति अकुरजी के शामिल होने से और भी बड़ा और प्रमुख हो गया था। लेकिन यह सब देखकर बलराम का अपराधबोध और भी गहरा होता जा रहा था, क्योंकि वह एक हत्यारे—सत्यकी—का साथ दे रहा

था। उसे बेहतर सोचना चाहिए था।

फिलहाल, वह देवमेधा के तम्बू के बाहर खड़ा था और उसके आने का इंतज़ार कर रहा था। सत्यकी वहाँ था, चेहरे पर हल्की मुस्कान लिए और सुबह की धूप में उसकी चोटी चमक रही थी। वे दोनों चुपचाप खड़े रहे जबकि उनके पीछे शिविर की हलचल जारी थी, जैसे तलवारों को सान पर धार दी जा रही हो या शायद सैनिक एक-दूसरे को लोरी सुना रहे हों।

“क्या तुम मुझसे नाराज़ हो?” सत्यकी ने धीरे से पूछा। उसके चेहरे पर अब वो नशे में धुत वाला भाव नहीं था जो पहले वह बेपरवाही से दिखा रहा था। “यकीन मानो, मैंने ये सब सिर्फ़ ज़मीन और उन लोगों की भलाई के लिए किया है जिनकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है।”

आप उसे जेल में डाल सकते थे।

“उसके अंदर आग थी और हम बर्फ पर रहते हैं। अगर मैंने उसे दंडित न किया होता या उसे ऐसी जगह न रखा होता जहाँ उसे कोई पहचान न सके, तो वह मुझे पिघला सकती थी।”

लेकिन वह जानी-पहचानी है। मुझे पता है वह कहाँ है।

और क्या आपने इसके बारे में कुछ किया?

बलराम ने सिर हिलाया। उसने इस बारे में सिर्फ रेवती और अकुरजी को बताया था। वह इसे अपने अंदर नहीं रख सका क्योंकि इससे उसे बहुत बेचैनी हो रही थी।

“अगर हम चुप रहें तो हमारी साझेदारी उतनी ही अच्छी रहेगी, चाचा जी। मुझे उम्मीद है कि मैं इस मामले में आप पर भरोसा कर सकता हूँ। मैं गृहयुद्ध नहीं चाहता।”

बलराम ने सिर हिलाया। क्या उसके पास कोई विकल्प था? “तुमने कहा था कि तुम्हारे पिता ने देवमेधा के बेटे को मार डाला और अब उसकी बेटी लापता है। अगर उसे पता चल गया तो...”

“हम यह सुनिश्चित करेंगे कि वह ऐसा न करे, ठीक है?” उसने मजाक करते हुए हल्के से हँसा।

बलराम समझ गया था कि वह एक समाजविरोधी की तरह बातें कर रहा है और उसमें अब कोई सहानुभूति नहीं बची है। उसने कृतवर्मा को शहर के बाहरी इलाके में अलाव के पास अकेले बैठे देखा, शायद वह सोच रहा था कि सोन्या कहाँ है।

“मुझे उस व्यक्ति से बदला लेना है जो बदला लेने का हकदार है। मेरे पिता को सजा मिलनी चाहिए और उन्हें बेरहमी से सजा मिलनी चाहिए। मैं जो भी करूं, सोन्या के लिए ही करूंगा।” उसने सोन्या को सजा देने में मिल रहे आनंद को छिपाने की कोशिश करते हुए पूरी ईमानदारी से कहा।

बलराम ने कुछ नहीं कहा क्योंकि देवमेधा ने उन्हें अंदर आने दिया। अंदर आते ही उन्होंने देखा कि देवमेधा अपनी बीयर पी रही थी और अपने सैनिकों से बातें कर रही थी। वे एक युद्ध कक्ष में थे जहाँ नक्शे बिछे हुए थे और पुतले रखे हुए थे। वे एक युद्ध की योजना बना रहे थे और बलराम उसमें भाग ले रहे थे।

सत्यकी ने आत्मविश्वास से पूछा, "हम अभी कहाँ हैं?" और साथ ही उसने अपने लिए एक गिलास बीयर भी डाली।

तम्बू लाल रंग का था और उसमें रोशनी कम थी, जिससे देखना मुश्किल था, हालांकि देवमेधा

योजना के आकार का पता लगाने के लिए मूर्तियों और नक्शों को छू रहा था।

“हम दक्षिणी द्वार और पूर्वी द्वार के बेतुके विवाद में फंस गए हैं। हमें इस बारे में क्या करना चाहिए? क्या हमें दोनों पर हमला करना चाहिए?”

सत्याकी ने समझाया, “हम चारों द्वारों पर हमला करेंगे। हमें उसे अस्थिर करना होगा और उसे चौंकाना होगा। पूरी ताकत से हमला करो और उसे दूर से ही पता न चलने दो कि हम आ रहे हैं। और यह एक सीधी लड़ाई होगी।”

“उफ़,” देवमेधा ने आह भरी, “काश सोन्या यहाँ होती। उसे इन सब कामों में महारत हासिल है। मैं अब इन सब कामों के लिए बहुत बूढ़ी हो गई हूँ।” उसने सिर हिलाया। “मुझे तो यह भी नहीं पता कि वह कहाँ है।”

बलराम और सत्यकी ने एक-दूसरे की ओर देखा, सत्यकी ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा जैसे कि यह कोई मजाक हो।

सत्याकी ने आगे कहा, “मान लीजिए, महाराज, हम बिल्कुल सही जगह पर हैं। हमें बस कुछ रथों को हासिल करना है और घुड़सवार सेना का इस्तेमाल करना है...”

बलराम ने बीच में खांसकर सबका ध्यान भटकाने की कोशिश की। दोनों उसकी ओर मुड़े और वह हमेशा की तरह शांत भाव से बोला, "यह काम नहीं करेगा।"

तो क्या मैं कह सकता हूँ, कृपया हमें बताएं कि वह क्या होगा?

“युद्धजीत एक घमंडी आदमी है,” बलराम अपने दोनों साथियों के चारों ओर घूमते हुए बोला। “हमें इसका फायदा उठाना होगा। हमें उसे मूर्ख बनाना होगा।”

"हम इसे कैसे करते हैं?"

“असल बात यह है कि उसकी पूरी सेना पर हमला करना मूर्खता होगी क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली है। उसकी सेना बहुत बड़ी है और बहुत से लोग उसका सम्मान करते हैं। लेकिन अगर हम उसे अंदर से ही कैद कर लें, तो उसकी शक्ति पहले जैसी नहीं रहेगी। लोग उससे डरेंगे नहीं और सत्यकी उसकी जगह ले सकता है।”

“आप ऐसा करने की योजना कैसे बना रहे हैं?” देवमेधा ने उत्सुकता से पूछा।

“सत्यकी, देवमेध, तुम्हें द्वार पर लाता है और कहता है कि उसने तुम्हें पकड़ लिया है और तुम्हें कैद किया जाएगा। बेशक, यह सब एक बड़ा छल होगा, और जैसे ही तुम युधजित के साथ कमरे में पहुँचोगे, तुम उस पर हमला कर दोगे। इसी बीच सत्यकी के आदमी महल के पहरेदारों पर हमला शुरू कर देते हैं और उन्हें मार गिराते हैं, जिससे तुम्हारे लोगों के लिए एक छोटा पुल बन जाता है। देवमेध भी आता है और हमले में शामिल हो जाता है। जैसे ही युधजित का काम खत्म हो जाए, उसे भी मार डालो और बस, किला तुम्हारा हो जाएगा। लेकिन अपनी उपस्थिति ज्यादा मत दिखाओ। तुम सिर्फ दिखावे के लिए कैदी बने रहोगे, और हम दिखा देंगे कि युधजित मर गया है या कुछ और। सत्यकी राजा बना रहेगा और फिर शायद एक महीने बाद अंधकों और वृष्णियों के बीच संधि हो जाएगी, जिससे लोग भी बिना किसी परेशानी के उसका पालन करेंगे। अन्यथा, अगर तुमने तुरंत देवमेध से हाथ मिला लिया, तो तुम्हें विद्रोह का सामना करना पड़ सकता है। तुम दोनों के बीच की ऐतिहासिक शत्रुता को मत भूलो।”

जैसे-जैसे वह समझाता गया, वे ध्यान से सुनते रहे और सिर हिलाते रहे। वे निश्चित रूप से आकर्षित हो गए थे, और देवमेधा ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा: "मुझे कैसे पता चलेगा कि सत्यकी ताज मिलने पर अपनी शर्तों से मुकर नहीं जाएगा, जबकि उसने मुझे अपना अस्थायी कैदी बना रखा है?"

“अरे, रहने दो!” सत्यकी ने विरोध किया।

“उसकी चिंता मत करो, देवमेध। तुम यहाँ हो, उसके साथ गठबंधन कर रही हो, मेरी वजह से। तुम मुझ पर भरोसा करती हो, और मैं उस पर भरोसा करता हूँ,” बलराम ने अपनी नाक फुलाते हुए झूठ बोला।

“ठीक है, तो यह विचार बढ़िया लगता है,” देवमेधा ने कहा। “इसमें हमारे संसाधनों की कम आवश्यकता होगी और मुझे इस बात से बहुत खुशी है।”

सत्याकी भी सहमत हो गया। देवमेधा ने आगे कहा, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं बाला से थोड़ी देर बात करना चाहूँगा, बेटा।"

सत्याकी ने सिर हिलाया और तम्बू से बाहर निकल गया, जाते समय उसकी निगाहें धमकी भरी थीं। बलराम को उम्मीद थी कि देवमेधा उसके जाते ही कुछ बोलेगी, लेकिन उसने एक और गिलास बीयर डाली और आह भरी।

“क्या आपको पता है कि सोन्या कहाँ है?” उसने तुरंत पूछा।

उसने अपने होंठ चाटे। "नहीं।"

मुझे बताया गया था कि आप आखिरी व्यक्ति थे जिनसे उसने बात की थी।

"हाँ।"

"आपने किस बारे में बात की?"

"सत्यकी के साथ गठबंधन करने के आपके उद्देश्य में उनके समर्थन के बारे में।"

"और वो भाग गई, मैंने यही सुना है।"

वे निर्दयी नौकर छुपकर बातें सुन रहे होंगे और इन विवरणों का जिक्र कर रहे होंगे।

“मुझे चिंता होती है। मुझे लगता है कि वह खतरे में है,” उसने कहा। “और मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन मुझे लगता है कि इस लड़के का इससे कुछ लेना-देना था।”

बलराम ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?"

"क्योंकि मुझे बताया गया था," उसने अपनी भौहें ऊपर उठाते हुए, बात को रहस्यमय बनाए रखते हुए कहा, "मैंने एक खोजी दल को उसे उस जगह खोजने के लिए भेजा था जहां उसे आखिरी बार देखा गया था।"

उसने आगे कोई जवाब नहीं दिया, जबकि वह उसके कुछ कहने का इंतजार कर रही थी।

“तुम कुछ ज्यादा ही चिंतित और परेशान हो रही हो।” बलराम अपनी चचेरी बहन के पास आया और उसके कंधों को पकड़ लिया।

“मुझे तुम पर भरोसा है, चचेरे भाई। मुझे उम्मीद है कि तुम अपना वादा नहीं तोड़ोगे। अगर तुम सचमुच और ईमानदारी से इस लड़के की गारंटी देते हो, तो मैं तुम्हारे फैसले पर भरोसा करूंगी और उसका साथ दूंगी,” उसने कहा।

बलराम ने सिर हिलाया। वह झूठ बोलना नहीं चाहता था और झूठ बोलना उसे परेशान कर रहा था, लेकिन उसके पास कोई चारा नहीं था। उसे अपने हितों का भी ध्यान रखना था। इसलिए, उसने सिर हिलाया और दांत पीसते हुए कहा, "हाँ, बिल्कुल, मुझे उस पर भरोसा है।"

“अच्छा,” देवमेधा मुस्कुराई। “अगर ऐसा है, तो मुझे लगता है कि अब आपकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है।”

"आपका क्या मतलब है?"

"तुमने मुझे एक सहयोगी दिया और यहीं पर तुम्हारी यात्रा समाप्त होती है, चचेरे भाई।"

उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। उसकी आवाज़ में एक अजीब सी ठंडक आ गई थी और वह उदासीन लग रही थी। "क्या हो रहा है?"

“जो बात तुम्हें काफी समय से देख लेनी चाहिए थी।” वह मुस्कुराई और उससे दूर हट गई। “मैंने युधजित को खत्म करने की योजना बनाई थी, लेकिन मुझे नहीं पता था कि किसके साथ मिलकर ऐसा करूं। लेकिन अब, चूंकि मेरे पास सत्यकी है, इसलिए मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है। जब मैंने तुमसे कहा था कि राजधानी द्वारकावती तुम्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ना चाहती है, तो तुमने मुझसे यह नहीं पूछा कि मुझे यह कैसे पता चला।”

वह अचंभित रह गया, मानो जमीन पर जम सा गया हो। "क्या आप दुर्गाज्योति के संपर्क में थे?"

“जब वह वहां थी तब तो ठीक था, लेकिन फिर बीच में संदेशों को लेकर समस्याएं आने लगीं। युधाजित संदेशों को इंटरसेप्ट कर रहा था और फिर वह गायब हो गई, मैंने सुना है।”

बलराम की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। उसने युधजित के कमरे में वे संदेश देखे थे और वे संदेश उसके और बहीखाते के बीच नहीं थे, बल्कि देवमेधा और बहीखाते के बीच थे।

“शुरू में तो मैंने सोचा था कि मैं तुम्हें सीधे-सीधे छोड़ दूंगी, लेकिन तुम्हारे अच्छे सुझाव थे, इसलिए मैंने इसे टाल दिया। यकीनन, खाता बही (लेजर) इससे खुश नहीं था।” उसने सिर हिलाया। “मैं टालमटोल कर रही थी, लेकिन सब्र के अपने गुण और फल होते हैं। मुझे जो चाहिए था वो मिल गया और इसके लिए धन्यवाद। लेकिन अब मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।”

तो अब आगे क्या होगा? आप युधजीत की जगह ले लेंगे।

“और हां, मैं अपने साथी को भी मार डालूंगी। मेरे जासूस को पता चला था कि उसने मेरी बेटी पर हमला किया है, और जब तक वह आराम कर रही है, मैं सत्याकी की हत्या की योजना बनाऊंगी। लेजर ने मुझे कम आंका,” उसने कहा। “ऐसा सोचा गया था कि मैं शोक में डूब जाऊंगी और सत्याकी पर हमला कर दूंगी, लेकिन मुझे वह अभी चाहिए, बाद में नहीं। मैं वृष्णि वंश पर कब्ज़ा कर लूंगी और उसे नया जीवन दूंगी। लेजर सहमत हो गया और इस तरह हम दोनों ने अपनी योजनाओं के लिए तुम्हारा और सत्याकी का इस्तेमाल किया। दुर्भाग्य से, सोन्या इस योजना का हिस्सा नहीं थी और मुझे उम्मीद है कि वह ठीक है और उसका स्वास्थ्य अच्छा है।”

गार्ड मौके पर पहुंचे और बलराम को पीछे से पकड़ लिया।

“क्या तुम प्रद्युमन के सहयोगी हो?” उसने अविश्वास से पूछा।

“बेशक,” उसने उपहास उड़ाते हुए कहा। “वह राजा है, बेवकूफ लड़के। तुम हमेशा से

आदर्शवादी रहे हो। हम सभी को अपने हितों का ध्यान रखना पड़ता है, है ना?”

वह पूरी तरह से गलत समझ रहा था। सही गठबंधन तो युधजित का था, देवमेध का नहीं। उसके आसपास के सभी कमजोर लोगों ने उसे धोखा दिया था; वह उन्हें सही लोग समझता था, लेकिन द्वारका में नैतिकता का ताना-बाना मिट गया था और उसे यह समझ लेना चाहिए था। उसे यह भी समझ आ गया था कि वितिहोत्र उस पर हमला क्यों नहीं कर रहा था। आखिर वह पहले से ही शत्रु क्षेत्र में था।

इससे भी बुरी बात यह थी कि उनका सबसे बड़ा रहस्य वास्तव में सुलझ गया था।

वहाँ एक बहीखाता था। और जब पहरेदार उसे उससे दूर खींच रहे थे, तो उसके मन में बस यही सवाल था कि वह बहीखाता कौन है—उसकी पत्नी या उसका सेनापति।

33

समवा को यह सोचकर अजीब लग रहा था कि उसके पिता ने ही उसे बचाया है—वही व्यक्ति जो उसे नष्ट करने पर तुला हुआ था, वही उसका उद्धारकर्ता बन गया। यह सोचना भी अजीब था। प्रभास सागर के करीब पहुँचते हुए समवा ने आह भरी और मुख्य धारा के पास तक फैले विशाल समुद्री जल को देखा, और दूर क्षितिज वाकई सुंदर था।

उसे याद था कि जब उसे ज़हर दिया गया था तो उसे असहनीय दर्द हो रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका शरीर मर रहा हो, फिर भी वह मरा नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो वह पूरी ज़िंदगी असहनीय दर्द में रहेगा और इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता।

और उसके पिता ने उसे बचा लिया।

समवा ने उसकी ओर देखा और वह उससे पहले की तुलना में अधिक उम्रदराज लग रहा था जब समवा उससे मिला था। वह अधिक बुद्धिमान और मजबूत भी लग रहा था। जिस व्यक्ति को उसने देखा था, वह अब कायर नहीं था, ऐसा महसूस हो रहा था। उसने उससे बात नहीं की, बस उसे पानी दिया। समवा इसके लिए आभारी होना चाहता था, उसे धन्यवाद देना चाहता था, लेकिन वह शर्मिंदा महसूस कर रहा था। उसने जीवन भर अपने पिता को कोसा था और यह पहली बार था जब वह वास्तव में खुश था कि कृष्ण उसके आसपास थे।

“क्या तुम ठीक हो?” समवा ने पूछा।

“हां,” उसने कहा।

"आप क्या सोच रहे हैं?"

“जीवन के प्रति चिंतन,” कृष्ण ने दांत पीसते हुए कहा।

समवा ने सिर हिलाया। उसने और कुछ पूछना उचित नहीं समझा। वह अकेला ही रहा, जब तक कि वे तट पर नहीं पहुँच गए, जहाँ मछुआरों का एक समुदाय था और तरह-तरह की मछलियाँ बेची जा रही थीं, तंबू लगाए जा रहे थे, व्यापारिक जहाज समुद्र में खड़े थे, साथ ही घाट, नाविक और पर्यटक भी थे। समवा ने देखा कि प्रद्युमन के सैनिक यहाँ थे, इधर-उधर घूम रहे थे और हर छोटी-बड़ी बात का जायजा ले रहे थे।

“मैं कुष्ठ रोगी और लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हूँ,” समवा ने अपना हुड ढकते हुए कहा। “मुझे यहाँ नहीं देखा जा सकता।”

दूसरी ओर, कृष्ण ऐसा कर सकते थे। वे अब पहले जैसे बिल्कुल नहीं दिखते थे। वे एक अलग ही इंसान बन गए थे।

“हम यहाँ थोड़े समय के लिए ही हैं। हमें एक ऐसे नाविक की तलाश करनी होगी जो हमें अपना जहाज दे सके और हमें दक्षिण की ओर ले जा सके।”

समवा ने सिर हिलाया। घोड़ों से उतरकर जब वे बस्ती में घूमने लगे, तो कृष्ण के खाली समय में किए जाने वाले कामों के बारे में बातें करने लगे। समवा को सचमुच दिलचस्पी थी और जैसा कि उसने देखा, कृष्ण स्वयं एक कुशल मछुआरे थे और उन्हें हर तरह की मछलियों की जानकारी

थी, खासकर नदी के पानी में पाई जाने वाली मछलियाँ। कृष्ण के पास काफी खाली समय होता था, इसलिए वे बुनाई भी करते थे और शाम को क्षितिज को निहारते थे। उनका जीवन शांत, सरल था, लेकिन बिना किसी उद्देश्य के। वे अपने जीवन पर विचार करते थे, लेकिन कभी-कभी उद्देश्यहीनता उन्हें परेशान कर देती थी। वे उदास हो जाते थे और अपने मूल जीवन में लौटना चाहते थे।

"तो फिर तुमने ऐसा क्यों नहीं किया?" समवा ने पूछा था।

और कृष्ण के अपने कारण थे। लेकिन उन्होंने उन्हें साझा नहीं किया। जब भी सामवा उनसे यह सवाल पूछता, तो कृष्ण बचाव की मुद्रा में आ जाते। मानो यह उनके लिए कोई शर्मनाक या अपमानजनक बात हो।

अंत में समवा और कृष्ण को एक नाविक मिल गया जो उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए तैयार था, बदले में समवा की वे अंगूठियाँ चाहता था जो उसने अपनी पत्नी लक्ष्मणा की थीं, उनके गायब होने से ठीक पहले। समवा उन्हें देने के लिए तैयार नहीं था, लेकिन जब उसे कोई विकल्प नहीं दिखा तो उसे झुकना पड़ा।

"क्या आपको यकीन है?" कृष्णा ने पूछा।

समवा उस छोटी नाव को देख रहा था जो उनका इंतज़ार कर रही थी। यह नाव यात्रा में एक महत्वपूर्ण साथी साबित होगी और यह यात्रा चाहे जो भी हो, उसके लिए इस दुनिया की हर चीज़ से बढ़कर थी, यहाँ तक कि उसके द्वारा पहने हुए सोने के गहनों से भी।

"क्या मेरे पास कोई विकल्प है? उसे यह पसंद है। यह...उह...काफी समय हो गया है, हालाँकि तब मुझे इसे छोड़ देना चाहिए था। यादों से चिपके रहना और अतीत में अटके रहना सही नहीं है। क्योंकि अतीत तो अतीत है...और चाहे वह कितना भी दर्दनाक या सुखद रहा हो, उससे उबरना ही पड़ता है।"

कृष्ण ने सिर हिलाया। वे नहीं चाहते थे कि उनका बेटा इस तरह हार मान ले, लेकिन फिर भी वे उसके इस काम के लिए उसका सम्मान करते थे। उन्होंने सामवा के कंधे पर थपथपाया, तभी सामवा ने अपने गहने निकालकर नाविक को दे दिए, जिसने बदले में नाव की रस्सियाँ उसे दे दीं।

"अच्छा," समवा मुस्कुराई, "मुझे यकीन है।"

*

"मेरे जाने के बाद इन सभी वर्षों में तुमने क्या किया?" कृष्णा ने पूछा।

नाव छोटी थी, लेकिन उनके लिए पर्याप्त जगह थी। हवा सुहावनी थी और समुद्र की गड़गड़ाहट की आवाज़ उनके आसपास गूंज रही थी, मानो किसी बीमार व्यक्ति की आवाज़ हो। चारों ओर समुद्र के सिवा कुछ नहीं था, लेकिन किसी कारणवश कृष्णा को ठीक-ठीक पता था कि कहाँ जाना है। सूरज डूबने ही वाला था और नारंगी रंग से जगमगाते आकाश में उड़ते समुद्री पक्षी अपने पंख फड़फड़ा रहे थे।

"मैंने खूब अभ्यास किया, और बहुत अभ्यास किया," समवा ने सरकंडे की नाव की लकड़ी की बेंच पर बैठे हुए कहा।

लहरें बहुत तेज़ थीं और उन्हें जब भी संभव होता और आवश्यक लगता, नाव को संतुलित

रखना पड़ता था।

“तुमने क्यों मुकाबला किया?”

“क्योंकि मैं बेहतर बनना चाहती थी,” समवा ने कहा। “मैं अपने पूरे जीवन में जैसी थी, उससे बेहतर बनना चाहती थी।”

कृष्ण ने भावविभोर होकर उसे देखा। “क्या यह मेरी गलती थी? क्या यह मेरी वजह से हुआ?”

समवा ने सिर हिलाया, हालांकि उसने अपनी भावनाओं को न तो नकारा और न ही उन पर शर्म महसूस की। “मुझे अक्सर लगता था कि मैं आपके लायक नहीं हूँ। मुझे अक्सर लगता था कि आपने मुझे इसलिए छोड़ दिया क्योंकि आप मुझे अपना बेटा मानने की बात बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं।”

“यह सच नहीं है,” कृष्णा ने कहा।

लेकिन दुर्भाग्य से, ऐसा ही है।

कृष्णा को समझ नहीं आ रहा था कि वह उससे क्या कहे और उसे शर्मिंदगी महसूस हुई। "मुझे माफ़ करना, मैंने तुम्हें ऐसा महसूस कराया।" उसने नीचे देखा। हवा बहुत तेज़ चल रही थी। "मुझे पता है मैंने ही तुम्हें बनाया और तुम्हें पहले से भी ज़्यादा कड़ी मेहनत करने के लिए मजबूर किया। मुझे पता है मैंने तुम्हें परेशान किया और तुम्हें कायर कहा, तुम्हें बलात्कारी और हत्यारा कहा। मुझे लगा कि तुम इस दुनिया की हर बुराई का प्रतीक हो, लेकिन मैं तुम्हें भूल गया, मेरे बच्चे। अगर तुम बुरे थे, तो तुम मेरे बुरे थे, लेकिन तुम वो भी नहीं थे और मैंने तुम्हें गलत समझा।"

“तुम हमेशा से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे, एक ऐसे व्यक्ति जिसकी हर कोई इज्जत करता था। मैं वैसा नहीं था और इसी वजह से तुम मेरे प्रति ऐसा महसूस करते थे।”

शायद यही वजह हो सकती है। कृष्ण को इसका एहसास नहीं था। लेकिन उन्हें रोका गया और वे नाव के किनारे से टिक गए। "हम करीब हैं," उन्होंने कहा। "क्या तुमने किनारे पर मुझसे कुछ पूछा था?"

"हम्म?"

"मैंने क्यों छोड़ा, इस बारे में।"

“हां। आपने ऐसा क्यों किया?”

कृष्ण इसे प्रकट नहीं करना चाहते थे। यह कठिन था। लेकिन फिर भी, उन्हें किसी को तो बताना ही था, अपने पुत्र को बताना ही था। उन्हें बताना ही था कि ऐसा करना उनके लिए क्यों आवश्यक था। “मैं डरा हुआ था, पुत्र। मैं बुरी तरह डरा हुआ था। अपनी सारी शक्तियाँ त्यागने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मैं असुरक्षित हूँ। मुझे नींद नहीं आती थी। मैं चल नहीं पाता था। मैं ठीक से सोच भी नहीं पाता था। मैं अपनी साधारणता से अभिभूत होने लगा था। मैंने वही महसूस किया जो दूसरे महसूस करते थे और इससे मुझे डर लगा। जब आप एक देवता के रूप में जीवन जीते हैं, तो आप उन छोटी-छोटी बातों को भूल जाते हैं जो आपको नुकसान पहुँचा सकती हैं और मैंने भी ऐसा ही किया। एक सुई चुभी और मैं डर के मारे उछल पड़ा। मैंने अपने जीवन में पहली

बार खून देखा और खून ने मुझे पीड़ा दी। मैं अजेय था, पुत्र। लेकिन अब नहीं।"

"क्या आप डर के मारे चले गए?" समवा ने अविश्वास से पूछा, मानो उसे लग रहा हो कि उसके पिता उतने बहादुर नहीं थे जितना बच्चों को सिखाया जाता था। आखिर में, वे भी समवा की तरह ही साधारण थे।

"मैंने तुम्हारे साथ बहुत सख्ती बरती, लेकिन मैं तुम्हारे जैसा बन गया और मुझे एहसास हुआ कि तुम मैं ही हो। तुम मेरे साक्षात रूप हो। हम दोनों साधारण हैं। हम दोनों सरल हैं।"

"मुझे नहीं पता आपके बारे में," समवा ने कहा। "लेकिन मुझे लगता है कि साधारण चीजों में भी सुंदरता होती है।"

"शायद," कृष्ण ने आह भरी। "शायद हमें महान चीजों की जरूरत नहीं है और न ही हमें जीने के लिए महान जीवन की जरूरत है। शायद साधारण जीवन भी एक ऐसी चीज है जिसे हमें संजोना चाहिए।"

समवा ने सिर हिलाया। "डरना स्वाभाविक है। मैं पूरी जिंदगी डरी रही। मैं उन चीजों से भी डरती रही जिनसे मुझे डरना ही नहीं चाहिए था।"

कृष्णा मुस्कुराया। "मुझे लगता है, इस मामले में हम दोनों एक ही नाव में सवार हैं।"

वह मुस्कुराया। "अरे, बात समझ में आ गई। मुझे बताया गया था कि आप काफी हाजिरजवाब और शब्दों के जादूगर हैं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप ऐसा कर सकते हैं।"

"ओह, मैं तो बड़ा शरारती लड़का था। मैं मक्खन चुराता था और गाँव की महिलाओं को परेशान करता था। मैं जवान था और जीवन को लेकर बेहद उत्साहित था। मैं इसे पूरी तरह से जीना चाहता था।"

"तब क्या हुआ?"

"मुझे जिम्मेदारियां मिल गईं। जीवन में बहुत जल्दी। मुझे हमेशा लगता है कि यह अन्याय है जब आपको बहुत जल्दी और बहुत कम उम्र में असुविधा का सामना करना पड़ता है।"

और फिर भी, असुविधा ही हमें वह बनाती है जो हम हैं।

कृष्ण इस बात का जश्न मनाने के लिए एक गिलास मीठी शराब पीना चाहते थे। उन्हें अपने बेटे के साथ इस तरह की बातचीत करना अच्छा लगता था। यह अलग था। अभी की दुनिया के अंत जैसी घबराहट नहीं थी, बल्कि ज़्यादा व्यक्तिगत बातचीत थी। अपने बेटे के साथ थोड़ी देर की बातचीत उनके लिए अनमोल थी। "मुझे लगता है कि हम यहाँ हैं और सूरज डूब रहा है," कृष्ण ने गंभीर स्वर में कहा, उठते हुए और अपने मैनीक्योर को ठीक करते हुए।

यह कपड़े में लिपटा हुआ था, और जैसे ही उसने इसे खोला, उसे मैनीक्योर चमकता हुआ दिखाई दिया। "मुझे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा कि कालिया ने बिना किसी परेशानी के मेरा मैनीक्योर कर दिया।"

"काफी परेशानी थी। मेरी जिंदगी इस पर निर्भर थी।"

"लेकिन उसने अचानक हार मान ली। यह अजीब था। मुझे लगता है कि यह नकली है।" लेकिन यह नकली नहीं लग रहा था।

"मेरा दृढ़ विश्वास है कि आपको लोगों पर उनके बाहरी रूप-रंग के आधार पर अधिक भरोसा

करना चाहिए। मुझे पता है कि इसका दुरुपयोग आपके विरुद्ध भी किया जा सकता है, लेकिन कभी-कभी किसी पर आँख बंद करके भरोसा करने से आपको ऐसी शक्ति मिल सकती है जो किसी और के पास नहीं होती। अगर मुझे बोलने की अनुमति हो तो, यह बड़प्पन की शक्ति है," समवा ने कहा।

कृष्ण ने अपने पुत्र की बात से सहमत होते हुए सिर हिलाया और मणि को ढलते सूरज की किरणों के सामने ले आए, जिस पर सूर्य की किरणें तुरंत प्रतिबिंबित हुईं। कृष्ण ने प्रतिबिंब और पत्थर के जलते हुए रूप को देखते हुए, किरणों का उपयोग उस दिशा की ओर इशारा करने के लिए किया, जिस दिशा पर उनकी नज़र काफी देर से टिकी हुई थी।

और फिर, वह खुलने लगा। कृष्ण एक नई भूमि को बनते हुए देख सकते थे। वह उनके ठीक सामने बन रही थी, और उन्हें ज्वालामुखी दिखाई दे रहे थे। वह एक द्वीप जितनी विशाल थी, घने पेड़ों और बड़े-बड़े वृक्षों से ढकी हुई थी, और उसके किनारे एक समुद्र तट था। उन्होंने सामवा से जहाज को उस ओर ले जाने को कहा।

"अगर मैं विक्षेपण को रोक दूं, तो यह अपने आप दूर हो जाएगा। हमें द्वीप पर होना होगा और फिर मैं इसे हटा दूंगा।"

समवा नाव चलाते हुए उसकी ओर और आगे बढ़ने लगा। "तुम्हें इस रहस्यमय, लुप्त होते अंतरद्वीप के बारे में इतना सब कैसे पता है?"

"क्योंकि मैंने इसे बनाया है।"

"क्यों?"

कृष्णा गुर्राया। लड़के ने बहुत सारे सवाल पूछे, लेकिन वह किसी तरह किनारे तक पहुँचने में कामयाब रहा। तब तक उसकी बांहें जलने और दर्द से काली पड़ चुकी थीं। मणि में बहुत अधिक जादू था और उसका उस पर बुरा असर पड़ने लगा था—लेकिन उसने उसे छोड़ दिया और राहत की सांस लेते हुए नाव से बाहर निकला और ठंडे पानी में हाथ डाले, जिससे दर्द कम होने लगा।

"मुझे यह करना बिल्कुल पसंद नहीं था," कृष्णा गुर्राया।

तब तक समवा पूरे द्वीप की छानबीन कर रहा था और उसे यहाँ कोई जीवन नहीं दिख रहा था। "आपने इसे क्यों छिपाया, महोदय?"

कृष्ण ने अपने बेटे की ओर देखते हुए आह भरी। "क्योंकि मेरा एक दोस्त यहाँ रहता है।"

"कौन?"

"तुम उसे जानते हो," कृष्ण ने आह भरी, क्योंकि वह जानता था कि अब छिपने का कोई फायदा नहीं था। "अर्जुन।"

प्रद्युमन मायावती से पूछना चाहता था, लेकिन उसे मौका नहीं मिल रहा था। यहाँ न रातें थीं, न दिन। साथ ही, आसपास कोठरियों में लोग थे जो एक-दूसरे पर और कभी-कभी प्रद्युमन पर भी चिल्ला रहे थे।

उनमें से एक ज्वाला था। वह वही दाढ़ी वाला आदमी था जिसे उसने पहली बार उसे गाली देते हुए देखा था।

प्रद्युमन अक्सर ज्वाला से इसके पीछे का कारण पूछता था, लेकिन ज्वाला उसे कुछ नहीं बताता था। उसे लगता था कि इस रहस्य को बनाए रखने से उसे और भी बुरा लगेगा।

कई बार कैदी सो जाते थे, और कई बार वे नहीं सोते थे। वे देर रात तक जागते रहते थे।

प्रद्युमन कभी-कभार, जब सन्नाटा छाया होता था और फुसफुसाहटें गूंज रही होती थीं, तब सुकून पाकर बातचीत शुरू करने में कामयाब हो जाता था, लेकिन फिर भी इतना नहीं कि दूसरों को चिंता हो।

आज उन दिनों में से एक था।

“मैं इस जगह से तंग आ गया हूँ। मुझे नींद आ रही है, मैं निराश हूँ और ऐसा लग रहा है जैसे यह कभी खत्म नहीं होगा। मुझे नहीं पता मैं किस दुविधा में फंसा हूँ, बस मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।” उसने अपने बाल पकड़ लिए और उसकी आँखें शर्मिंदगी से भरी हुई लग रही थीं, आँखों के नीचे काले घेरे थे। “कृपया मेरी मदद करो, माया।”

सामने खड़ी काली होंठों वाली महिला ने कहा, “तुम इससे उबर जाओगी। समय लगेगा, लेकिन तुम यहाँ जीना सीख जाओगी।”

"क्या आपने इस नियति को स्वीकार कर लिया है?"

"क्या हमारे पास कोई विकल्प है?"

“तुम ही बताओ,” प्रद्युमन ने लोहे की सलाखों के बीच से अपना चेहरा लगभग बाहर निकालते हुए कहा। “मुझे कुछ नहीं पता। लेकिन तुम शंबरा को काफी समय से जानते हो। तुम जानते हो कि वह कैसे खेलता है, इसलिए मुझे यकीन है कि तुम जानते हो कि उसने यह किस उद्देश्य से बनाया है। मुझे बताओ!”

मायावती चिंतन करने लगीं और आंखें बंद करके गुनगुनाने लगीं। “मुझे हमेशा लगता था कि वह सपनों और बुरे सपनों पर प्रयोग करने में माहिर थे। उनमें एक खास हुनर था। वह माया का इस्तेमाल करके खुद से जुड़ते थे और ऐसी दुनिया बनाते थे जो असल में मौजूद नहीं होती थीं, बल्कि आपकी चेतना की उपज होती थीं। वह एक वैज्ञानिक थे।”

"आप सचमुच उसकी प्रशंसा कर रहे हैं।"

“प्रद्युमन एक अच्छा शासक था,” उसने विरोध करते हुए कहा। “इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मेरे साथ कितना बुरा बर्ताव करता था।”

“खैर, मेरा मानना है कि आपको उन्हीं लोगों से मिलना चाहिए जिन्होंने उसका पालन-पोषण

किया है। मुझे यकीन है कि आप उनसे मिलकर खुश होंगे, चाहे वे कोई भी हों।"

वह थोड़ी देर रुकी। उसने कुछ नहीं कहा, बस मुस्कुरा दी।

"क्या?" उसने चिड़चिड़ाते हुए पूछा।

"तुम हमेशा से ही बहुत गुस्सैल लड़के थे। तुम हमेशा से ही जल्दी फैसले लेने वाले थे। मुझे आज भी वो दिन याद है जब तुम अपना धनुष तोड़कर लौटे थे और तुमने मुझे वो दिखाया था, और मैंने तुमसे वादा किया था कि मैं उसे ठीक कर दूंगा। कुछ दिन बीत गए थे और मैंने उसे ठीक नहीं किया था, और तुम मुझसे बहुत गुस्सा हो गए थे। मैं व्यस्त था, बस इतना ही।"

प्रद्युमन को यह घटना याद नहीं थी। लेकिन उसे याद था कि वह बचपन में काफी चिड़चिड़ा बच्चा था। "अगर मैंने कभी बदतमीजी की हो तो मुझे माफ कर देना। मुझे आपकी बहुत याद आती है और आपका मुझे छोड़कर चले जाना बहुत दुखद है।"

"मैं इसलिए चला गया क्योंकि हमारा साथ होना ठीक नहीं है। मैं राक्षस हूँ और तुम नहीं। मैं अमर हूँ और तुम नहीं।"

प्रद्युमन उसे अपने दिल की बात बताना चाहता था। "तुम मेरी माँ हो, लेकिन तुम उससे कहीं बढ़कर थीं। तुम मेरे जीवन का प्यार थीं।"

"चुप रहो, लड़के।"

"मैंने तुम्हें कभी अपनी माँ की तरह नहीं माना," प्रद्युमन ने इस तरह विरोध जताया मानो वह हर हाल में तुम्हें यह बात सुनाना चाहता हो। "मैंने हमेशा तुम्हें किसी प्रियजन की तरह माना, किसी ऐसे व्यक्ति की तरह माना जिसकी मैं परवाह करता हूँ, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ और हम साथ मिलकर राज कर सकते थे, हम कर भी सकते थे, लेकिन तुमने मेरे सारे प्रस्ताव ठुकरा दिए।"

उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "तुम बेवकूफ हो।"

प्रद्युमन जानता था कि उसकी बात को गंभीरता से नहीं लिया जाएगा। वह जानता था कि किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करना गलत है जो माँ के समान हो, लेकिन यह एक ऐसा विषय था जिसके बारे में उसने अक्सर सोचा था। यह बहुत ही निजी मामला था और वह इसे उसके अलावा किसी और के साथ साझा नहीं करना चाहता था।

"तुम शंबारा जैसी किसी के साथ रहने को तैयार हो, लेकिन मेरे साथ नहीं।"

"वह एक अच्छा आदमी है। शायद थोड़ा टूटा हुआ है, लेकिन अच्छा है। और वह तुमसे नाराज़ है। तुमने उसका साम्राज्य छीन लिया, उसकी पत्नी छीन ली। तुमने सचमुच उससे सब कुछ छीन लिया। क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारे प्रति उसका यह गुस्सा जायज़ है?"

प्रद्युमन ने सिर हिलाया। उसकी माँ हमेशा से ऐसी ही थी—जो जानती थी कि वह आदमी बुरा है, फिर भी उसकी अच्छाइयों की परवाह करती थी। प्रद्युमन को यह बात कभी समझ नहीं आई। "मुझे कुछ और बताओ, कुछ ऐसा जो तुम्हें याद हो। मुझे यकीन है कि इस आयाम को बनाने में समय लगा होगा। इसकी नींव तो उसके जीवित रहते ही पड़ी होगी।"

"हाँ," उसने सिर हिलाते हुए कहा। "मैंने अक्सर उससे कहा था कि लोगों को उनके सपनों में लकवाग्रस्त करना एक भयानक विचार है, और किसी भी सपने की तरह, इससे बचने का कोई न

कोई तरीका ज़रूर होगा, मुझे यकीन है।" उसने खुद से यह सवाल पूछा, लेकिन खुद इसका जवाब नहीं दे पाई।

प्रद्युमन संयमित होकर इसी मुद्रा में खड़ा रहा। "ये खूनी पिंजरे! मुझे इनसे नफरत है। काश मैं इनसे बच निकल पाता।" उसने धक्का देना और कुरेदना शुरू किया। और जैसे ही उसने ऐसा किया, द्वार अपने आप खुल गया।

एक पल के लिए मायावती असमंजस में पड़ गईं, और प्रद्युमन भी असमंजस में थे, और दोनों ने एक-दूसरे को अत्यंत आश्चर्य भरी नजरों से देखा।

मायावती ने तुरंत उसे खुद खोलने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं खुला। वह बंद था। "आपने यह कैसे किया? और मेरे लिए यह क्यों नहीं खुला?"

प्रद्युमन स्वयं असमंजस में था और उसने गलियारे में चारों ओर देखा, उसे अपने रास्ते में कोई रुकावट नहीं दिखी। न कोई पहरेदार था, न कोई सैनिक। "यह किसी चाल का हिस्सा है, किसी रहस्य का हिस्सा है।"

"क्या मुझे भाग जाना चाहिए?" उसने उससे पूछा और साथ ही यह बात और जोड़ दी।

"शायद। मुझे नहीं पता। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।"

तब तक कैदियों को यह एहसास होने लगा था कि प्रद्युमन बाहर निकल गया है और वे चिल्लाने-चिल्लाने लगे थे। दूसरे पिंजरे में बंद ज्वाला ने उसे खोलने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि शायद वह इस जगह से निकल सके। लेकिन वह खुला ही नहीं।

प्रद्युमन ने उसकी बात अनसुनी कर दी, पर ज़्यादा देर तक नहीं, क्योंकि कुछ ऐसा हुआ। एक शक्तिशाली ताकत ने उस पर हमला किया, उसे ज़मीन पर पटक दिया और उसके सिर पर ज़ोर से चोट मारी। उसने देखा कि कौन है, और उसने ज्वाला को देखा। ज्वाला भी भागने में कामयाब हो गया था। ज्वाला ने प्रद्युमन का चेहरा पकड़ा और उसे ज़मीन पर पटकना शुरू कर दिया, मानो उसकी खोपड़ी तोड़ रहा हो। उसके चेहरे से खून बहने लगा और वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। वह हताश था और उसने पलटवार करने का फैसला किया, लेकिन ज्वाला गुस्से में था।

"तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं कि तुमने क्या किया है। तुमने मुझे निराश किया है। तुमने अपने पूरे देश को निराश किया है। तुम एक घिनौने इंसान हो। तुम अपने पिता की फीकी छवि मात्र हो। तुम्हारे पिता महान थे और तुम्हें देखो, तुम तो बस उनकी थूक के सिवा कुछ नहीं हो।" उसने प्रद्युमन का गला पकड़कर उसे ज़मीन पर पटक दिया।

जैसे ही वह उसे दोबारा पकड़ने के लिए आगे बढ़ा, प्रद्युमन ने कलाबाजी दिखाते हुए पीछे की ओर लुढ़क गया। वह खड़ा हुआ और ज्वाला की ओर देखा, जो उस पर झपट पड़ा, उसे धड़ से पकड़कर गलियारे में घसीटने लगा, जबकि प्रद्युमन उसे बुरी तरह पीट रहा था। हालाँकि ज्वाला को ज्यादा मौका नहीं मिला, क्योंकि प्रद्युमन जमीन पर गिर पड़ा और दोनों टकरा गए, प्रद्युमन ने ज्वाला के पैरों के बीच लात मारी।

"मैंने क्या किया?" कैदियों के बीच हो रही जयकार और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच वह उठने की कोशिश कर रहा था। "मैंने आखिर किया क्या? मैंने तो अपने पिता के आदर्शों पर खरा उतरने की कोशिश की है।"

“और फिर भी तुम उसी के सबसे बुरे रूप बन गए,” ज्वाला ने उसके चेहरे पर घूंसा मारते हुए कहा। “तुम्हें पता है तुमने क्या किया?” उसने उस पर फिर हमला नहीं किया। वह भी धीरे-धीरे अपने पैरों पर खड़ा हो रहा था। “मेरा एक छोटा भाई था, उसने अपने लिए ज़मीन खरीदी थी, लेकिन तुम्हारी सरकार ने, तुम्हारे लोगों ने उस पर बहुत ज़्यादा कर लगा दिए। हम परेशान थे और जैसे-तैसे गुज़ारा कर रहे थे। फिर डाकू आ गए और हमें एहसास हुआ कि तुम डाकुओं को भी पनाह देते हो और उनसे भी लूटपाट करते हो। तुम्हारी व्यवस्था इतनी खराब है कि हम जैसे स्थानीय किसानों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। हमने करों का विरोध करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तुम्हें पता है उसने क्या किया? उसने तुम्हारे लोगों पर हमला किया और तुमने उसे जेल में डाल दिया, और बाद में उसके मुंह में भाला ठोंक दिया। और वह यातनाओं की घाटी में दर्द में जी रहा है। उसे आज भी दर्द होता है। उसने कुछ नहीं किया, बस सच्चाई के लिए लड़ाई लड़ी। लेकिन तुम समझते नहीं हो। तुम ऐसे भयानक कर लगाते रहते हो, जिससे हम जैसे आम नागरिकों के लिए जीना मुश्किल हो जाता है।”

मैं साम्राज्य के लिए बस सही काम कर रहा था।

“साम्राज्य लोगों से बना है। उनके साथ न्याय करो!”

फिर वह प्रद्युमन की ओर बढ़ा और उसका गला पकड़कर उसे दीवार से धक्का दे दिया। प्रद्युमन को एक तेज दर्द महसूस हुआ जो उसके पूरे शरीर में फैल गया। उसे अपने भीतर एक अजीब सी दहशत का अनुभव हुआ, और सबसे बढ़कर, उसे यह एहसास हुआ कि उसने अपनी प्रजा को कितना निराश किया है। ये कदम उसके मंत्रियों और मंत्रिमंडल ने उठाए थे और उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि इसका इतना गहरा असर होगा कि उसे चोट पहुंचाई जाएगी।

और फिर मुझे ऑफर मिल गया।

उसके चेहरे पर एक जोरदार मुक्का पड़ा। उसे बहुत जोर से चोट लगी।

ज्वाला ने कहा, "प्रस्ताव सीधा-सादा था। मैं आपके करीब आ सकती हूँ। मुझे बस सोने के लिए राजी होना था। और उसने मुझसे कहा कि मुझे आपसे मिलने का मौका मिलेगा, तो मैं कैसे मना कर सकती थी?"

वह फिर से सीधे ज्वाला की ओर बढ़ा, और प्रद्युमन ने अपने पैर उनके बीच लाकर उसे पीछे धकेल दिया। जैसे ही उसका क्रोध भड़क उठा और वह हमला करने ही वाला था, प्रद्युमन ने ज्वाला में कुछ ऐसा देखा जो उसने कभी न देखने की कल्पना की थी। उसने अपने पिता को देखा। उसने कृष्ण का चेहरा देखा और ज्वाला अपने पिता में परिवर्तित हो गया था। उसे विश्वास नहीं हुआ। उसके पिता ने उस पर हमला नहीं किया था। वास्तव में, वह स्थिर खड़ा रहा।

“मैंने कभी नहीं सोचा था कि साम्राज्य का त्याग करना एक तर्कसंगत निर्णय होगा, लेकिन तुमने मुझे गलत साबित कर दिया। तुमने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या तुम सचमुच मेरे बेटे हो सकते हो। तुम मेरे जैसे नहीं हो, जैसे मैं कभी था। तुम कमजोर और दुर्बल प्रतीत होते हो। तुम कठोर व्यवहार के पात्र हो। तुम शायद अस्तित्व में ही नहीं होने चाहिए थे,” उसने घृणा से फर्श पर थूकते हुए अपनी बात समाप्त की।

प्रद्युम्न ने दांत पीसते हुए गुस्से से कहा, “मैंने तुम्हारे जैसा बनने की कोशिश नहीं की क्योंकि

तुम एक घृणित व्यक्ति हो। तुमने सबके साथ बुरा बर्ताव किया और मुझे यह एहसास दिलाया कि तुम मुझसे बेहतर हो, जबकि तुम एक निकम्मे और कुछ भी करने को तैयार नहीं थे।" वह खड़ा हुआ और उसकी आंखों में आंखें डालकर उसका सामना किया।

एक पल के लिए कृष्ण चौंक गए। प्रद्युमन ने उनकी ओर देखा और उन्हें धक्का दिया, और कृष्ण पलक झपकते ही गायब हो गए। प्रद्युमन एक पल के लिए असमंजस में पड़ गए, फिर पलक झपकाई और खुद को वापस जेल के अंदर पाया। वह कभी भागे ही नहीं थे, बस इन मायावी भ्रमों का सामना कर रहे थे।

प्रद्युम्न आह भरता हुआ वहीं रह गया।

"अभी क्या हुआ?" मायावती ने पूछा। "क्या चल रहा है?"

"कुछ नहीं," प्रद्युमन मुस्कुराया। "मुझे बस शंबरा की कमजोरी मिल गई।"

35

उसे पता था कि वह एक बार फिर एक और यात्रा पर जा रही है।

वह दर्द और पीड़ा के इस भंवर में खिंची जा रही थी और उसके शरीर की हर कोशिका कांप रही थी, तभी उसने अपनी आँखें खोलीं और खुद को एक बार फिर उसी परिचित कारवां में पाया। वह उस कारवां को जानती थी क्योंकि इस यात्रा के दौरान उसने जो दर्द सहा था, वह उस असहनीय दर्द के सामने कुछ भी नहीं था जिसका सामना उसे इस कारवां में करना था।

उसने चारों ओर देखा, गले में अटके एक आँसुओं को निगलते हुए, दुर्गाज्योति को एहसास हुआ कि वह वहीं लौट आई है जहाँ से सब कुछ शुरू हुआ था। वह अब जंगल में नहीं थी। वह अब उस नीले रंग की आँखों वाली लड़की के सामने नहीं थी जो स्वयं वह थी।

वह प्रद्युमन के सामने नहीं थी। उसे क्यों दिखाया गया? मायासभा उसे क्या बताने की कोशिश कर रही थी? कि उसका असली अभिशाप दुर्जय नहीं, बल्कि प्रद्युमन था। लेकिन यह कैसे संभव है? दुर्जय ने तो उसका जीवन ही नष्ट कर दिया था।

और दुर्जय उसके सामने था। वह मुस्कुरा रहा था। उसके बाल पहले जैसे घुंघराले थे और चेहरा भी पहले जैसा ही था; एक सलीकेदार मुस्कान और चेहरे पर वही खूबसूरती। अपनी उम्र के हिसाब से वह काफी आकर्षक दिख रहा था।

"कैसी हो, डार्लिंग?"

वह उसे थप्पड़ मारकर भगा देना चाहती थी, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी। वह बंधी हुई थी और उसकी आवाज नहीं निकल रही थी। वह अपने ही युवा शरीर में कैद थी।

वह कारवां... उसमें वह थी। उसे वह दिन याद आया जब उसकी अभी-अभी शादी हुई थी और वे अपने महल लौट रहे थे। उसने उसे बताया था कि वह कितना सुंदर और भव्य था।

मुझे बहुत खुशी है। तुम बहुत खूबसूरत हो। मैंने आज तक जितनी भी आंखें देखी हैं, उनमें तुम्हारी आंखें सबसे खूबसूरत हैं।

वह बस चिल्लाना और थप्पड़ मारना चाह रही थी, लेकिन मार नहीं सकी।

मैं तुम्हें ढेरों उपहार दूंगा।

तुमने मुझे बचपन में ही अगवा कर लिया था। मैं छोटी थी, लेकिन तुमने मुझे जबरदस्ती तुमसे शादी करने के लिए मजबूर किया, हे बूढ़े राक्षस!

लेकिन वह उसके विचारों को सुन नहीं सकता था।

“मुझे बताओ,” उसने बड़ी चतुराई से मुस्कुराते हुए कहा, “तुम्हें मुझमें क्या पसंद है?”

उसने कुछ नहीं कहा। वह चीखना चाहती थी, लेकिन उसके मुंह से केवल यही शब्द निकले —"तुम अच्छे दिख रहे हो।"

“हाँ, बिल्कुल,” उसने कहा। “जब से मैंने तुम्हें बाजार में अनाथों में से एक के रूप में देखा था, मैं तुम पर मोहित हो गया था। मुझे तुम्हें अपना बनाना ही था।”

फिर उसने अपने बड़े-बड़े होंठ उसके होंठों पर रख दिए, उसे घिन आ गई। उसकी जीभ

बेस्वाद लग रही थी और उसके मुँह से तंबाकू की बदबू आ रही थी। वह समझने और महसूस करने की कोशिश कर रही थी कि वह यहाँ क्यों है। वह पीछे हट गया। "क्या तुम्हें कभी लगता है कि तुम मुझसे ऊब जाओगी?" उसने मुस्कुराते हुए अपने सड़े हुए दाँत दिखाए।

और वह व्यक्ति, वह अजनबी जिसके शरीर में वह निवास कर रही थी, ने जबरदस्ती मुस्कुराया।

दृश्य मिट गया और उसने खुद को वापस उसी कमरे में पाया। छत और दीवारों वाला वह कमरा उसे जाना-पहचाना लग रहा था। कमरा एकदम अंधेरा था। और वह वहाँ बंधी हुई थी। उसके मुंह पर पट्टी बंधी थी। वह हिलने की कोशिश कर रही थी। वह धक्का देने और हिलाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन असमर्थ थी।

मैं कहाँ हूँ? उसने धीमी आवाज़ में रोते हुए कहा, उसकी आवाज़ काँप रही थी, उसका शरीर तनावग्रस्त था। उसकी पुतलियाँ फैली हुई थीं और उसे घुटन महसूस हो रही थी।

दुर्गाज्योति ने किसी को कमरे में प्रवेश करते देखा। वह एक सज्जन व्यक्ति की तरह इतराता और लहराता हुआ चल रहा था, लेकिन ऊपर से वह नंगा था, जबकि नीचे उसने धोती पहनी हुई थी। उसके हाथ में कुछ था और वे गर्म चप्पलें थीं। वे गर्म थीं।

“क्या तुम्हें दर्द पसंद है?” उस आदमी ने पूछा।

उसने सिकुड़कर भागने की कोशिश की, लेकिन यह कारगर नहीं हुआ। चिमटा उसके पेट तक पहुंचा और उसे जलाने लगा। वह उसकी त्वचा तक, उसके स्तनों के पास पहुंचा और वहां भी उसे जलाने लगा।

“मुझे अच्छा लगता है। मुझे दूसरों को चोट पहुँचाना बहुत पसंद है। इससे मुझे सुकून मिलता है, खासकर उन लोगों को जिन्हें मैं प्यार करता हूँ। आप जानते हैं,” दुर्जय ने कहा। “बचपन में मेरे माता-पिता ने मुझे बहुत सारे चूजे तोहफे में दिए थे और मैं उनके साथ खेला करता था। मुझे वे बहुत प्यारे लगते थे, लेकिन जब मैंने गलती से उनमें से एक को कुचल दिया, तो मुझे सबसे ज्यादा खुशी मिली। इससे मुझे एहसास हुआ कि मेरे लिए दर्द, प्यार से कहीं ज्यादा संतोषजनक है।”

और चिमटे से उसकी त्वचा और भी जल गई, वह रोने लगी और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

कृपया मेरी मदद करें।

दुर्गाज्योति को याद था कि वह उसे हमेशा कैसे प्रताड़ित करता था। उसे याद था कि कैसे उसे थप्पड़ मारे जाते थे, लात मारी जाती थी और सीढ़ियों से नीचे फेंक दिया जाता था। वह गर्भवती थी और फिर उसका गर्भपात हो गया। उसने बहुत भयानक काम किए थे और मायासभा उसे उन सब बातों को फिर से याद दिला रहा था। खासकर यह पल जब वह उसके शरीर को आग में झुलसा रहा था और उसे ऐसा महसूस करा रहा था जैसे यह अंत हो। अंगारे उसे चोट पहुँचाएँगे और उसे नष्ट कर देंगे।

और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। जब उसने आँखें खोलीं, तो दर्द तो चला गया था, लेकिन कुछ और भी था। वह उत्साहित थी। अब वह एक दूसरे कमरे में थी, एक तंबू में। और उसने

दुर्जय को देखा। वह युद्ध की वर्दी में था। और वह हताश लग रहा था। वह शराब पी रहा था।

“कैसा रहा?” दुर्गाज्योति ने पूछा, हालांकि उसका मन कर रहा था कि वह बीयर में जहर मिला दे।

"उसे मेरा विचार पसंद नहीं है, और क्यों पसंद आएगा? वह ईर्ष्यालु है। उसने जीवन में सब कुछ हासिल कर लिया है, लेकिन अब वह नहीं चाहता कि किसी और को प्रसिद्धि मिले।"

“उसने क्या कहा?”

“हमें किसी भी प्रकार की जादू-टोने में लिप्त नहीं होना चाहिए,” दुर्जय ने तीखे स्वर में कहा। “यह जादू-टोना नहीं है। हम हर तरफ से अपने सैनिक खो रहे हैं। सोचिए अगर हमारे पास कोई ऐसा पेस्ट या प्रक्रिया हो जिससे मुर्दों को फिर से जीवित किया जा सके।”

लेकिन आपका यह विचार अभी भी एक सिद्धांत ही है।

उसने एक पल के लिए उसकी ओर देखा, मानो वह हार गया हो और उसकी पत्नी को उस पर विश्वास ही न हो, और फिर वह उस पर झपटा, उसका गला पकड़ लिया। "क्या तुमने उसे मैदान से बाहर कर दिया? उससे बात की। उसे बताया कि मैं पागल हूँ। क्योंकि उसने कहा था कि मेरा विचार पागलपन भरा है। खैर, वह पागल है।"

“नहीं—नहीं—नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया।”

मुझे आपकी बात पर विश्वास नहीं है।

"मुझे आपके विचार पर विश्वास है," उसने सिकुड़ी हुई आँखों से कहा।

आपने दो बातें कही थीं।

"क्या?"

“आप मुझ पर भरोसा करते हैं और आप यह भी सोचते हैं कि यह विचार केवल सैद्धांतिक है।” वह मुस्कुराया। “तो फिर क्यों न हम इसे व्यवहार में लाएं?”

यह सोचकर वह डर गई। "तुम्हारा क्या मतलब है?"

“खैर, मैंने तांत्रिक से बात की। उसने कहा कि यह जीवित शरीर पर भी काम कर सकता है।”

"लेकिन..."

"चुप रहो, कुतिया।"

फिर उसने पलकें झपकाईं और जैसे ही उसने आँखें खोलीं, खुद को एक अंधेरे कमरे में पाया, जहाँ तरह-तरह की गंध फैली हुई थी। वह ज़मीन पर लेटी हुई थी, उसकी कोमल हथेलियों में कीलें गड़ी हुई थीं, जिनसे खून बह रहा था। उसने अँधेरे में देखा, वहाँ दुर्जय अपने घुंघराले बालों और पागल आँखों के साथ खड़ा था, और उसके बगल में तांत्रिक भी खड़ा था, जो बेहद डरावना लग रहा था।

"अब, अब, यह सब जल्द ही खत्म हो जाएगा।"

“यह पांचवीं बार है!” वह चिल्लाई।

आप ही विषय हैं।

फिर तांत्रिक ने कुछ मंत्र और तरकीबें पढ़ना शुरू कर दिया, जिससे उसे उल्टी जैसा महसूस होने लगा, लेकिन साथ ही साथ ऐसा नहीं भी लगा। उसे लगा जैसे उसका पेट उलट-पुलट हो रहा

हो और उसका शरीर दर्द से तड़प रहा हो। उसे ऐसा दर्द महसूस हो रहा था जो उसकी नसों में दौड़ रहा था और फिर उसका सिर कांपने और थरथराने लगा, जैसे वह बेहोशी की हालत में दौरे पड़ने लगी हो। वह ज़मीन पर गिर पड़ी और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे, साथ ही उसने खून की उल्टी भी की।

“यह काम नहीं कर रहा है। मुझे नहीं लगता कि हमें इसे उस पर आजमाना चाहिए,” तांत्रिक ने कहा।

“नहीं, वही होनी चाहिए। पहले विषय पर फिर से विचार करें।”

जब सब कुछ खत्म हुआ, तो उसे कपड़े पहनने को कहा गया और उसके चेहरे पर एंटीसेप्टिक दवा लगाई गई। उसे चेहरा धोने के लिए वापस लाया गया और उसे एहसास हुआ कि वह सिर्फ प्रयोग ही नहीं करना चाहता था, बल्कि इस प्रक्रिया में उसे चोट भी पहुँचाना चाहता था क्योंकि उसने उससे कुछ पूछा था, उसके विचार का विरोध किया था और विद्रोह किया था। फिर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं क्योंकि उसे पानी में अपनी ही छवि दिखाई दी। उसने अपना कमजोर चेहरा देखा। उसके सिर के सारे बाल और यहाँ तक कि भौंहें भी झड़ चुकी थीं। वह अपने पहले के रूप का एक धँसा हुआ रूप बन गई थी। और इससे उसे और भी बुरा लगा। वह रोने लगी और वह कभी चीखी नहीं थी।

दुर्गाज्योति ने अपनी आँखें बंद कीं और पलकें झपकाईं, और ऐसा करते ही वही घटना फिर से घटी। वह एक अलग कमरे में थी। इस बार वह सो रही थी, तभी उसे तांत्रिक ने जगाया। वही तांत्रिक। वह एक बूढ़ा आदमी था, जिसकी गोल आँखें थीं। वह उसे पुकार रहा था।

“इधर आओ,” उसने कहा।

और उसने वैसा ही किया। वह सम्मोहन में आकर उसके पास चली गई। दुर्जय वहाँ नहीं था। दुर्जय तब तक कृष्ण के लिए प्रचार अभियान पर जा चुका था।

“क्या हुआ?” उसने कहा।

“बहुत सी बातें हैं, लेकिन सबसे ज़्यादा मैं नहीं चाहता कि तुम जाकर उस तरह से कष्ट सहो जैसे तुम पहले से ही सह रहे हो।” वह क्षमा याचना के भाव से भरा हुआ था, उसकी आँखों में उदासी झलक रही थी। “मैं चाहता हूँ कि तुम मज़बूत बनो और मुझे लगता है कि तुमने खुद को पहले ही कमज़ोर कर लिया है।”

कोई बात नहीं। यही मेरी नियति है।

“हम अपनी किस्मत खुद बनाते हैं, मेरी प्रियतमा।” उसने उन्हें एक किताब दी। “इसमें प्रतिशोध की भावना को जगाने का मंत्र है, एक ऐसी भावना जो एक ही समय में इतनी अंधकारमय और इतनी उज्ज्वल है कि वह आपकी मदद कर सकती है और आपको आपके दुख से बचा सकती है।”

"क्या आपको यकीन है?"

"हाँ।"

लेकिन अगर वह ऐसा करने में सक्षम न हो तो क्या होगा?

"हाँ, वो करेगी।"

वह काफी देर तक सोचती रही, फिर रुककर विचार करने लगी, और ऐसा करते हुए उसने किताब उठाई और उसे अपने पास रख लिया। उसने पलकें झपकाईं।

फिर उसने अपनी आँखें खोलीं और खुद को उस जगह पर पाया जहाँ वह कभी नहीं होना चाहती थी। वह वहीं थी जहाँ वह पहले थी। लेकिन इस बार, वह मेज पर, ज़मीन पर जकड़ा हुआ था।

वह दुर्जय था।

वह वहीं बैठा था और बस ऊपर आसमान की ओर देख रहा था। वह खुद को शांत करने की कोशिश कर रहा था और साथ ही साथ उस पर चिल्ला भी रहा था। "तुम बहुत बड़ी गलती कर रही हो।"

मुझे लगता है, आपकी जांच होनी चाहिए थी।

और अब, उसने उस शक्ति को अपने वश में कर लिया जिसने उन्हें इस स्थिति में पहुँचाया था। स्थिति यह थी कि बागुल की वजह से वह उसे और उसके आसपास के लोगों, उसके रक्षकों को हराने में कामयाब रही और उसे फँसा लिया। उसने कुछ समय के लिए उसे मानसिक रूप से नियंत्रित भी किया ताकि वह साम्राज्य की सारी संपत्ति उसे सौंप दे। और फिर उसने अपनी मुख्य योजना को अंजाम दिया। जो थी अपने अधिकार में लिए गए ताज पर कब्ज़ा करना।

“तुम पागल हो! तुम बिलकुल सनकी हो!”

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। "अपने बारे में बोलो।"

और फिर बागुल उसके भीतर से परछाइयों के रूप में प्रकट हुआ।

“कृपया उसे मेरे लिए यातना देकर मार डालो,” दुर्गाज्योति ने निर्देश दिया।

बागुल सुन रही थी, जब दुर्जय ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा। चीखते-चीखते उसका चेहरा पिघलने लगा और शरीर गायब होने लगा। दुर्गाज्योति को अपने भीतर गर्व महसूस हुआ। आखिरकार उसने अपने डर पर विजय पा ली थी। आखिरकार वह उससे लड़ने में कामयाब हो गई थी। वह मन ही मन मुस्कुरा रही थी, तभी अचानक सब कुछ धुंधला हो गया और वह एक अजीब सी अवस्था में पहुँच गई।

कोई उसकी ओर आ रहा था। अब उसे फंसा हुआ महसूस नहीं हो रहा था। उसे आज़ादी का एहसास हो रहा था, लेकिन फिर भी उसे कदमों की आहट सुनाई दे रही थी। उसने मुड़कर देखा कि कौन है।

चेहरा जाना-पहचाना और साथ ही साथ काला भी था।

वह प्रद्युमन थे।

“और अब, तुम वही गलती दोबारा दोहराने जा रहे हो?” उसने पूछा। और उसकी मुस्कान ठीक वैसी ही थी जैसी दुर्जय के चेहरे पर पहली मुलाकात के समय थी।

36

बलराम एक ऐसी जेल में था जो भीषण गर्मी से तप रही थी, जबकि उसके आसपास के लोग उस भीषण युद्ध की तैयारी कर रहे थे जो होने ही वाला था।

वे युद्धजीत से लड़ने की तैयारी कर रहे थे, और आधी रात को, जब कौवे कांव-कांव कर रहे थे और जुगनू नाच रहे थे, बलराम चुपचाप खड़े थे, उनका डंडा उनसे छीन लिया गया था। बलराम घंटों से वहीं थे, और अगर उन्हें पता होता कि देवमेधा क्या कर रही है—तो वे चीखने की कोशिश करते। लेकिन इतना कहना ही काफी है कि वे इस बात से हैरान थे कि देवमेधा खुद सत्यकी के साथ काम करने को तैयार नहीं थी। यह बहीखाता था। वह सत्यकी का इस्तेमाल युद्धजीत को पाने के लिए करना चाहती थी। लेकिन बहीखाता कौन था? क्या यह रेवती थी या अकुरजी? वे अभी भी दुविधा में थे।

उनमें से जो भी था, उनमें से किसी ने भी तब आने की जहमत नहीं उठाई जब वह यहाँ बिल्कुल अकेला, अंधेरे मौसम में, हमेशा की तरह अकेला महसूस कर रहा था।

वह सांप के बारे में सोचने लगा और उसे याद आया कि हाल ही में उसने सपने में सांप को देखा था, जिसमें सांप ने उसे चेतावनी दी थी कि वह भ्रष्ट हो गया है। वह जानना चाहता था कि ऐसा कैसे हुआ, लेकिन सांप ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर वह राम के भाई लक्ष्मण को खाने लगा।

बलराम पालथी मारकर ध्यान कर रहे थे, तभी उनकी नज़र अपने लकवाग्रस्त पैर पर पड़ी। वे जन्म से ही इस शारीरिक विकृति से ग्रस्त थे। उनके पैरों में इतनी शक्ति और ऊर्जा नहीं थी कि वे रोज़मर्रा के काम कर सकें। इस वजह से वे हमेशा असुरक्षित महसूस करते थे और थके हुए रहते थे। उन्होंने अपने पैर को आराम दिया और इसे त्यागने का निश्चय किया। उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया गया, जब तक कि उनके भाई, भगवान कृष्ण ने उन्हें लकड़ी की छाल से बनी एक छड़ी नहीं दी और कहा कि यह उनके लिए एक उपहार है, ताकि चलते समय ठोकर लगने पर यह उन्हें सहारा दे सके।

तब से बलराम ने उस छड़ी को थामे रखा, जो उनके साथ-साथ परिपक्व हो गई थी। लेकिन बलराम के बड़े होने के साथ-साथ उसकी छाल वैसी ही बनी रही, जिस पर सोने और चांदी की नक्काशी थी।

आप गहरी सोच में डूबे हुए हैं।

बलराम ने अपनी भौंहें ऊपर उठाते हुए देखा और उसे पता चला कि उसके सामने कौन खड़ा है।

सत्यकी।

वह मुस्कुरा नहीं रहा था और अपने सामान्य स्वभाव में नहीं था।

“हां। दरअसल मैं अपनी पूरी यात्रा पर विचार कर रहा हूं।”

"क्यों?"

क्योंकि मुझे लगता है, इसका कोई मतलब नहीं है। मुझे लगता है कि इसका कोई उद्देश्य नहीं है। यह सफल नहीं हुआ और इससे मुझे बहुत दुख होता है।

सत्याकी चुप और भावहीन था। बलराम समझ गया कि वह थोड़ा दुविधा में है।

"तुम यहाँ क्यों हो?" बलराम ने पूछा।

मुझे नहीं पता था कि वह तुम्हें फंसा लेगी। लेकिन उसने कहा कि तुम हमारे मिशन के लिए खतरा हो।

"वह ऐसा इसलिए कह रही है क्योंकि उसे पता है कि तुमने सोन्या को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की थी और वह तुम्हारे पिता से छुटकारा पाने के लिए तुम्हारा इस्तेमाल कर रही है। एक बार ऐसा हो जाने पर, वह तुमसे भी छुटकारा पा लेगी।"

सत्याकी ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "उसने कहा कि तुम ऐसा कहोगे, ताकि मेरा दिमाग़ बहलाया जा सके।"

बलराम ने अवज्ञा में अपना सिर हिलाया। उसने मूर्ख सत्यकी को अपनी बात मनवाने में कामयाबी हासिल कर ली थी।

"लेकिन आप जानते हैं, जब मैंने कहा था कि मुझे अपने जीवन में एक मार्गदर्शक चाहिए, एक सलाहकार, तो वह बिल्कुल सच था। मैं चाहता था कि आप मेरे जीवन में मेरी मदद करें," उन्होंने कहा। "मैं झूठ नहीं बोल रहा था और मुझे यह भी नहीं पता कि आप चीजों और लोगों के बारे में अपने विचारों में हमेशा सही होती हैं, यह कितना सच है। वास्तव में, मैंने ही उससे कहा था कि अगर आप बलराम को हटा देंगी, तो मैं पीछे हट जाऊंगा।"

बलराम ने सिर हिलाया। "इसके लिए धन्यवाद।"

"युद्ध समाप्त होने के बाद मैं इस पर ध्यान दूंगा।"

"तुम अपने पिता से लड़ने की योजना बना रहे हो और फिर क्या? तुम्हें पता है कि कोई नहीं मरेगा।"

"हमारे पास कोई विकल्प नहीं है," उसने बलराम के पिंजरे के पास आते हुए उत्तर दिया। "मेरे पिता को हमारे छोटे से समझौते के बारे में पता चल गया है और उन्होंने अपनी सेना को आगे बढ़ाने का फैसला कर लिया है।"

उसे कैसे पता चला?

"उसके घर में हर जगह गौरैया हैं।" उसने सिर हिलाया और मन ही मन बुदबुदाया। "मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि उसे अपने किए की सज़ा मिले।"

"तुम उसे या आसपास के किसी को भी नहीं मार पाओगे। वरना तुम्हारी क्या योजना है?"

"जलाओ, अपंग करो और जहर दो। चाचा कृष्ण की कृपा से हम अजेय हैं, लेकिन फिर भी हम मांस और हड्डियों के बने हैं," उसने कहा। "मुझे जाना चाहिए।"

और जब वह जाने लगा, तो बलराम ने उसे पुकारते हुए कहा: "मैं जानता हूँ कि तुम मेरी बात नहीं सुनोगे और मुझे पता है कि तुम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते। तुमने कहा था कि तुम मुझे अपना मार्गदर्शक बनाना चाहते हो, तो मेरी बात सुनो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे इस मुसीबत से निकालो, ताकि हम युधजित के पास जाकर देवमेधा की योजनाओं का अंत कर सकें। वह

दुर्गाज्योति के साथ मिलकर काम करती है और एक बार जब वह दोनों राज्यों पर सत्ता हासिल कर लेगी, तो यह हमें और द्वारका के लिए मेरी सभी योजनाओं को नष्ट कर देगी। दुर्गाज्योति एक भयानक जादूगरनी है और हमें उसका अंत करना होगा।"

उसने कुछ देर तक उसकी ओर देखा। वह कुछ बोलना चाहता था, लेकिन दोनों व्यक्तियों की चुप्पी के बीच केवल हवा की सरसराहट की आवाज ही गूंज रही थी, और फिर उसने कहा: "मुझे खेद है।"

और वह बलराम को एक बार फिर पराजित छोड़कर चला गया। उसे पता था कि अब यह एक समस्या होगी कि वह कैसे भागेगा।

*

उसे नींद नहीं आ रही थी, लेकिन काफी देर से बेचैनी और थकावट ने उसके जीवन पर बुरा असर डाला था। इसलिए उसने झपकी ले ली, भले ही इससे उसके सीने में दर्द हो रहा था। उसे सांप को देखने का भी डर था, और सोते समय उसे कुछ सुनाई दिया। किसी तरह का शोरगुल। यह शोर काफी देर से हो रहा था, और उसने सोचा था कि शायद यह देवमेध और युद्धजीत के बीच का युद्ध है, लेकिन अब आवाजें करीब आने लगीं। लोग इधर-उधर भाग रहे थे। बहुत चीख-पुकार और चिल्लाहट सुनाई दे रही थी।

बलराम ने तुरंत अपनी आँखें खोलीं और पाया कि उसके चारों ओर मौजूद पहरेदारों पर काले लबादे पहने हुए लोग हमला कर रहे थे। वे सैनिक नहीं थे। फिर भी वे बलवान और शक्तिशाली दिख रहे थे। उनकी संख्या दर्जनों में थी, जबकि पृष्ठभूमि में धमाके हो रहे थे और लोग अपनी जान बचाने के लिए भाग रहे थे, वहीं कुछ लोग लड़ भी रहे थे।

क्या कोई आंतरिक हमला हुआ था? दुश्मन बाधाओं को पार करके कैसे अंदर घुस आए?

बलराम को जरा भी अंदाजा नहीं था कि तभी नकाबपोश आकृतियों में से एक उनके पास आई और फुसफुसाते हुए बोली: "चलो जल्दी से चलते हैं।" बलराम की लाठी लेकर वह आकृति द्वार तोड़कर अंदर घुस गई और बलराम हिचकिचाने लगे।

उसे तो यह भी नहीं पता था कि वह कौन था।

“जल्दी आओ! मुझे बाहर निकलने का रास्ता पता है!”

“तुम कौन हो? मुझे तुम पर भरोसा नहीं है।”

“आओ!” और फिर चेहरा थोड़ा-सा ही दिखाई दिया।

वह कोई और नहीं बल्कि रेवती थी।

वह मुस्कुराया और उसका हाथ पकड़कर लंगड़ाते हुए उसे लड़ाई और चीख-पुकार से दूर ले गया। हॉर्न की तेज़ आवाज़ गूंजी, जो घुसपैठियों के आने का आपातकालीन संकेत था—लेकिन उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनकी गति धीमी थी। बलराम अपने पैर की वजह से काफी धीमा था, लेकिन उसने आगे बढ़ने की कोशिश जारी रखी और हार नहीं मानी। उसने कोई सवाल नहीं पूछा, और वह पूछ भी नहीं सकता था क्योंकि उसकी सांस फूल रही थी। उसकी छाती जकड़ रही थी।

“इधर आओ!” वह चिल्लाई, क्योंकि बलराम ने देखा कि मशालें दिखाई देने लगी थीं,

आकाश आग और लपटों के तीरों से जगमगा रहा था, और उसी समय रथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

वे संकरे रास्ते से होते हुए खुले मैदान में पहुँचे, जहाँ बैरिकेड्स बने हुए थे और ऊपर चढ़ने का रास्ता था। बलराम ने अपनी लाठी का सहारा लेकर बैरिकेड्स के ऊपर से छलांग लगाई और रेवती की भी मदद की।

जैसे ही वे बाहर निकले, उन्होंने अपने ऊपर से किसी को उड़ते हुए देखा—एक उछलता-कूदता और कलाबाजियां करता सैनिक, जो अचानक कहीं से प्रकट हुआ था। उसकी तलवार रेवती की गर्दन की ओर बढ़ रही थी, लेकिन बलराम ने उसे रोक दिया। उसने अपनी तलवार घुमाई और बलराम की ओर बढ़ाई, लेकिन बलराम ने उसे फिर से रोक दिया और तलवार को सैनिक के हृदय में गहराई तक घुसा दिया, जिससे उसके अंग बाहर निकल आए। सैनिक कुछ देर तक दर्द से तड़पता रहा और जमीन पर गिरकर अपने हृदय को पकड़ने के लिए भागा, जिसे बलराम ने दूर फेंक दिया था।

सींगों की आवाज़ पहले से कहीं अधिक तेज़ थी और पृष्ठभूमि में घोड़ों के खुरों और कदमों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

“हमें चलना चाहिए,” रेवती ने कहा।

"कहाँ?"

"जिसने मुझे तुम्हें बचाने का आदेश दिया, उसे।"

"कौन?"

सत्यकी।

*

जब वे एक छोटे से शिविर में पहुँचे, तो बलराम ने सत्यकी को उसके कुछ आदमियों के साथ देखा। ज़्यादा लोग नहीं थे। वहाँ एक अंगीठी जल रही थी और चारों ओर पहरेदार तैनात थे, मानो वे किसी का इंतज़ार कर रहे हों।

बलराम दौड़ते-दौड़ते थक चुका था और घोड़ों के सींगों और खुरों की आवाज़ें पीछे छूटती जा रही थीं। वे बर्फ के घने टीलों से होते हुए आगे बढ़ रहे थे और बुरी तरह थक चुके थे, उनके शरीर में भीषण दर्द और पीड़ा की वजह से कंपकंपी हो रही थी।

शिविर के पास पहुँचते ही सत्याकी ने ऊपर देखा और अपने चाचा को गले लगाने के लिए आगे बढ़ा। "आशा है आप ठीक होंगे।"

“जी हां, मैं हूं,” बलराम ने कहा। “मुझे नहीं लगा था कि आप मेरी सलाह मानेंगे।”

"खैर, मुझे ऐसा करना पड़ा और मुझे रेवती, महाराज और अकुरजी की मदद लेनी पड़ी।"

“अकोरजी कहाँ हैं?” बलराम ने रेवती से पूछा, जो गर्म पानी की चुस्की ले रही थी, उसे एहसास हुआ कि उसे यह सवाल पहले ही पूछ लेना चाहिए था।

मुझे नहीं पता। उसे भाग जाना था। मुझे बस उम्मीद है कि वह पकड़ा नहीं गया होगा।

“जी हां।” बलराम अपने मित्र के लिए चिंतित था, लेकिन उसे पहले उस समय की स्थिति पर विचार करना था। “क्या देवमेध को पता है कि तुमने क्या किया?”

“मुझे ऐसा ही लगता है,” उसने कहा। “मेरे आदमी मुसीबत में हैं। मुझे नहीं पता कि क्या करना है। मुझे बस इतना पता था कि मुझे तुम्हें यहाँ से निकालना ही होगा।”

उन्होंने सिर हिलाया। “कोई बात नहीं। हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे।” उन्होंने उस लड़के के कंधे पर थपथपाते हुए कहा, “सवाल यह है कि क्या तुम देवमेधा से किया वादा तोड़ने के लिए तैयार हो?”

मुझे कोई आपत्ति नहीं है। उसने सिर हिलाते हुए कहा, "अगर जीतने के बाद वह मुझे धोखा देने वाली है, तो बेहतर यही होगा कि मैं अपने मौजूदा परिवार के साथ ही रहूँ, बजाय इसके कि नया परिवार बनाऊँ।"

“अच्छा। तो मुझे लगता है कि हमें युधाजित से मुलाकात का अनुरोध करना चाहिए।”

“और क्या करूँ?” उसने पूछा। “अपने पिता से माफी मांगूँ? मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा करूँगा।”

“वह तुम्हारे पिता हैं। वह परिपूर्ण नहीं हैं। लेकिन वह तुम्हारे पिता हैं। मुझे यकीन है कि तुम मतभेदों को सुलझाने के तरीके ढूंढ सकते हो।”

वह कुछ देर रुका, उसकी आँखों में लगभग आँसू आ गए। “मुझे नहीं पता क्या कहूँ। मुझे बस नहीं पता कि क्या करूँ।”

“मुझे पता है मैंने ही तुम्हें इस मुसीबत में फंसाया है। मैंने ही तुम्हें देवमेधा जैसी धूर्त स्त्री का साथी बनाया, लेकिन मुझे विश्वास है कि मैं इसे सुधार सकता हूँ। मुझे युधजित के पास वापस जाने दो और मैं उससे तुम्हारे और उसके बीच सुलह का प्रस्ताव रखूँ, अगर सब ठीक रहा तो मुझे यकीन है कि वह तुम्हें स्वीकार कर लेगा।”

सत्याकी ने नम आंखों से सिर हिलाया। वह उलझन और उदासी में डूबा हुआ लग रहा था। "ठीक है, जैसा आप कहते हैं। मुझे लगता है कि फिलहाल यही सबसे अच्छा विकल्प है।"

बलराम आगे बढ़ा और उस छोटे बच्चे को गले लगा लिया। सभी लोग उसे देख रहे थे और उसने देखा कि रेवती थोड़ी दुखी थी, लेकिन साथ ही थोड़ी राहत भी महसूस कर रही थी।

“लेकिन योजना क्या है? मुझे यकीन है कि युधजीत हमें देखते ही हमला नहीं करेगा।” सत्यकी ने पीछे हटते हुए पूछा।

"मेरे पास एक योजना है," बलराम मुस्कुराया, हालांकि वह थोड़ा डरा हुआ था।

*

पृष्ठभूमि में बर्फ से ढका परिदृश्य आशा की किरण की तरह उभरा। अंधकों और वृष्णियों के बीच युद्ध का मैदान तैयार था।

वे एक-दूसरे के विरोधी थे। वे आगे क्या करना है, इसकी योजना बना रहे थे और रणनीति तैयार कर रहे थे।

युधजित अग्रिम पंक्ति में क्षितिज की ओर देखते हुए आक्रमण करने के लिए तैयार खड़ा था, तभी उसने देखा...

एक आकृति उनकी ओर बढ़ती हुई दिखाई दी। वह पूरब से आई थी और स्थिर गति से चल रही थी। जैसे ही उसकी दृष्टि स्पष्ट हुई, उसने देखा कि आकृति के हाथ में एक छड़ी थी, और वह

समझ गया कि वह कौन है। लेकिन क्या यह भ्रम हो सकता है?

“गोली चलाओ!” उसने अपने तीरंदाजों को आदेश दिया। वह कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।

तीर मैदान पर फिसलते हुए आगे बढ़े और बर्फ के टुकड़े गंजे सिर वाले व्यक्ति, राजदंड धारण करने वाले और कृष्ण के भाई पर जा गिरे। वे सीधे उनकी छाती पर लगे, जिससे उनकी त्वचा जलने लगी, लेकिन वे चलते रहे और चलते-चलते उन्होंने अपने तीरों को नीचे की ओर झटक दिया और बिना किसी भय के फुर्ती से आगे बढ़ते रहे।

जैसे ही वह युधाजित के करीब पहुंचा, जिसके आदमियों ने तुरंत उन दोनों के बीच आकर उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह वहीं रुक गया, ठहर गया।

“क्या यह तुम हो, बाला?” युधजित ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। “मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम दुश्मनों का साथ दोगे।”

"क्या तुम इसी तरह मेरा अभिवादन करते हो?" उसने अपने शरीर पर लगे निशान और सीने से बहता खून दिखाया।

युधाजित गंभीर और मौन बना रहा। "आप मुझसे बात करना चाहते हैं, है ना?"

"हाँ।"

“अच्छा। तो चलिए बात करते हैं।”

कृष्ण द्वीप की कुचली हुई घास पर चल रहे थे।

वह एक हरा-भरा, शांत और गंभीर स्थान था, जहाँ किसी जानवर या पक्षी का कोई निशान नहीं था। फिर भी वह सुंदर और समृद्ध था, और तरह-तरह के अद्भुत फूलों से भरा हुआ था, तथा ऊँचे-ऊँचे घने पेड़ों की छतरी सूरज की रोशनी को जमीन से छिपाए हुए थी। वहाँ कोई परछाई नहीं थी और वे दोनों चुपचाप चल रहे थे, एक शब्द भी नहीं बोल रहे थे, जबकि कृष्ण को महसूस हो रहा था कि समवा का मन उलझन और उत्साह से भरा हुआ है।

"तुम बोल सकते हो, बालक," कृष्ण ने गंभीरता से कहा, उनकी गदा उनसे चिपकी हुई थी, जबकि उनकी निगाहें दुर्जय की ओर से किसी भी अनकहे हमले को पकड़ने के लिए चारों ओर घूम रही थीं...

या अर्जुन से।

"चाचा अर्जुन यहाँ क्यों हैं? मुझे पता है कि बचपन में आप हमेशा उनके बारे में बताती थीं। आप हमेशा कहती थीं कि वे आपके सबसे अच्छे दोस्त, सबसे बड़े सहयोगी और आपके शिष्य भी थे। तो फिर क्या हुआ? उन्होंने युद्ध जीत लिया, है ना? आखिरी बार आपने उनके बारे में मुझसे यही कहा था कि वे हस्तिनापुर में थे। लेकिन आपने झूठ बोला था, है ना?"

कृष्ण ने सिर हिलाया। क्योंकि कुछ हद तक, यह उनकी गलती थी। कुछ हद तक। या उससे भी ज़्यादा। उन्होंने आसपास देखा, उसका जायज़ा लिया और महसूस किया कि खतरे की आहट चारों ओर मंडरा रही है, समय के आवरण और वस्त्रों में एक भयानक पश्चाताप समा रहा है। उन्हें कंपकंपी महसूस हुई और उनके शरीर में डर बैठ गया, जैसे उनकी रीढ़, उनका खून और उनका शरीर जकड़ रहा हो। उन्हें दूर आसमान में ज्वालामुखी दिखाई दे रहे थे, जो बर्फीले बादलों को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे। उन्हें ज्वालामुखी तक जाने वाला रास्ता दिखाई दे रहा था और साथ ही उन्हें रसभरी और आंवले की गंध, और किसी सड़ी हुई चीज़ की दुर्गंध भी महसूस हो रही थी।

जब उन्हें शव मिले।

वे इतने निष्क्रिय और शांत थे मानो वातावरण का ही हिस्सा हों, और उनसे दुर्गंध आ रही थी; कंकालों से मांस के टुकड़े टपक रहे थे। उनके शरीर पर तीर के निशान थे, जो खोपड़ी और धड़ में धंसे हुए थे। लेकिन उन्हें किसी चीज ने जिंदा ही खा लिया था, टुकड़े-टुकड़े कर दिया था।

"उनका क्या हुआ? और वे यहाँ कैसे पहुँचे?"

"यह द्वीप अभेद्य नहीं है। यहाँ गलती से भी पहुँचा जा सकता है और जादू से भी इसका पता लगाया जा सकता है। ये ज़रूर नाविक या समुद्री डाकू होंगे जो यह सोचकर यहाँ आ गए होंगे कि इस जादुई द्वीप में जादू होगा। लेकिन ऐसा नहीं है।" उसकी आवाज़ कर्कश और गंभीर थी।

इसमें क्या है?

"मृत्यु," कृष्ण ने आह भरी।

"क्या तुम मुझे बताओगे कि क्या हो रहा है? हम कहाँ हैं?" समवा ने चिढ़कर पूछा। "मुझे

तुम्हारे बारे में ये रहस्य कभी पसंद नहीं आया। मुझे इससे नफरत थी।"

"यह कोई रहस्य नहीं है। यह तुम्हारी चाची, मेरी सौतेली बहन के बारे में है।" उसने आह भरी। वे ज्वालामुखी की ओर बढ़ते रहे, हालांकि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि दुर्वासा कहाँ होगा। लेकिन वह जानता था कि अगर वे देर तक चलते रहे, तो वे उसे पा लेंगे या इससे भी बुरा... उन्हें अर्जुन मिल जाएगा। "सुभद्रा इच्छाओं और ईमानदारी से भरी स्त्री थी। वह ऐसी स्त्री थी जो दूसरों को खुद से ज़्यादा प्यार करती थी। एक ऐसा गुण, जो दुर्भाग्य से मुझमें कभी नहीं था।"

"सुभद्रा आंटी ने अर्जुन से शादी की थी, है ना?"

"हाँ, उसने किया था," उसने गंभीरता से उत्तर दिया। "लेकिन फिर उनका बेटा अभिमन्यु मर गया। एक महान बालक, जिसे आपके भाई प्रद्युमन ने प्रशिक्षित किया था। उन्होंने मुझे उसे बचाने के लिए कहा, लेकिन मैं नहीं बचा सका। वे यह नहीं समझते कि भगवान मरे हुओं को जीवित नहीं कर सकते। भगवान केवल रक्षा कर सकते हैं।"

"तब?"

"वह संन्यासिनी बन गई। अपने जीवन के अंतिम दिनों में, वह जंगल में रहने चली गई। अर्जुन, उस पर मोहित होकर, उसके पीछे गया, लेकिन उसे नहीं ढूंढ पाया।" उसने आह भरी। "मेरे साथ, उसने उसे हर जगह खोजा, लेकिन व्यर्थ। हमें डर था कि उसके पास पानी, खाना नहीं होगा और वह जीवित नहीं रह पाएगी?" उसने सिर हिलाया।

"तो क्या तुमने भी?" समवा ने पूछा, हालाँकि उसे चाची सुभद्रा के बारे में आखिरी जानकारी यही थी कि उनकी मृत्यु प्राकृतिक कारणों से हुई थी। अब सच्चाई सामने आ रही थी।

"हाँ, हमने देखा था। गिद्ध उसे नोंच रहे थे और वह ऐसी लग रही थी मानो भूख और प्यास से बहुत पहले मर चुकी हो।" कृष्णा रोना चाहता था। अपनी बहन को उस हालत में देखकर उसे मृत्यु को स्वीकार करने में और भी ज़्यादा कठिनाई हुई। उसे एहसास हो गया था कि मृत्यु जीवन का एक हिस्सा है। "मुझे माफ़ करना, वह दृश्य हमेशा मुझे परेशान करता है, हमेशा मेरे मन में बसा रहता है।" उसका सीना भारी और ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, मानो कोई बड़ा पत्थर उसके फेफड़ों पर दबा हो और उन्हें बुरी तरह कुचल रहा हो।

"उसके बाद क्या हुआ?" समवा ने अविश्वास से अपनी चाची की कहानी सुनते हुए अपनी नाक फुला ली।

"अर्जुन उस दिन मर चुका था। उसकी आत्मा निकल चुकी थी। वह सुन्न पड़ गया था और किसी से बात नहीं करता था। मैं उसे उस हालत में नहीं देख सकती थी। लेकिन एक दिन वह मेरे पास आया और उसने मुझसे कहा कि वह चाहता है कि मैं उसे फिर से जीवित कर दूं। उसने एक बेटा खोया और अब उसने अपनी पत्नी को भी खो दिया है और वह अब और दर्द सहन नहीं कर सकता। मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त को भी नहीं खो सकती थी, बहन को तो छोड़ ही दीजिए। इसलिए मैंने एक मूर्खतापूर्ण काम कर दिया।"

"क्या?"

कृष्णा अब चल नहीं पा रहा था। वह खोया हुआ महसूस कर रहा था, न केवल अपने

आसपास के वातावरण में, बल्कि स्वयं में भी। "मैंने उससे कहा, एक रास्ता है जिससे वह वापस लौट सकती है।"

"ठीक है, लेकिन आपने अभी-अभी कहा था..."

“नहीं, यह हमेशा काम नहीं करता और कोशिश करना मूर्खता है क्योंकि इसके परिणाम भयावह हो सकते हैं।” कृष्ण ने सिर हिलाया। “क्योंकि तुम जीवन के सत्य, जीवन के मूल तत्व के विरुद्ध जा रहे हो। तुम हमारे अस्तित्व के ताने-बाने के विरुद्ध जा रहे हो। जीवन हमें अमर होने की अनुमति देता है क्योंकि हम वे हैं जिन्हें अमर होना चाहिए। जीवन उन्हें मरने की अनुमति देता है जिन्हें मरना चाहिए।”

"आपका क्या मतलब है?"

“सुभद्रा का पुनर्जन्म होना तय नहीं था। उन्हें तो मृत ही माना जाता था। लेकिन मुझे उनके पिछले जन्म का नाम पता था। वे भगवान राम के शासनकाल में त्रिजटा नामक असुर थीं। मैंने अर्जुन से कहा कि यदि वह सुभद्रा के शव को चंद्रमा की पहली किरण से निकलने वाले जल में विसर्जित कर दे, तो उनका पुनर्जन्म हो जाएगा। हालांकि, यह भी संभव है कि वे सुभद्रा के रूप में न लौटें, बल्कि त्रिजटा के रूप में लौटें।”

समवा ध्यान से सुन रही थी, किसी और बात के होने का इंतज़ार कर रही थी। "तो, वह उम्मीद के मुताबिक वापस नहीं लौटी?"

“हाँ। और जब मुझे यह पता चला, तो मैंने उसे यहाँ फँसा लिया।” उसने चारों ओर देखते हुए कहा। “इस नरक जैसी जगह में और अर्जुन ने उससे वादा किया कि वह अपनी जान जोखिम में डालकर भी उसके साथ रहेगा।”

“हे भगवान!” समवा ने घबराकर कहा। “मुझे बहुत खेद है।”

कृष्णा ने सिर हिलाया। “हमें यहाँ से चले जाना चाहिए और अपने पदचिह्नों को छुपा कर रखना चाहिए। हम नहीं चाहते कि किसी को पता चले कि हम यहाँ हैं। यह अंधकारमय इलाका है जहाँ भयानक त्रासदियों का सामना कर चुके लोग रहते हैं। यह जगह मेरे सबसे बड़े डर, मेरे सबसे बुरे सपने से भरी है।”

"और वह यह है कि?"

"मेरी पिछली ज़िन्दगी।"

*

वह लबादा उसके ऊपर सरक गया, और पहाड़ियों की चोटी पर बैठा वह आदमी उन्हें हिलते हुए देखता रहा। वे सांप की तरह चल रहे थे और दूर से ही वह उन्हें पहचान सकता था, खासकर लंबे और उम्रदराज व्यक्ति को।

वह उसका मित्र, उसका साथी और उसका सहयोगी था।

अर्जुन ने हुड पहन रखा था, उसका धनुष सरकंडे का बना था और उसके बाण ओब्सीडियन के बने थे, जो उसकी पीठ पर लटके तरकश में रखे थे।

आप अभी यहां क्यों हैं? आप यहां किसलिए आए हैं?

वह पूछना चाहता था। लेकिन उसे अपने बाणों से उसे मार डालने की तीव्र इच्छा हुई। कृष्ण

को मार डालने की। उसे नहीं पता था क्यों। उसे ऐसे विचार नहीं रखने चाहिए थे, लेकिन असल में वही सही काम नहीं कर पा रहा था। वह सुभद्रा और अभिमन्यु को जीवित कर सकता था, लेकिन उसने नहीं किया। वह हमेशा बहाने बनाता रहा।

और अर्जुन ने ऐसा नहीं किया।

कर्ण पर हमला करते समय उसने अपने मित्र के लिए नियमों का उल्लंघन किया था। उसने कृष्ण के नाम पर ऐसा किया था क्योंकि उस समय ऐसा करना उचित था।

लेकिन उसे कैसे पता चलेगा?

क्रोध और पुरानी यादों का मिलाजुला एहसास उसे घेर लिया और जैसे ही वह मुड़ा, उसने एक धुंध को बनते हुए देखा, और उस धुंध से एक आकृति उभरती हुई दिखाई दी, जो एक पीले शव की तरह लग रही थी, जिसके बाल कागज जैसे थे और आंखें मृत होते हुए भी जीवित थीं।

“दुर्जय,” अर्जुन ने कहा। वह उस आदमी को जानता था। उसने उसे बहुत समय पहले कृष्ण के साथ देखा था। “यहाँ क्या हो रहा है? सब लोग यहाँ क्यों हैं? इसका उद्देश्य क्या है?”

दुर्जय के चेहरे पर एक शांत, खिलखिलाती मुस्कान थी। "ओह, मैं बस उनका पीछा कर रहा हूँ और यह सुनिश्चित कर रहा हूँ कि वे अपनी यात्रा के अंत तक न पहुँचें।"

"क्यों?"

“क्योंकि मुझे आदेश दिया गया है।” उसने अपने जबड़े भींच लिए। “क्योंकि मेरे पास कोई विकल्प नहीं है।”

“बिल्कुल। और मुझे इसकी परवाह क्यों करनी चाहिए?” अर्जुन धुंध से दूर जाने लगा।

"क्योंकि मुझे पता है कि तुम कृष्ण को बुरी तरह से मारना चाहते हो। तुम उसे मरा हुआ देखना चाहते हो। मुझे इसमें तुम्हारी मदद करने दो।"

“और ये सब कैसे हुआ?” अर्जुन ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। “आखिरी बार जब मैंने तुम्हें देखा था, तब तुम मर चुके थे। फिर तुम दोबारा कैसे जीवित हो उठे?”

“यह काला जादू का एक अंश था। लेकिन यह अच्छा नहीं है। मैं एक औरत के वश में हो गया था,” दुर्जय ने गुस्से से कहा। “भयानक, बेहद भयानक औरत। और अब अगर मैं उसकी बात नहीं मानूंगा, तो वह मुझे नहीं छोड़ेगी।”

“मरे हुए का वापस आना...मैं अब ऐसा नहीं चाहता,” अर्जुन ने कहा, उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था और अब वह उसे दोबारा दोहराना नहीं चाहता था।

“उसे इसके बारे में पता था,” दुर्जय ने फटकार लगाते हुए कहा।

"क्या?"

“मृतकों को जीवित कैसे करें। मैंने उसे बताया। मैंने उसे वह तरीका बताया जब सुभद्रा का निधन हुआ था,” धुंधले चेहरे वाले व्यक्ति ने कहा।

अर्जुन रुक गया और अपनी भौंहें चढ़ाते हुए बोला, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

“हाँ, ऐसा ही है। मैंने उससे कहा था कि वह सुभद्रा की मदद कर सकता है, लेकिन वह मेरी बातों से सहमत नहीं हुआ और मुझे गुस्सा आ गया। मैंने खुद पर भी इसे आजमाया, लेकिन उस मूर्ख औरत ने मुझे काबू में कर लिया। पर यह कारगर है। मैं इसका जीता-जागता उदाहरण हूँ।

हम इस तरह अमर रह सकते हैं। कृष्ण ने मुझे बताया नहीं, जबकि वह बता सकते थे। लेकिन उन्होंने तुम्हें बुरे अंजाम की ओर धकेल दिया, जिसके चलते तुम जीवन भर ऐसे ही रहोगे।"

अर्जुन सोचने लगा। उसे पता नहीं था कि उसके साथ धोखा हो रहा है या नहीं, लेकिन अतीत के किसी व्यक्ति से बात करना अच्छा लग रहा था, भले ही वह व्यक्ति मर चुका था और उससे किसी ऐसे व्यक्ति को मारने के लिए कह रहा था जिसे वह हमेशा से जानता था। "तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

"उसे मार डालो। मैं नहीं मार सकता," दुर्जय ने कहा। "मेरी क्षमता सीमित है, लेकिन तुम्हारी नहीं। मेरे लिए यह काम कर दो और मैं उसका सिर अपने आदेशकर्ता के पास ले जाकर खुद को मुक्त कर लूंगा।"

"अगर मैं ऐसा न करूं तो क्या होगा?"

"मैं दूसरे तरीके ढूंढ लूंगा।" उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

अर्जुन कुछ कहना चाहता था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, उसने जंगल में हो रही हलचल को देखा। कोई भारी वस्तु हिल रही थी और वह कृष्ण और उनके साथ मौजूद युवक की ओर बढ़ रही थी। वह जिस चट्टान पर खड़ा था, वहाँ से उसे यह सब दिखाई दे रहा था।

"खैर, मुझे लगता है कि मुझे आपके लिए ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। मेरी पत्नी पहले से ही यह काम कर रही है।"

दुर्जय बगल में आया और मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा।

*

जब भूकंप के झटके शुरू हुए तो कृष्ण समझ गए कि कुछ गड़बड़ है। ये झटके बहुत तेज़ और ज़ोरदार थे, और जब उन्होंने पूरब की ओर देखा, जहाँ से ये आ रहे थे—तो उन्होंने उस राक्षस को देखा। वह आकार में तीन गुना बड़ा था और पूरी तरह नग्न था। वह अपनी लचीली त्वचा, बड़े-बड़े पंजों और लंबे दाँतों के साथ सीधे उनकी ओर बढ़ रहा था, मानो वह उसका भोजन हो।

"ये क्या बकवास है?" समवा ने पूछा।

"मेरी बहन," कृष्ण ने धीमी आवाज़ में बड़बड़ाते हुए कहा। "हमें भागना चाहिए।"

और उन्होंने ऐसा ही किया। वे उस राक्षस से जितनी जल्दी हो सके दूर भाग गए, जो अब उस स्त्री जैसी बिल्कुल नहीं दिखती थी जो कभी हुआ करती थी। वह पूरी तरह से एक अलग प्रजाति थी। उसे याद था कि पानी से बाहर आने के बाद उसमें कैसे बदलाव आने शुरू हुए थे। शुरुआत में सब ठीक था, लेकिन फिर उसके पूरे शरीर पर उभार आ गए और उसका चेहरा बदलने लगा। और इससे पहले कि वह आसपास के लोगों के लिए खतरा बन जाए, उसने उसके लिए एक द्वीप ढूंढ लिया जहाँ वह रह सके और खुद को छिपा सके, मानो वह कोई अपराधबोध हो जिसका वह कभी सामना नहीं करना चाहता था, भले ही वह मौजूद था।

वह जंगल में तेज़ी से भागा, उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी जब उसने देखा कि राक्षस पास आ गया है और उसने समवा को पकड़ लिया है। एक चीख और चिल्लाहट सुनाई दी, कृष्ण बचकर मुड़े, क्योंकि राक्षस उनके बेटे को खाने लगा था। कृष्ण ने अपने हाथ में पकड़ी हुई गदा को मुट्ठी में कसकर पकड़ा और तुरंत उसके घुटने पर वार करने की कोशिश की, उसके

ऊपरी भाग और शरीर को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

समवा को अभी भी खाया जा रहा था।

“नहीं!” कृष्ण चिल्लाए, जब उन्होंने देखा कि उनका बेटा राक्षस के मुंह के बहुत करीब था।

और तभी किसी चीज ने राक्षस को मारा। वह एक तीर था। तीर उसके सिर पर लगा और फिर एक और तीर इतनी जोर से लगा कि राक्षस ने सामवा को जमीन पर गिरा दिया और अपने चेहरे से उन सभी तीरों को निकालने लगा जो उसे परेशान कर रहे थे।

असंख्य तीर राक्षस पर बरसने लगे, और कृष्ण को एहसास हुआ कि कोई उनकी मदद कर रहा है। उन्होंने सामवा का हाथ पकड़कर उसे आगे बढ़ने के लिए धक्का दिया। वे तेजी से भागे और झाड़ियों के पीछे छिप गए। राक्षस ने कराहने और चीखने की आवाज निकाली और फिर वापस उसी जगह चला गया जहाँ से वह आया था।

“वो तो...कुछ अलग ही था,” समवा ने कहा।

“हाँ। काला जादू मत करो, बेटा। यह सबसे ईमानदार सलाह है जो मैं तुम्हें दे सकता हूँ।”

“ये तीर किसने चलाए हैं? हमें किसने बचाया?”

मुझे इसका जवाब नहीं जानना है...

उनकी बातचीत में तभी खलल पड़ा जब उन्हें पीछे से कुछ सुनाई दिया। तेज़ कदमों की आहट। कृष्ण ने मुड़कर देखा तो उनके बूढ़े, दाढ़ी वाले मित्र, सिर पर एक सफेद चोगा ओढ़े खड़े थे, लेकिन पहले की तरह ही जवान दिख रहे थे। उनके पास धनुष था, लेकिन उसमें बाण नहीं था। हालांकि कृष्ण जानते थे कि वे पलक झपकते ही तीर चला सकते हैं—वे इतने तेज़ थे। अपने मित्र को सामने देखकर पुरानी यादें ताज़ा हो गईं और उनका दिल भारी हो गया। इससे उन्हें खुशी भी हुई और साथ ही, उन्हें अपनी निराशाओं का भी सामना करना पड़ा।

“धन्यवाद, अर्जुन,” कृष्ण ने कहा।

“मुझे बताओ, तुम यहाँ क्यों हो?” अर्जुन ने कहा। “फिर शायद मैं देख पाऊँगा कि तुम्हें दोबारा बचाने की ज़रूरत है या नहीं।”

38

प्रद्युमन पालथी मारकर बैठे थे और वे शांत थे।

वह उस समय जितना शांत था, उतना पहले कभी नहीं था। उसने अपने आसपास के शोर पर ध्यान नहीं दिया, न ही अपने सामने खड़ी सौतेली माँ की बात सुनी। वास्तव में, वह एकदम शांत था। उसके आसपास के लोग चिल्ला रहे थे, और उसकी सौतेली माँ भी उसे पुकार रही थी, लेकिन उसकी आँखें बंद थीं और उसका चेहरा भावहीन था। वह जानता था कि यह एक भ्रम है और उसे इस भ्रम पर अपना नियंत्रण रखना था।

“शांबरा की कमजोरी क्या है?” आवाज के बीच, उसने मायावती की आवाज सुनी। “बताओ। मैं तुम्हारी भी मदद कर सकती हूँ।”

बार-बार पूछे जाने पर भी उसने झुंझलाहट से सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं, तुम्हें इसमें नहीं पड़ना चाहिए।"

“अरे यार, मुझे बताना चाहिए!” वह चिल्लाई। “तुम्हें इसका कोई अंदाजा नहीं है। और मैंने तुम्हें यह बताया भी नहीं है।”

“यह क्या है?” उसने अपनी आँखें खोलीं और उसकी ओर देखा।

“मुझे इस बात का बहुत पछतावा था, लेकिन...” मायावती ने अपने होंठ दबाए, “मैंने ही उसे दोबारा जीवित किया था।”

वह चुप था। उसने एक शब्द भी नहीं कहा, हालाँकि उसके भीतर एक ज्वालामुखी फट रहा था। "और ऐसा क्यों? क्योंकि तुम उसे याद कर रहे थे?"

“नहीं, नहीं, बात ये थी कि... रसातल में अफरा-तफरी मची हुई थी और अलग-अलग कुलों के सरदार आपस में लड़ रहे थे। मुझे कोई हल निकालना था, इसलिए मैंने काले जादू और माया का इस्तेमाल करके उसे वापस बुलाया। ये कारगर साबित हुआ और रसातल को बदलने के बजाय, वो तुम्हें चोट पहुँचाने के लिए इस यात्रा पर निकल पड़ा।” वो फूट-फूटकर रो रही थी और टूटने की कगार पर थी। “उसने ये भी सुनिश्चित किया कि मुझे भी तकलीफ हो और इसी वजह से उसने मुझे भी यहाँ भेज दिया।”

प्रद्युमन चुपचाप सुन रहा था और जब वह सिसकियाँ और आँसू बहाते-रोते शांत हुई, तो वह बोलना चाहता था, लेकिन चुप ही रहा, जब तक कि गलियारे में कदमों की आहट सुनाई नहीं दी। उसने अपनी सलाखों के बाहर देखा तो पाया कि पहरेदार उसे ले जाने आए थे। और जैसे ही उसने बाहर जाने की अनुमति दी, मायावती ने पुकारा:

“यह क्या है? मुझे बताओ! यह क्या है?”

“कुछ नहीं। मैं आत्मचिंतन कर रहा हूँ,” प्रद्युमन ने उसे जवाब दिया लेकिन उसकी तरफ देखा तक नहीं।

वह ऐसा नहीं करना चाहता था।

क्योंकि अब उसे सच्चाई पता चल गई थी।

*

प्रद्युम्न खुले मैदान में, उसी युद्धक्षेत्र में था जहाँ वह हमेशा रहता था। कुछ भी नहीं बदला था। मौसम वही था। बिना चेहरे वाले लोग भी वही थे। लेकिन राजा के बैठने की जगह, शंबरा ऊपर बैठा था, न कि नीचे ज़मीन पर, और अपने कवच, तलवार और पूरे युद्ध सामग्री के साथ।

“तुम्हें पता है, तुम्हारे बर्ताव से मुझे चिढ़ होने लगी है। मैंने सोचा था कि तुम्हारे साथ खेलना और तुम्हें सूअर की तरह चीखने पर मजबूर करना, तुम्हें दर्द देना मज़ेदार होगा,” शंबारा ने कहा, और उसका कवच कर्कश आवाज़ें निकालने लगा। वह एक गैंडे जैसा दिख रहा था, छोटा लेकिन चौड़ा और झपटने के लिए तैयार। “और अब अतीत से धमाके लाकर तुम्हें और चीखने पर मजबूर करने के बजाय, बेहतर यही होगा कि मैं तुमसे लड़ूँ। इसे इसके हथियार दो!” उसने आदेश दिया।

प्रद्युम्न को वे हथियार थमा दिए गए जिनका उसने कभी इस्तेमाल भी नहीं किया था। एक लंबा भाला और एक ढाल। उसके पास और कुछ नहीं था और एक पल के लिए उसे लगा जैसे वह बिल्कुल अकेला है। लेकिन शंबरा ने उसे आगे सोचने का समय नहीं दिया और बैल की तरह उसकी ओर दौड़ पड़ा।

प्रद्युम्न ने उसे चकमा दिया और अपने भाले से पीछे से उस पर वार किया। द्वारका के राजा ने पूछा, "अगर मैं तुम्हें इस लोक में मार डालूँ तो क्या होगा?" "फिर क्या होगा?"

"तुम्हारे साथ भी वही होगा जो तुम्हारी मृत्यु के बाद होगा। कोमा में, जैसा कि मैंने तुम्हें बताया था।"

"दिलचस्प, तो नियम सबके लिए एक जैसे हैं।"

“नियमों के बिना दुनिया कैसी होती है?” शंबरा ने पूछा और फिर प्रद्युमन की ओर कई बार तलवार से वार किया, लेकिन प्रद्युमन ने अपनी ढाल का इस्तेमाल करके उसे लगातार रोका।

“क्या हो गया? पहले तो तुम चुटकी बजाकर मेरी रीढ़ तोड़ सकते थे। और अब देखो तुम्हें। तुम किसी बच्चे की तरह लग रहे हो जो टीम के लिए जीत हासिल करने की कोशिश कर रहा हो। तुम्हारी शक्तियों को क्या हो गया है? तुम इस तरह की छोटी-मोटी लड़ाइयों में क्यों उलझ गए हो?” प्रद्युमन ने गुस्से से भड़क रहे राक्षस के चारों ओर घूमते हुए पूछा।

“कुछ भी गलत नहीं है। मैं अब भी यह कर सकता हूँ।”

“नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते, मोटे मूर्ख।” और इतने लंबे समय के बाद, प्रद्युमन को लगा कि अब वह स्थिति को नियंत्रित कर रहा है। “जानते हो क्यों?”

“क्या इसलिए कि तुमने मेरी कमजोरी ढूंढ ली?” उसने पूछा, मानो वही बात दोहरा रहा हो जो प्रद्युमन ने जेल में रहते हुए कही थी। लेकिन यह सवाल कुछ हद तक तिरस्कारपूर्ण था। “तुम नहीं ढूंढ सकते। कभी नहीं ढूंढ सकते।”

“शायद। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि तुम्हारी यह दुनिया डर से चलती है। जब डर नहीं होता, तब नियंत्रण भी नहीं होता।” वह मुस्कुराया। “जानते हो मुझे डर क्यों नहीं लगता?”

शंबरा असमंजस में था और वह झपट्टा मारकर हमला कर सकता था, लेकिन उसने ऐसा करने से खुद को रोका। वह पहली बार डरा हुआ था। "क्या बात है?"

“तुम मर चुके हो। तुम कभी जीवित ही नहीं थे। और तुम...” प्रद्युमन मुस्कुराया। “बिल्कुल

भी शंबरा नहीं हो।"

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, लंबा सन्नाटा, और फिर एक ठहाका सुनाई दिया जिस पर शंबारा ने कहा— "और आपको क्या लगता है कि मैं यहाँ कैसे हूँ?"

“रूप बदलने की कला। क्लासिक मायाजाल। मेघनाद ने इसे खूब किया है,” प्रद्युमन ने कहा। “कोई बात नहीं। तुम अपना असली रूप दिखा सकती हो, मायावती।”

शंबरा अचंभित रह गया। प्रद्युमन निडर खड़ा था, जब उसने अपनी सौतेली माँ का नाम लिया तो दर्शकों की तालियाँ और जयकारे थम गए थे।

“मुझे पता है कि यह तुम ही हो,” प्रद्युमन ने आगे कहा।

शंबरा के चेहरे से मुस्कान गायब हो गई और फिर उसने धीरे-धीरे अपना रूप बदलना शुरू कर दिया। अचानक, वहाँ सचमुच एक स्त्री प्रकट हुई, लेकिन उसने जेल में पहने हुए काले गंदे वस्त्र नहीं पहने थे। उसने बेहतर वस्त्र पहने थे और उसके सिर पर सोने का मुकुट था। वह रसातल की रानी जैसी लग रही थी...

क्योंकि वह उनमें से एक थी।

“वह नया नेता जिसकी चर्चा हर कोई रसातला में कर रहा था, जिसका हर कोई अनुसरण कर रहा था। वह आप ही थे, है ना?” प्रद्युमन मुस्कुराया।

“तुम्हें कैसे पता चला?” उसने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

“शुरू में, मुझे लगा कि यह दुनिया मेरे जैसे प्रताड़ित लोगों से भरी पड़ी है। फिर उस दरिंदे से अपनी आखिरी लड़ाई के बाद मुझे एहसास हुआ कि नहीं... यह पूरी जेल मेरे इर्द-गिर्द ही बनी है। किसी और के इर्द-गिर्द नहीं। सिर्फ मैं ही यहाँ सो रहा हूँ क्योंकि तुम्हारे भ्रम कांच की तरह नाजुक होते हैं और अगर वे भंगुर हों तो टूट सकते हैं, और मैंने उन्हें तब तोड़ दिया जब मैंने पिछली बार कोई डर नहीं दिखाया। इसने तुम्हें एक पल के लिए तोड़ दिया और तुम्हें भ्रमों को नियंत्रित करके उन्हें वापस अपनी जगह पर रखना पड़ा।”

लेकिन मुझे एहसास हुआ कि यहां सब कुछ नकली है, यहां तक कि तुम भी, जो शंबरा का इस्तेमाल करके मुझमें डर पैदा करना चाहते थे ताकि तुम मुझे यहां कठपुतली की तरह नचा सको।"

उसने ताली बजाते हुए सिर हिलाया। "शाबाश, मेरी प्यारी। तुमने अपना मामला सुलझा लिया है, लेकिन क्या तुम्हें लगता है कि इस सपने से बाहर निकलने का रास्ता डर को तोड़कर ही है? बिलकुल नहीं। मेरे भ्रम इससे कहीं ज़्यादा मज़बूत हैं।"

मैं बाहर नहीं निकलना चाहता। मैं बस यह जानना चाहता हूं कि तुमने ऐसा क्यों किया।

उसने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। वह सच्चा लग रहा था।

“तुम मुझे यहाँ क्यों लाए और मेरे अतीत को लेकर मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? मेरी असुरक्षाओं को लेकर मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? क्यों?” उसने पूछा।

"क्या आपको सचमुच जानने की इच्छा है?"

"बिल्कुल।"

उसने आह भरी। “शुरू में जब तुमने रसातला पर हमला करने की योजना बनाई थी, तो मैं

बहुत निराश हुई थी। मैंने यह स्वप्नलोक इसलिए बनाया ताकि मैं तुम्हें सुला सकूँ और तुम मुझे परेशान न करो। लेकिन देखो, जब मैंने तुम्हें यहाँ रखा, तो मुझे एहसास हुआ कि तुम्हें यहाँ फँसाकर बेहोश होने देने के बजाय, मुझे तुम्हें सुधारना चाहिए। क्योंकि कोई भी माँ अपने बेटे को भटकते हुए नहीं देखना चाहेगी। और तुम चाहे कितने भी पागल क्यों न हो जाओ, मैं अब भी तुमसे प्यार करती हूँ।"

प्रद्युमन फूट-फूटकर रोना चाहता था। लेकिन उसने खुद को रोका। वह देखना चाहता था कि क्या वह सचमुच ऐसा कह रही है, और वह सच में ऐसा कह रही थी। "क्या मैं कुछ ज्यादा ही बिगड़ गया हूँ?"

"असीमित सत्ता ने तुम्हें भ्रष्ट कर दिया है, मेरे बच्चे।"

उसने सिर हिलाया। "मुझे नहीं पता क्या करूं।" उसके घुटने कांपने लगे और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। मायावती ने तुरंत उसे थाम लिया और प्यार से गले लगा लिया। उसने अपनी बाहों में उसे कसकर पकड़ लिया।

मुझे खेद है कि मैंने आपको इस परेशानी से गुजरने के लिए मजबूर किया।

"सब ठीक है," प्रद्युमन ने रोते हुए उसके कंधे पर सिर रखकर उसे कसकर गले लगा लिया। "मुझे पता है मैं यहाँ गलत हूँ। मैं हमेशा से गलत रहा हूँ। मैंने तुम्हारे सिवा किसी और के बारे में कभी नहीं सोचा। मैं तुम्हारे लिए बदल जाऊँगा। मैं खुद को बेहतर बना लूँगा। मैं तुम्हारे लिए कुछ भी करूँगा। लेकिन सिर्फ तुम्हारे लिए।"

"ऐसा नहीं होना चाहिए। दुनिया हम दोनों से कहीं बड़ी है और आपको अपने आस-पास के लोगों के बारे में सोचना चाहिए, और उन लोगों के बारे में जो आपके साथ रहना चाहते हैं, आपसे दूर नहीं जाना चाहते।"

वह पीछे हट गया और उसने उसकी आँखों में देखा और थोड़ा और आगे बढ़कर उसे होंठों पर चूमने की कोशिश की, लेकिन तभी वह पीछे हट गई।

"मैं तुम्हारी माँ हूँ, बेटा।" उसने कहा।

प्रद्युमन ने निराशा में सिर हिलाया। उसने कभी उसके बारे में इस तरह नहीं सोचा था, लेकिन अब जो होना था सो हुआ था। "मैं इस जगह को कैसे छोड़ूंगा?"

"जागने से।"

या फिर तुम्हें मारकर?

"क्या?"

"अगर मैं तुम्हें मार डालूँ, माँ," उसकी बाहें उसकी कमर के चारों ओर कसने लगीं। "क्या मैं इस बुरे सपने से जाग पाऊँगा?"

"मैं...उह...तुम मुझे चोट पहुँचा रहे हो।"

भुजाएं तन गईं और अधिक कस गईं, जिससे मायावती को सांस लेने में कठिनाई होने लगी।

"तुम एक बात में सही थे। तुम्हारी वजह से मैं लोगों के साथ बुरा बर्ताव करता था। मुझे किसी की परवाह नहीं थी, जबकि मुझे करनी चाहिए थी। इसलिए, मुझे यह एहसास दिलाने के लिए धन्यवाद।"

फिर उसने उसका गला पकड़ लिया और धीरे-धीरे उसका दम घोंटने लगा। जब उसने उंगलियां चटकाने की कोशिश की, तो उसने उन्हें तोड़ दिया जिससे वह चीख पड़ी। नसें फूल रही थीं, तब प्रद्युमन को एहसास हुआ कि उसके पास उस चीज को नष्ट करने के अलावा और कोई चारा नहीं है जो उसे अंदर से मार रही थी। "तुम मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव करती रही हो। तुमने मुझे चिढ़ाया है और मेरा इस्तेमाल किया है। तुमने मुझे सिर्फ इसलिए अपने पास रखा क्योंकि तुम चाहती थी कि मैं शंबरा को मार डालूं। और जब वह काम हो गया, तो तुमने मुझे सड़े हुए सेब की तरह फेंक दिया। तुम कहती हो कि तुम मेरी मां हो, लेकिन तुमने मेरा शोषण किया है। तुम हर मायने में बुरी हो और खुद को ताकतवर और महान दिखाने की कोशिश करती हो। लेकिन तुम नहीं हो। तुम बस एक दयनीय..."

और उसने महसूस किया कि वह औरत अब संघर्ष नहीं कर रही थी। उसकी आँखें बंद थीं। और वह साँस भी नहीं ले रही थी। उसने उसका गला छोड़ दिया और वह ज़मीन पर गिर पड़ी, मानो कोई बेकाबू पेलिकन ज़मीन पर गिर रहा हो। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, लेकिन एक पल के लिए वह डर गया। उसने गले में अटकी हुई बात को निगलते हुए अपने आस-पास के लोगों को देखा। वहाँ बहुत सारे लोग थे, अनजान चेहरों वाले दर्शक जो उसे देख रहे थे।

और फिर वे धीरे-धीरे गायब होने लगे।

उसके आसपास सब कुछ बदल गया। सब कुछ बिखरने लगा, बदल गया, विकृत हो गया और जिस वास्तविकता में वह जी रहा था, उसने उसे एक थूक के गोले में बदल दिया और उसे बाहर फेंक दिया...

*

प्रद्युमन जाग गया।

जब उसने आँखें खोलीं, तो उसे लगा जैसे उनमें रेत भरी हो। चारों ओर शोरगुल और धूर्तता छाई हुई थी और उसकी दृष्टि भी धुंधली थी। वह एक पल के लिए असमंजस में पड़ गया, फिर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई, और उसके पेट से गुड़गुड़ाहट की आवाज़ आई। उसे बहुत भूख लगी थी। उसने अपना सिर घुमाया, खुलकर मुस्कुराते हुए, और इस बात से खुश था कि वह उस बुरे सपने से, या जो भी वह था, उससे बाहर आ गया था, तभी उसने देखा कि रुक्मिणी उसके बगल में एक कुर्सी पर बैठी हुई थी, अधनी नींद में। वह उसके पास गया और उसका हाथ पकड़ लिया।

उसे इसका एहसास हुआ और वह खुशी से चीख पड़ी, नींद से जाग गई और उसे गले लगाने के लिए कूद पड़ी।

"लेकिन कैसे...कैसे..." वह रोते हुए और हिचकी लेते हुए बोली।

"सब ठीक है," प्रद्युमन ने अपनी उंगलियों और बालों को सहलाते हुए कहा। "मैं अब ठीक हूँ। कोई बात नहीं।"

वह मुस्कुराई।

और प्रद्युमन ने भी ऐसा ही किया।

उसे पता था कि अब सब खत्म हो चुका है।

चिमनी में आग जल रही थी।

अर्जुन को उचित आतिथ्य सत्कार देने के लिए कृष्ण को यह समझाना पड़ा कि वे वहाँ क्यों आए थे। अर्जुन ने ध्यान से सुना, हालाँकि उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उन्होंने कृष्ण से बस इतना कहा कि वे उनके साथ द्वीप पर स्थित उन कई झोपड़ियों में चलें जहाँ वे रहते थे, क्योंकि उन्हें यह निश्चित नहीं था कि कौन सी झोपड़ी उनके लिए सबसे उपयुक्त होगी, इसलिए उन्हें बार-बार झोपड़ियाँ बदलनी पड़ती थीं क्योंकि राक्षस उन्हें तोड़ता रहता था।

समवा सो गया था। वह थका हुआ था और कृष्ण भी, लेकिन वह अपने दोस्त से बात करना चाहता था और उसके हालचाल जानना चाहता था।

झोपड़ी चट्टान के पास थी, जहाँ से भरपूर जलधारा और टिमटिमाते तारे दिखाई देते थे, और आसमान में तेज़ हवा के झोंके से हल्की सरसराहट हुई। पानी धीरे-धीरे बह रहा था, और वह एक किनारे पर असंतुलित होकर अपने पैर लटकाए बैठा था, तभी कृष्ण उसके पास आए और बैठ गए।

अर्जुन कुछ खा रहा था और कृष्ण ने देखा कि वह कुछ छोटे लाल बेर चबा रहा था।

“तो क्या तुम अपने ही कुल को नष्ट करने की योजना बना रहे हो?” अर्जुन ने स्पष्टवादिता से पूछा। उसका नकाब उतरा हुआ था और उसका चेहरा साफ दिखाई दे रहा था, जिस पर सिर, गाल और पूरे शरीर पर अनगिनत युद्ध के निशान थे। उसकी आँखें उसके पिता इंद्र की तरह गहरी धूसर थीं और उसका शरीर गठीला था।

मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने मुझे कोई विकल्प नहीं दिया है।

उसने सहमति में सिर हिलाया।

“तुम कैसे हो?” कृष्ण ने पूछा।

“पागल।” उसने तुरंत जवाब दिया। “क्या? आप जानते हैं कि मैं सीधा-सादा इंसान हूँ। काफी समय हो गया है, लेकिन मुझे बहुत बुरा लग रहा है। मेरा मन करता है कि मैं वापस सभ्यता में लौट जाऊँ, लेकिन यह जगह मुझे जाने नहीं देती। मुझे यहाँ से जाने से डर लगता है, अपनी पत्नी को दुख पहुँचाने से डर लगता है।”

“अर्जुन, वह मेरी बहन नहीं है।”

उसने अपने जबड़े भींच लिए।

कृष्णा ने कहा, "तुम यहाँ उसके लिए नहीं, बल्कि उसके साथ बिताई यादों के लिए रुके हो।"

“मेरे प्यारे दोस्त, कभी-कभी मेरा मन भाग जाने का करता है,” अर्जुन ने कहा। “मैं सचमुच भागना चाहता हूँ। मैं छिपना चाहता हूँ। मैं अपनी ज़िंदगी जीना चाहता हूँ।”

“और तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए,” कृष्ण ने कहा। “तुम्हें पता है, तुम्हारी तरह मैं भी सभ्यता से दूर छिपता रहा। मैं हर चीज़ से छिपता रहा, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि मायने यह नहीं रखता कि तुम अभी कहाँ हो, बल्कि मायने यह रखता है कि तुम कहाँ जा रहे हो। हम सब

अपने अतीत से इतने पीड़ित हैं कि हमने हार मान ली है।"

"मैं सहमत हूँ," अर्जुन ने कहा। "तो, योजना क्या है?"

"एक बेहतर पिता बनो।" कृष्णा ने पीछे मुड़कर अपने खर्राटे लेते बेटे को देखा। "एक बेहतर इंसान बनो।"

"तुम हमेशा से मेरे दोस्त थे।"

"शायद, तुम्हारे लिए मैं ऐसा था। लेकिन सबके लिए नहीं, और यह बात मुझे आज भी चुभती है।" कृष्णा ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा, मानो वह खुद पर ही व्यंग्य कर रहे हों। "क्या तुमने कभी छोड़ने के बारे में सोचा है?"

"हर दिन। और हर दिन मुझे डर लगता है। पता नहीं किस बात का। शायद और लोगों को खोने का।"

"तुम्हें पता है, जब गांधारी ने मुझे श्राप दिया था, तो मैं स्तब्ध और भयभीत हो गया था। कई वर्षों तक मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया, लेकिन मेरे भीतर भय इस कदर बढ़ गया कि मैंने इसके बारे में कुछ करने का फैसला किया। मैंने सबको अजेय, अपराजेय बना दिया। लेकिन मुझे उन्हें वैसे ही छोड़ देना चाहिए था। मृत्यु जीवन का एक हिस्सा है, अर्जुन। और जिस तरह हम अपना जीवन जीते हैं और अन्य विचित्र, सुंदर चीजें करते हैं, जैसे कि इस चट्टान पर बैठकर तारों को देखना—हमें भी खुद को मरने का मौका देना चाहिए," उन्होंने कहा। "और आगे बढ़ना चाहिए। क्योंकि मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति सबसे नाजुक परिस्थितियों के प्रति उसकी अनुकूलन क्षमता है।"

अर्जुन ने सिर हिलाया। "तुम्हें पता है, दुर्जय ने मुझसे संपर्क किया था।"

"अरे सच में? वो तो काफी परेशानी का सबब रहा है।"

"उसने मुझे तुम्हें मारने के लिए कहा था।"

तो? तुमने क्या कहा? क्या तुम मुझे चट्टान से नीचे फेंकने वाले हो या...?

अर्जुन हँसा। "नहीं। उसने मुझसे कहा था कि वह मृत्यु के बाद जीवन को पुनर्जीवित करना जानता है और तुम सुभद्रा को बचा सकते थे... लेकिन अब इतने वर्षों बाद ये सब देखकर मुझे एहसास हुआ कि जो कुछ भी होता है, किसी न किसी कारण से होता है।"

"अपनी सफाई में मैं यह कहना चाहूँगा कि वह जो करने की कोशिश कर रहा था वह सरासर बेतुका था। यह दुनिया के नियमों के खिलाफ है, उस भाग्य के खिलाफ है जो आपके लिए तय है।"

अर्जुन ने सिर हिलाया। "हाँ। मुझे नहीं पता कि अब वो क्या कर रहा है, क्योंकि मैंने उसे ठुकरा दिया था..."

और उन्हें जल्द ही पता चल गया।

कृष्ण ने महसूस किया कि पहले की तरह ही कंपन फिर से लौट आई है। उन्होंने अर्जुन से एक नज़र मिलाई और दोनों सामवा को जगाने के लिए दौड़े। लड़के को ज़्यादा समय नहीं लगा, लेकिन फिर भी उस राक्षस को वापस आने और डालियों को चीरते हुए बाहर निकलने का समय मिल गया। कृष्ण ने देखा कि राक्षस अब होश में नहीं था, बल्कि उसकी पुतलियाँ फैल गई थीं

और उसके चारों ओर एक धुंध छाई हुई थी।

उन्होंने कहा, "यह दुर्जय है। वही इसे नियंत्रित कर रहा है।"

“हमें भागना होगा। हम इसका मुकाबला नहीं कर सकते,” समवा ने कहा।

“मुझे पता है। लेकिन मैं कर सकता हूँ,” अर्जुन ने अपने तरकश से पाँच बाण निकालते हुए उत्तर दिया। “तुम दक्षिण की ओर चलो। तुम्हें वहाँ दुर्वासा मिलेंगे। वे ज्वालामुखी की तलहटी में बैठकर ध्यान करते हैं, हालाँकि उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि जो कोई भी उनकी तपस्या भंग करेगा, उसे तुरंत मार डाला जाएगा और जलाकर राख कर दिया जाएगा, क्योंकि उनके क्रोध से ज्वालामुखी फट उठेंगे।”

यह तो बिल्कुल दुर्वासा की ही आवाज लग रही थी। कृष्ण ने सोचा।

राक्षस जोर से चिल्लाया और जमीन पर पैर पटका।

“क्या आप वाकई यहीं रुकना चाहते हैं?” कृष्णा ने पूछा।

“अगर मैं जिंदा रहा तो तुमसे मिलूंगा,” अर्जुन रुका। “लेकिन मुझे इसे पूरा करना होगा।”

कृष्ण ने अपने होंठ सिकोड़े और फिर वह जंगल के उस हिस्से की ओर दौड़ पड़ा जहाँ उसे जाने के लिए कहा गया था।

वह प्राणी अर्जुन के बजाय उनका पीछा करने लगा, लेकिन अर्जुन रुके नहीं। उन्होंने बाणों से उसका ध्यान भटकाया, लेकिन वह प्राणी कृष्ण की ओर पत्थर फेंकता रहा, जिन्हें अर्जुन और सामवा चकमा देते रहे। वे तेज गति से दौड़ रहे थे, हवा में छलांग लगाते हुए आगे बढ़ रहे थे।

इसी बीच, अर्जुन पेड़ों पर चढ़ गया और ऊपर की ओर बढ़ने लगा, फिर पेड़ से कूदकर उस विशालकाय प्राणी पर झपटा और अपने तीरों से उसकी आँखों को भेदने की कोशिश की। लेकिन घना कोहरा उसे अपनी चपेट में ले चुका था, जिससे उसकी आँखें लगभग चौंधिया गई थीं और वह होश में नहीं था।

मुझे इसे खत्म करना होगा। मुझे करना ही होगा।

कृष्ण को इसका ज्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, क्योंकि उनके सामने एक ढलान आ गई और सामवा और कृष्ण दोनों उसमें से फिसलते हुए तेजी से नीचे की ओर बढ़ने लगे, जबकि उनके पीछे राक्षस और अर्जुन लड़ रहे थे।

*

कृष्ण और समवा बेहद तेज़ गति से आगे बढ़ रहे थे और जब वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ वे थोड़ी देर आराम कर सकें, साँस ले सकें और फिर आगे बढ़ सकें, तो उन्हें कुछ राहत मिली। रात अभी भी अँधेरी थी।

“तुम दोनों किस बारे में बात कर रहे थे?” समवा ने पूछा।

“जीवन। जिम्मेदारियां,” कृष्णा ने कहा।

समवा ने सिर हिलाया। वह और बोलना चाहता था। वे युद्धक्षेत्र, अपने गंतव्य के करीब पहुँच रहे थे। उसे बहुत कुछ कहना था। उसे बहुत कुछ बताना था। लेकिन शायद उसे थोड़ा इंतजार करना चाहिए था।

कृष्ण और समवा को वहाँ पहुँचने में घंटों लग गए, और जैसे-जैसे सूरज उनके सामने उग रहा

था, वे ज्वालामुखियों के करीब पहुँचते जा रहे थे, लगभग उनके तलहटी तक। वे दक्षिणी द्वार पर थे, और जैसे ही वे पास आए, कृष्ण को कुछ दिखाई दिया। यह एक पेड़ का मुड़ा हुआ तना था, और उसके ऊपर दुर्वासा बैठे थे। यह उस जगह के करीब था जहाँ अर्जुन ने अपने होने की बात कही थी।

वह एक बूढ़ा आदमी था, जिसके बाल उलझे हुए थे और दाढ़ी लंबी थी। उसने नारंगी रंग की धोती पहन रखी थी और वह जंगल की खामोशी में एक विचित्र वस्तु की तरह दिख रहा था।

“हम यहाँ हैं,” समवा लगभग अविश्वास से हँसा, इससे पहले कि उसने देखा कि दुर्वासा स्वयं से कुछ बुदबुदा रहा था और तपस्या कर रहा था।

इससे पहले कि कृष्ण उसे परेशान करने और उसे नाराज न करने की कोई योजना बना पाते, सामवा हमेशा की तरह जल्दबाजी में आगे आया और बोला: "हमें आपकी मदद की जरूरत है।"

बूढ़े व्यक्ति ने बड़बड़ाना बंद कर दिया और अपनी आँखें खोलीं, जो ज्वालामुखी के फटने की तरह लाल थीं। बूढ़े व्यक्ति से एक प्रकार की शक्ति निकल रही थी।

कृष्ण को भी इसका एहसास हुआ और उन्हें लगभग इस बात का अफसोस हुआ कि उनके मूर्ख बेटे ने उन्हें जगा दिया था।

“मुझे परेशान करने की हिम्मत कौन करता है?” दुर्वासा ने कृष्ण पर नज़र डालते हुए भौंहें चढ़ाकर पूछा। “भगवान कृष्ण... आप यहाँ कैसे आए?” उनकी आवाज़ अचानक स्थिर हो गई और क्रोध का कोई निशान नहीं था, फिर भी उनके भीतर एक अजीब सी खुशी थी जो उनके चेहरे पर झलक रही थी।

“गुरु दुर्वासा, हम शांतिपूर्वक आए हैं और आपकी तपस्या में खलल डालने के लिए क्षमा चाहते हैं,” कृष्ण ने लज्जापूर्वक कहा। “पर हमें आपसे कुछ ऐसा पूछना है जिसका उत्तर केवल आप ही जानते हैं।”

“और वो क्या है?” उसने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं।

ज्वालामुखी फटने ही वाला था, अंगारे नीचे गिर रहे थे और जमीन कांप रही थी, लेकिन किसी राक्षस की वजह से नहीं, बल्कि प्राकृतिक कारणों से।

हम एराकास के बारे में जानना चाहते हैं।

“आह,” उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई, “मानव जाति के लिए सबसे अविनाशी हथियार।”

“हाँ। यह किसी भी चीज़ को काट सकता है और किसी भी चीज़ को मार सकता है, है ना?”

“जी हां, मुझे यही पता था,” दुर्वासा मुस्कुराए। “लेकिन भगवान कृष्ण, आपको यह जानकारी प्राप्त करने के लिए इतनी दूर आने की जरूरत नहीं थी।”

"क्यों?"

“क्योंकि तुमने ही मुझे बताया था कि एराका क्या है और तुमने ही मुझसे कहा था कि तुम उस जानकारी को मिटाना चाहोगे, क्योंकि अगर तुम्हें जवाब पता चल गया तो इससे सबको दुख होगा। कहीं गहरे में तुमने इसे दबा रखा है। प्रायश्चित के द्वारा इसे बाहर निकाल सकते थे।”

“मुझे एराकों के बारे में कैसे पता चलेगा?” कृष्ण ने उलझन में पूछा।

“क्योंकि यह आपके रक्त में है, भगवान कृष्ण।” वे मुस्कुराए। “आपके रक्त से अभिरंजित तलवार ही एराका है।”

“नहीं...” कृष्णा ने आह भरी। “लेकिन कैसे...”

समवा चौंक गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जिस हथियार की वे तलाश कर रहे थे, वह इतने समय से उसका पिता था।

“उसे नहीं पता, है ना?” दुर्वासा ने सामवा की ओर इशारा करते हुए पूछा।

कृष्णा ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं, यह महसूस करते हुए कि उसे कुछ याद आ रहा है। उसे वह रात याद आ रही थी जब सब कुछ शुरू हुआ था, और वे दबी हुई यादें जिन्हें वह भूल चुका था, जिन्हें उसने अपनी मानसिक शांति के लिए मिटा दिया था, अब फिर से उसके सामने आने लगी थीं। उसे याद आया कि यही वह पल था, यही वह क्षण था जब उसे सब कुछ याद आ गया।

“यह वही रात थी जब समवा का जन्म हुआ था,” कृष्ण ने कहा।

“हां। और मैं वहां मौजूद था।”

वह कमजोर था। बदनाम था। वह मरने ही वाला था।

"हाँ।"

कृष्णा की आंखों में आंसू आ रहे थे। "और जब मुझे एहसास हुआ कि उसके साथ क्या होगा, तो मैंने उसे अपनी कुछ शक्तियां दे दीं, ताकि वह जीवित रह सके।"

"तुम्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे चलकर तुम उन्हीं शक्तियों का इस्तेमाल ययाति वंश के सभी सदस्यों के लिए करोगे," दुर्वासा ने कहा।

“क्या मैं पहला व्यक्ति था जिसे आपने अजेय बनाया था?” समवा ने पूछा। “लेकिन मुझे लगा कि आप मुझसे नफरत करते हैं...” उसकी आवाज धीमी पड़ गई।

“और तुमने मुझसे कहा था,” दुर्वासा ने आगे कहा, “कि मैंने अपने पुत्र को अपने समान शक्तिशाली बना दिया है। यदि वह कभी अनियंत्रित हो जाए, तो उसे दंडित करने के लिए मेरे रक्त—एराका—का प्रयोग करना।”

समवा ने अपना सिर हिलाया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जन्म के समय भी वह उस पर भरोसा नहीं करेगा।

“मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था,” कृष्णा ने स्वीकार किया और समवा की ओर मुड़ा। “मुझे खेद है। मुझे पता है कि यह सुनने में बहुत बुरा लगता है।”

“पिताजी, यह आपकी कल्पना से कहीं ज्यादा बुरा लग रहा है, लेकिन सब ठीक है। हमें आखिरकार जवाब मिल गया है, इसलिए अब हमें पता है कि हमें क्या करना है,” समवा ने कहा।

कृष्णा असमंजस में पड़ गया। "तुम्हारा क्या मतलब है?"

उसने अपनी तलवार निकाली और कृष्ण की त्वचा में चुभो दी, जिससे कृष्ण का खून बहने लगा। कृष्ण ने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया और कराहते हुए पूछा, "तुम क्या कर रहे हो?"

“क्या तुम्हें एहसास नहीं है?” समवा ने दांत पीसते हुए कहा। “मुझे तुम्हारा खून चाहिए।”

"के लिए?"

“पिताजी, मैं खुद को मार डालूँगी,” समवा ने मुस्कुराते हुए कहा। “इतने समय से यह यात्रा

ययातिस के अंत के बारे में नहीं, बल्कि मेरे अंत के बारे में थी।”

“क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?” युधाजित ने पूछा।

बलराम को खुद भी नहीं पता था कि वह जीवित है या नहीं। उसका पूरा सफर उतार-चढ़ाव से भरा रहा था और अभी कई रहस्य सुलझने बाकी थे। वह घर जाना चाहता था, अपने बच्चों से मिलना चाहता था, अपने बरामदे में आराम से बैठकर पतझड़ के पत्तों को गिरते देखना चाहता था।

लेकिन वह यहाँ था—एक विनाशकारी, हत्यारे पिता और उसके ही जैसे पागल बेटे के बीच संबंधों को सुधारने का प्रयास कर रहा था।

बलराम ने कहा, "मुझे नहीं लगता कि यहाँ कोई विकल्प है, मेरे दोस्त।"

“मुझे उस नाम से मत पुकारो। तुमने मुझे उसी क्षण धोखा दिया जब तुम्हें लगा कि मैं बदल गया हूँ। तुमने मुझसे पूछने की ज़हमत तक नहीं उठाई।”

बलराम ने कहा, "मैं इसे गुप्त रख रहा था। आपको इसे मेरे नजरिए से देखना होगा। मेरा मिशन एक नाजुक स्थिति में था।"

युधाजित ने कंधे उचका दिए। वे दोनों तंबू के अंदर थे, और वह अपनी कुर्सी पर बैठकर बीयर पी रहा था। बर्फीले इलाके में ऐसे सैकड़ों लाल तंबू फैले हुए थे, जहाँ ठंड कठोर ययातियों के शरीर तक भी पहुँच रही थी। युद्ध अभी शुरू नहीं हुआ था, लेकिन जल्द ही शुरू होने वाला था। बलराम ने युधाजित को सत्यकी से मिलने और अपने मतभेद सुलझाने के लिए मना लिया था। सत्यकी सुरक्षित रास्ते से आया था और अब सत्यकी के करीब पहुँचने ही वाला था।

“मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरा अपना बेटा! उफ़!” वह गुर्राया। “अगर कोई और होता, तो मैं तुम्हारी बात सुनता तक नहीं।”

"मुझे पता है कि।"

"लेकिन यह वही है।" उसकी आँखों में नरमी आ गई।

उसके मन में द्वेष है।

“तो फिर चर्चा करो। उलझो मत।” युधजित ने शराब थूक दी। “और अब हम फिर से उन अंधों से लड़ रहे हैं। ये झड़पें अब मेरे लिए परेशानी का सबब बन रही हैं।”

“यह लेजर है।”

"यह व्यक्ती कोन है?"

उसने कंधे उचकाते हुए कहा, “मुझे कुछ पता नहीं। लेकिन मैं देवमेधा को ढूंढकर उसे तड़पा-तड़पा कर मार डालूंगा, ताकि मुझे इसके बारे में पता चल सके।” उसने यह बात रेवती के सामने नहीं कही क्योंकि वह यहाँ नहीं थी, बल्कि ठंड से बचने के लिए दूसरे तंबू में मरम्मत करवा रही थी। इस बीच, अकुरजी गायब हो चुका था। शायद वह अब तक युद्धबंदी बन चुका था, या हो सकता है कि वही देवमेधा के साथ काम कर रहा हो।

"क्या आपको लगता है कि यह आपका कमांडर है?"

“हो सकता है। वह अभी भी कैंप में है।”

वह काफी वफादार है।

“मुझे पता है। लेकिन आप किसी पर भरोसा नहीं कर सकते,” बलराम ने भावहीनता से कहा।

और जैसे ही उसने ऐसा किया, सत्यकी हथकड़ियों में जकड़ा हुआ और दो पहरेदारों के साथ अंदर आया, जो उसे ऐसे स्थानों पर वार करने के लिए तैयार थे जिससे वह लकवाग्रस्त हो जाए। वह वहाँ कठोर भाव से खड़ा रहा, और ऐसा लग रहा था मानो वह अपने पिता पर झपटने ही वाला हो, लेकिन उसने वहीं खड़े रहना ही बेहतर समझा।

“उड़ाऊ पुत्र लौट आया है,” युधजित ने घोषणा की। “बताओ, मेरे प्यारे पुत्र, अपने पिता के पास वापस आकर तुम्हें कैसा लग रहा है?”

मैं यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि अंकल बाला ने मुझे आने के लिए कहा था।

"क्या होगा अगर आपके चाचा बाला आपकी मदद न कर पाएं और आप यहीं फंस जाएं?"

"मेरे पास एक बैकअप सेना तैयार है जो आपके सबसे नाजुक क्षण में आप पर हमला करेगी।"

युधाजित तुरंत खड़ा हो गया। अब वह किसी की बातों में नहीं पड़ रहा था और न ही उसका मूड ठीक था। "मैं यहाँ तुम्हारी ये सब बातें सुनने नहीं आया हूँ। तुमने जो किया, विद्रोह भड़काया, उसके लिए तुम्हें नपुंसक बना देना चाहिए, लेकिन फिर भी मैं तुम्हारी बातें सुन रहा हूँ।"

“तुम दोनों के लड़ने से कोई फायदा नहीं है,” बलराम उनके बीच में आ गए। “तुम दोनों कीमती हो और एक-दूसरे से प्यार करते हो, इसीलिए तो तुम यहाँ हो। मेरी वजह से नहीं। इसलिए भी नहीं कि मैं तुम्हें मना सका, बल्कि इसलिए कि तुम चाहते थे कि मैं ऐसी बातें कहूँ जिससे तुम भड़क उठो। सत्यकी...” उन्होंने उस छोटे लड़के की ओर मुड़कर कहा, “तुम अपने पिता से नफरत करते हो, लेकिन तुम यह भी जानते हो कि वह एक अच्छे इंसान हैं और तुम्हारे लिए एक अच्छे पिता हैं। उन्होंने गलतियाँ की हैं, लेकिन वे खुद को सुधार सकते हैं। युधजित, तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है। मुझे यकीन है कि तुम्हें कोई समस्या नहीं होगी, है ना?”

“वह मुझसे इतनी नफरत क्यों करता है?” युधजीत ने सिकुड़ी हुई निगाहों से आगे बढ़कर पूछा।

"क्योंकि तुमने उस औरत को मार डाला जिससे मैं प्यार करता था।"

युधाजित हैरान हुआ और फिर हंस पड़ा। "क्या सच में? तुम्हें जरा भी शर्म नहीं है? मैंने तुम्हारी जान बचाई!"

"आपका क्या मतलब है?"

बलराम को सारी कहानी पता थी; इसलिए वह आगे बढ़कर बड़ी विनम्रता से बोले, “बेटा, मुझे पता चला है कि वह एक ऐसी औरत थी जो तुमसे चोरी करती थी। युधजित को पता चला क्योंकि वह उस पर नज़र रख रहा था। जब उसे पता चला, तो उसने उसे निकाल दिया। वह तुम्हारे जीवन में विनाश की शक्ति के सिवा कुछ नहीं थी।”

नहीं, वह—वह प्यार करती थी...

“तुम्हारा सारा विद्रोह प्रेम पर आधारित था?” युधाजित ने सिर हिलाया। “कभी भी अपना दिल किसी स्त्री को मत दो। वे इसका अच्छा उपयोग करना जानती हैं और फिर इसे फेंक देती हैं।”

मुझे तुम पर भरोसा नहीं है।

“तो फिर मत करो! लेकिन मैं सच कह रहा हूँ। मैं कभी नहीं...” उसकी आवाज़ नरम पड़ गई, “मैं तुम्हें कभी चोट नहीं पहुँचाऊँगा, मेरे बेटे। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम किससे प्यार करते हो, जब तक तुम खुश हो। लेकिन मैं अपने बेटे को मूर्ख बनते हुए नहीं देख सकता और उसने यही किया।”

सत्याकी बेहद क्रोधित और असमंजस में था। उसकी आँखों में लगभग आँसू थे। “इससे आपको निम्न वर्गों के साथ बुरा बर्ताव करने का कोई औचित्य नहीं मिलता। आपने उनके साथ बेहद घिनौने तरीके से व्यवहार किया है और लोग आपके शासन में परेशान हैं। आपका शासन निष्फल है और आप भी।”

युधाजित ने कंधे उचकाते हुए कहा, "शायद। लेकिन यह एक लाभदायक शासन व्यवस्था है।"

“मुनाफा ही सब कुछ नहीं है। करुणा भी मायने रखती है।”

“शायद तुम्हारे लिए। मेरे लिए नहीं।” उसने अपने सिर से ताज उतार लिया। “उसकी हथकड़ियां खोलो।”

गार्डों ने तुरंत ऐसा किया। युधजित उसकी ओर बढ़ा और ऐसा लग रहा था मानो उसमें लड़ने की कोई ताकत ही न बची हो। वह और भी थूक सकता था, लेकिन वह जानता था कि बलराम ने जो कहा था वह सही था।

“मुझमें दया नहीं है। मैं एक घृणित व्यक्ति और एक घृणित राजा हूँ। और यही कारण है कि ताज तुम्हें मिलना चाहिए।” उसने सत्यकी को चौंकाते हुए कहा।

"क्या आप..."

“हाँ, हाँ, मैं इस बारे में काफी समय से सोच रहा था,” युधजीत ने ऐसे जवाब दिया जैसे यह कोई बड़ी बात न हो। “लेकिन अब मुझे लगता है, यही सही समय है। आखिरकार हिम्मत जुटाकर इस सिलसिले को खत्म करने का। मैं नहीं चाहता कि मेरी विरासत मुझसे नफरत करे। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मेरे बेटे।” कड़वाहट के बावजूद, बहुत सी बातें अनकही रह गईं। “मुझे उम्मीद है कि तुम भी मुझसे प्यार करते हो और इतना कि इस उपहार को स्वीकार करके मेरा सम्मान करोगे। मुझे ताज नहीं चाहिए। मैं अब आराम करना चाहता हूँ।”

सत्याकी को समझ नहीं आ रहा था कि वह अपने पिता को गले लगाए या घुटने टेके, इसलिए उसने घुटने टेक दिए, जैसे ही उसके सिर पर मुकुट रखा गया। "मुझे माफ़ कर दो।" और उसने तुरंत उन्हें गले लगा लिया। दोनों काफी देर तक गले मिलते रहे और बलराम के चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान थी, मानो वह इस समय अपने बेटे के साथ होना चाहते हों।

और उसी क्षण उसे एहसास हुआ कि प्रद्युमन भी बुरा नहीं था। परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं और उसके जीवन में पिता की अनुपस्थिति ही इस तरह के हंगामे का कारण थी।

"मुझे माफ़ करें।"

"ठीक ठाक है।"

बलराम मुस्कुराया और उन दोनों के करीब आकर उनके कंधों पर थपथपाते हुए बोला, "मुझे लगता है कि हमें जश्न मनाना चाहिए।"

"आज रात हमें ऐसा करना चाहिए और कल हम गौरव के साथ लड़ेंगे।"

और इससे पहले कि वे सब एकमत हो पाते, एक ज़ोरदार बिगुल बजने की आवाज़ आई। बलराम ने हैरानी से युधजित की ओर देखते हुए अपनी भौंहें उठाईं, और युधजित ने कहा:

“लड़ाई शुरू हो चुकी है।”

*

आदर्श रूप में, बलराम को युद्ध का हिस्सा नहीं होना चाहिए था।

वह रणनीति बनाकर पीछे रहने वालों में से एक था, क्योंकि उसका पैर लकवाग्रस्त था और वह लड़ नहीं सकता था। लेकिन उसके पास उसका रथ था। उसके पास उसका हथियार, लाठी थी, और उसने उसमें कुछ खंजर जोड़ रखे थे, ताकि वह और भी घातक हो जाए।

उसे पता था कि वह तैयार है।

और इतने लंबे समय के बाद उन्हें आत्मविश्वास महसूस हुआ।

जैसे ही वह युद्धक्षेत्र में दाखिल हुआ, चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। सिर उड़ रहे थे और धड़ के आधे टुकड़े इधर-उधर पड़े थे। लोग बेरहमी से मारे जा रहे थे। तेल उछाला जा रहा था और लोग जलकर राख हो रहे थे। बलराम ने इतने लंबे समय से ऐसा रक्तपात नहीं देखा था।

जब बलराम का रथ एक वृष्णि द्वारा संचालित था, तब वह जब भी मौका मिलता, अपनी छड़ी से दो अंधकों पर प्रहार करता, उनके सिर में वार करता और उनके शरीर को अलग-अलग फेंक देता। जब भी बलराम ऐसा करता, उसे अच्छा लगता था।

जब उसे यह बात समझ में आई।

सभी तीरों ने अचानक आकर उसे बुरी तरह घायल कर दिया, मानो वे कहीं से भी आ रहे हों और सीधे उसकी गर्दन पर लग गए हों, यहाँ तक कि उसके सारथी को भी भेद दिया। नुकीले तीरों की बौछार ने उन्हें रास्ते से भटका दिया।

बलराम उठने की कोशिश करते हुए अपशब्द बोल रहा था, तभी एक अंधक प्रकट हुआ। उसने अपना मुखौटा नहीं पहना था क्योंकि अंधकों की युद्ध के दौरान मुखौटा न पहनने की प्रवृत्ति होती है। इससे उनकी दृष्टि को आराम मिलता है और उन्हें बेहतर ढंग से लड़ने में मदद मिलती है।

जैसे ही एक अंधका सैनिक करीब आया, बलराम ने तुरंत उसकी छाती पर वार किया, उसे घायल कर दिया और उसे एक तरफ पटक दिया। लाठी की मदद से उसने उठने की कोशिश की। तभी उसने देखा कि तीरों की एक और बौछार उसकी ओर आ रही है। वह जानता था कि तीर किसी भी क्षण उस तक पहुँच सकते हैं, इसलिए वह उछला और लंगड़ाते हुए घायल सैनिक के पास जमीन पर पड़ी ढाल की ओर बढ़ा, उसे उठाया और ऊपर उठा लिया।

जब उसने ढाल नीचे खींची और बाणों की वर्षा थम गई, तभी उसे कुछ और भी बुरी घटना का सामना करना पड़ा। उसने दूर से देवमेध का रथ देखा, लेकिन उसके चारों ओर कोई और नहीं बल्कि...

कोहरे की लहर चलने लगी और जैसे-जैसे वह उसकी ओर बढ़ने लगी, उसने वृष्णियों का संहार करना शुरू कर दिया।

"अरे नहीं, वो दुष्ट वितिहोत्र यहाँ आ गया है।"

घायल होने के बजाय, वितिहोत्र धुंध का उपयोग कर रहा था और उसका कठोर शरीर, जो झनझनाते कवच से बना था, और उसके पास एक धुंधली तलवार थी, जिससे वह मनुष्यों को मक्खन की तरह काटता था।

वितीहोत्र ने उसे देखा और लड़खड़ा गया, तभी बलराम ने अपनी लाठी से उसके हमले को रोक दिया।

हालांकि यह ज्यादा देर तक कारगर नहीं रहा, क्योंकि हवा और धुंध के झोंके ने उसकी छाती पर जोरदार प्रहार किया और वह गहरी नींद में वापस गिर गया।

उसकी आंखें मुश्किल से खुल रही थीं... उसे महसूस हो रहा था कि उसकी छाती तेजी से धड़क रही है और उसका मुंह सूख रहा है...

जब उसकी आँखें खुलीं... तो उसने खुद को फिर से अराजकता की दुनिया में पाया। उसे वह जगह मिल गई जहाँ वह पहले था। उसे पता चला कि वह उसी जगह पर है जहाँ से वह भागने की कोशिश कर रहा था। वह उसी सपने में था और वहाँ साँप था।

मैं यहाँ कैसे आ गया?

“मुझे तुम्हें निगलने दो,” सांप ने जोर से कहा। “मुझे तुम्हें निगलने दो।”

बलराम ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने लक्ष्मण को अपने सामने देखा। दृश्य हमेशा की तरह ही घटित हुआ।

"तुम भ्रष्ट हो चुके हो, इसलिए मुझे तुम्हें निगलने दो।"

“मैं भ्रष्ट कैसे हो गया?” बलराम ने पूछा।

आप प्रभावित हुए हैं।

"आपका क्या मतलब है?"

"द लेजर, यह कोई और नहीं है।"

"तब?"

"यह आप है।"

बलराम ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं और हल्के से हँसा। "क्या तुम पागल हो? अगर मैं होता तो मुझे पता चल जाता।"

“तुम भ्रष्ट हो चुके हो। जादूगरनी,” साँप फुफकारा, “उसने तुम्हें भ्रष्ट कर दिया है, तुम्हें बातें भुला दी हैं, तुम्हें सम्मोहित कर दिया है। तुम बेहोशी की हालत में चले जाते हो और बहीखाते का काम करते हो।”

“नहीं,” बलराम के मुंह से शब्द निकलकर रुक गए। “ऐसा हो ही नहीं सकता।”

"यह है।"

मुझे तुम्हें निगलने दो।

बलराम ने देखा कि सांप अपनी पसंदीदा छलांग लगाने ही वाला था और आगे बढ़ रहा था,

तभी उसने अपने नथुने फुलाए और दांत पीसते हुए लक्ष्मण की ओर लंगड़ाते हुए बढ़ा और उसे रास्ते से भटका दिया।

सांप को उसे अंदर ले जाने देना।

*

बलराम की नींद खुली। चारों ओर अभी भी धुंध छाई हुई थी। लेकिन वह धुंध से भी बड़ा था। वास्तव में, वह इतना बड़ा था कि सभी उसे घूर रहे थे। सभी चौंक गए और डर गए—यहाँ तक कि वृष्णि भी। उसे दिखाई दिया कि उसका शरीर अब उसका शरीर नहीं था, बल्कि एक लंबी पूंछ और सात सिरों वाले फन वाला सरीसृप था।

वह खुद वही सांप था जिससे वह डरता था।

लेकिन वह खुद को महसूस कर सकता था। वह महसूस कर सकता था कि वह अभी भी वहीं है, लेकिन पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली और भयावह रूप में। वह किसी भी चीज को हरा सकता था...

और निश्चित रूप से बेचारा वितिहोत्र उसके लिए एक तिलचट्टे से ज्यादा कुछ नहीं है।

जब वितीहोत्र ने सांप की कठोर त्वचा को चीरने का प्रयास किया, तो बलराम नीचे झुके और अपने नुकीले दांतों से वितीहोत्र के भारी कवच को काट डाला और फिर विष को उस पर थूक दिया, जिससे उसका शरीर लगभग जल उठा और धुंध छंट गई। इससे वह अपना रास्ता भटक गया और उसका एक हिस्सा टूट गया, लेकिन उसे नियंत्रण का यह एहसास भी बहुत अच्छा लगा।

उसने कवच तोड़कर उस आदमी को रात के खाने में खा लिया, लेकिन शरीर को निगलते समय उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। यह देखकर अंधक सेना तितर-बितर होने लगी, तभी बलराम ने जोर से फुफकारते हुए कहा:

"मैं भगवान विष्णु का रक्षक शेषनाग हूं।"

41

दुर्गाज्योति को पता नहीं था कि वह कहाँ है।

यह एक अंधकारमय, सुनसान रास्ता था जो कंकड़ों से भरा हुआ था और एक जर्जर महल की ओर जाता था, जिसका मलबा गिरने के बजाय ऊपर की ओर उठ रहा था, मानो आकाश के निर्वात में समा रहा हो। यहाँ सब कुछ धूसर और काला था, और कौवों के दो सिर थे। दुर्गाज्योति को तुरंत अपने भीतर ठंडक महसूस हुई और उसने अपने हाथों को अपने चारों ओर लपेट लिया।

वह महल की ओर चलने लगी, और चलते-चलते उसके मन में माया द्वारा दिखाए गए पिछले दो दृश्य घूमने लगे। वे स्पष्ट रूप से उसे कुछ बताने की कोशिश कर रहे थे। और वह समझ गई कि वह क्या कहना चाह रही थी—कि वह वही गलती न दोहराए जो उसने दुर्जय के साथ रहते हुए की थी।

लेकिन प्रद्युम्न अलग था...

क्या वह नहीं था?

“सभी पुरुष एक समान हैं।” उसके भीतर की आवाज ने कहा।

“तुम्हें पता है मुझे तुम्हारा ऐसा करना बिल्कुल पसंद नहीं है। हमारे कुछ नियम हैं, क्या तुम भूल गए हो? तुम मेरे मन की बात नहीं पढ़ सकते और मैं तुम्हारे मन की बात नहीं पढ़ूंगी।”

मैंने तुम्हें इतनी बार बचाया है कि अब इन खोखले नियमों को तोड़ने का कोई मतलब नहीं है।

दुर्गाज्योति ने मन ही मन बड़बड़ाया, हालांकि वह जानती थी कि बागुल को पता चल जाएगा। उसे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी कि हालात उसके नियंत्रण में नहीं थे और उसकी निजता पर कोई आंच नहीं आ रही थी। इससे भी बुरा यह था कि बागुल ही असल में उसकी उंगलियों में कंपन पैदा कर रहा था। उसकी उंगलियां हमेशा की तरह कांप रही थीं।

“मैं इसे रोक क्यों नहीं पा रही?” उसने पूछा।

"क्योंकि तुमने मुझे स्वीकार नहीं किया है," बागुल ने जवाब दिया, मानो वह एक बार फिर उसके मन की बात समझ गई हो।

“यह सच नहीं है। मैंने किया है।”

“नहीं। ऊपरी तौर पर तो नहीं। पर असल में नहीं। तुम अब भी मुझसे डरते हो। किसी ऐसी चीज से क्यों डरना जो तुम्हारी परछाई हो?” बागुल ने घिनौने लहजे में पूछा।

दुर्गाज्योति जानती थी कि बागुल कोई परछाई नहीं, बल्कि सिर्फ एक सहायक था। लेकिन अब उसे किसी भी बात का पक्का यकीन नहीं था। उसे यह भी नहीं पता था कि वह इस मायासभा में कितने समय से है। उसे यह भी नहीं पता था कि वह मायासभा द्वारा दी गई परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो रही है या नहीं और क्या उसे प्रद्युमन के लिए माया प्राप्त होगी या नहीं।

जैसे ही वह महल के पास पहुंची, हवा का एक झोंका उसके चेहरे तक पहुंचा और उसे सहलाया।

“मैं बस तुम्हें यह बताना चाहती थी कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ,”

बागुल ने कहा, उसकी आवाज़ में स्नेह और प्यार का ऐसा भाव था जो दुर्गाज्योति को लगता था कि उसकी आवाज़ में नहीं है। “और मेरा तुम्हें किसी भी तरह से चोट पहुँचाने का कोई इरादा नहीं है।”

दुर्गाज्योति को समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचे। उसे थोड़ी खुशी और सुकून जरूर महसूस हुआ, हालांकि उसे थोड़ा अजीब भी लग रहा था कि कोई उससे इस तरह बात कर रहा है —जैसे कि वह व्यक्ति सचमुच उसकी परवाह करता हो।

और लंबे समय से उसकी देखभाल नहीं की गई थी।

दुर्गाज्योति महल के अंदर चली गईं, उनकी निगाहें महल के केंद्र की ओर खिंची चली गईं जहाँ एक सफेद प्रकाश की किरण आशा और अंतिम सत्य का संचार कर रही थी। किसी कारणवश, दुर्गाज्योति को लगा कि अगर वह उसे छू लेंगी, तो वह अपने भीतर की माया को महसूस कर पाएंगी। उन्होंने ऊपर देखा, और उन्होंने देखा कि मलबा एक वर्महोल के भीतर समा रहा है, और इस बीच हवा में लटका हुआ है। वे निगले जा रहे थे, और उन्हें एहसास हुआ कि वह हल्की हो रही हैं और अगर उन्होंने प्रकाश को नहीं छुआ, तो वह भी उसमें समा जाएंगी।

"मुझे इसे हासिल कर लेना चाहिए," उसने खुद से कहा।

बागुल ने कहा, "यहां कुछ गड़बड़ है। सावधान रहें।"

दुर्गाज्योति ने सिर हिलाया और रोशनी की ओर बढ़ने लगी, तभी हवा तेज चलने लगी और उसके चेहरे पर लगने लगी, जिससे उसकी आंखों में थोड़ी चकाचौंध होने लगी, लेकिन फिर भी वह चलती रही, उसकी आंखों में प्रद्युमन का चेहरा बसा था और उसे उम्मीद थी कि वह उसे पसंद करेगा...

लेकिन दुर्जय के साथ भी उसे ऐसा ही महसूस हुआ था। जब तक कि वह उस भावना से छुटकारा नहीं पा सकी।

“क्या आप वाकई ऐसा करना चाहते हैं?” एक आवाज गूंजी।

दुर्गाज्योति पीछे मुड़ी। और उसने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा जो उसे आश्चर्यचकित कर गया —स्वयं को। लेकिन उसके सामने खड़ी दुर्गाज्योति कहीं अधिक आत्मविश्वासी थी, उसके हाथ नहीं कांप रहे थे।

“इसका क्या मतलब है? तुम कौन हो?”

“मैं भविष्य का भूत हूँ।” सामने खड़ी महिला मुस्कुराई। “तुम नहीं, बल्कि तुमसे बेहतर।”

“तुम्हारा क्या मतलब है?” वह प्रकाश के और करीब थी और अब उसे छू सकती थी। वह छूना चाहती थी।

"अगर आप ऐसा करेंगी, तो शायद आपको पति मिल जाएगा, लेकिन आप एक दोस्त खो देंगी।"

"कोन सा दोस्त?"

“जो तुम्हारे भीतर है।”

वह मेरी दोस्त नहीं है।

“लेकिन आगे चलकर वो ऐसा करेगी। जब आपके सामने एक निश्चित रास्ता है, तो किसी

अनिश्चित रास्ते पर क्यों जाना?" आगे खड़ी महिला ने पूछा। "आप ऐसा क्यों कर रही हैं? मैं तो आपको यही समझाना चाहती थी कि ऐसा मत करो। आपको समझना होगा कि आप भी उसी जाल में फंस रही हैं जिसमें दुर्जय फंसा था। वो आपके साथ बहुत बुरा बर्ताव करेगा।"

लेकिन मैं उससे प्यार करती हूँ।

"क्या तुम खुद से भी ज्यादा?" महिला ने पूछा। "अगर तुम ऐसा करोगे, तो माया को लाकर उसे दे दो, लेकिन माया की शक्तियां बागुल को नष्ट कर देंगी।"

दुर्गाज्योति को लगा कि यह कोई चाल है, इसलिए उसने मन ही मन पूछा, लेकिन बागुल की आवाज पूरी तरह से विकृत थी, मानो जैसे ही वह ऊर्जा के स्रोत के रूप में माया के करीब आ रही थी, बागुल हवा में विलीन हो रहा था।

"क्या तुम...नहीं..." दुर्गाज्योति जानती थी कि परीक्षा होगी। उसे यह नहीं पता था कि यह इतनी कठिन होगी।

"दुर्गाज्योति, तुम्हारे पास अभी भी विकल्प है।" महिला मुस्कुराई। "वह रास्ता चुनो जिससे तुम्हें लाभ हो, न कि तुम्हारे आसपास के लोगों को। तुम्हें जीवन भर धक्के लगे हैं, धक्के लगे हैं और तुम्हारा जीवन बर्बाद हुआ है। अब समय आ गया है कि तुम इस ऊंचे स्थान को यूं ही न छोड़ दो।"

"लेकिन प्रद्युम्न अलग है।"

"और वो हो भी सकता है। या वो न भी हो सकता है," महिला ने कहा। "जब कोई और तुम्हारे साथ नहीं था, तब बागुल तुम्हारे साथ था।"

"उसे एक मेजबान चाहिए था," दुर्गाज्योति ने ज़मीन पर थूकते हुए कहा। वह जानती थी कि बागुल महज़ एक परजीवी थी जो फलने-फूलने के लिए किसी का खून चूसना चाहती थी।

"नहीं। उसे एक दोस्त चाहिए था। और उसे तुम मिल गईं। वह थोड़ी अनिश्चित स्वभाव की हो सकती है, लेकिन वह तुम्हारे लिए सही दोस्त है," उस महिला ने कहा। "उसी की वजह से तुमने वितीहोत्रों पर विजय प्राप्त की, तुम तलजन वंश को संभालती हो। उसके बिना, तुम एक साधारण स्त्री मात्र हो, जिसका कोई योगदान नहीं है। लेकिन बागुल के साथ, मेरी प्यारी, तुम एक देवी हो।"

दुर्गाज्योति ने भौंहें चढ़ाईं और अपनी नाक के नथुने फुला लिए।

"चुनें। बागुल या प्रद्युम्न।"

"इतने समय से मैंने जो कुछ भी किया है, वह सब प्रद्युमन के लिए किया है।"

"किसी पुरुष को अपना भाग्य तय करने मत दो।" महिला पास आई और उसके कंधे पर थपथपाते हुए बोली, "तुम इससे कहीं अधिक महान हो। तुम्हारी आशाएँ, तुम्हारे सपने इन सबसे कहीं अधिक महान हैं। तुम्हें अपने सच्चे स्वरूप पर कायम रहना चाहिए और उसे ही अपनी जीत का श्रेय देना चाहिए।"

"मुझे पता है।" दुर्गाज्योति को पूरा यकीन हो रहा था और एक पल के लिए वह थोड़ी असमंजस में पड़ गई, क्योंकि उसे बागुल की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। क्या यह सब कोई चाल थी? या फिर कुछ और ही था?

“वह तुम्हें इसलिए चाहता है क्योंकि वह जानता है कि तुम शक्तिशाली हो। क्या वह तब भी तुम्हें चाहेगा जब तुम शक्तिशाली नहीं रहोगी? सवाल यही है।”

दुर्गाज्योति के पास इसका कोई जवाब नहीं था। वह खुद भी इस बारे में अनिश्चित थी। उसे हमेशा लगता था कि अगर वह सही काम करे और उस पर कायम रहे, तो सब ठीक हो जाएगा और हालात बेहतर हो जाएंगे। प्रद्युमन उससे प्यार करेगा और उनके बच्चे होंगे...

लेकिन बागुल को खोने की कीमत पर एक अनिश्चित भविष्य। इस पर विचार करना जरूरी था।

“दुर्गाज्योति, तुम क्या चुनोगी? क्योंकि तुम्हारे चुनाव ही तुम्हें परिभाषित करते हैं। चाहे तुम वो इंसान बनो जिसकी लोग इज़्ज़त करें, या फिर वो जिसे सब नीचा देखें। मायने रखता है तुम्हारा चुना हुआ रास्ता और उसका महत्व,” उस महिला ने कहा। “माया के स्रोत को छू लो, वरना तुम्हें इस दुनिया की हर चीज़ से बढ़कर कुछ मिल जाएगा और तुम सब कुछ खो भी सकती हो। चुनाव तुम्हारा है।”

दुर्गाज्योति ने आह भरी, और जैसे ही उसने उस क्षण को महसूस किया, उसका शरीर तैरने लगा। वह प्रकाश के स्रोत को छूना चाहती थी, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी और वह प्रकाश के स्रोत से दूर, बहुत दूर खिंची चली गई, क्योंकि बागुल की आवाज फिर से उसके भीतर गूंज उठी।

वह वर्महोल में खिंची जा रही थी, और उसकी निगाहें अपनी हमशक्ल की ओर गईं, जो अभी भी जमीन पर थी और उसे हाथ हिला रही थी।

“क्या हुआ था? मैं कुछ पल के लिए तुमसे बिछड़ गया था,” बागुल भीतर से चीखा।

“कुछ नहीं।” दुर्गाज्योति ने अपनी आँखें बंद कर लीं, एक आँसू टपकने दिया, जैसे ही वर्महोल की रोशनी ने उसे घेर लिया, और उसकी उंगलियाँ...

उनका कांपना बंद हो गया था।

"समय आ गया है," दुर्वासा ने कहा।

ज्वालामुखी फट गया। और लावा सर्पिलाकार रूप में नीचे की ओर बहने लगा। लेकिन लावा का क्रोध और उसकी गर्मी पिता और पुत्र के बीच की बातचीत जितनी तीव्र नहीं थी, जो दोनों ही जोशीले और भावहीन थे।

"समय आ गया है," दुर्वासा ने दोहराया।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" कृष्ण ने दांत पीसते हुए पूछा, दुर्वासा की बात सुने बिना, बल्कि सामवा की ओर देखते हुए, जिसने अभी-अभी उनसे कहा था कि वह आत्महत्या करना चाहता है। "तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो?"

क्योंकि मैं किसी काम का नहीं हूँ।

नहीं, तुम नहीं हो। तुम मुझसे कहीं बेहतर हो। और अगर मैंने कभी तुम्हें यह महसूस कराया हो कि तुम बेकार हो, तो मुझे माफ कर दो।

"बहुत देर हो चुकी है।" फिर उसने अपनी तलवार आगे बढ़ाकर उसे काटने की कोशिश की, लेकिन कृष्ण ने उसे अपनी गदा से रोक दिया। "तुम मुझे ऐसा करने से नहीं रोक सकते।"

लावा का उद्गार जारी रहा और वह दुर्वासा के करीब आने लगा था।

"मुझे पता होना चाहिए था कि यह तुम्हारा खून है, इसलिए मैं यह बहुत पहले कर सकता था," समवा चिल्लाया और अपनी तलवार कृष्ण के करीब ले गया, जिसे कृष्ण ने तुरंत ही रोक दिया।

वह अपने बेटे को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था, पर उसे ऐसा करने पर मजबूर होना पड़ रहा था। सब कुछ अचानक बहुत गर्म, पीला और नारंगी हो गया था। वह जानता था कि लावा करीब आ रहा है, और उसे अपने बेटे को पकड़कर भागना होगा। हैरानी की बात यह थी कि दुर्वासा को कोई परवाह नहीं थी, वह बार-बार एक ही बात बुदबुदा रहा था और अपनी आँखें बंद कर रहा था।

कृष्ण का ध्यान कुछ पल के लिए भटक गया था, और ठीक उसी समय समवा ने पहल करते हुए उन्हें जमीन पर धकेल दिया, उनके ऊपर से कूदते हुए अपनी कटार निकाल ली, जिससे वह कृष्ण पर वार करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन कृष्ण कटार को घुमा रहे थे, और यह सुनिश्चित कर रहे थे कि ऐसा न हो सके।

"मैं तुम्हारे पास आई...मैं तुम्हारे पास आई...क्योंकि मैं तुम्हारे साथ इस यात्रा पर जाना चाहती थी और जब हमें एराकस के बारे में पता चला, तो मैं तुम्हारे सामने खुद को मार डालना चाहती थी ताकि मुझे पता चले कि तुमने क्या किया...जो कुछ भी तुमने किया...इतने समय से —उसने मुझे तबाह कर दिया, मुझे तोड़ दिया और मैं हार मान लेना चाहती थी। लेकिन तुमने मुझे श्राप दिया। तुम मुझे मरने नहीं दे सकती थी। तुमने मुझे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी।"

"मुझे माफ़ कर दो," कृष्णा उस चाकू को पकड़े हुए था जिसे उसकी छाती की ओर धकेला जा रहा था। "मुझे सचमुच बहुत अफ़सोस है। मैं हमारे बीच सब कुछ ठीक करना चाहता हूँ।

कृपया ऐसा मत होने दो।"

"पिताजी, यह आपकी आखिरी यात्रा अच्छी रही।"

"समवा," उसने अपने बेटे का नाम लिया, "ऐसा मत करो।"

लेकिन संवा ने बात नहीं मानी और उसने कृष्ण पर वार कर दिया, जिससे तलवार उनके शरीर में घुस गई। कृष्ण को ज्यादा दर्द नहीं हुआ और जब तलवार निकाली जा रही थी, तब उन्होंने देखा कि लावा उस पेड़ के तने तक पहुँच गया था जिस पर दुर्वासा बैठे थे और उसने लकड़ी को पिघला दिया था। दुर्वासा भी लावा का हिस्सा बनकर राख और आग में बदल गए।

उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि सब कुछ खत्म हो रहा है और लावा उनके और भी करीब आ रहा है।

समवा ने तलवार निकाल ली थी और उसे मारने ही वाला था कि कृष्ण ने आँखों में आँसू लिए उसे रोक दिया—उसका हाथ पकड़ लिया, यह सुनिश्चित करते हुए कि वह ऐसा न करे।

"मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दे सकता," कृष्ण ने शाप देते हुए कहा। "लावा करीब है। चलो इस मूर्खता को रोकें और भाग निकलें।"

समवा ने लावा देखा और दोनों को पता था कि वे जल जाएँगे, इसलिए वह कृष्ण से दूर लुढ़क गया ताकि कृष्ण जा सकें। कृष्ण उसकी मदद करने के लिए खड़े हो गए...

जब उसने समवा को देखा, तो तलवार ठीक उसकी छाती के पास थी। दिल पर, बिल्कुल। और वह ज़मीन पर पड़ा था। उसके चेहरे पर एक शांत मुस्कान थी, मानो उसे इस घटना से खुशी हो। और वह तारों को देख रहा था।

कृष्ण सामवा की ओर दौड़े और उसके बगल में झुक गए। "नहीं...नहीं...नहीं!" वे चिल्लाए। "तुम ऐसा नहीं कर सकते।"

समवा को खून की खांसी हुई। "यह शानदार है। यह एहसास अद्भुत है।"

"क्या?"

"मरने का आभास। इसे कम करके आंका जाता है।" और वह मुस्कुराया। "पिताजी, दूसरी दुनिया में मिलेंगे।" और उसकी आँखें बंद हो गईं। "द्वार्का को बचा लेना।"

कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे और उनका क्रोध भड़क उठा। लावा उनके पास से गुजरा, लेकिन उन पर कोई असर नहीं हुआ, बल्कि उसने सांव के शरीर को दुर्वासा के शरीर की तरह ही पिघला दिया। कृष्ण ने अपने जबड़े भींच लिए और खुद को बेकार महसूस किया। उन्हें पता था कि शायद उन्होंने सारी शक्तियाँ ययातियों को दे दी हैं...

और फिर भी उसके पास सारी शक्तियां थीं।

लेकिन वह अपने बेटे को नहीं बचा सका।

जिससे उसे बेहद प्यार हो गया था। वह शरीर को गले लगाना चाहता था, लेकिन वहां कुछ भी नहीं बचा था, बल्कि उसके सामने बस गर्म, धधकती हुई लावा थी।

और बस पल भर में ही उसकी दुनिया हमेशा के लिए बदल गई।

*

प्रद्युमन अपने सलाहकारों के साथ एक अंधेरे कमरे में अर्धवृत्त बनाकर खड़े थे, जहाँ मंत्री,

सेनापति और जनरल बैठे थे। सभी उच्च पदस्थ अधिकारी मौजूद थे। यहाँ तक कि रुक्मिणी भी उनके बगल में थीं। प्रद्युमन धोती पहने हुए थे और उनकी छाती नंगी थी, क्योंकि वे महल के चारों ओर दौड़ लगाकर आए थे। उन्हें खूब पसीना आ रहा था।

प्रद्युमन ने सारी खबरें सुन ली थीं। उन्होंने दुर्गाज्योति के बारे में भी सुना था और अपनी पत्नी के फैसले से वे खुश नहीं थे। उन्होंने दुर्गाज्योति की तलाश में एक दल भेजा था, लेकिन उन्हें कोई सुराग नहीं मिला। बलराम का भी कोई पता नहीं था और यही हाल संवा का भी था। उनके बारे में भी कोई खबर नहीं थी।

"तो अब हम क्या करें?" पार्षदों में से एक ने पूछा। "अब जबकि हम जानते हैं कि राक्षसों ने ही आपको खाया था, तो क्या हमें उन पर हमला करने की योजना बनानी चाहिए या फिर हमें उस बात पर अड़े रहना चाहिए जिसे हमने आपकी अनुपस्थिति में अस्वीकार कर दिया था?"

प्रद्युमन को पता चल गया था कि उसकी पत्नी ने सबको क्या-क्या करवाया था। और हालांकि वह उस पर गुस्सा हो सकता था... लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

मुझे नहीं लगता कि हमें रसातला से लड़ना चाहिए।

"तो फिर?" मेज पर बैठे किसी व्यक्ति ने पूछा। "फिर क्या?"

"मुझे नहीं पता।" उसने हार मानकर कंधे उचका दिए, निराशा की भावना उसके भीतर समा गई थी। "लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि मुझे अब हिंसा नहीं चाहिए। मैं अब और लड़ना नहीं चाहता। मैं एक शांतिपूर्ण देश, एक शांतिपूर्ण दुनिया चाहता हूँ," प्रद्युमन ने आह भरते हुए कहा और पीछे झुक गया। "और मैं कुछ नीतियों को बदलना चाहता हूँ। मुझे नहीं लगता कि वे जनता के हित में काम करती हैं।"

सभी लोग सदमे और विस्मय से दंग रह गए। प्रद्युमन अपनी कुर्सी पर पराजित होकर बैठा रहा और पीछे की ओर झुक गया, जब उसने देखा कि रुक्मिणी उसे भयभीत होकर देख रही है। उसे नहीं पता था कि उसने ऐसा क्यों कहा। लेकिन वह जानता था कि उसे किसी को प्रभावित करने की कोई इच्छा नहीं थी, क्योंकि जिस स्त्री को वह प्रभावित करना चाहता था, उसकी मृत्यु हो चुकी थी... उसी के हाथों।

और शायद सबसे खूबसूरत चीजें ही सबसे खतरनाक होती हैं, और दूसरों के जीवित रहने के लिए उन्हें उखाड़ना पड़ता है।

और यही प्रद्युमन ने किया।

आश्चर्य की बात यह थी कि उन्होंने देखा कि बाद की सभा में रुक्मिणी ने शराब को छुआ तक नहीं। उन्होंने उसकी ओर देखा तक नहीं। जिस हाथ से वह पीतल के प्याले को छूती रहती थीं, अब वही हाथ उनके हाथ की रेखाओं को छू रहा था।

*

बलराम को पता नहीं था कि वह अपने सामान्य रूप में कैसे लौट आए, लेकिन वे लौट आए थे और वे सभी के प्रति आभारी थे। वहीं, वृष्णि पक्ष के सभी लोग भी युद्ध के मैदान में उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उनकी पूजा कर रहे थे। सभी ने उनके सामने सिर झुकाया और कुछ उनके चरणों में गिर पड़े। यह सब बहुत ही उलझन भरा था। लेकिन बलराम बस अपनी गति में

बहते रहे।

जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ और देवमेधा और उसके लोग वापस लौटे, उन्हें बहुत सारे युद्धबंदी मिले, और उनमें उन्हें अकोरजी भी मिला, जिसे अकल्पनीय रूप से प्रताड़ित किया गया था।

बलराम अस्पताल में रेवती के साथ अकुरजी की देखभाल कर रहे थे, तभी रेवती ने पूछा:

क्या आपको पता था कि लेजर कौन था?

"हां, और मुझे व्यक्तिगत रूप से वह जवाब पसंद नहीं आया।"

स्वास्थ्य सेवा के लिए समर्पित बड़े तंबू में कई अन्य घायल सैनिक भी थे।

“मुझे खेद है कि मैंने आप दोनों पर संदेह किया,” बलराम ने कहा। “लेकिन मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा। आप मेरे परिवार हैं।”

वह मुस्कुराई। “दोनों सेनाओं को मिलाने की आपकी योजना नाकाम रही। अब आप क्या करना चाहते हैं? प्रद्युमन अभी भी एक बड़ा खतरा बना हुआ है।”

“मुझे नहीं पता।” उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूँगा। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि प्रद्युमन बदल सकता है। मैंने युधजित और सत्यकी के बीच जो देखा, उससे मुझे एहसास हुआ कि अपने भतीजे से छुटकारा पाने का तरीका सही नहीं है। मुझे उसे सुधारना चाहिए और रिश्ते ठीक करने चाहिए। और आप जानते हैं क्यों?”

उसने अपनी भौहें ऊपर उठाईं।

“क्योंकि तुम परिवार को नहीं छोड़ते।” उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, “क्या तुम छोड़ते हो?”

“नहीं, तुम्हें नहीं करना चाहिए।” उसने अपना सिर उसके कंधे पर टिकाए रखा।

वे दोनों युद्ध की नीरसता में उसी स्थिति में बने रहे, यह महसूस करते हुए कि वे जल्द ही इस स्थान को छोड़कर अपना मार्ग बदलने वाले हैं।

वे दोनों जानते थे कि अब सब कुछ खत्म हो चुका है। और एक नया अध्याय शुरू होगा, उनके भीतर एक नई आशा जागृत हुई। सुधार की आशा।

*

जब कृष्ण लौटे, तो वे उस जगह नहीं गए जहाँ अर्जुन राक्षस से लड़ रहा था। वे नाव की ओर चले गए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। वे अपने मित्र से मिलना चाहते थे और उसके कंधे पर सिर रखकर रोना चाहते थे, लेकिन वे सुन्न पड़ गए थे। उन्हें बहुत बुरा लग रहा था और उनके सीने पर अब तक का सबसे बड़ा बोझ महसूस हो रहा था।

वह नाव के पास पहुंचा और उसने देखा कि नाव एक तरफ झुकी हुई है, तभी उसने देखा कि उसे संतुलित करने वाला अर्जुन था।

वह निश्चित रूप से घायल था, उसके तरकश में एक भी तीर नहीं बचा था और उसका धनुष टूटा हुआ था, फिर भी वह नाव की देखभाल कर रहा था। उसने मुड़कर कृष्ण की ओर देखा।

“क्या आप दुर्वासा से मिले हैं?” उन्होंने पूछा।

कृष्ण ने सिर हिलाया।

“तुम्हारा बेटा कहाँ है?”

कृष्णा ने कोई जवाब नहीं दिया। “क्या तुम्हें नाव को सही दिशा में ले जाना आता है? क्या तुम्हें लहरों का लाभ उठाना आता है?”

“हाँ।” वह रुका, क्योंकि वे दोनों नाव पर बैठ गए थे और चप्पू चलाना शुरू कर चुके थे, जबकि सुदूर पूर्व में सूरज अपनी किरणों से जगमगा रहा था और क्षितिज पर डूब रहा था। “आपके बेटे गोविंदा को क्या हुआ?”

कृष्णा ने कहा, "इस बारे में बात न करें। मेरी बहन को क्या हुआ?"

अर्जुन ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैंने वही किया जो मुझे करना था। इसलिए इसके बारे में बात न ही करें तो बेहतर है।"

वे चुप रहे और चमकते सूरज को देखते रहे।

“तुम मेरे साथ आ रहे हो। तुम्हारी क्या योजना है?” कृष्णा ने पूछा।

“पता नहीं, लेकिन मुझे पता है कि मैं यहाँ नहीं रह सकता,” उसने उत्तर दिया। “तो फिर कहाँ जाऊँ?”

कृष्ण ने अपनी घायल छाती को छुआ और खून की ओर देखा—वही खून जो ययाति सभ्यता का अंत कर सकता था।

“कहाँ जाना है?” उसने मन ही मन कहा। “द्वारका, अर्जुन। द्वारका।”

एपिसोड 1 का अंत

***** *****

स्वीकृतियाँ

मैं भगवान कृष्ण को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने मुझे यह लिखने की अनुमति दी।

मैं अपने माता-पिता को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया।

मैं साइमन एंड शूस्टर इंडिया का आभारी हूं कि उन्होंने इस कहानी पर भरोसा जताया - चाहे वह राहुल सर हों, सायंतन घोष हों, हिमांजलि हों, अभय हों, और यह सूची आगे भी जारी रहेगी।

रेडिंक लिटरेरी एजेंसी के श्री बहरी के बिना कुछ भी संभव नहीं हो पाता, जो मेरे साहित्यिक जीवन के दौरान एक मजबूत स्तंभ रहे हैं।

मैं अपनी कंपनी हबहॉक्स और अपनी शानदार टीम का आभारी हूं। यह किताब मैंने ऑफिस में काम के घंटों के दौरान लिखी, और जब मैं लिखने में मग्न था, तो वे चुप रहे, जो मेरे लिए बहुत दयालुता का काम था।

मेरी पत्नी किरण मलिक, जिन्होंने इस पुस्तक को समर्थन देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। और नगमा, मेरी सहायक, मित्र और मेरी उत्साही पाठक। वह हमेशा उन सभी कामों में मेरी मदद करती हैं जिनमें मैं बिल्कुल कमजोर हूँ।

और सबसे बढ़कर, पाठकों को धन्यवाद। आप चाहते थे कि मैं भगवान कृष्ण पर एक पुस्तक लिखूँ। यह मेरा संस्करण है।

भारत में पहली बार साइमन एंड शूस्टर इंडिया द्वारा 2023 में प्रकाशित।
कॉपीराइट © केविन मिसल, 2023
यह संस्करण 2023 में प्रकाशित हुआ।
केविन मिसल ने कॉपीराइट अधिनियम, 1957 की धारा 57 के तहत इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के अपने अधिकार का दावा किया है।
1 3 5 7 9 10 8 6 4 2
साइमन एंड शूस्टर इंडिया
818, इंद्रप्रकाश बिल्डिंग,
21, बरखंबा रोड,
नई दिल्ली 110001
www.simonandschuster.co.in
पेपरबैक आईएसबीएन: 978-93-92099-92-2
हार्डबैक ISBN: 978-81-94643-03-6
ईबुक ISBN: 978-93-92099-93-9
सूर्या, नई दिल्ली द्वारा भारत में टाइपसेट किया गया
रेप्लिका प्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा भारत में मुद्रित और जिल्दबंद।

साइमन एंड शूस्टर इंडिया टिकाऊ वनों में उगाई गई लकड़ी से बने कागज का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है और अग्रणी अंतरराष्ट्रीय वन प्रमाणन संगठन, फॉरेस्ट स्टीवर्डशिप काउंसिल (FSC) का समर्थन करता है। हमारी जिन पुस्तकों पर FSC लोगो लगा होता है, वे FSC प्रमाणित कागज पर मुद्रित होती हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में जिसमें यह प्रकाशित हुई है।